प्रकाशक—
मेडिकल पुस्तक भवन
गोलादीनानाथ, वाराणसी

*

तृतीयावृत्ति
मूल्य १२ ०० मात्र

*

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

*

प्राप्तिस्थान :
मेडिकल पुस्तक भवन
गोलादीनानाथ, वाराणसी

*

मुद्रक—
बैजनाथ प्रसाद
कल्पना प्रेस
रामकटोरा रोड, वाराणसी।

प्रकाशक का निवेदन

पश्चिमी देशों में डॉ० जार की प्रतिष्ठा होमियोपैथिक संसार में बहुत ही अधिक है। उन्होंने ४० वर्षों से भी अधिक समय तक हजारों रोगियों को अपनी अनुपम चिकित्सा से रोगमुक्त किया था। जिन औषधियों से उन्होंने सफलता प्राप्त की थी उन्हीं का उदाहरण सहित विवरण इस पुस्तक में दिया गया है। उस मूल पुस्तक का अक्षरशः हिन्दी अनुवाद आज हम हिन्दी जगत के सामने उपस्थित करके हर्ष का अनुभव कर रहे हैं। आशा है, इस पुस्तक के निर्देश के अनुसार हमारे देश के चिकित्सक चिकित्सा करके अगणित रोगक्लिष्ट व्यक्तियों को आराम पहुँचा कर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकेंगे, साथ-साथ यथेष्ट प्रतिष्ठा तथा पुरस्कार पाकर उपकृत होंगे।

—विनीत प्रकाशक

सम्पादक का मन्तव्य

यद्यपि यह पुस्तक होमियोपैथी के शिक्षार्थियों के उपयोग में आने के लिए लिखी गयी है, तो भी अनुभवी प्रवीण चिकित्सकों को भी इससे भरपूर सहायता मिलेगी। वे इस पुस्तक के जिस अंश को पढ़ेंगे उसी से उनके अपने पठित विषय की स्मृति ताजा हो जायगी तथा यह हमारी मेटेरिया मेडिका की भूल-भुलैया के कुटिल मार्ग से सुगम मार्ग में जाने का रास्ता बताने में सहायता देगा। आधुनिक जड़वाद की ओर झुकाव के दिनों में नामी होमियोपैथ चिकित्सक जार के विचारों तथा परीक्षित औषधियों का विवरण हम आनन्द के साथ जनता के सामने दर्शित करते हैं। औषधियों की मात्रा के सम्बन्ध में डॉ० जार कट्टरवादी नहीं थे, बल्कि हैनिमैन के द्वारा प्रस्तावित तथा व्यवहृत औषधियों की मात्राओं तथा शक्तियों के अनुसार ही वह इस विषय का निर्णय कर लेने का अनुरोध करते हैं। उनके बहुत सूक्ष्म शक्तिकृत औषधियों से अनेक असाध्य रोगियों को असीम आशीर्वाद मिल गया है। दूसरी ओर हम अपने सहयोगियों, खासकर नवीन चिकित्सकों को परामर्श देते हैं कि वे, परम विज्ञ डॉ० हैनिमैन ने मात्रा के सम्बन्ध में जो व्यावहारिक ज्ञान हमें दिये गये हैं, उसका उपयोग करें तथा इस जड़वाद के जमाने में वैज्ञानिक प्रगति के मार्ग से विपथगामी न हो जायँ।

—चार्ल्स जे० हेम्पल

लक्षण-सूची

अध्याय लक्षण पृष्ठांक

भूमिका

१८२७ ई० में मैंने होमियोपैथी चिकित्सा का आरम्भ किया, उस समय हमारी चिकित्सा-पद्धति के स्थापक डॉ० हैनिमैन के द्वारा लिखित "मेटेरिया मेडिका प्योरा" और 'स्टैफ के अर्किव' पत्र में कुछ आरोग्य-समाचार तथा "Praktischen Mittheilungen" (चिकित्सा-लब्ध पत्र-व्यवहार) के अतिरिक्त अन्य कोई चिकित्सा-ग्रन्थ नहीं था। इन अल्प उपायों के साथ हमें चिकित्सा-कार्य चलाना पड़ा। उस समय हम रोगोत्पत्ति के जिन कारणों से परिचित हुए थे और जो औषधियाँ उपलब्ध थीं उनके निरन्तर ध्यानपूर्वक अध्ययन से प्रत्येक औषध के खास-खास लक्षण तथा विशेष निर्देश आदि हम जान गये थे जिससे चिकित्सा के उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम अपने को लगा सके। यह दायित्व-भार अल्प नहीं था, यदि बहुत-सी औषधों की वितरण-युक्त मेटेरिया मेडिका न मिलती तो उसका पूर्ण करना सम्भव न होता। वही औषधें आधुनिक होमियोपैथिक चिकित्सा-पद्धति के अनुसार नवीन चिकित्सकों के सामने उपस्थित की गयी हैं। किन्तु उस समय ६० से अधिक औषधें ज्ञात नहीं थीं। जिनमें केवल २० का ही 'प्रमाणीकरण' किया गया था जिसके लिए यथेष्ट धैर्य के साथ परिश्रम किया गया था और जो बिल्कुल विशुद्ध फलदायक निकलीं। अब हमें बिना कष्ट के उनके अध्ययन के लिए शक्ति मिली, तथा उनमें हर एक औषध के अमोघ फल से हम पूर्णतया परिचित हुए। किस प्रकार के निदान वाले रोगों के लिए वे आरोग्य-साधक हैं और किस प्रकार के निर्देशक लक्षणों के द्वारा औषध चुनी जाय, इसे न जानकर चिकित्सा-कार्य आरम्भ करना उचित नहीं है। इसी सिद्धान्त का अनुसरण कर हमें बहुत ही अधिक सुविधा मिली, जिससे औषध के चुनने के लिए आवश्यक लक्षणों के प्रति हम विशेष ध्यान दे सके।

प्रत्येक व्यक्ति में जो विशेष रोग-लक्षण दिखाई पड़ते हैं उनके अनुसार रोग तथा रोग-निदान का निर्णय करके औषध चुननी होती है। इस प्रकार की चिकित्सा-पद्धति के अनुसार चिकित्सा करके हमें जो *असाधारण सफलता मिली है, अगणित रोगी आराम हुए हैं, जिनका विवरण* हमारी चिकित्सा-प्रथा के सामयिक पत्रों में प्रकाशित हुए हैं, उनसे निस्सन्देह प्रमाणित हुआ है कि हमारी इस चिकित्सा की अपूर्व सफलता में अब कोई सन्देह नहीं रह गया है।

ऐसे समय होमियोपैथिक पद्धति के प्रथम चिकित्सक के लिए मेटेरिया मेडिका का ध्यानपूर्वक अध्ययन सम्भव नहीं था। बहुत-सी औषधों तथा चिकित्सा के अनुभव से अभिभूत होकर वह जान नहीं सकता कि कहाँ से प्रकाश की किरण आयेगी, क्योंकि उसके सामने सर्वत्र अज्ञान का अंधेरा ही व्याप्त था, इस कारण डा० हैनिमैन के मेटेरिया मेडिका प्योरा का अध्ययन कर रोग-लक्षणों के अनुसार ठीक औषध खोज निकालना उसके लिए असम्भव था बल्कि वह औषध-प्रदर्शिका या लक्षणकोश देखकर रोग के लक्षणों के अनुसार ठीक औषध चुन लेना पसन्द करेगा किन्तु इस प्रकार के ग्रन्थों से वह पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर सकता। यदि वह लक्षणकोश अधिकतया पूर्ण हो तभी उससे नये चिकित्सक लाभ पा सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि वे डॉ० गीकर्ट द्वारा लिखी "Klinischen Erfahrungen" (चिकित्सा के अनुभवी) और मेरे निजी "Klinischen Anweisungen" (चिकित्सा के उपदेश) ग्रन्थों को अच्छी तरह पढे तो निर्धारित औषध निकालने में सुगमता होगी। लक्षण-निर्वाचन में अपनी सूक्ष्म बुद्धि का प्रयोग करना आवश्यक है। सम्भव है कि एक औषध से एक रोगी अच्छा हो गया तो उसी प्रकार के दूसरा रोगी भी उसी औषध से अच्छा होगा, ऐसा नियम नहीं है। रोगी की शारीरिक स्थिति तथा मानसिक अवस्था का विचार करके औषध की व्यवस्था देनी होती है। अपनी पुस्तक में मैंने ऐसे लक्षणों की छानबीन की है कि उनका अध्ययन कर लेने से चिकित्सा सुगम होगी। उसमें ऐसे भी बहुत से लक्षण दिये गये हैं जिन पर विचार

करने से भूल नहीं होगी। डा० रीकर्ट के 'चिकित्सा के अनुभव' और मेरे 'चिकित्सा के उपदेश' जान लेने से चिकित्सक समझ जायेंगे कि रीकर्ट ने जिन रोगियों का लक्षण बताया है वह बहुत ही मामूली है। डा० हैनिमेन के महान ग्रन्थ 'मेटेरिया मेडिका प्योरा' से मैंने अपने 'चिकित्सा के उपदेश' ग्रन्थ के लिखने में बहुत सहायता पायी थी। किसी रोगी के लक्षण देखकर उसी लक्षण वाली औषध बिना विचारे सेवन कराने से नवीन चिकित्सक सर्वत्र सफल नहीं हो सकते। रोगी का स्वभाव और मिजाज भी देखना चाहिए। डा० रिकर्ट ने होमियोपैथिक चिकित्सा की विभिन्न पद्धतियों के सिद्धान्तों का संग्रह किया है जो चिकित्सा के अनुभव के ऊपर आधारित नहीं हैं, बल्कि उन्होंने निरर्थक 'मेटेरिया मेडिका प्योरा' से स्थान स्थान पर उद्धरण दिया है, और इसी तरह अपनी पुस्तक को बढ़ाया है, और हार्टमेन के चिकित्सा-ग्रन्थ से जो लक्षण संग्रह किये गये हैं वे भी महत्व के नहीं हैं। मेटेरिया मेडिका प्योरा ग्रन्थ से जो उत्तम सुझाव उन्होंने लिये हैं उनके साथ अपनी अधिक विचार-बुद्धि लगायी है, फलस्वरूप खास-खास रोगों के लिए उन्होंने जो सुझाव दिये हैं वे परीक्षा में सफल हुए हैं। किन्तु उनकी बतायी हुई कुछ दवाओं का आज तक परीक्षण नहीं हुआ है। इस कारण चिकित्सा के अनुभूत फल की दृष्टि से उनके सुझाव सर्वत्र मान्य नहीं हैं।

मैंने अपने 'चिकित्सा के उपदेश' ग्रन्थ में उस कठिनाई को दूर करने का भरसक प्रयत्न किया है। मैंने उन लक्षणों की बहुत सावधानी से परीक्षा की है तथा मेटेरिया मेडिका प्योरा के साथ उनकी तुलना भी की है। मैंने अपने अनुभव से जिन औषधियों को अचूक पाया है उन्हीं का विवरण अपनी पुस्तक में सम्मिलित किया है। अपनी परीक्षा से जिन औषधों को मैंने खरा पाया है उन्हीं का विवरण लिखा है। मैंने चालीस वर्षों के चिकित्सा-कार्य में जिन लक्षणों को अनावश्यक पाया है उन्हें मैंने छोड़ दिया है। अनेक सत्य सिद्धान्तों को मैंने अपनी पुस्तक में लिखा है। बहुत-सी अल्प महत्त्व वाली औषधों का विवरण देकर पुस्तक को भारी करने से नवीन चिकित्सकों का चिकित्सा-कार्य सरल न होकर कठिन हो जाता। चिकित्सा-

कार्य में रोग-निदान के अनुसार औषध चुनने के बारे में मैंने अपनी निजी अनुभव को ही महत्त्व दिया है और वह भी 'मेटेरिया मेडिका प्यौरा" की विचार-पद्धति के अनुसार। किसी-किसी विषय पर मैंने स्वेच्छा से किसी औषध के निर्वाचन में अपना मत जाहिर नहीं किया, वैसे स्थलों में अन्य प्रतिष्ठित चिकित्सकों के मतों को महत्त्व दिया है। मैं अपनी पुस्तक को सर्वोत्तम और सर्वाङ्गपूर्ण नहीं कहता, मैं रीकर्ट के द्वारा लिखित 'चिकित्सा के अनुभव' पुस्तक को अनावश्यक भी नहीं कहता और जिन वृद्ध चिकित्सकों ने जीवन भर के चिकित्सा-कार्य में अनुभव प्राप्त किये हैं उनके मतों को भी आदर के साथ मैंने ग्रहण किया है। किसी चिकित्सक को जब किसी खास रोगी की चिकित्सा करते हुए औषध चुनते समय द्विविधा हो तो वह इस ग्रन्थ से सुझाव ले सकते हैं। नवीन चिकित्सक, जो अपनी चेष्टा से अनेक रोगियों की चिकित्सा करके स्वय अनुभव प्राप्त नहीं कर सके हैं, वे भी मेरी पुस्तक से यथेष्ट सहायता पायेंगे। द्वितीय वार्षिक डाक्टरी छात्रों के लिए बड़ी-बड़ी पुस्तकों की अपेक्षा "फ्रेंड्स लैटिन डिक्शनरी" ही अधिक उपयोगी ग्रन्थ है।

ऐसी असुविधा मेरे सामने स्पष्ट हो गयी थी, इस कारण मैंने होमियोपैथी सीखने वाले छात्रों से परामर्श किया, फलस्वरूप प्रथम शिक्षार्थी के पथ-प्रदर्शक रूप से प्रस्तुत पुस्तक तैयार करने में मुझे प्रेरणा मिली, जिसमें मैंने अत्यन्त आवश्यक तथा निर्दिष्ट लक्षण प्रदर्शित किये, जिनसे उपयोगी औषध चुनी जा सके और अपने चालीस सालों के चिकित्सा व्यवसाय के अनुभव से जो निश्चित फल पाये गये हैं केवल उन्हीं को इस पुस्तक में सम्मिलित किया गया है। इतना होने पर भी सभी रोगों के लिए यह पथ-प्रदर्शक नहीं है, जैसे कि मेरे 'चिकित्सा के उपदेश' ग्रन्थ में है, जो प्रथम शिक्षार्थी के लिए चिकित्सा का सच्चा पथ-प्रदर्शक है। केवल अहंकार प्रकट करने के लिए नहीं, बल्कि मैं दावा कर सकता हूँ कि मेरी यह पुस्तक नवागन्तुक चिकित्सकों के पथ-प्रदर्शन के लिए यथार्थ में ही लाभप्रद है, क्योंकि इसमें जो कुछ लिखा है, सभी को मैं रोगियों पर प्रयोग करके स्वय

शुभ फल पा चुका हूँ। इसके अनुसार चिकित्सा करने से किसी को विफल नहीं होना पड़ेगा। प्रथम शिक्षार्थी जब मेरे बताये सिद्धान्तों को सीख लें तो उसके बाद वह मेरे लिखी 'चिकित्सा के उपदेश' पुस्तक को पढ़ें। इस पुस्तक के अगले पृष्ठों में मैंने बहुत ही उत्तमोत्तम निर्देशक लक्षणों को लिख दिया है। उन्हें बहुत ही संक्षेप में लिखा है, क्योंकि मेरा विश्वास है कि रोगी के यथार्थ लक्षणों के साथ औषध से रोगोत्पादक लक्षणों का मेल होने से ही उस औषध से उस रोग की निवृत्ति हो जायगी। उनके अतिरिक्त छोटे-मोटे बेमेल लक्षणों पर मैंने विचार नहीं किया। पाठक सहज में ही समझ सकेंगे कि मैंने उस सभी विषयों को जानबूझ कर छोड़ दिया है, जिनके सम्बन्ध में मेरा निजी कोई अनुभव नहीं है। इससे उन्हें कोई विशेष हानि नहीं होगी। यदि वे मेरे अनुभव से सन्तुष्ट न हों तो अधिक उपदेश के लिए उन्हें मेरे 'चिकित्सा के उपदेश' ग्रन्थ को पढ़ना चाहिए। आरम्भ में यदि वे इस पुस्तक के थोड़े सिद्धान्तों को जानकर याद कर लें, तो उनके लिए अच्छा होगा।

मैं यहाँ ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ कि जिन रोगियों के आरोग्य का संक्षिप्त समाचार इस पुस्तक में दिया गया है, वे सभी औषधियों की ३० शक्ति से ही आराम हुए हैं किन्तु जहाँ-जहाँ दूसरी शक्तियों का व्यवहार किया गया है, वहाँ-वहाँ उनका स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है। सर्वत्र मैं जीभ पर दो सूखी गोलियाँ डाल दिया करता हूँ या उतनी ही गोलियाँ जल में घोलकर देता हूँ, दिन में १, २ या ३ बार। आजकल मेरा साधारण नियम यह है कि तरुण ज्वर में भीतरी अगों का प्रदाह होने पर जल में घोल कर औषध देता हूँ, कम से कम ज्वर के घट जाने तक। अन्य क्षेत्रों में विभिन्न रोगों के लिए हेनिमैन की पद्धति के साथ-साथ अन्य लोगों की प्रथा के अनुसार मैं सूखी गोलियों से ही चिकित्सा करता हूँ। किन्तु यदि अल्प समय में उन्नति न दिखाई पड़े या रोग पुराना हो जाय और आराम होना न चाहे तो वहाँ औषध की अल्प मात्रा का दोष नहीं है बल्कि औषध अनुपयोगी होने के कारण ही वैसा होता है। १८४९ ई० में जब अमेरिका में हैजा फैला मैं

उनकी चिकित्सा वेरेट्रम ऐल्बम १२ की दो गोलियाँ एक कटोरी भर जल में घोल कर हर बार पाखाना करने के बाद एक-एक चम्मच सेवन कराने के लिए व्यवस्था देता था। एक रोगी को, जो होमियोपैथी अच्छी तरह जानता था, मैंने वैसी गोलियों को एक शीशी के जल में घोलकर दिया और कह दिया कि जरूरत हो तो उसी नियम से स्वय सेवन करे और परिवार के अन्य लोगों को भी सेवन कराये। उसी को उस शीशी की दवा पहले पीनी पड़ी, क्योंकि एक दिन सुबह जब वह शहर में काम पर गया तो उसपर वैसे ही रोग का भयकर आक्रमण हुआ। उस औषध की शीशी पास में न रहने से और वहाँ से उसका घर बहुत दूर होने से, उसने निकट के एक होमियो-पैथिक दवाखाने से वेरेट्रम १२ मगवाया, और तुरन्त दो सूखी गोलियाँ जीभ पर रख कर खाया और यदि उसका पुनः आक्रमण हो, तो उसके लिए बाकी औषध रख ली, वे गोलियाँ कठिनता से उसकी जीभ पर गलने पायीं। उससे पाखाने का वेग घट गया और शाम तक फिर पाखाना नहीं हुआ, मलत्याग का वेग भी नहीं आया। उसके परिवार तथा पड़ोसियों में कोई उस रोग से आक्रान्त हो तो उसी औषध से वह उसी तरह लाभ पाता रहा। हर स्थान में वह वेरेट्रम की दो सूखी गोलियाँ जीभ पर डाल देता था और बाद में उसे समाचार मिलता था कि उन गोलियों से उनका वह कठिन रोग भी आराम हो जाता था। इसी उदाहरण को देखकर मैं अपने सभी कालरा रोगियों को इसकी सूखी गोली खा लेने की व्यवस्था देता था और प्रायः सभी रोगी एक ही मात्रा के सेवन से पूर्णतया अच्छे हो जाते थे। एक अन्य रोगी का विवरण और भी अधिक महत्व का है। एक सीधी-सादी स्त्री को हैजा हो गया था। वह चिकित्सा के लिए मेरे पास आयी, मैंने वेरेट्रम १२ की दो गोलियाँ उसे दी, जिससे उसका दस्त अच्छा हो गया। दो दिनों के बाद उसने कच्चे खीरे का बहुत-सा अचार खा लिया। उसके बाद वह केवल भयकर हैजे से ही आक्रांत नहीं हुई, बल्कि उसे बहुत तेज वमन भी होने लगा। मेरे दवाखाने से कुछ दूर रहने के कारण उसने मेरे एक सहकारी को बुला भेजा, उसने पहले कुप्रम और बाद में आर्सेनिकम दिया, वह भी निम्न

शक्ति की कुछ बूँदों में ही। किन्तु आरोग्य की तरफ कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। इस कारण उसने पुनः हड़बड़ी के साथ मुझे बुलाया। मैंने पहुँच कर देखा कि वह असली कालरा रोग से आक्रान्त हुई है। उसके मलद्वार और मुख से चावल की धोवन की तरह निःस्राव निकलने लगा, नाड़ी का स्पन्दन नहीं मिला और वह अवर्णनातीत स्नायविक उत्तेजना से कष्ट पा रही थी। उसने बताया कि अन्तिम बार आर्सेनिकम लेने के बाद ही उसे ऐसी कठिन अवस्था हो गयी है। सारे लक्षणों की जाँच करके मैंने निश्चय किया कि अभी भी वेरेट्रम ही उपयोगी औषध है। मैंने विचारा कि इस औषध को पानी में घोलकर दूँ, किन्तु उसके घर में शुद्ध जल न मिलने से मैंने दो सूखी गोलियाँ उसकी जीभ पर रख दी और एक व्यवस्था-पत्र लिख दिया कि वेरेट्रम १२ की दो गोलियाँ औषध विक्रेता की दूकान से शुद्ध जल मँगवा कर उसमें घोल दे, और उसमें से आधे-आधे घण्टे पर एक-एक चम्मच पीती रहे। चार घण्टे के बाद जब मैं उसे फिर देखने गया तो देखा कि मरा वह व्यवस्था-पत्र औषध विक्रेता की दूकान में नहीं भेजा जा सका, क्योंकि उस गरीब स्त्री को कोई आदमी ही नहीं मिला जिसे वह वहाँ भेज सके। इस बीच उसकी हालत में परिवर्तन हुआ, नाड़ी चलने लगी, चेहरे पर स्वाभाविक स्वास्थ्य के लक्षण प्रकट हुए। वमन बन्द हुआ, चमड़ा कुछ गरम हुआ और चावल की धोवन की तरह पाखाना बदल कर भूरे रंग का पानी-सा मल हो गया। मैंने रोगिणी को कह दिया की औषध मिलते ही उसका सेवन करे, दो-दो घण्टे पर एक-एक चम्मच कल सुबह तक। दूसरे दिन सुबह उसका स्वास्थ्य बिलकुल सुधार गया, इस बीच में कोई कठिन परिस्थिति नहीं उत्पन्न हुई।

भीतरी अङ्गों में ज्वर का प्रदाह न रहने से मैं सभी रोगों में यदि लक्षण मिले तो यहाँ तक कि आक्षेप, पतले दस्त, वमन, रक्तस्राव आदि में भी अपने चिकित्सा-व्यवसाय के आरम्भ से आज तक दो सूखी गोलियाँ जीभ पर देकर बहुत उपकार पाता आया हूँ। जल में घोल कर चम्मच भर सेवन करने की अपेक्षा मैंने इसी से अधिक फल पाया है। इसका कारण यह है कि

जीभ पर डालने से तुरन्त वह खून में मिल जाता है और सम-चिकित्सा के नियम से वह रोग के प्रारम्भिक विन्दु के साथ मिल जाता है। जल में घोल कर औषध देने से वह सीधे पाकाशय में पहुँच जाती है। इस प्रकार उसकी शक्ति चारों ओर फैल जाती है। रोगाक्रान्त अंश पर उसका प्रभाव विलम्ब से होता है। फलस्वरूप आरोग्य-साधक क्रिया में विघ्न पड़ता है या विलम्ब होता है जिसे सहज में अनुभव करना सम्भव नहीं होता। मैं गोलियों की एक मात्रा देता हूँ, कदाचित् इस नियम के विपरीत भी करना पड़ता है किन्तु बार-बार औषध देने का अभ्यास प्रशंसनीय नहीं है। यथार्थ औषध चुनने के लिए बहुत सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता है। किन्तु वह चिकित्सा-कार्य के अनुभव से ही प्राप्त हो सकती है। यहाँ तक कि नये चिकित्सक यदि मटेरिया मेडिका का ज्ञान-प्राप्त भी हों तो कभी-कभी दो या तीन औषधों में द्विविधा करने लगते हैं। रोग निर्णीत होने पर जीभ के ऊपर सूखी गोलियाँ देने की पद्धति की उत्तम है। यदि द्विविधा के कारण रोगी को अनुपयोगी औषध दे दी गयी हो और अधिक लाभ पाने के लिए थोड़े समय के बाद ही दूसरी औषध दी गयी हो तब सम्भव है कि पहली औषध से जो फल पाने की आशा थी, वह भी जाती रहेगी। फलस्वरूप पहली औषध की शक्ति जाँचने में भारी असुविधा होगी। यदि पहली औषध के बाद ही दूसरी औषद दी गयी है तो वह पहली औषध की शक्ति को रोक देगी और उसके प्रभाव को जाँचने में असुविधा होगी, किन्तु यह बात भी स्मरण में रखनी चाहिए कि दो एक विशेष अवस्थाओं को छोड़ कर, पहली औषध की शक्ति को जाँचने के लिए यथेष्ट समय दिया जाय। अर्थात् कम से कम छः घण्टे के बाद दूसरी औषध देने की बारी आ सकती है, किन्तु ऐसी स्थिति में बहुत समझ-बूझकर पहली औषध चुनना आवश्यक है। अपने इस सिद्धान्त को समझाने के लिए मैं यहाँ एक उदाहरण उपस्थित करता हूँ। एक मनुष्य अपने रोग के लिए अपनी ही औषध लेता था। एक सर्दी के दिन में उसे एकाएक दस्त होने लगे। उसने समझा कि सर्दी के कारण दस्त हो रहे हैं, इसलिए उसने डलकामारा की एक मात्रा

ले ली। इससे लाभ के बजाय हानि हुई। दस्त के साथ न पचा हुआ खाद्य आने लगा। उसके अनन्तर उसने चायना, फासफोरस और ब्रायोनिया का पारी-पारी से सेवन किया किन्तु फल कुछ भी नहीं हुआ। फासफोरस लेने के बाद दस्त कम होने लगा यही लाभकारी औषध है समझ कर उसने फासफोरस अनेक बार और अनेक परिमाण में खा लिया, किन्तु चायना सेवन करने से उसका फल जाता रहा। तिस पर भी वह उसी को खाता चला। फलस्वरूप दस्त बढ गया और अपच के कारण पेट फूल उठा, अन्त में उसने मुझे बुलाया। मेरे जाने पर वह तुरन्त पाखाने जा बैठा। वेग से दस्त आने का शब्द मुझे सुनाई पड़ा। मल की जाँच करने पर जाना गया कि वह बहुत ही दुर्गन्धित सड़ा हुआ खमीर है। उस शब्द के सुनने और मल की हालत देखने के बाद मैंने इपिकाक ३० की व्यवस्था दी। उसकी दो गोलियाँ जीभ पर डाल देने से उसे कुछ शान्ति मिली। मैंने जाते समय उससे कह दिया कि मुझे जताये बिना कोई दूसरी औषध का सेवन न करे। मैं शाम को फिर उसके पास गया। उसने बताया कि "आपने ठीक औषध ही मुझे दी है। इसके लेने से पहले हर समय मेरे पेट में दर्द रहा करता था, किन्तु अब उसका नामोनिशान नहीं है।" इपिकाक सेवन के अनन्तर सचमुच ही उसके दस्त नहीं आये, मल भी कड़ा हो गया। इस उदाहरण से जाना गया कि ठीक औषध चुनकर देने से बार-बार औषध देने की जरूरत नहीं रहती।

एक औषधि देकर उसके फल के लिए कब तक प्रतीक्षा की जाय, इसका निर्णय करना कठिन है, क्योंकि रोग की गम्भीरता के ऊपर यह निर्भर है। चिकित्सक की योग्यता के ऊपर इसका निर्णय निर्भर है, क्योंकि रोग में एक उपयोगी औषध देने के बाद प्रथम उन्नति का लक्षण वही जान सकते हैं। किसी सांघातिक रोग का भयकर दर्द एकाएक आ जाय और उसी अवस्था में दो या तीन दिनों तक रहे तो मैं साधारणतया तीन घण्टे से अधिक एक औषधि की शक्ति का फल देखने के लिए प्रतीक्षा नहीं करता। यदि दांत का तेज दर्द होने लगे या पेट में शूल की ऐंठन होती

रहे तो मैं उस क्षेत्र में घ्राणेन्द्रिय से काम लेता हूँ और आधे घण्टे के अन्तर पर औषध बदल देता हूँ। यहाँ मैं एक युवती लड़की का भी उदाहरण देता हूँ। मासिक ऋतु के समय किसी ने उसका भारी अपमान किया था, फलस्वरूप उसके पेट में भयंकर ऐंठन होने लगी। उससे दर्द के मारे वह चिल्लाने, कराहने और रोने लगी। बुलाये जाने पर मैंने उसके रोग का कारण जानकर अपने पास की इग्नेशिया की गोलियों की शीशी उसे सूँघने को दी और मैं वहीं बैठे रहकर उसका परिणाम देखने लगा। आधे घण्टे के बाद दर्द घटने के बजाय बहुत बढ़ गया (ऐसी औषध सूंघने देने से उसी समय भयकर दर्द नहीं घटता)। मैंने उसे काक्यूलस ३० सूघने को दिया। १० मिनट के बाद वह रोगिणी धीरे-धीरे शान्त होने लगी। ऐंठन भी कम हो गयी और आधे घण्टे के अन्दर वह शान्ति से सो गयी। दूसरे दिन जाने पर मुझे मालूम हुआ कि वह तीन घण्टे तक गहरी नींद सोती रही और जब वह जगी तो दर्द से वह पूर्णतया मुक्त थी। केवल वैसी स्थिति ही नहीं बल्कि जो ऋतुस्राव दर्द के कारण दब गया था वह खुल कर होने लगा। आगे मैं भयकर दन्तशूल के लिए भी इसी तरह की चिकित्सा करता चला। मेरे सम्मानित सहयोगी जेनेवा के नामी डाक्टर लैड्समैन के उपदेश के अनुसार मैं एक बार औषध देकर दूसरी औषध देने के लिए १० मिनट से अधिक प्रतीक्षा नहीं करता। यदि प्रथम औषध तुरन्त फल न दे तो इस नियम से चिकित्सा करके मैं रोगी को ३० या ४५ मिनट के अन्दर रोगमुक्त कर देता हूँ। किन्तु यदि स्नायुशूल आदि कठिन रोग कई सप्ताहों तक चलता रहे तो दूसरे तरीके से चिकित्सा करता हूँ। वैसे स्थलों में मैं औषध सुंघने को नहीं देता बल्कि जीभ पर दो सूखी गोलियाँ रख देता हूँ और कम से कम २४ घण्टों तक फल के लिए प्रतीक्षा करता हूँ। जैसे कि मैं अन्य तरुण भयानक रोगों में किया करता हूँ। यथार्थ में पुराने रोगों के लिए उस नियम के विपरीत मैं सदा ही दो से चार दिनों के अन्तर पर दो-दो गोलियों की २ या ३ मात्रायें देता हूँ और उसी प्रकार तीसरा सप्ताह न बीतने तक इसी नियम से औषध देता हूँ और शान्त भाव से कोई उपसर्ग

बढ़ता है या नहीं उसे देखता रहता हूँ, खासकर यदि रोगी के रोग की वृद्धि का मुझे पता लगे तो औषध बदलकर कारण का पता लगाता हूँ और २ सप्ताहों के बाद जब मैं उन्नति के लक्षण नहीं देखता तब दूसरी औषधि देता हूँ। किन्तु मैं तीन सप्ताह बीत गये बिना किसी अवस्था में औषध नहीं बदलता, बल्कि प्रत्येक दिखाई पड़ने वाली वृद्धि की जाँच करता रहता हूँ, खासकर यदि उस औषधि से आरोग्य होने का कोई लक्षण रोगी में देखता हूँ तो उसका यथार्थ कारण समझने की चेष्टा करता हूँ और यदि मैं उस वृद्धि के कारण और प्रकृति के विषय में निश्चिन्त हो जाता हूँ, तो तीन सप्ताहों के बाद यदि उन्नति का कोई लक्षण न दिखाई पड़े तो दूसरी औषध देता हूँ। किन्तु यदि उपयोगी औषध दी गयी हो तो अनुभवी चिकित्सक की तीक्ष्ण दृष्टि के सामने चिकित्सा आरम्भ होने के प्रथम सप्ताह की चिकित्सा के भीतर ही उन्नति दिखाई पड़ेगी, उसके ३ या ५ दिनों के भीतर उन्नति का दूसरा लक्षण भी दिखाई पड़ेगा। अब चिकित्सक अपने को संयत करके व्यवस्था-पत्र के बदलने की हड़बड़ी नहीं करेंगे, बल्कि वह उसी औषध की २ से ६ गोलियाँ देकर अभावनीय उन्नति पा सकेंगे। इस विषय को स्पष्ट करने के लिए मैं यहाँ एक उदाहरण देता हूँ। एक व्यक्ति को फेफड़ों में क्षय-रोग हो गया था और वह ऐंठन वाले दमा-रोग से लगातार कष्ट पा रहा था, उसे मैंने केलि कार्बोनिकम दिया जिससे सफलता मिली, किन्तु ८ दिन औषध सेवन के बाद उन्नति दिखाई पड़ने पर भी लक्षण बिगड़ने लगे। मैंने उसके स्थान में दूसरी औषध दी। मेरी चिकित्सा के अधीन आने के पहले वह इटली में होमियोपैथिक औषध सेवन करता रहा, जो उसका स्वदेश था। मैं ६ महीनों तक उसे अनेक प्रकार की होमियोपैथिक औषधियाँ दिया करता था, किन्तु कोई फल न निकला। उसके बाद मैं केलि कार्बोनिकम देने लगा। वह भी ३० शक्ति की गोलियों की केवल १ मात्रा में। ३ दिनों के बाद इस औषध से उसका दमे का दौरा घट गया और ६ वें दिन तक घटता ही गया, जब कि वर्धित भयकर वेग से वह दौरा पुनः होने लगा। उस औषध को न बदलकर मैंने सैक्रम लैक्टिस देना आरम्भ

किया। तीसरे सप्ताह में वह दौरा फिर से घटने लगा। इसी तरह ८ वें सप्ताह तक चला, जब कि फिर से वृद्धि दिखाई पड़ी, किन्तु अपने तरीके से मैं ८ दिनों तक जाँच करता रहा। ८ दिन बीत जाने पर वह रोगी पहले से भी अच्छा होने लगा, इन ८ दिनों के भीतर उसे दमे का दौरा एक बार भी न हुआ और १८ महीनों के अन्दर दूसरा आक्रमण भी नहीं हुआ, क्योंकि वह मेरी ही चिकित्सा के अधीन था। किन्तु फेफड़े का रोग उस समय भी था। उसके हृदय का स्पन्दन पहले अस्त-व्यस्त और अनियमित था, जो अब स्वाभाविक हो गया है। अपने दीर्घ चिकित्सा-जीवन से मैं ऐसे सैकड़ों रोगियों का विरवण दे सकता हूँ, जहाँ एक ही मात्रा से दो महीनों के अन्दर उत्तम फल मिला है। जैसा कि दो या तीन सालों तक बीसों प्रकार की औषधें सेवन कराने पर भी नहीं होता। परीक्षा से निश्चित हुआ है कि पुराने रोग केवल एक ही औषध से आराम होते हैं, प्रथम सप्ताह में ही साधारण उपसर्ग शान्त हो जाते हैं, मेरी जाँच से निश्चित हुआ है कि यदि प्रथम सप्ताह में उन्नति दिखाई न पड़े तो १५ दिनों के भीतर अवश्य ही वे उपसर्ग घट जायेंगे। और यदि प्रारम्भिक उपसर्ग दिखाई दें तो चिकित्सक बहुत ध्यान देने पर भी परवर्ती रोग वृद्धि का पता पा नहीं सकेंगे। ऐसी स्थिति में यदि वे अन्य औषध का प्रयोग करें तो वे सब कुछ खो बैठेंगे। दूसरी ओर यह निश्चित सिद्धान्त है कि, जहाँ अत्यन्त सूक्ष्म-दृष्टि-सम्पन्न सावधान चिकित्सक भी रोग की उन्नति के आरम्भ के मामूली लक्षण भी नहीं देख सके, वह भी पुराने रोगों के क्षेत्रों में १५ या २० दिनों तक, तो उस औषध से कोई उत्तम फल पाने की आशा नहीं रहती और तब अन्य उपयोगी औषध चुननी होती है।

यदि ऐसी परीक्षा खरी निकले तो हैनिमैन के उपदेश के अनुसार नये चिकित्सकों को चिकित्सा आरम्भ करने के पूर्व उनका सिद्धान्त जान लेना चाहिए, जिसे उन्होंने अपने चिकित्सा-व्यवसाय के प्रारम्भ में दिया था और जिसका पालन उनके शिष्य लोग २० वर्षों तक करते रहे। उसके बाद होमियोपैथिक चिकित्सा-क्षेत्र में नये विचार के आदमी आ गये और वे

पुराने रोगों में तीन मात्रायें देने लगे। वे लोग २।३ या ४ दिनों के अन्तर पर अपनी औषध देते थे। वे एक मात्रा सेवन करा कर उसका फल देखने के लिए प्रतीक्षा करते थे। मैं भी उन्हीं के साथ जल में घोलकर अनेक मात्रायें देने की अपेक्षा इन्हीं नये लोगों की नीति को अच्छा समझता हूं। चुनी हुई औषध की एक मात्रा देकर उसके फल की जाँच करते रहने की नीति का अवलम्बन करके मैंने अनेक रोगियों को अल्प समय में आराम किया है। पुराने रोगों में यदि बुखार न हो तो अन्य नीतियों की अपेक्षा मेरे विचार से यही उत्तम है। भीतरी अंगों में बुखार की जलन रहने पर मैं एकोनाइट को जल में मिलाकर देता हूं, जिससे बुखार उतर जाता है और जलन भी घट जाती है, उसके अनन्तर जो थोड़े-बहुत उपसर्ग बाकी रहते हैं उनके लिए मैं नई दवा देता हूँ। वह भी जीभ पर दो गोलियाँ देकर रोगी को चूसने के लिए आदेश देता हूं। उसमें से भी एक वार में एक चम्मच सेवन करने के लिए कह देता हूँ। इसी तरह लक्षण के अनुसार मर्क्यूरियस ३० की दो गोलियाँ जीभ पर डालकर चूसने के लिए कहता हूं। अन्त्रावरक-झिल्ली प्रदाह के बढ जाने से वहाँ पीव पैदा हो जाती है। केवल इसी औषध से वह पीव मल के साथ निकल जाती है। इसी तरह और भी अनेक उपयोगी उदाहरण हैं, उनका विवरण देने से इस पुस्तक का कलेवर बढ़ जायगा।

हमारा चिकित्सा-विधान 'पर्यवेक्षण' पर आधारित है और रहेगा, स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में औषध प्रविष्ट करा कर उसका फल देख लेना, और उसी तरह प्रत्येक रोगी के शरीर की अवस्था की जाँच करना, और भी उसके स्वाभाविक अवस्था में आने पर पुनः उसकी परीक्षा कर लेना और उसके अनन्तर रोग-लक्षण किस ओर परिवर्तित होते हैं उसे देख लेना ही हमारा परीक्षा-कार्य है। जैसे कि पुरानी प्रथा के एलोपैथिक चिकित्सक अपने ढंग की औषध देते हैं कि और पहले ही रोगी को रेचक दवा देकर थोड़ी देर बाद रोगी से पूछते हैं, कि उसका पाखाना खुल कर हुआ है या नहीं या वमन की हालत कैसी है, और आगे भी बहुत तेज रेचक दवा पिला देते हैं, फलस्वरूप

रोगी बहुत अधिक पाखाना होने के कारण एकदम कमजोर हो जाता है। हम भी वैसा करने लगें तो होमियोपैथिक चिकित्सा-पद्धति के द्वारा जो चमत्कार दिखाना चाहते हैं वह असम्भव हो जायगा। यथार्थ में होमियोपैथी के सिद्धान्त से चिकित्सा करके रोगाक्रान्त शरीर में हलचल न पहुँचा कर उसकी प्रकृति के अनुसार अति सूक्ष्म औषध देकर हम उसके रोग का मूल विनष्ट करके उसे स्वस्थ कर देते हैं। अपने सिद्धान्त के अनुसार हम बार-बार औषध बदलने के पक्षपाती नहीं हैं। औषध-विज्ञान का पूर्ण अनुभव सम्पन्न चिकित्सक चुनी हुई औषध देकर प्रतीक्षा करेगा कि रोगी के शरीर में कैसा परिवर्तन होता है। उस परिवर्तन को बिना देखे तुरन्त दूसरी औषध प्रयोग करने से पहली औषध की शक्ति नष्ट हो जा सकती है। यदि कुछ भी उन्नति का लक्षण दिखाई पड़े तो प्रथम औषध की कार्य-शक्ति को बढ़ाने के लिए उसी औषध को फिर से दिया जा सकता है। इससे रोगी को हानि न पहुँचा कर उसे हम रोगमुक्त कर सकते हैं।

कुछ चिकित्सक औषध बदलने के पक्ष मे हैं। किन्तु फल देखकर यह निश्चय नहीं किया जा सकता कि वह फल किस औषध का है। इस बात के विषय में मैं डॉ० कैलिनवेश का अनुभव बतलाता हूँ। जब हेग नगर में गल-झिल्ली-प्रदाह रोग व्यापक रूप से फैला तो उन्होंने अपने रोगियों को पारी-पारी से एपिस और लैकेसिस दिये। बहुत से रोगी अच्छे हो गये किन्तु वह जान न सके कि किस औषध का क्या फल हुआ। आगे चल कर उन्होंने कुछ रोगियों को एपिस और कुछ रोगियों को लैकेसिस दिया। अब उन्हें स्पष्ट प्रतीत हुआ कि एपिस का रोग तीन ही दिनों में अच्छा हो गया। जहाँ पहले दो औषधियों से आराम होने में पाँच दिन लगते थे और जिन रोगियों को उन्होंने लैकेसिस दिया था वे अच्छे नहीं हुए। अब उन्हें दोनों औषधों की शक्ति का पता लग गया। उन्हीं की परीक्षा के अनुसार मैं भी एक ही रोगी को पारी-पारी से या उससे अधिक औषधें कभी नहीं देता, किन्तु रोगी की कठिन अवस्था में लक्षण अनेक प्रकार के हों और उनके साथ दो औषधों के लक्षण मिलते हों तो वहाँ मे एक का प्रयोग करके उसकी क्रिया

देखने के अनन्तर यदि आवश्यक प्रतीत हो तो दूसरी दवा भी देता हूँ। नवीन चिकित्सक यदि मेरी इस पद्धति के अनुसार काम करें तो मेरी ही तरह वे भी चिकित्सा-कार्य में सफल होकर यश प्राप्त कर सकेंगे।

इस ग्रन्थ के अगले पृष्ठों में मैं विभिन्न रोगों की चिकित्सा पर प्रकाश डालूँगा, अन्य अनेक रोगियों का विवरण भी दूँगा, किन्तु मुझे इस बात पर भी ध्यान रखना पड़ा कि ग्रन्थ बहुत बड़ा न हो जाय। मुझे दीर्घ दिनों तक चिकित्सा-व्यवसाय चलाते रहने के कारण जो अनुभव प्राप्त हुए हैं उन्हीं को संक्षेप में बताऊँगा। नवीन चिकित्सक हर एक औषध के लक्षणों को अपने मन में अच्छी तरह बिठा लें और रोगी के पास जाकर बहुत ही ध्यान से उसी से तथा घर के अन्य लोगों से पूछ-पूछ कर लक्षणों को देखे। जिस औषध के लक्षणों के साथ रोगी के अधिकांश लक्षण मिल जायँ, उसी औषध की व्यवस्था दें। ऐसा करने से वे कभी विफल नहीं होंगे। डा० रीकर्ट ने अपने 'चिकित्सा के अनुभव' ग्रन्थ में बहुत ही खोज के साथ होमियोपैथिक चिकित्सा के गुणा-वगुण और फलाफल बहुत ही सुन्दर ढग से लिखा है। होमियोपैथिक चिकित्सा के अनुसार विभिन्न प्रकार के रोगियों के सम्बन्ध मे उस समय तक जो कुछ उपलब्ध हो सका था उनको उन्होंने अपने सग्रह में लिख दिया है और वह हमारे लिए अनमोल रत्न हैं। उसके अनुसार चिकित्सा करके मुझे अपने जीवन में बहुत लाभ मिला है। इस कारण मैं अक्सर उसी पुस्तक की सहायता लेकर विविध प्रकार के रोगियों को बहुत सहज में रोगमुक्त कर सका हूँ। उस पुस्तक में सन्निपात ज्वर, सविराम ज्वर, कालरा, इनफ्लुएञ्जा, न्यूमोनिया, फेफड़े का क्षय रोग आदि के बारे में जो कुछ लिखा है, यदि मुझे व्यक्तिगत रूप से उन रोगों के विषय में प्रत्यक्ष अनुभव न होता तो, मैं स्वीकार करता हूँ कि उसे पढकर मैं कुछ भी समझ न सकता और न उन रोगों की चिकित्सा में सफलता ही प्राप्त कर सकता। किन्तु मेरे ख्याल से उन विषयों को और भी संक्षेप में तथा भाव-पूर्ण ढंग से लिखा जा सकता था और तभी नवीन चिकित्सक उनसे लाभ उठा सकते थे। किन्तु मैंने अपनी इस पुस्तक में नये

चिकित्सकों के लिए अपने अनुभवों को बहुत ही सक्षेप में लिखा है। इससे उन्हें रोगी की चिकित्सा करते समय निश्चित और विश्वास-योग्य लक्षणों का पता लगेगा। नवीन चिकित्सक प्रत्येक लेखक के सिद्धान्त को प्रमाण मानकर विपत्ति न मोल लें। रीकर्ट ने अपने ग्रन्थ में मृगी रोग के लिए पामिरा के सिद्धान्तों का उद्धरण दिया है, परन्तु उसमें कुछ सिद्धान्त खतरे से खाली नहीं हैं। मैंने उसका खडन करते हुए यथार्थ मार्ग का निर्देशन दिया है, इससे आगे के पाठकों और चिकित्सकों का विशेष उपकार होगा। यथार्थ में रीकर्ट ने जनता का कुछ उपकार अवश्य किया है, क्योंकि चिकित्सा के लिए उस समय तक उपलब्ध सभी विषय उन्होंने अपने ग्रथ में लिखा है तथा नामी चिकित्सकों से जो कुछ उत्तम बातें पायी हैं सभी को अपने ग्रथ में स्थान दिया है। उन दिनों इगलैंड और फ्रास में छपे कुछ ग्रथों में अनुभव-रहित लेखकों ने अपने-अपने अप्रमाणित अनुभव लिख दिये हैं, जो विज्ञान सम्मत नहीं हैं। उनका उद्देश्य था कि हम भी श्रेष्ठ चिकित्सक हैं, इसका प्रचार करना। ऐसे लेखकों की उमर अधिक नहीं थी और उनके नामों का प्रचार भी विशेष नहीं था। उनके उन अप्रमाणित सिद्धान्तों को विदेशी लेखकों ने अपने ग्रन्थ में उद्धृत किया है देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए और उछल-कूद मचाने लगे। किन्तु होमियोपैथी के विज्ञान-सम्मत सिद्धान्त जिन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ करते हैं उनमें उनके लेख कभी स्थान नहीं पाते थे, किन्तु मैंने विशेष परीक्षा और छानबीन किये बिना वैसे अनुभव-रहित लेखकों का विचार अपने ग्रन्थ में नहीं लिखा। किसी भी चिकित्सक का लेख क्यों न हो, वैज्ञानिक जाँच किये बिना मैंने उसका उद्धरण अपने ग्रन्थ में नहीं दिया है। मुझे विश्वास है कि मैंने जो कुछ अपने इस छोटे ग्रन्थ में लिखा है, वह नवीन चिकित्सकों के पथ-प्रदर्शन के लिए पर्याप्त है।

मुझे और भी एक बात कहनी है, कोई भी पुस्तक कितनी ही बड़ी क्यों न हो यदि उसमें किसी रोग की चिकित्सा के लिए दो या तीन औषधों का निर्देश मालूम हो, तो नवीन चिकित्सक उनमें किसको चुन ले, इस विषय

में सन्देश रह जाता है। किन्तु अनुभवी चिकित्सक कहेंगे कि प्रधान लक्षण देख लेना ही औषध-निर्वाचन के लिए यथेष्ट है जैसे कि, गरमी का समय, कच्चा फल खाना, मल में न पचा हुआ खाद्य निकलना आदि लक्षण ब्रायोनिया चुनने के लिए यथेष्ट हैं, किन्तु यदि रोगी ने कच्चा फल न खाया हो, तो भी पतले दस्त होने लगें तो ब्रायोनिया के स्थान में डलकामारा उपयोगी होगा। ऐसे स्थलों में मल के रंग और ठोसपन के विषय में भी विचार रखना आवश्यक है। जब तक चिकित्सक इन दोनों औषधों के लक्षणों की अच्छी तरह जाँच न कर लें और रोगी के रोग-लक्षणों से उनका मिलान न कर लें ठीक औषध चुनना कठिन हो जायगा।

नवीन चिकित्सकों को कुछ सहायता देने के लिए मैं यह पुस्तक लिखने में प्रवृत्त हुआ हूँ। नये चिकित्सक हाथ में आये हुए रोगी की चिकित्सा आरम्भ करने के पहले ऊपर-लिखित ढग से रोग-लक्षणों तथा औषध के लक्षणों की समानता का विचार कर लें। यदि एकाधिक औषधें मन में आवें तो मेटेरिया मेडिका प्योरा से लक्षणों का मिलान करके एक औषध की व्यवस्था दें। चिकित्सा के आरम्भ-काल से ही मैं इसी नियम के अनुसार काम करता चला आ रहा हूँ, किन्तु यदि लक्षणों का पूरा-पूरा मेल न हो तो मैं अपनी बुद्धि से एक को चुन लेता हूँ। कहीं-कहीं अधिकाश लक्षणों को देखकर औषध का निर्वाचन करना पड़ता है। यदि प्रथम औषध निष्फल हो तो दूसरी चुनी हुई औषध देकर मैं अनेक क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सका हूँ। यदि रोग के भोग-काल में रोगी के भीतर कुछ नये लक्षण दिखाई पड़ें तो मैं उनकी तुलना अपने चुनी हुई औषध के साथ कर लेता हूँ और नये सिरे से चिकित्सा शुरू करता हूँ। इस प्रकार नये-नये लक्षणों का प्रकट होना पुराने रोगों में ही होता है। नये रोगों में प्रायः ऐसा नहीं होता। एक बार मैंने एक युवक की चिकित्सा की थी। उसके लक्षण देखकर मैंने साइलीशिया की दो गोलियाँ दीं। कुछ दिनों के बाद उसके शरीर में बहुत से फोड़े निकल आये। दिनौंधी की भी कुछ शिकायत होने लगी अर्थात् दिन में सब कुछ धुँधला मालूम होने लगा। प्रदाह के कारण उसके मुँह से

लार बहने लगी। इससे वह रोगी बहुत ही परेशान हुआ, क्योंकि पहले उसे इस प्रकार के कष्ट नहीं हुए थे। किन्तु मैं जान गया कि ये सब साइलीशिया के ही परिणाम हैं। उसके अनन्तर मैंने उसे हिपर सल्फर दिया। उसके लिए साइलीशिया उपयोगी नहीं था और मैंने उसमें स्वप्नदोष का भी एक लक्षण पाया और मेरी इस नयी औषध से साइलीशिया के उपद्रव गायब हो गये और स्वप्नदोष भी रुक गया। केवल पुराने रोगों के लिए ही ऐसा नियम है, यदि लक्षणों का पूर्ण मेल हो तो चुनी हुई औषध रोगी के उपसर्गों का सफाया कर देती है। ऐसी स्थिति में रोगी के अन्य उपसर्ग धीमे हो जाते हैं, किन्तु औषध चुनने में गलती होने पर ऐसा नहीं होता। इसी कारण, जैसा मैंने पहले बताया है, रोगी और औषध के लक्षणों की तुलना कर लेनी चाहिए। यदि पहले की औषध से कुछ विशेष उपसर्ग उत्पन्न हो तो उन्हें शान्त करने के लिए चुनकर उपयोगी औषध देनी चाहिए। यदि वह औषध ठीक हो तो पहले के उपसर्गों को वह दबा देगी। किन्तु पुराने रोगों में औषध-निर्वाचन मे गलती हो जाने पर भी मूलरोग कुछ अंशों में घट जाय और ऐसे लक्षण भी प्रकट हों जिन्हें मूल औषध का परिणाम फल कह सकते हैं। कभी ऐसा भी हो सकता है कि रोगी में अपने पिता-माता के पुराने रोगों के उपसर्ग प्रकट होने लगें तो निर्वाचित औषध, अनेक समय लगने पर भी, रोगी को आराम दे सकती है। एक बार मेरे पास एक ४० वर्ष का रोगी आया, उसके यकृत में विकार आ गया था। मैंने पहले दिन ही उसे लाइकोपोडियम दिया। फल अनुकूल हुआ। मेरी औषध से वह विकार तो घट गया, किन्तु कुछ नये उपसर्ग दिखाई पड़े। उनका प्रतिकार करके मे लाइकोपोडियम से ही चिकित्सा चलाता रहा। इसी तरह मेरी चिकित्सा ६ सप्ताहों तक चलती रही, फलस्वरूप यकृत का विकार भी अच्छा हो गया। ६ सप्ताहों के बीत जाने पर एक दिन सन्ध्या समय रोगी को एकाएक आमाशय हो गया। आँव गिरते रहने से रोगी को चिन्ता होने लगी। उसने मुझे सूचित किया कि कई वर्ष पहले एक बार उसे ऐसा ही रोग हुआ था। सुनकर मैंने उसे कैलकेरिया की व्यवस्था दी जिससे वह

रोग शान्त हुआ, किन्तु यकृत का विकार आराम होने में और भी दो सालों का समय लगा।

औषध सेवन कराने के बाद रोगी के शरीर में कुछ नये उपसर्ग प्रकट होते हैं। इसे देख-सुन कर कुछ लोग मेरी निन्दा उड़ाने लगे और उनमें कुछ पुराने चिकित्सक भी थे जो होमियोपैथी के सिद्धान्त को अच्छी तरह जानते थे। किन्तु मैं कहता हूँ कि हैनिमैन के द्वारा आविष्कृत होमियोपैथी का यथार्थ सिद्धान्त वे लोग नहीं जानते। क्या औषधों से रोगियों को नहला देने से वे अच्छे हो जायेंगे? फिर भी वे अच्छे न हुए तो? सच्ची होमियो-पैथी के सिद्धान्त के अनुसार अति अल्प मात्रा में औषध देने पर भी कठिन से कठिन रोग अच्छे हो जाते हैं। प्रत्येक आठवें या पन्द्रहवें दिन वर्षों तक एक ही औषध देते रहने से क्या रोगी के स्वास्थ्य की उन्नति हो जायगी? एक ही औषध ७ या ६ सप्ताहों तक सेवन कराने पर रोगी के शरीर में उन्नति दिखाई पड़ सकती है। ऐसी स्थिति में बार-बार औषध बदलना अनावश्यक या कभी-कभी हानिकारक हो सकता है। मैंने अपनी इस पुस्तक में जिन नियमों का पालन करने के लिए लिखा है उनके अनुसार औषध की अल्प मात्रा ही दी जानी चाहिए। साधारण रोगों में उत्तम रूप से चुनी हुई औषध की गोलियों की एक मात्रा ही दी जाय, किन्तु जहाँ बड़ी मात्रा देने का निर्देश दिया गया है उसे छोड़ कर साधारण रोगों में एक मात्रा ही यथेष्ट है। इस पुस्तक में लिखित विषयों पर मनन करने से प्रतीत होगा कि हैनिमैन की शिक्षा ही ग्रहण करनी चाहिए। कुछ आधुनिक चिकित्सक रोगियों को रोग-क्लेश से मुक्त करने की ओर ध्यान न देकर दूसरों की चर्चा करने लगते हैं। यदि नवीन चिकित्सक इस पुस्तक में लिखित सिद्धान्तों को अच्छी तरह पढ़ें, समझें और रोगियों पर उनकी परीक्षा करें तो वे अपने व्यवसाय में सफल हो सकेंगे। फलस्वरूप डॉ० हैनिमैन के मत का संसार में प्रचार होगा।

—ग्रन्थकार

अध्याय—१

मानसिक तथा आत्मिक विकृति, उन्माद

(Mental and Psychical Derangement)

होमियोपैथी तरुण रोगों में जितनी सफल है पुराने, जटिल और असाध्य रोगों के लिए उतनी प्रशंसा नहीं पा सकी है। जहाँ मानसिक विकार पैतृक है, वहाँ इस चिकित्सा-पद्धति के नियम से उसे दूर करना बहुत ही कठिन है। मैंने इस प्रकार के अनेक रोगियों का इलाज किया है। सालों तक बहुत परिश्रम करने पर भी वैसे विकार को मैं दूर न कर सका, किन्तु इतना सम्भव हुआ कि मेरी चिकित्सा से ऐसे रोगी कुछ दिनों तक अच्छे रहे, किन्तु कभी-कभी पागलपन का दौरा हो ही जाता था। एक २६ वर्ष का युवक मेरे पास आया। उसकी बुद्धि बहुत तेज थी और विज्ञानशास्त्र को भी वह अच्छी तरह पढ़ चुका था। उसकी माता और चाचा दोनों ही अच्छे बुद्धिमान थे, किन्तु समय-समय पर उन पर भी पागलपन सवार हो जाता था। उसकी चिकित्सा करते हुए मैंने जान लिया कि वह पागल है। एक दिन वह मेरे ही सामने अण्ड-वण्ड बकने लगा, जिससे मेरी धारणा दृढ़ हो गयी। मेरे पास आने के पूर्व एलोपैथ चिकित्सकों ने उसके मानसिक विकार को दबा दिया था। मेरे पास आने के पहले दो वर्षों तक वह निरन्तर मौन रहा, कभी प्रार्थना करता कभी इकटक किसी ओर देखता रहता और कभी शांति से बैठा रहता था। उसक चेहरा एकदम मलिन हो गया था। उसके घर के लोगों ने उसके खाने-पीने और सोने आदि कार्यों को नियमित कर दिया था, किन्तु उसके कपड़े-लत्ते अस्त-व्यस्त थे। जब उस घर के दूसरे लोग अच्छे वस्त्र पहनते तो वह भी कुछ संयत हो जाता था। कभी तो वह दूसरों के साथ एक मेज पर बैठ कर खाता था, कभी खाली दृष्टि से इकटक देखता रहता था। अपने कमरे में हाथ जोड़कर टहलता रहता था। किसी के पूछने पर वह हाँ या न कह देता था। मैंने पहले

ही बताया है कि वह लगातार दो वर्षों से पागल की तरह बर्ताव करता था। इग्नेशिया, वेरेट्रम, पल्स, फास एसि और कॉस्टिक के द्वारा उसकी हालत में कुछ सुधार हुआ। उसका विकृत चेहरा देखकर तथा उसके हृदय में विशेष कष्ट का अनुभव कर मैंने उसे ऊपर लिखित दो अन्तिम औषधें दी थीं। पागल की तरह नाक-भौं सिकोड़ना और बालों का खड़ा होना आदि लक्षण देखकर कोई समझ नहीं सकता है कि वह पागल है। वह रसायन विद्या, भौतिक विद्या, वनस्पतिशास्त्र की चर्चा विद्वानों से करता था। गणित के कठिन-से-कठिन सवालों को हल करता और उसमें वह आनन्द पाता, क्योंकि गणित से उसकी बहुत दिलचस्पी थी। अपने बगीचे के पेड़-पौधों और साग-सब्जियों की देख-भाल करने में वह बहुत आनन्द पाता था। कभी वह अभ्यास करने या अन्तर में सुख पाने के लिए पियानो बजाने लगता, किन्तु स्त्रियों से वह सदा ही परहेज रखता था। यदि कोई विवाह की बात उठाता तो वह एकदम बिगड़ जाता था और वहाँ से हटकर एकान्त में जा छिप जाता था। सम्भवतः इसी स्त्री-भय के कारण ही उसे हस्तमैथुन की बुरी आदत पड़ गयी थी। उन्हीं कारणों के बारे में विचार करके मैंने सल्फर, लाइकोपोडियम और इग्नेशिया लम्बी अवधि के बाद दिया। छः महीनों तक इसी तरह इलाज करने से जो सुफल मिला, उसे देखकर उसके परिवार के लोग बहुत प्रसन्न हुए, किन्तु किसी अज्ञात कारण से उस रोगी को कामोन्माद सताने लगा। किसी स्त्री को देखते ही वह उसे पकड़ने के लिए दौड़ता, ऐसी हरकतों का समाचार पाकर मैं एक दिन फिर से उसे देखने गया। मैंने सारी बातें जानकर उसके लिए हायो-सायेमस ३० की व्यवस्था दी। कुछ दिनों के सेवन से उसे विशेष लाभ हुआ, कामोन्माद शांत हो गया, किन्तु कुछ दिनों के बाद उसमें काम-सम्बन्धी प्रलाप बकने की धुन सवार हुई। समाचार पाकर मैंने उसी हायोसायेमस ३० की कुछ गोलियाँ जल में मिलाकर दिया और १५ दिनों तक सुबह, शाम १।१ चम्मच पिलाने के लिए कह दिया, किन्तु इससे भी काम-सम्बन्धी हरकतें बनी रहीं। १५ दिनों के बाद लक्षणों का मिलान कर मैंने फास्फोरस दिया। ८ दिनों तक सेवन करते रहने से उसके अनेक लक्षण घट गये। उसके बाद मैंने

सल्फर ३० दिया। ३ मास के बाद उसकी अवस्था पहले की तरह हो गयी और ६ मास तक वह बहुत ही अच्छा रहा, विकार का कोई भी लक्षण नहीं था। ६ महीने समाप्त होने पर रोगी में एकाएक पागलपन प्रकट हुआ, बिछौना छोड़कर उठने के लिए कहने पर उसने इनकार किया। बहुत कुछ कहने-सुनने पर उसने बताया कि मैं बिछौने में पड़ा रहना ही पसन्द करता हूँ। उस समय वह बाहर से बिलकुल शान्त प्रतीत हुआ, किन्तु ज्यों ही उसे उठने के लिए कहा गया, तो वह एकदम बिगड़ पड़ा। उसकी भौंहें चढ़ गयीं और आँखों के गोले गढ़ों में घूमने लगे। एक बार तो उसने अपनी सेविका को मुक्का मार दिया। मेरे साथ बातचीत करते समय वह मेरा बहुत ही सम्मान करता था, किन्तु प्रश्न पूछने पर वह बिछौने की चादर से अपना मुँह ढँक लेता मानो अपने किये कामों के लिए वह लज्जित हो गया है। कभी-कभी मैंने देखा कि वह अपनी कल्पना में डूबा हुआ है या कभी अपनी सेविका की ओर क्रोध की दृष्टि से देख रहा है, जैसे कि कोई नया बहाना खोज रहा हो। ऐसी अवस्था के साथ कब्जियत की शिकायत की बात सुनकर मैंने नक्स वाम ३० शक्ति की कुछ गोलियाँ दीं। साधारणतया उस ग्रामीण रोगी को देखने के लिए मैं आठवें दिन जाया करता था, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर इससे अधिक बार भी उस रोगी को देखने के लिए जाया करता था। उस दिन उस सेविका ने बताया कि इस नई दवा के सेवन से रोगी तीसरे दिन बिछौने छोड़ कर बाहर निकल आया और अपने किये कुकर्मों के लिए क्षमा की याचना करने लगा। किन्तु शान्त होने पर भी घर के लोग इसे दृष्टि के बाहर नहीं जाने देते थे। इस नक्स वोमिका के लगातार सेवन से रोगी अधिक से अधिक शान्त होने लगा, किन्तु उसकी दृष्टि अभी भी अस्थिर थी। बहुत दिनों के अनन्तर उस पर जो फिर से पागलपन का अक्रमण हुआ, उससे वह एकदम बदल गया। वह मूर्ख की तरह बर्ताव करने लगा। कुछ घण्टों तक पूर्णतया शान्त रहने के बाद वह राजाओं, बादशाहों को पत्र लिखने लगा, और अपने परिचित सभी व्यक्तियों को गिरफ्तार करने के लिए वारण्ट लिखने लगा। वह

अक्सर मेरे साथ वातचीत करके अपने कार्यों को उचित सिद्ध करने के लिए अनेक प्रकार की युक्तियां देता था और जिन लोगों पर उसकी घृणा है उन्हें सजा देना उचित है, ऐसी बातें करता था, किन्तु उन दिनों उसमें काम की उत्तेजना का चिह्न मात्र भी न था। वह इन दिनों शान्ति से सोता, भरपेट खाता और अच्छी तरह चल-फिर लेता था। लगभग दो मासों तक वह अच्छा ही रहा। इस बीच में मैं उसे वेरेट्रम, हायोसामेयस कूप्रम आदि औषधियों का सेवन कराता रहा। अब तो वह बिलकुल अच्छा हो गया। एक वर्ष तक उसे इस रोग का एक बार भी दौरा नहीं हुआ, किन्तु साल भर बाद वह फिर मूर्ख-सा व्यवहार करने लगा। घण्टों तक वह शान्त रहता, किन्तु एकाएक अनाप-शनाप बातें करने लगा, मानो उस पर भूत सवार हुआ है। गरम मौसम होने पर भी वह अपने सभी वस्त्रों को पहन लेता, चेहरे और कानों तक टोपी पहनता। बगीचे में लम्बा कदम रखते हुए घूमता-फिरता और कभी जिसे सामने पाता उसी को गाली देता था कभी पियानो बजाने बैठ जाता या गदहे के स्वर से गाता था। इस पागलपन के दौरे के समय लोगों को मालूम होता कि वह अपने मन की शक्ति से उसे दवा रहा है। एक बार १८३८ ई० में मैं भी टायफायड ज्वर से आक्रान्त हुआ था। ज्वर बहुत प्रबल था, ऐसी अवस्था में साधारण रोगी प्रलाप बकता है, किन्तु मैंने अपनी मानसिक शक्ति से उसे दबा लिया, नहीं तो प्रलाप बढने से बेहोशी आ जाती। उस समय मुझे डर था कि मेरी अवस्था और बिगड़ी तो एलोपैथ डाक्टर के हाथ में न पड़ जाऊँ, उस डर ने मेरी सकल्प-शक्ति को उत्तेजित कर दिया था। उस समय मैं टौलोस के एक होटल में ठहरा हुआ था और वह स्थान भी मेरा परिचित नहीं था। मैं अपनी दवा से अच्छा होकर घर लौट आया था।

मेरा वह रोगी कभी-कभी उद्दण्ड पागल हो जाने लगा। जब वह अपने पागलपन के बारे में सोचता और अपने मन को शिथिल कर देता तो तेजी से उस भाव का दौरा होने लगता था। मैं उसके कमरे के बाहर खड़ा रहकर दरवाजे की दरार में से उसे देखने लगा। फिर एकाएक भारी कदम

रखते हुए भीतर चला गया। मेरे नमस्कार करते ही उसकी कल्पनायें दब गयीं। मुझे बैठने के लिए कह कर वह संगीत के विषय में गम्भीर भाव से बातें करने लगा, परन्तु थोड़े समय के अनन्तर उस पर पागलपन सवार हो गया। वह अपनी धुन में डूबा हुआ बैठा रहा। मेरी बात भी उसे याद न रही। इस प्रकार पागलपन के दौरे होते रहने से मैं विशेष चिन्तित हो पड़ा। ८ सप्ताहों तक मैं पारी-पारी से कई औषधें उसे सेवन कराता चला किन्तु उसका रोग अच्छा नहीं हुआ। एक दूसरे दिन जाकर मैंने देखा कि वह बहुत ही उत्तेजना से गाली बक रहा है और कभी खिल-खिलाकर हँस भी पड़ता था। निराश होने पर भी मैंने बहुत सोच-विचार कर उसे क्रोकस ३० की ३ गोलियाँ देकर सम्बन्धियों से कह दिया कि आधे प्याले जल में घोल कर सुबह-शाम एक-एक चम्मच पिलाते जायँ। मैं ८ दिनों के बाद फिर से उस रोगी को देखने गया। मैंने देखा कि वह बहुत ही प्रसन्न और स्वस्थ है। इस नयी दवा के लेने के बाद उसे फिर कभी नया दौरा नहीं हुआ। वही औषध चलती रही। १५ दिनों में वह बहुत कुछ सुधर गया और उसके स्वास्थ्य में कभी गड़बड़ी नहीं हुई। १५ मासों के बाद मुझे खबर मिली कि वह एकदम स्वस्थ होकर अपने चाचा के साथ परदेश चला गया। दो सालों के बाद मुझे खबर मिली कि उसे विदेश में कई बार पागलपन का दौरा हुआ। अन्तिम बार वह छः मासों तक चलता रहा, इस कारण नहीं कहा जा सकता कि वह उस कठिन रोग से एकदम मुक्त हो गया। इसी कारण मैं पहले लिख चुका हूँ कि पैतृक पागलपन कभी एकदम अच्छा नहीं होता, औषधों के प्रभाव से वह कुछ अवधि तक दबा रहता है।

उस रोगी की चिकित्सा के बारे में जो कुछ कहा जाय, थोड़ा है। यदि इस पुस्तक में अधिक जगह मिलती तो मैं इस ढग के दर्जनों रोगियों का विवरण लिख देता। निष्कर्ष यह है कि होमियोपैथिक चिकित्सक ऐसे पैतृक उन्माद रोगियों की चिकित्सा करते हुए घर के लोगों को पूर्ण आरोग्य होने की आशा न दें, वल्कि उनसे पहले ही कह रखें कि रोगी में रोग का दौरा होते समय सब लोग मुकाविला करने के लिए सावधान रहें। वैसे उन्माद रोगियों की चिकित्सा कृत्रिम औषधों से नहीं हो सकती। उनके लिए चिकित्सक औषधों की शक्ति से कुछ समय तक दौरे को दवा रख सकते हैं। मैंने जिस रोगी का विवरण ऊपर लिखा है, वह सौभाग्यशाली कहा जा सकता है। ऐसे भी रोगी दिखाई पड़े हैं जिन्हे २ सालों तक पागलपन दवा रहने पर भी किसी उत्तेजक कारणवश वह एकाएक भड़क उठा। केवल होमियो-पैथिक चिकित्सा ही ऐसे पागलपन के लिए कुछ मात्रा में सफल हो सकती है; वह भी यदि किसी आकस्मिक कारण से तरुण पागलपन हो।

इस प्रकार के पागलपन या उन्माद की उत्तम सफल चिकित्सा होमियो-पैथिक औषधों से ही हो सकती है। इसका फल शीघ्र और स्थायी होता है। इसके लिए पागलपन, उन्माद, मृगी, विषाद, प्रलाप, चिड़चिड़ापन आदि बहुत से नाम दिये जाते हैं, मस्तिष्क में चोट लगना, लू लगना, शोक, दुःख, चिन्ता आदि कारण हैं। इस अवस्था से रोगी को आराम करने के लिए आवश्यक है—१. चिकित्सक को अपनी औषधों का पूर्ण ज्ञान रहना चाहिए। किस औषध का कौन मुख्य निर्देशक लक्षण है, उसे भी याद रखना आवश्यक है। २. किसी भी औषध की वड़ी मात्रा कभी नहीं देनी चाहिए, औषध के चुनने में गलती हो तो रोग को आराम करना कठिन हो जायगा, जो लक्षण अन्य रोगों मे भो हैं उनका प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए, इस प्रकार के कठिन रोग को अच्छा करने के लिए औषध की अल्प मात्रा देने का अभ्यास रखना आवश्यक है। ३. चिकित्सक को रोग वृद्धि के कारणों पर नजर रखनी चाहिए; घर वालों को सावधान कर देना चाहिए कि ऐसा कोई वर्ताव न करें जिससे रोगी उत्तेजित हो। रोग के साथ

होनेवाले अन्य शारीरिक कष्टों का पृथक् उपचार होना आवश्यक है। ४. रोगी के सभी प्रकार के उपसर्गों को देखकर सोच-विचार के साथ जो औषध रोगी को सेवन करायी जाय उसके फल देखने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। निर्धारित अवधि तक देखकर औषध बदलनी चाहिए।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि औषध के लक्षण केवल शरीर और मन में ही प्रकट नहीं होते, स्वप्न में भी कोई-कोई लक्षण प्रतीत होते हैं। खास-खास रोगियों के कुछ लक्षण स्वप्न से भी मुझे मिले हैं और उन लक्षणों को शरीर या मन में मैंने कभी प्रकट होते नहीं देखा। उस स्थिति में उन स्वाप्निक लक्षणों के आधार पर चिकित्सा करके मैं सफलता प्राप्त कर सका हूँ। जब रोगी स्वप्न में शव और मृतक व्यक्ति को देखता है तो साइलीशिया ही उस अवस्था के लिए उत्तम औषध है। एक युवती स्त्री अपने प्रेमी की मृत्यु के कारण शोक से पागल हो गयी थी। बीच-बीच में मृगी के कारण वह अचेत पड़ जाती थी। उसके लिए मैंने साइलीशिया की व्यवस्था दी। उससे पूछने पर मुझे मालूम हुआ था कि स्वप्न में उसने एक दिन अपने प्रेमी का शव देखा था। इसी एक लक्षण ने मुझे उसे साइलीशिया देने को प्रेरित किया था और इस औषध से वह रोगमुक्त हो गयी थी।

अफसोस की बात है कि डा० रीकर्ट ने अपनी पुस्तक में पागलपन के जिन रोगियों का विवरण प्रकाशित किया है, उनमें रोगी अपने रोग के यथार्थ लक्षण नहीं बता सके थे। फलस्वरूप ठीक लक्षण के अनुसार औषध नहीं चुनी गयी थी, जिससे रोगियों को कोई लाभ नहीं हुआ और उस पुस्तक में ऐसे अनेक लक्षण लिखे गये हैं, जिनका रोगी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था। अगर उन लक्षणों से औषध चुन कर कोई चिकित्सक सालों तक पागलपन का इलाज न करे तो कोई सुफल नहीं पा सकता, क्योंकि १. स्वभाव से ही वे लक्षण अपूर्ण थे, २. औषध चुनते समय आनुमानिक लक्षणों पर उनका सिद्धान्त आधारित था। अब मैं मानसिक विशृंखला के जो रोगी मेरे हाथ में आये थे, चिकित्सा के दौरान में जो-जो सुफल मुझे प्राप्त हुए थे उनका संक्षेप में विवरण मैं यहाँ देता हूँ।

क. विषण्णता के विभिन्न रूप
(Forms of Melancholia)

१—साधारण विषाद (General Melancholia)—हृदय में शोक आदि की अधिक चोट लगने से मन में विषाद छा जाता है। ऐसी अवस्था में एक ही विषय का चिन्तन करते रहने से मनुष्य पागल-सा हो जाता है। ऐसे रोगियों की चिकित्सा में मुझे फास्फोरिक एसिड, इग्नेशिया, पल्सेटिला, सीपिया, रस टाक्स, आरम, कास्टिकम, लैकेसिक, आर्सेनिक, ग्रैफाइटिस और नेट्रम म्यूर से अधिक सफलता मिली है। भयकर विषाद की अवस्था यदि पारे के दुरुपयोग से हुई हो तो कभी-कभी हिपर से वह आराम हुई है। किन्तु यदि भयकर विषाद की अवस्था हो जाय और रोगी यह समझे कि शारीरिक और मानसिक अत्याचारों से वह मर जायगा तो आराम से वह बहुत ही शीघ्र अच्छा हो जायगा। ऐसे क्षेत्रों में जब तक पारे का दोष शरीर में मौजूद रहता है, तब तक मैं इसकी दूसरी शक्ति का विचूर्ण हर तीसरे दिन आधा ग्रेन की मात्रा में दिया करता हूँ और उसके बाद आरम ३० से वह एकदम अच्छा हो जाता है। हाल के शोक, दुःख और चिन्ता के कारण मन में बहुत अधिक विषण्णता छा गयी हो तो इग्नेशिया और फास्फोरिक एसिड उसके उपशम के लिए काफी है। यदि मन में उस प्रकार की विषण्णता का भाव बहुत दिनों से चलता आ रहा हो तो कास्टिकम, लैकेसिस, आर्सेनिकम और ग्रैफाइटिस उत्तम औषधें हैं और यदि ऐसे रोगी को कठिन मानसिक और शारीरिक क्लेश हो तो आर्सेनिकम, वेरेट्रम एल्बम और पल्स से विशेष उपकार होगा और यदि रोगी का चेहरा एकदम पीला हो गया हो, जैसा कि प्रायः हुआ करता है तो बेलाडोना, सीपिया और मर्क्यूरियस से उपकार होगा और यदि रोगी का चेहरा लाल हो जाय और वह अकेला रहना चाहता हो तो इग्नेशिया, कल्केरिया और नक्स वामिका देने से लाभ होगा। यदि रोगी बहुत अल्पभाषी हो या बहुत जिद्दी और मौन स्वभाव का हो तो इग्नेशिया,

फास्फोरिक एसिड और वेरेट्रम एल्बम से अधिक लाभ होगा। यदि मृत्यु-भय से रोगी अत्यन्त विषण्ण हो पड़ा हो और एकोनाइट से लाभ न हुआ हो तो प्लेटिनम और आर्सेनिकम से विशेष उपकार होगा। यदि रोगी बहुत रोने वाला हो तो पल्सेटिला, प्लैटिना, नेट्रम म्यूर, बेलेडोना और सल्फर उपयोगी हैं। यदि रोगी अपने आरोग्य के विषय मे हताश हो गया हो तो वेरेट्रम एल्बम से लाभ होगा। यदि रोगी में ऐसा डर हो कि मैं अधिक दिनों तक जीवित नही रह सकूँगा तो ब्रायोनिया, केल्केरिया और नक्स वामिका देना उचित होगा।

२—चित्तोन्माद के कारण मानसिक विश्रृंखला—इस प्रकार की मन की अवस्था के लिए साधारणतया नक्स वामिका, सल्फर, केल्केरिया—३ और कोनियम उत्तम औषधें हैं। यदि उस रोग का कारण विशेषतया हस्तमैथुन हो या उससे विपरीत कुछ मनुष्यों में कठोर संयम या स्त्रियों से भय हो तो भी उन्हीं औषधों से लाभ होगा। यदि उस रोग के साथ दुर्भाग्य या दुःख की शंका रहे तो केल्केरिया, कूप्रम या सल्फर से उपकार होगा किन्तु यदि उपसर्ग अन्य रूप में हो तो ब्रायोनिया, पल्सेटिला और रस लाभदायक प्रमाणित होंगे।

३. धार्मिक उन्माद (Religious Mania)—यदि रोगी अपने पाप के कारण आत्मग्लानि होने पर अपने शरीर को बहुत कष्ट दे तो सल्फर और वेरेट्रम एल्बम से विशेष उपकार होगा, किन्तु मुझे ऐसी अवस्था में पल्सेटिला, लैकेसिस, कूप्रम और आर्सेनिकम से विशेष लाभ हुआ है। यदि ऐसा रोगी हर समय हाथ जोड़कर ईश्वर से अपने किये हुए पापों के लिए क्षमायाचना करे तो पल्स या आरस से कभी-कभी उपकार मिला है और कभी वेरेट्रम एल्बम से लाभ हुआ है। यदि वह अपनी मुक्ति के लिए हताश हो गया हो तो सल्फर सर्वोत्कृष्ट औषधि होगी और उसके बाद लैकेसिस, आर्सेनिकम, लाइकोपोडियम और वेरेट्रम एल्बम उत्तम औषधें होंगी। यदि रोगी हर समय धार्मिक बातें

क्रिया करे तो वेरेट्रम एल्बम उसे सहायता देगा। मन की ऐसी अवस्था में रोगी यदि बहुत उत्तेजित हो गया हो तो वेरेट्रम एल्बम ही यथेष्ट है। और कभी-कभी ऐसी स्थिति में बेलेडोना,हायोसायेमस और स्ट्रेमोनियम से अधिक लाभ होगा।

४. आत्महत्या करने का उन्माद (Suicide of Melancholia)—रोगी के मन की अत्यन्त विक्षिप्त अवस्था में आत्महत्या करने की प्रवृत्ति होती है। और ऐसी परिस्थिति अत्यन्त तीव्र भीतरी प्रेरणा से ही उत्पन्न होती है, जिससे मनुष्य आत्महत्या कर लेता है। इस अन्तिम अवस्था के लिए आर्सेनिकम ही अच्छी दवा है, कभी-कभी हिपर से भी लाभ होता है, खासकर यदि रोगी मानसिक शोक के कारण आत्महत्या करने के लिए उतारू हो जाता है। जो मनुष्य अपने को असुखी समझता है और जीवन व्यर्थ मालूम होता है तथा उन्माद के कारण आत्महत्या करने में प्रवृत्त होता है तो आरम, पल्सेटिला, वेरेट्रम एल्बम या हेलिबोरस अधिकांश क्षेत्रों में लाभदायक प्रमाणित होंगे। ऐसे विषण्ण-चित्त रोगियों के लिए नक्स वामिका ही लाभप्रद है, कदाचित् कैप्सिकम या कार्बोवेज उपकारक प्रमाणित हो सकता है।

५. कामोत्तेजक उन्माद (Erotic Melancholia)—यदि कोई मनुष्य प्रेम में हताश हो गया हो और वह पागल की तरह निरन्तर घूमता-फिरता रहे तो फास्फोरिक एसिड, इग्नेशिया और हायोसायेमस उसके लिए उत्तम औषधि हैं खासकर यदि ईर्ष्या के कारण वैसा उन्माद हो तो ये ही तीन औषधें लाभदायक सिद्ध होंगी। यदि उन्माद पागलपन के बकवास में परिणत हो गया हो तो फास्फोरिक ही निःसन्देह प्रथम औषध है, उसके बाद स्ट्रेमोनियम और वेरेट्रम एल्बम आते हैं। एक नादान युवती लड़की प्रेम में हताश होकर पागल की अवस्था में पहुँच गयी और दिन-रात बक बक करती थी। इसके अतिरिक्त वह लड़की ऐसा अश्लील कार्य करने लगी जिस प्रकार का आचरण वह कभी नहीं करती थी और

हायोसायेमस, स्ट्रैमोनियम और वेरेट्रम एल्बम से भी कोई उपकार न मिला हो तो केवल फास्फोरस के सेवन से वह एकदम रोगमुक्त हो गयी थी। उसमें हँसने और रोने के लक्षण भी थे, जिन्हें देखकर मैंने उसी औषधि की व्यवस्था दी थी।

६. घर जाने की उतावली (Home sickness)—परदेश में गया हुआ आदमी अपने घर के लोगों की चिन्ता से व्याकुल हो गया हो और चिन्ता के कारण ऐसी उत्तेजना हो कि उसके दोनों गाल अत्यन्त लाल हो जायँ तो ऐसे रोगी के लिए डा० हैनिमैन ने कैप्सिकम की सिफारिश की थी। इसकी सत्यता के बारे में हर एक चिकित्सक थोड़ा प्रयत्न करने से ही अपना सिद्धान्त निश्चित कर सकता है। ऐसे रोगियों के लिए मैं इग्नेशिया और फास्फोरिक एसिड की व्यवस्था दिया करता हूँ, जिनसे अक्सर मुझे लाभ मिला है, मर्क्यूरियस भी इसी तरह की सफल औषधि है। जो रोगी केवल घर जाने के लिए ही आतुर न हो, बल्कि परदेश का निवास-स्थान बराबर के लिए छोड़ देना चाहे तो मेरे हाथ रोगी इसी औषधि से अच्छे हो गये हैं।

ख. उन्माद और एक ही विषय का चिन्तन

(Mania and Monomania)

१. क्रोध से उन्माद (Rage)—ऐसी अवस्था में बेलाडोना, हायोसायेमस, स्ट्रैमोनिया और ओपियम औषधें होने पर भी एकोनाइट, कूप्रम, मर्क्यूरियस और यहाँ तक कि क्रोकस और लाइकोपोडियम भी मेरे हाथ में उपयोगी रोगियों के लिए उपकारी प्रमाणित हुए हैं। यदि ऐसा रोगी आतंक से भूत-प्रेत देखता हो जिससे भय के कारण वह परेशान हो जाय तो अधिकांश क्षेत्रों में ओपियम या स्ट्रैमोनियम से विशेष लाभ होता है, खासकर जहाँ भूत-प्रेत जमीन के भीतर से उठते हुए दिखाई पड़ते हैं या अगल-बगल से रोगियों को डराते हैं। यदि रोगी दाँतों से काटने, आघात करने या चीजों को फाड़ डालने लगें तो बेलेडोना या कूप्रम की आवश्यकता होगी।

यदि रोगी दूसरों को बिना कारण हानि पहुँचावें, शरारत या चालाकी करने लगे तो बेलेडोना या हायोसायेमस अथवा नक्स वामिका या लैकेसिस देना अच्छा होगा। यदि वह दूसरों से ईर्ष्या करने लगे और वह पागल की तरह काम करने लगे तो हायोसायेमस और पल्स के साथ नक्स वामिका देने से अधिक लाभ होगा। यदि रोगी निर्लज्ज की तरह अपने गुप्तांग खोल दे तो हायोसायेमस या स्ट्रेमोनियम, फास्फोरस की अपेक्षा अधिक उपयोगी होगा। यदि रोगी हर समय छिपा रहना चाहे तो बेलेडोना और स्ट्रेमोनियम से उपकार होगा और कभी-कभी नक्स वामिका, एकोनाइट, हायोसायेमस और कूप्रम उपयोगी सिद्ध होंगे। यदि रोगी सौगन्ध खाय और आस-पास के लोगों को बहुत धमकावे तो मैं एनाकार्डियम को असफल पाने पर लाइको-पोडियम देकर अधिक उपकार पाता हूँ। इनसे तुरन्त लाभ होता है। जो रोगी निरन्तर बक-बक करता रहे तो उसके लिए मैं स्ट्रेमोनियम, वेरेट्रम एल्बम, हायोसायेमस और कूप्रम की व्यवस्था देता हूँ। यदि रोगी अत्यन्त कामासक्त हो तो बेलेडोना, स्ट्रेमोनियम, वेरेट्रम एल्बम देना चाहिए। अधिक हँसी के लिए बेलेडोना, हायोसायेमस और वेरेट्रम एल्बम आवश्यक हैं। यदि रोगी मुख से सीटी बजाये, निरन्तर संगीत अलापे या मुँह बनाये या उछल-कूद मचाये तो क्रोकस, कूप्रम, हायोसायेमस, मर्क्यूरियस, स्ट्रेमोनि-यम, वेरेट्रम एल्बम का निर्देश दिया जाता है और यदि वह छूरा आदि के द्वारा लोगों पर आक्रमण करे तो लैकेसिस, हिपर और आर्सेनिक उत्तम औषधें हैं। यदि रोगी लोगों के मुँह पर थूके तो बेलेडोना, मर्क्यूरियस और कूप्रम लाभदायक औषधें हैं। यदि रोगी अपने ही मल-मूत्र खाने-पीने लगे तो मर्क्यूरियस उसे आराम करेगा।

२. निरन्तर एक ही विषय के चिन्तन का उन्माद (Monomania)— मुझे जितने रोगियों की चिकित्सा करनी पड़ी है, विशेषतया उनमें सभी ७ से १० वर्षों की पागल लड़कियाँ थीं। एक लड़की ने अत्यन्त पागलपन के कारण दो बार हत्या करने की चेष्टा की, पहले

अपनी सेविका को और बाद में अपने छोटे भाई को छूरा मारने की चेष्टा की थी। मैंने उसे पहले आर्सेनिकम और बाद में लैकेसिस दिया था और उसी से वह अच्छी हो गयी। और इसी तरह की अन्य एक रोगिणी मे वे दोनों औषधें सफल नहीं हुईं। वहाँ हिपर और प्लेटिना से लाभ हुआ था। एक पुरुष में ऐसी सनक सवार हुई कि लोगों की हत्या करे, वहाँ लैकेसिस और हिपर से विशेष उपकार हुआ। तीन बच्चो में चोरी करने का उन्माद लक्षण पाया गया था, वहाँ मैंने सल्फर और पल्सेटिला से उन्हें आराम किया था। दूसरो के घर मे आग लगाने के पागलपन में हिपर और बेलेडोना से विशेष लाभ हुआ था।

३. स्त्रियों और पुरुषों का कामोन्माद (Nymphomania and Satyriasis) – पुरुषो के बारे में मुझे फास्फोरस, नक्स वामिका और कैन्थरिस से उत्तम फल मिला है उसी तरह मर्क्यूरियस और सल्फर से भी, स्त्रियो के सम्बन्ध में हायोसायेमस, प्लैटिनम, वेरेट्रम एल्बम से विशेष उपकार पाया है, किसी-किसी क्षेत्र में फास्फोरस और बेलेडोना से भी लाभ मिला था। यदि इस प्रकार के उन्माद के साथ सुशीलता या निर्लज्जता का लक्षण मिले और हायोसायेमस तथा वेरेट्रम एल्बम से कोई लाभ न हुआ हो तो फास्फोरस आश्चर्यकारक फल दिखाता है।

४. कम्प-प्रलाप (Delirium Tremens)—यदि ऐसा उन्माद चरम सीमा तक पहुँच जाय तो बेलेडोना ही मेरी प्रथम औषध है। यदि उस उन्माद के साथ बेहोशी का दौरा पारी-पारी से हो तो मैं ओपियम को अच्छा समझता हूँ। और यदि उसके साथ भूत-प्रेतों का स्वप्न भी मिला रहे या शत्रु मारने के लिए आ रहा है या यदि भय के स्वप्न हों या खूँखार जानवर काटने के लिए अपनी ओर घूर रहा हो तो मैं स्ट्रेमोनियम को ही उत्तम औषध मानता हूँ। यदि ऐसे भयकर उन्माद के साथ शरीर में गर्मी हो तो मैं एकोनाइट से चिकित्सा शुरू करता हूँ, यदि इस औषध को रोग के आरम्भ में ही दिया जाय तो सभी कष्ट दूर

हो जाते हैं। सदा ही ये मेरी प्रथम औषधियाँ हैं, इनके सेवन के बाद भी यदि रोग पूर्णतया आराम न हो तो मैं नक्स वामिका देना पसन्द करता हूँ। यदि रोगी सड़कों पर टहलना चाहता हो, यदि मिचली या कब्जियत की शिकायत रहे। यदि रोगी दुःख-कष्ट से परेशान होकर इधर से उधर दौड़ता फिरे और अन्त में आत्महत्या करने पर उतारू हो तो आर्सेनिकम और यदि रोगी निरन्तर आग या चूहों के बारे में बोलता रहे और भूत-प्रेतों का डर शाम को और अँधेरे में हो तो कैल्केरिया, यदि मिचली को घटाने के लिए नक्स वामिका असफल रहे तो सल्फर और यदि निरन्तर हाथ काँपते रहे तो आर्सेनिकम उत्तम औषधें हैं। यदि आक्रमण बहुत तेज न हो तो मैं सल्फर और नक्स वामिका से चिकित्सा आरम्भ करता हूँ और उसके बाद कैल्केरिया देता हूँ। इस प्रकार के सभी उन्माद रोगों में पूर्वोक्त उन्माद रोगों की तरह मैं कभी ३० शक्ति की २ गोलियों से अधिक नहीं देता हूँ और यदि आवश्यक हो तो दोबारा भी वही औषध देता हूँ। ऐसी चिकित्सा से मेरे हाथ के रोगी बहुत शीघ्र अच्छे हो जाते हैं (ओपियम को अक्सर बड़ी मात्रा में देता हूँ)। जिन रोगियों में ओपियम से कोई फल न हो, वहाँ ब्रोमाइड अव पोटाशियम से प्रायः लाभ मिलता है। ऐसे भी रोगी मुझे मिले हैं, जहाँ कैप्सिकम से सहायता मिली है। इस औषध को भी बड़ी मात्रा में देना होता है (H.)।

ग. बुद्धिभ्रम के अनेक रूप

इस प्रकार की मानसिक विशृङ्खला बहुत व्यापक और अनेक प्रकार की है, जिनका वर्णन करना एकदम असम्भव है। इस प्रकार के पागलपन के लिए मैं केवल उपयोगी लक्षण देखकर औषधियों की व्यवस्था करता हूँ।

१. एक ही विषय का निरन्तर चिन्तन (Fixed Ideas Generally)—ऐसी स्थिति में इग्नेशिया और साइलीशिया उत्तम औषधें हैं। यदि रोगी पूर्व अपमान को न भूल सके तो इग्नेशिया, सल्फर और नेट्रम म्यूर अच्छी औषधें हैं। रोगिणी ऐसी कल्पना करे कि वह बहुत से

जेवर और उत्तम पोशाक पहने हुई है तो सल्फर ही इस प्रकार की कल्पना में अच्छी दवा है। रोगी चारों ओर पिन और सूइयाँ देखता है, तो साइलिशिया। रोगी ऐसा सोचता है कि वह अपराधी है तो कूप्रम, मर्क्युरियम और बेलेडोना अच्छी है। अपनी मुक्ति होने के विषय में रोगी एकदम निराश हो जाय तो सल्फर, पल्सेटिला, लैकेसिस और इग्नेशिया उत्तम है। अपनी जीविका के विषय में यथेष्ट सहायता मिलने की निराशा के लिए केल्केरिया, ब्रायोनिया और नक्स वामिका लाभदायक हैं। यदि रोगी मृत्यु को आसन्न समझे तो एकोनाइट। रोगी ऐसी कल्पना करे कि उसके चारों ओर मृत मनुष्य हैं तो साइलीशिया उत्तम दवा है।

२. ऐसी कल्पना मानो अपने चारो ओर मुर्दे और कंकाल है (Visions and Hallucinations of Corpse and Skeletons.) तो साइलीशिया, बेलेडोना, आर्सेनिकम और ओपियम, यदि चारों ओर भूत-प्रेत या राक्षस प्रतीत हों तो बेलेडोना, आर्सेनिकम, ओपियम, कूप्रम, प्लैटिनम यदि चूहों और मूसों के झुण्ड दिखाई पड़ें तो आर्सेनिकम और केल्केरिया, और यदि कीड़े-मकोड़े और जूँ दिखाई पड़ें तो आर्सेनिकम नक्स वामिका, यदि सभी चीजें बड़ी मालूम हों तो हायोसायेमस और यदि छोटी मालूम हों तो प्लेटिना उपयोगी औषधें हैं।

३. चोरो के भय की कल्पना (Fear of Thieves)—आर्सेनिकम, साइलीशिया, मर्क्यूरियस, लैकेसिस, भूत का भय हो तो पल्सेटिला, सल्फर, कभी-कभी ड्रोसेरा भी, लोग मुझे विष पिला देंगे, ऐसा भय होने पर हायोसायेमस, रस, शत्रु पीछा कर रहा है, ऐसी कल्पना हो तो बेलाडोना, साइलीशिया, मै बेच दिया जा रहा हूं, ऐसी कल्पना में हायोसायेमस।

४. मृगीजनित (Hysteric)—मस्तिष्क-विकार में कभी-कभी अत्यन्त तीव्र पागलपन दिखाई पड़ता है और ऐसी अवस्था बहुत अधिक दिखायी पड़ती है। ... नेक रोगियों की चिकित्सा की है। प्रायः

सभी क्षेत्रों में मुझे इग्नेशिया, फास्फोरस और प्लेटिनम से विशेष लाभ मिला है और कहीं कहीं उसी तरह का सुफल आरम, क्रोकस और सीपिया से भी मिला है। यदि रोगी इन्द्रिय-भोग की कल्पना से निरन्तर कष्ट पाता हो तो मैं फास्फोरस की अपेक्षा किसी औषधि को अच्छा नहीं समझता या किसी-किसी स्थल में प्लेटिना से भी उपकार मिला है। यदि रोगी मूर्ख की तरह काम करने लगे या निरर्थक बातें करता रहे तो एपिस फलदायक सिद्ध होगा। यदि वह कभी हँसता या कभी रोता हो तो क्रोकस, पल्स, फास्फोरस, लाइको, और स्ट्रैमो लाभदायक हैं। यदि रोगी झूठी बातें कहता रहे और एक भी सत्य बात उसके मुँह से न निकले और उसे पता भी न लगे कि वह क्या कह रहा है तो कभी-कभी वेरेट्रम एल्बम से लाभ होगा।

५. विभिन्न प्रकार के अव्यवस्थित लक्षण (Various Detached Symptomatic Indications) जहाँ निरन्तर काम करने का पागलपन सवार हो, वहाँ लैकेसिस और हायोस। सन्देह और अविश्वास में मर्क, लैक, पल्स, हायोस और वेलेड। बहुत अधिक शारीरिक और मानसिक उत्तेजना हो तो पहले एकोन और नक्स वाम, बाद में फास्फोरस, बेल और लैक। बहुत अधिक ढिठाई और हुकूमत के कारण लोगों को आज्ञा देने का पागलपन, लाइको, कूप्रम। चालाकी और हानि करने की प्रवृत्ति में नक्स वाम, लैकेसिस। धृष्टता बहुत अधिक, वेरेट, इग्ने, और लाइको। सदा ही अकेले रहने की प्रवृत्ति कैल्के, इग्ने, कूप्रम। अकेले रहने का भय, फास्फोरस, लाइको, स्ट्रैमो, अत्यन्त व्यस्त रहने का भाव, लैकेसिस, फास्फोरस, साइलीशिया। भारी बकवास स्ट्रैमो। वेरेट्र एल्ब, हायोस। बहुत अधिक प्रफुल्लता, क्रोक, हायोस, स्ट्रैमो, कभी-कभी बेल, कूप्रम, वेरेट्र एल्ब। बहुत बातचीत करने का भय और सदा मौन रहने की इच्छा, वेरेट्र एल्ब, फास्फो एसि, इग्ने, पल्स। शिष्टता का अत्यन्त अभाव, फास्फो, हायोस, वेरेट्र एल्ब। सदा ही गाने की प्रवृत्ति, सीटी बजाये और पशु-पक्षियों की बोली बोले, बेल, क्रोक, स्ट्रैमो। मुँह बाये या काटने दौड़े

कूप्रम, वेल, स्ट्रेमो। सभी को धमकाये और सौगन्ध खाये, लाइको। निन्दा करने और धमकाने की प्रवृत्ति, कैंप, वेरेट्र एल्ब, आर्सेनिकम। बहुत रोना, पल्स, प्लेट, नेट म्यूर, सल्फर, वेलेड। बहुत अधिक घमण्ड पुरुषों में कूप्रम, स्त्रियों में प्लेटिना।

घ. कुछ बाहरी कारणों का निर्देश

पागलपन और मस्तिष्क-विकार के बाहरी कारण सबसे अधिक हैं, जिनसे मन विक्षिप्त और शरीर विकृत हो जाता है। कुछ बाहरी कारण सर्वविदित हैं, जैसे कि डर, आकस्मिक आनन्द, बहुत दिनों तक शोक, मौन सन्ताप, सुरापान की अधिकता, अधिक इन्द्रिय-भोग, ऋतु की गड़बड़ियाँ, गर्भावस्था, रगड़ लगाना, चेहरे पर बार-बार विसर्प होना आदि। इस प्रकार के कारणों से उत्पन्न शारीरिक और मानसिक रोग तरुण ही होते हैं, किन्तु पुरानी मानसिक विशृङ्खला भीतरी रोग के कारण भी होती है। उस प्रकार के अनेक रोग गञ्ज के कारण भी उत्पन्न होते हैं या दाद के उद्भेद के कारण भी होते हैं। कुछ भी हो, मैंने ४० वर्ष के एक रोगी को देखा था जो भयकर उन्माद रोग से आक्रान्त था, यौवन में उसका सिर गजा था, उसके बाद भुजाओं में पीब वाला दाद होने लगा और पैरों में भी, किन्तु अब वह उस प्रकार के चर्मरोग से एकदम मुक्त था। निरर्थक शोक और निराशा से वह कष्ट पा रहा था। उसे मैंने कास्टिकम, ग्रैफाइटिस और आर्सेनिकम दिये। इनमें से हर एक औषध के द्वारा उसके रोग का कुछ उपशम हुआ। अन्त में मैंने आर्सेनिकम की एक मात्रा दी, जिससे उसके नीचे के अङ्गों का दाद चला गया। उसके बाद वह एकाएक इतना उत्फुल्ल हो उठा, मानो उसके समान संसार में कोई सुखी मनुष्य नहीं है। दुर्भाग्य से इस कारण की ओर मेरा ध्यान ही नहीं गया था। यदि उसकी पुरानी विशृङ्खला के विषय में सन्देह होता और इस प्रकार के कारण की छान-बीन भी नहीं की थी, जैसे की तरुण रोगों के विषय में की जाती है। इसी कारण ठीक औषध के चुनने

में विलम्ब हुआ। जिन कारणों के विषय में मुझे पहले चिन्ता हुई थी वह बहुत ही मामूली थे। जिन कारणों के विषय में मुझे कहना था वे इस प्रकार हैं :—

एकाएक भय खाने या एकाएक उल्लास होने के कारण शारीरिक विशृङ्खला के लिए सदा ही **एकोनाइट** की आवश्यकता है, खासकर यदि रोगी अत्यन्त उत्तेजित या एकाएक क्रोधित हो पड़ा हो यदि थोड़ा बुखार हो, किन्तु उसके साथ भयकर प्रलाप रहे तो **ओपियम** ही उपगोयी है। यदि रोगी लगातार शोक या भय से क्लेश पाता हो और भाग जाने की चेष्टा करे तो **बेलेडोना**। इससे उपकार होने के बाद जो बाकी बचे उपसर्ग रह जायँ उनके लिए इग्नेशिया ही उत्तम औषध है, खासकर यदि रोगी दिन-रात एक ही विषय को सोचता रहे।

गम्भीर अपमान प्राप्त होने के बाद या अपने मन में बहुत अधिक चोट लगने के अनन्तर। जो मनुष्य शान्त और शिष्ट हों तो वैसी स्थिति में मेरे साथ के रोगी के लिए पल्सेटिला से बढ़कर कोई औषध नहीं है। और यदि रोगी अत्यन्त क्रोधी हो, खासकर स्त्रियाँ तो प्लैटिना ही लाभदायक होगा, किन्तु उसके साथ यदि उसी तरह के लक्षण दिखायी पड़ें। अन्य चिकित्सक मानसिक विशृङ्खला के लिए कालो, बेल, नक्स वाम और स्टेफि की सिफारिश करते हैं, किन्तु मैं उन्हें अल्प उपयोगी समझता हूँ, दूसरी ओर उसी ढग के रोगों में इग्नेशिया बहुत ही सफल सिद्ध हुआ है।

गम्भीर शोक या कष्ट के बाद। यदि ऐसी अवस्था के साथ अन्य उपसर्गों का मेल रहे तो इग्नेशिया और फास्फोरिक एसिड निस्सन्देह उपकारी औषधें हैं, यद्यपि कास्टिकम और लैकेसिस भी, अनेक क्षेत्रों में अन्य विरुद्ध लक्षण न रहने पर इन दोनों औषधों से उत्तम फल मिले हैं, उस प्रकार ग्रैफाइटिस भी। यदि स्टैफ, आर्स, बेल, कालो, हायोस, लाइको, नक्स वाम, वेरेट्र एल्ब की सिफारिश ऐसी स्थिति में हो तो कुछ

लाभ अवश्य होता है, किन्तु हर एक के लिए निर्देशक लक्षण रहना चाहिए। इस अन्तिम औषधि से रोग सहज में काबू में आ जाता है।

बहुत अधिक मानसिक परिश्रम। इस प्रकार का एक रोगाक्रान्त मनुष्य मेरे पास चिकित्सा के लिए आया। उसके विशेष लक्षण के अनुसार नक्स-वाम, लैक और कैल उपयोगी प्रतीत हुए, क्योंकि हर एक के लिए निर्देशक लक्षण मौजूद थे, केवल एक विशेष लक्षण था जो साइलीशिया और सीपिया का है और विशेष रूप से सल्फर। एक पुराने वकील को इस रोग के साथ पक्षाघात के उपसर्ग भी थे। वहाँ फास्फोरस के द्वारा वह एकदम निरामय हो गये।

मदिरापान के दुरुपयोग के बाद। इसका फल प्रलाप और कम्पन है। ऊपर लिखित चिकित्सा इस प्रकार के रोगी के लिए सफल सिद्ध होगी। इस प्रकार का प्रलाप होने के पहले रोगी अनेक प्रकार के शारीरिक रोगों से कष्ट पा रहा था, जैसे कि उदर या छाती में भारी कष्ट, जिसके लिए आर्सेनिक और नक्स वाम दिया गया जिनसे अन्य औषधों की अपेक्षा अच्छा फल मिला या रोगी भविष्य के बारे में बहुत चिन्तित, खासकर दुर्भाग्य और विपत्ति के भय से रोगी परेशान, ऐसे लक्षणों के लिए कैल्केरिया अमोघ औषधि है, खासकर यदि रोगी अन्धेरे और रात से भय खाता हो और उसके साथ घबराहट और डर का भी दौरा हो।

अधिक इन्द्रिय-भोग के बाद। बहुत से चिकित्सक ऐसी परिस्थिति के लिए चायना की सिफारिश करते हैं, किन्तु मेरे विचार से यह उपयोगी नहीं है। मैं समझता हूँ कि इसके प्रयोग से समय वृथा चला जायगा। फास्फोरिक एसिड, जिसका अक्सर चायना के स्थान में व्यवहार होता है, खास-खास रोगियों के लिए उससे कुछ उपकार होने पर भी सल्फर के समान शक्ति उसमें नहीं है, कैल्केरिया और नक्स वामिका भी बहुत अंशों में उपयोगी हैं। उसी प्रकार के रोगों में इन दोनों औषधों से मैंने बहुत उपकार पाया है, वह भी बहुत अल्प समय में। अधिक इन्द्रिय-भोग के

कारण जो अत्यन्त विषाद, निरानन्द की अवस्था और संसार की सभी वस्तुओं पर उपेक्षा की परिस्थिति उत्पन्न होती है, खासकर हस्तमैथुन से। ये सभी इन दोनों अन्तिम औषधों से आराम होते हैं। छोटी-छोटी युवती लड़कियों में उसी प्रकार की अवस्था उत्पन्न होने पर फास्फोरस और सीपिया को विशेष लाभदायक पाया है।

खूनी बवासीर से पीड़ित व्यक्ति के लिए साधारणतया नक्स वाम, सल्फ और कैल्केरिया के अतिरिक्त आर्सेनिक, पल्स, कूप्रम और फास्फोरस को मैंने विशेष उपकारी पाया है, सभी अपने-अपने विशेष लक्षणों में सफल हैं। एकदम सुस्त आदमियों के लिए कैप्सिकम विशेष लाभदायक प्रतीत हुआ है, अल्प बुद्धि वाले तथा निकम्मे आदमियों के लिए भी वही उपयोगी है और जिनका रक्तार्श या खूनी स्राव अन्य दवाओं से दबा दिया गया है। पुराने उद्‌भेद, दाद या घाव दबा देने पर जो कठिन अवस्था उत्पन्न होती है, उसके लिए आर्सेनिक, ग्रैफाइटिस और कास्टिकम उपयोगी हैं।

जब मनुष्य के शरीर में यकृत विकृत हो जाय तो नक्स वाम, लैकेसिस और बेल लाभदायक हैं। अन्य अनेक क्षेत्रों में लाइको और कैल्केरिया ही मुख्य औषधें हैं, और भी अन्य अनेक क्षेत्रों में सल्फर उपयोगी है, जिसे मैं अत्यन्त विषाद की अवस्था में चिकित्सा आरम्भ करते ही दिया करता हूँ।

यदि हृदय का रोग मौजूद हो तो साधारणतया एकोन या आरम और कभी-कभी आर्स, पल्स और नेट्रम म्यूर, और भी विशेष रूप से शोकाच्छन्न व्यक्तियों के लिए तथा जिनकी नाड़ी कभी-कभी रुक जाती है, उनके लिए डिजिटेलिस और कैक्टस अच्छी दवाएँ हैं।

यदि ऐसी अवस्था के साथ मासिक ऋतु विशृंखला हो और वहाँ उसका मूल कारण विषाद हो तो वह लक्षण पल्स, सल्फ, सीपिया, काक्यूलस, वेरेट्र एल्ब और स्ट्रैमो का निर्देशक होता है, जो इस प्रकार के

सभी रोगों के लिए यथेष्ट है। जहाँ मासिक ऋतु बहुत अधिक परिमाण में हो और किसी उत्तेजना के कारण वह एकदम रुक जाय, फलस्वरूप मानसिक विकार और पागलपन का कराहना तथा शोक करना आदि लक्षण रहे, वहाँ फास्फोरस ही आश्चर्यजनक औषध है और उससे उन्नति भी शीघ्र होती है।

चेहरे के विसर्प के दब जाने के बाद के उपसर्गों के लिए ब्रायोनिया और कूप्रम ही उपयोगी हैं, वहाँ अन्य कोई औषध उपयोगी नहीं है, यहाँ तक कि बेल, हायोस और लैक भी नहीं। मैंने एक बार बुद्धिभ्रम के एक पुराने रोगी की चिकित्सा की थी। वह रोग ६ महीने से चल रहा था और जो चेहरे के विसर्प के दब जाने के कारण उत्पन्न हुआ था। जहाँ जब तब क्रोध का आवेश आता था और जहाँ कूप्रम ने कुछ उन्नति दिखाई थी, उसके बाद बेल और स्ट्रैमो से पूर्ण आरोग्य हुआ था, जिसके लिए पहले निरर्थक कूप्रम का प्रयोग किया गया था।

लू लगने या शरीर बहुत गरम होने के बाद के उपसर्गों के लिए मैं बेल और ब्रायो का इस्तेमाल करता था, किन्तु जब से ग्लोनायन की शक्ति का मुझे ज्ञान हुआ, तब से मैं इसी को प्रथम औषध की शक्ति को देने लगा हूँ। यहाँ तक कि वैसी दुर्घटनाओं के उपसर्गों के बाद भी। तब से मेरे हाथ में हर एक रोगी के लिए यह बहुत उपयोगी औषध सिद्ध हुई है और यह बेल या ब्रायो से भी शीघ्र लाभदायक प्रमाणित हुई है।

मस्तिष्क पर भारी चोट लगने के बाद के साधारण उपसर्गों के अनन्तर यदि मानसिक विकार उत्पन्न हो तो आर्निका या ब्रायोनिया से कोई लाभ नहीं हुआ, उसके विपरीत मुझे ऐसे रोगी मिले जिनके लिए साइक्यूट, और केल्केरिया से बहुत उपकार मिला है। उसके बाद फास्फोरस, जिंक, बेल, रस, कूप्रम से आरोग्य सम्पूर्ण हुआ।

गर्भावस्था और प्रसवावस्था में उत्पन्न उपसर्गों के लिए प्लेट, बेला वेरेट्र एल्ब, एकोन (जेल्सिमियम भी) लक्षणों के अनुसार सर्वोत्तम औषधें

हैं, मुझे इनसे कभी विफल नहीं होना पड़ा है, केवल एक खास रोगी के लिए मैंने पल्स और सल्फ दिया था, जिनसे समूचे उपसर्ग आराम हो गये। इसे रोगों में अन्य चिकित्सकों के द्वारा जिंकम की सिफारिश करने पर भी मैंने कभी उसका प्रयोग नहीं किया, बल्कि अनेक स्थलों में उसके बिना भी ऊपर लिखित औषधों से लाभ पाया है। कुछ अयोग्य समालोचक एकोनाइट के विरुद्ध मत प्रकट करते हैं, किन्तु गर्भवती और प्रसूता स्त्रियों के लिए जब मृत्यु की आशंका बहुत दुःखदायी हो तब उसे मैं अमोघ समझता हूँ। यदि विरुद्ध लक्षण मौजूद न हों तो इससे सभी क्षेत्रों में उपकार होता है। यदि रोगिणी के गाल बहुत लाल हों और हृदय में वह घबराहट का अनुभव करे तो इसकी अल्प मात्रा भी आश्चर्यकारक फल दिखाती है।

—:o:—

अध्याय—२

मस्तिष्क में रोगाक्रान्त अवस्था

(Morbid Phenomena in the Brain)

१. सिर में चक्कर

(Vertigo)

सिर में चक्कर आने का साधारण आक्रमण पाकाशय और उदर की गड़बड़ियों के कारण होता है या मस्तिष्क की ओर आकस्मिक रक्तसंचार की गति बढ़ जाने से होता है। इस अवस्था के लिए अनभिज्ञ चिकित्सकों के हाथ में बेल, एकोन, पल्स और नक्सवाम विशेष उपकारी प्रमाणित हुए हैं। इस विकृत अवस्था को सुधारने के लिए विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता नहीं है। रक्तसंचय के कारण सिर में चक्कर आवे तो बेल के असफल होने पर एकोनाइट तुरन्त लाभ पहुँचावेगा। यदि पाकाशय के कारण सिर में चक्कर आने लगे तो पल्स ही एकमात्र औषध है। उसके बाद कदाचित् नक्सवाम का प्रयोग करना पड़ता है।

सिर में चक्कर यदि पुराना हो गया हो तो उसे आराम करना कठिन है, खासकर जब वह पुराने उद्भेदों और घावों के दब जाने के कारण उत्पन्न हुआ हो या वृद्धों में वैसी अवस्था हो और विशेष रूप से यदि उसके साथ सिरदर्द रहे और वैसे क्षेत्रों में मृगी का आक्रमण हो और बहुत दूर के परिणाम में मस्तिष्क कोमल हो जाय। इस प्रकार के अनेक रोगियों में, जहाँ मस्तिष्क के कोमल होने की शंका हो तो वैसे क्षेत्रों में मैं ओपियम, सिकेलि और कोनियम से रोगियों को आराम देने में समर्थ हुआ हूँ। विशेष रूप से खास-खास स्थानों में फास्फोरस से उपकार मिला है, जो सभी प्रकार के चक्कर के लिए आरोग्यसाधक शक्ति रखता है, खासकर यदि वह स्नायविक कारणों से उत्पन्न हुआ हो।

कब्जियत के कारण सिर में चक्कर आवे, जिसके साथ मन का विचार ही गायब हो जाय या उसके साथ घबराहट रहे तो मेरी प्रधान औषध है— बेल। किन्तु जहाँ रोगी मृत्यु के भय से सन्त्रस्त है, वहाँ मैं उसके बदले एकोनाइट देता हूँ, उसमें भी यदि चेहरे पर लाली रहे या नक्स वामिका उस हालत में दिया जाता है, जहाँ रोगी में रक्तार्श मौजूद हो और जब रोगी चिन्ता में डूब गया हो या बिछौने पर लेटने के बाद ही सिर में चक्कर आवे। यदि सिर में चक्कर का आक्रमण ऋतुस्राव के दब जाने के कारण हो और उसके साथ कानों में शब्द होते रहें या सिर में चक्कर का अनुभव शाम को प्रतीत हो या जब बैठा रहे और चेहरा लाल तथा गाल पीले हों तो मैं पल्सेटिला की अपेक्षा किसी दूसरी उत्तम औषध को नहीं जानता। यदि इस प्रकार के रोग का आक्रमण नाक से रक्त बहने के साथ हो तो केवल एकोन और सल्फ ही नहीं, बल्कि कभी-कभी ब्रायो से मेरे रोगियों को अत्यन्त उपकार हुआ है।

जहाँ पाकाशय के कारण सिर में चक्कर आवे वहाँ मैं, यदि वह पाकाशय की गड़बड़ियों के कारण उत्पन्न हुआ हो तो, पल्स या एण्टिम क्रू या यदि रोगी पेट के कृमि के कारण कष्ट पाता हो तो एकोन या मक और यदि भरपेट भोजन के बाद सिर में चक्कर आवे तो नक्स वाम और उसके बाद सल्फ देता हूँ। इस प्रकार के सिर के चक्कर के लिए नक्स और सल्फ मेरे हाथ में सदा ही लाभदायक प्रमाणित हुए हैं।

स्नायविक चक्कर की चिकित्सा में मुझे बहुत ही परेशानी उठानी पड़ती है, जो गुल्म वायु वाले, मृगी रोग वाले और तुनुकमिजाज वाले व्यक्तियों को प्रायः वैसा चक्कर आता है या अत्यन्त दुर्बलता के कारण खासकर हस्तमैथुन के बाद या शोकजनक मनोवेग के अनन्तर हो, थकानेवाले रोग, अत्यन्त मानसिक परिश्रम या जहाँ रोग के कारण का पता नहीं चलता, वहाँ वैसी अवस्थाओं के लिए निम्नलिखित औषधें विशेष उपयोगी पायी गयी हैं :—

यदि चक्कर के साथ बेहोशी रहे तो कैमोमिला की तरह कस्काटा (खासकर मृगी रोगाक्रान्त लोगों के लिए), और नक्स वाम तथा हिपर उपयोगी हैं।

यदि उसी समय दृष्टि धुँधली हो जाय तो बेलेडोना के अतिरिक्त एकोन और हायोस ही उत्तम औषधें हैं।

यदि रोगी के पीछे गिर जाने का डर हो तो बेलेड, यदि पास में गिर जाने का डर हो तो खासकर कोनियम और सल्फर, यदि सामने गिर जाने का भय हो तो रस और ग्रैफाइटिस उपयोगी औषधें हैं।

यदि रोगी के लेटी अवस्था से उठ खड़े होते ही सिर में चक्कर आवे तो एकोन और बेल और यदि बिछौने पर लेटते ही चक्कर आवे तो विशेष रूप से नक्स वाम, कदाचित् रस। यदि रोगी बहुत दुर्बल हो और वह चल न सके, यहाँ तक कि सिर भी न उठा सके और उसी समय चक्कर का पुनः आक्रमण हो तो काक्यूलस। यदि आँखों को ऊपर उठाने पर या ऊपर की ओर ताकने से सिर में चक्कर आवे तो पल्स और नक्स वाम के साथ कभी-कभी कैल्केरिया भी लाभदायक है। जब झुकने से सिर में चक्कर आवे तो एकोनाइट के साथ कभी-कभी कैल्केरिया अच्छा है, यदि रोगी सिर की ओर रक्त का प्रवाह होने से चक्कर का अनुभव करे तो बेलेडोना ही उसे सहायता देगा। यदि गाड़ी की सवारी करते समय सिर में चक्कर आवे तो काक्यूलस और सल्फर कभी-कभी हिपर और साइलीशिया के साथ उत्तम फलदायक होंगे।

यदि चक्कर सिर के पीछे या गर्दन से उठने लगे तो मैं साइलीशिया को अमोघ औषध समझता हूँ, सल्फर के बाद कास्टिकम, कैल्केरिया और आर्सेनिक के बाद भी, घावों के दब जाने के बाद, जहाँ हस्तमैथुन के कारण मृगी रोग हुआ हो या रोगी बहुत दुर्बल हो गया हो तो कोनियम उपशामक सिद्ध होगा, खासकर यदि रोगी चारों ओर ताके और चक्कर से गिर पड़ने का भय हो। शुद्ध स्नायविक चक्कर के लिए, यदि साथ में

चेहरे पर पीलापन और मन की बेखबरी मौजूद हो तो लैकेसिस (यदि क्विनीन की थोड़ी मात्रा सेवन करायी जाय और ऐसा प्रतीत हो कि मस्तिष्क तैर रहा है और कभी-कभी उसके साथ चींटियों के रेंगने का अनुभव रहे तो वह चक्कर के लिए आश्चर्यजनक औषध प्रमाणित होगा)।

अन्य लोग कैसा ही क्यों न कहें, यदि सिर में चक्कर कृमि के कारण हो तो मर्क्यूरियस ही सर्वोत्तम औषध है। मैंने एकोन, साइक्यूटा, साइलीशिया से बहुत ही लाभ पाया है।

अन्त में कहना है कि यदि सिर में चक्कर पुराना हो जाय और उसका कारण रोगी के शरीर की परिस्थिति बिगड़ जाने से हो और सहज में उसका कारण निर्णात न हो तो उसके कारण के विषय में मैं निम्नलिखित विचार प्रकट करता हूँ :—

१. नशीली चीजों के बहुत दिनों तक दुरुपयोग या केवल काफी पीना, जिसके लिए फास्फोरस, लैकेसिस, आर्सेनिकम, कैल्केरिया और सल्फर अन्य सभी औषधों की अपेक्षा अधिक सफल हैं। २. दुर्बलताकारक प्रभाव, जैसे कि शरीर से जीवनदायक तरल वस्तुओं का लगातार क्षय, जिसके लिए सीपिया, सल्फर, कैल्केरिया और यहाँ तक कि पल्स और हिपर सल्फर अनुचित रीति से चायना के प्रयोग की अपेक्षा अधिक सफल प्रमाणित हुए हैं। ३. बहुत अधिक मानसिक परिश्रम, जहाँ नक्स वाम की अपेक्षा पल्सेटिला, कोनियम, लैकेसिस और साइलीशिया अधिक सफल सिद्ध हुए हैं। ४. मृगी रोग होने की आदत और बार-बार सिर में रक्त जमा होना, जिसमें एकोन, बेल, नक्स वाम और उसी तरह आर्निका और ओपियम मुख्य औषधें हैं (जेलसिमियम और वेरेट्र विर भी)। ५. रक्तार्श होने की आदत और उदर में रक्त जमा होना, इन कारणों से सिर में चक्कर आवे और उसी तरह चित्तोन्माद वाले व्यक्तियों के लिए केवल नक्स वाम, सल्फ और कैल्के ही औषध नहीं है, बल्कि किसी-किसी क्षेत्र में पल्स, लेकेसिस और यहाँ तक कि लाइको और फास से विशेष उपकार पाया गया है, इस प्रकार के रोगियों के लिए,

जहाँ सभी उपयोगी औषधें व्यर्थ हो गयी हों, वहाँ लाइको चक्कर के आक्रमण में बहुत ही उन्नति करता है, जिससे एक ६८ वर्ष का रक्तार्श वाला व्यक्ति भी अच्छा हो गया था, फस्फोरस ने जादू की तरह रक्तार्श का स्राव रोककर समस्त कष्टों को दूर कर दिया था। यह रोग २० वर्षो से दबा हुआ था। ६. पैतृक मृगी रोग अर्थात् जिस परिवार में प्रायः सभी लोग इस रोग से आक्रान्त हुए हैं, उस परिवार के प्रायः सभी रोगी मेरे हाथ से बेल, सल्फ, साइलि, कैल्क और लैक से आराम हुए हैं। ७. जो लोग प्रायः मृगी रोग से आक्रान्त होते हैं, यदि उपसर्ग अनुकूल हों तो फास्फोरस, साइक्यूटा और कोनियम से लाभ हुआ, और कास्टिक्-एस, लाइको तथा पल्स से भी। ८. सिर मे चोट, यदि हाल की हो तो आर्न, साइक्यू और रस सदा ही प्रशंसा-प्राप्त हुए हैं, किन्तु यदि चोट सालों पहले लगी हो, ऐसी स्थिति में अन्य औषधें आवश्यक होने पर भी मैंने कैल्केरिया, फास्फोरस उसी तरह सल्फ तथा साइलि को उत्तम उपयोगी पाया है। ९. यहाँ तक कि पुराना उपदंश रोग भी सिर के चक्कर के क्षेत्र में उपेक्षा करने योग्य नहीं है, यदि हम यथार्थ निदान करना चाहते हों। मैंने एक बार एक ६० वर्ष के आदमी का इलाज किया था, जिसके साथ सिर में चक्कर और सिरदर्द थे। अन्य अनेक प्रकार की औषधें सेवन कराकर कोई फल न मिलने से उसने मुझे खोपड़ी पर एक छेद दिखाया। उसे देखकर मैंने अनुमान किया कि भीतर कोई अस्थि-अर्बुद है और उसके लिए मैंने आरम २ आधे ग्रेन की मात्रा में ४-४ दिन के बाद सेवन करने की व्यवस्था दी। उसके अनन्तर तीन सप्ताहों के भीतर उसके सारे कष्ट गायब हो गये।

३. मृगी

(Epilepsy)

१—अफसोस की बात है कि रीफर्ट के ग्रंथ में इस रोग के जो विवरण छपे हैं, स्वीकार करना चाहिए था कि वहाँ का विवरण पूर्व प्रकाशित ग्रंथों

से लिया गया है। वहाँ के विचार में कुछ अपूर्णता थी, क्योंकि जो रोगी मृगी से आक्रांत हैं और यदि उनके मस्तिष्क में जलसंचय हुआ हो या रक्तसंचय ही हो और मस्तिष्क की शिराओं में पक्षाघात का लक्षण दिखायी पड़े तो समझना चाहिए कि यही यथार्थ मृगी रोगी है। उन्होंने अपने ग्रन्थ में जिन औषधों को अचूक कहा है, मैं उनसे सहमत नहीं हूँ। मृगी रोग के साथ यदि रोगी के सिर में जलसंचय हो गया हो तो पल्सेटिला या नक्स वामिका, आर्निका या अन्य औषधों के द्वारा उस रोग को निरामय करना सम्भव नहीं है। आसन्न मृत्यु के भय को भी इन औषधों से दूर नहीं किया जा सकता, यदि मस्तिष्क में अधिक रक्त या जल जमा हो गया हो या किसी अंग में पक्षाघात का लक्षण दिखायी पड़े, फलस्वरूप वहाँ की शिराएँ शिथिल हो गयी हों तो बेलाडोना ही अच्छी औषध है, किन्तु ध्यान रहे कि रोग बहुत पुराना होने से इससे आराम नहीं हो सकता। वैसे क्षेत्रों में मैं बेलोडोना ३० की-२ गोलियाँ शुद्ध जल में घोलकर एक शीशी में भर देता हूँ और कह देता हूँ कि १५-१५ मिनटों पर १-१ चम्मच पी लिया जाय। यह औषध रोगी को तुरन्त आराम पहुँचा कर उसे पुनर्जीवन दे सकती है। यदि बेलेडोना के द्वारा मस्तिष्क की स्वाभाविक क्रिया उत्तेजित हुई हो और उसकी शिथिलता न रहे और उन्नति दिखाई पड़े तो ओपियम जैसी संकटकालीन औषध का व्यवहार किया जा सकता है। इससे ऊँचाई और तन्द्रा दूर हो जाती है और रोगी आराम से सो सकता है। ऐसे स्थिति में हायोसायेमस भी लाभदायक है। किन्तु कठिन परिस्थिति में यदि इन दोनों औषधों से विशेष लाभ न हो तो बेलाडोना अच्छा काम करेगा। और इससे शीघ्र ही रोगी होश में आ जायगा। इतना होने पर भी यदि मस्तिष्क में पक्षाघात और रक्तसंचय के लक्षण रह जायँ और बार-बार बेलाडोना देने पर भी विशेष फल न हो तो नीचे के अंगों के पक्षाघात के लिए कावयूलस, नक्स वामिका और आर्निका देकर मैंने बहुत उपकार पाया है। कुछ वृद्ध चिकित्सकों ने मस्तिष्क मे जल या रक्त के संचित होने के क्षेत्रों में एकोन की सिफारिस की है,

किन्तु मेरी राय में यह अनावश्यक ही नहीं है, बल्कि रोगी को हानि पहुँचाने के कारण अपराधजनक भी है। जहाँ मस्तिष्क में रक्तसंचय मामूली हो और जहाँ जल का संचय बिल्कुल न हो, वहाँ इससे कुछ लाभ हो सकता है, किन्तु यथार्थ में जल का सचय हो जाने पर एकोन से कुछ भी लाभ नहीं हो सकता।

२—मृगी रोग में साधारणतया मस्तिष्क मे जल का संचय अल्प बार होता है और उसमें रक्त का सचय बहुत अधिक बार हुआ करता है। नि.स्राव शुरू होने के पूर्व प्रायः रक्तसंचय हुआ करता है। थोड़े समय के भ तर रक्तसचय का दौरा तीन बार हो जाता है। किसी-किसी रोगी में आठ दिनों के बाद भी वैसा दौरा होता है। चिकित्सक उपयोगी औषध देकर यदि इसे न रोकें तो इसका आक्रमण क्रमशः बढ़ता ही जाता है। यदि पुरानी प्रथा के चिकित्सक ऐसे क्षेत्रों में मस्तिष्क की कोई शिरा काट दें तो हमारी कोई औषध उस रोगी को नहीं बचा सकती। किसी-किसी रोगी में मस्तिष्क के भीतर आंशिक पक्षाघात होता है और कहीं मस्तिष्क मे जलसचय न होने पर भी उसके होने की शका होती है। ऐसे क्षेत्रों में एकोन, नक्स वाम और आर्निका (और डा॰ हैम्पेल के मतानुसार वेरेट्र वि) लाभदायक हैं, जहां होश एकदम गायब हो वहाँ मैं बैलेडोना के प्रयोग से ही लाभ पाता हूँ, खासकर यदि उस रोग ने शरीर के बाएँ अंश पर आक्रमण किया हो। मृगी के आक्रमण से यदि रोगी का शरीर धनुष की तरह अकड़ गया हो और रोगी खर्राटे की साँस लेता हो और वह भी बहुत धीरे-धीरे चले तो ओपियम से विशेष फल होता है, यदि इस लक्षण के साथ गलकोष के भीतर ऐंठन हुई हो और मुँह बायीं ओर खिंच जाय तो बेलेडोना विशेष उपकारक होगा। मेरे हाथ में आज तक ऐसे जो रोगी आये हैं, उन सभी को मैंने इन तीन औषधों के द्वारा अच्छा कर दिया है। उससे आरम्भ के उग्र उपसर्ग शान्त हो गये और रोगी शान्ति से पड़ा हो तो बाकी उपसर्ग कास्यूलस, नक्सवाम, हायोस, कूप्रम और आर्निका से दूर हो गये हैं। जब

तक रोगी के सिर में दर्द या चक्कर या बेखबरी रहे तब तक इन्हीं तीनों औषधों से मैं काम लेता हूँ। इस प्रकार मृगी का दौरा हर आठवें दिन आ सकता है, खासकर जिन रोगियों को मस्तिष्क की कमजोरी सता रही हो, मस्तिष्क में रक्त के जमा होने के कारण मृगी रोग होने पर पुराने अनुभवी चिकित्सकों ने एकोन, आर्निका बैराइटा कार्ब, इपिकाक, एपिस और ग्लोनायन की बड़ी प्रशंसा की है, किन्तु मेरे विचार से इस रोग के आरम्भ में ही उन औषधों का व्यवहार कुछ लाभदायक है, वह भी थोड़े रोगियों में। एक चिकित्सक ने तो इनमें से किसी औषध का व्यवहार मस्तिष्क में रक्तसञ्चय के लिए कभी नहीं किया है। यथार्थ मृगी रोग की चिकित्सा के लिए एकोन और नक्स वाम ही मेरे विचार से सर्वोत्तम औषधें हैं। जहाँ इस रोग का आकस्मिक दौरा हो गया हो, वहाँ मुझे एकोन से ही लाभ प्राप्त हुआ है। रोगी युवक हो, उसकी नाड़ी की गति कुछ तेज हो, सिर में बहुत चक्कर आता हो, गरदन की दो बड़ी नाड़ियों में दपदपाहट दिखायी पड़े तथा रोगी में कुछ होश मौजूद हो, वहाँ एकोनाइट से ही विशेष लाभ होते देखा गया है। जहाँ रोगी एकाएक दहल गया हो, एकाएक क्रोध आया हो, वहाँ मैंने इसी औषध से यथेष्ट उपकार पाया है।

२—रोग, जिसे स्नायविक मृगी रोग कहते हैं, यदि वहाँ असली मृगी हो चाहे सिर के विकार के कारण वह विभिन्न प्रकार से प्रकट हो, खासकर मस्तिष्क मे जल-सञ्चय के कारण वह उत्पन्न हो, वहाँ खोपड़ी को खोलकर देखे बिना रोग का निर्णय करना कठिन हो जाता है। मैं अपने चिकित्सा-व्यवसाय के अनुभव से बहुत से उदाहरण दे सकता हूँ, जैसे कि कमर, गरदन या अन्य अङ्गों की ऐंठन, सिर में चक्कर, कानों में गूँज या वमन के साथ मृगी का दौरा हो और रोगी अचेत हो जाय, साँस धीमी चले और ऐसी निद्रा प्रतीत हो कि रोगी मर गया है, ऐसी स्थिति में हाथ-पैरों की कुछ चञ्चलता दिखायी पड़े, होठों में भी कुछ कम्पन प्रतीत हो तो यथार्थ

मृगी रोग के लक्षण कहे जा सकते हैं। ऐसी अवस्थाओं में मैं इपिकाक से उपकार पाता हूं। यदि रोगी की उँगलियाँ अकड़ गई हो तो कूप्रम से उपकार होता है, यदि पक्षाघात के कारण पैर सुन्न हो गये हों तो कावयूलस से उपकार होता है। यदि रोगी बहुत देर से बेहोश हो गया हो तो हायोसायेमस और स्ट्रामोनियम से लाभ होता है। इस प्रकार की अवस्थाओं को मैं प्राणघातक नहीं समझता। एक १८ वर्ष की युवती मृगी रोग से बिल्कुल अचेत पड़ी थी। एक दिन उसके बाप मेरे पास आये और मुझे साथ लिवा ले गये। मैंने जाकर देखा कि रोगिणी मृगी के आक्रमण से २४ घण्टों से अचेत पड़ी हुई है। मैंने उसके पिता को हायोसायेमस ३० की व्यवस्था दी और कह दिया कि इन गोलियों को जल में घोलकर एक शीशी में रख लें और १५-१५ मिनटों पर रोगिणी को १-१ चम्मच पिलाते जायँ। मेरे हाथ में उस समय कई रोगी थे। इस कारण मैं वहाँ से चला गया। ४ बजे जब मैं उसके घर पहुँचा तब तक पिता औषध खरीद कर लौटा नहीं था। मैंने जाकर देखा कि उसकी लड़की मरणासन्न है, उसका निम्न भाग बरफ की तरह ठण्डा हो गया था, साँस की गति भी प्रतीत नहीं होती थी। मैं उसे हायोसायेमस सुँघाता रहा, परन्तु वह थोड़ी देर में मर गयी। पहले दिन भी वह अच्छी थी और उसका भरा-पूरा शरीर देखकर किसी को शंका नहीं हुई थी कि वह इतनी जल्दी मर जायगी। मेरे हाथ में ऐसे भी रोगी आये थे, जो वातरोग से अत्यन्त पीड़ित थे या जिनका हस्तमैथुन के कारण शरीर एकदम खाली हो गया था। यदि रोग का आक्रमण मस्तिष्क पर हो और कभी-कभी रोग के तीव्र आक्रमण से साँस रुँधने लगे तो ऐसी अवस्था हो सकती है। ऐसी रोगी प्रायः मृत-से प्रतीत होते हैं। मूत्राशय,मुखगह्वर या गले की पेशियों पर पक्षाघात का आक्रमण होने पर भी ऐसी हालत होती है। ऐसी स्थिति में मुझे ईपिकाक से विशेष लाभ हुआ है और कभी-कभी आर्निका, नक्स वामिका, फास्फोरस और बैराइटा कार्ब उपकारक प्रमाणित हुए हैं। फास्फोरस और नक्स वामिका वृद्ध रोगियों के लिए तथा पुराने शराबखोरों के लिए विशेष लाभदायक हैं।

४—रक्ताम्बु वाली मृगी। सिर में जलसचय होने पर यदि साधारण औषधों से वह आराम हुआ माना जाता है वहाँ अपने निदान के अनुसार हम उसे रक्ताम्बु वाली मृगी कहेंगे या सिर में अल्प रक्तसंचय की अवस्था बतायेंगे। मुझे ऐसे कई रोगियों को देखने का मौका मिला था, जहाँ अल्प निर्देशक लक्षणों से प्रतीत हुआ कि मस्तिष्क की क्रिया शिथिल हो गयी है। किन्तु रक्त या जल के संचय का कोई लक्षण नहीं प्रतीत हुआ। जहाँ चेहरा पीला पड़ गया और नाड़ी की गति भी निम्न हो गयी, वहाँ अनुमान किया जा सकता है कि मस्तिष्क में रक्ताम्बु भर चुका है। मेरे ये सभी रोगी वृद्ध थे और रोगों से भी ग्रसित थे, उनमें से एक रोगी कुछ दिनों के बाद मर गया। शव की परीक्षा से जाना गया कि उसके मस्तिष्क के बाएँ अंश में रक्ताम्बु भर गया था। मर्क और हेलिबोरस की तरह मुझे इस प्रकार की अवस्था के लिए बेलेडोना उपयोगी प्रतीत हुआ। ऐसे भी रोगी दिखायी पड़े, जिन्हें ऐसी दशा में इपिकाक से उपकार हुआ है [डॉ० हैम्पल के अनुसार ऐसी मरणासन्न स्थिति में टार्टर एमेटिक से भी लाभ होता है।] किसी-किसी स्थल में मैंने वेराइटा कार्ब और जिंक से भी उपकार पाया है। एक रोगी में मैंने डिजिटेलिस देकर कुछ भी उपकार नहीं पाया था। एक रोगी की नाड़ी बहुत तेज देखकर मैंने ग्लोनायन दिया तो वह बच गया।

५—किसी रोगी का होश एकदम गायब देखकर मैंने बेलेडोना दिया तो वह जी उठा। एक मूर्च्छित रोगी की साँस धीरे-धीरे चलती है, देखकर मैंने ओपियम दिया तो विशेष लाभ देखा। एक रोगी की अचेतन अवस्था मे अपने-आप मल-मूत्र निकलते देखकर मैंने आर्निका से उसे बचा दिया था।

ऊपर लिखित निर्देशक लक्षणों के अतिरिक्त निम्नलिखित लक्षणों पर भी ध्यान देना आवश्यक है :—

यदि कोई रोगी बार-बार अपना सिर पकड़ता है या नोचता है तो मैं वहाँ ओपियम देता हूँ, कभी-कभी वैसी अवस्था में फास्फोरस से भी

लाभ मिला है। यदि कोई रोगी बार-बार अपनी जननेन्द्रिय में हाथ देता है तो हायोस से उपकार होना निश्चित है। यह उस लक्षण के लिए अमोघ औषध है। यदि किसी का मुख दाहिनी ओर खिंच गया हो तो वेलेडोना और लैकेसिस से उपकार होता है और यदि बायीं तरफ मुख खिंचा मालूम हो और वेलेडोना से कोई उपकार न हो तो नक्स वाम से लाभ होना निश्चित है, कभी-कभी फास्फोरस से भी उपकार होता है। यदि किसी रोगी के शरीर में ऐंठन होने लगे और वेल तथा हायोस निष्फल रहे तो कूप्रम से विशेष उपकार होता है।

३. मस्तिष्क में प्रदाह, मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह

(Inflammation of the Brain, Meningitis, Encephalitis)

डॉ० हैनिमैन ने लिखा है कि मस्तिष्क-प्रदाह की अवस्था युवकों में कभी नहीं आती। ऐसी अवस्था कभी-कभी सन्निपात ज्वर और विष पिलाने पर होती है, किन्तु मैं समझता हूँ कि यक्ष्मा के कारण मस्तिष्क-प्रदाह के सिवाय ऐसा विकार प्रायः १८ से २२ वर्ष की अवस्था वाले युवकों में होता है। किन्तु मैंने बचपन में भी ऐसे रोगों का होना प्रत्यक्ष किया है, जो मस्तिष्क में चोट लगने या अधिक गर्मी के समय लू लगने से होते हैं। बालकों में केवल सन्निपात ज्वर तथा चेहरे के विसर्प के अतिरिक्त सर्दी जुकाम होने पर ऐसे लक्षण दिखायी पड़ते हैं। कभी-कभी खास-खास रोगियों में मस्तिष्क-प्रदाह की भयकर अवस्था देखी है, उसके साथ शूलवेदना और भयंकर प्रलाप भी था। मैंने ऐसे रोगियों को केवल वेलेडोना सेवन कराकर आराम किया है। जिस रोगी में प्रलाप अल्प, किन्तु गोली लगने की तरह दर्द रहे, वहाँ ब्रायोनिया से लाभ मिला है। जहाँ ब्रायोनिया से भी लाभ नहीं हुआ, वहाँ ग्लोनायन देकर मैंने उस रोगी को आराम कर दिया है। एक रोगी में ऐंठन और मृगी के कारण दाँत बन्द हो जाते थे, वहाँ मैंने कूप्रम से विशेष लाभ पाया है। शरीर में उद्भेद दब जाय और प्रदाह होने लगे तो मैं वेलेडोना की अपेक्षा एपिस को अधिक लाभकारी समझता हूँ।

ऐसा रोग होता है। केवल जलन के अतिरिक्त और कोई लक्षण प्रतीत न हो तो होम्योपैथी चिकित्सा से ४८ घण्टों के अन्दर उस जलन को आराम कर दिया जा सकता है। ऐसी स्थिति में केवल एकोन सेवन कराकर समय को बरबाद नहीं करना चाहिए, क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं हो सकता। ऐसे क्षेत्रों में बेलेडोना ३० ही श्रेष्ठ औषध है। मैं यहाँ इसकी तीन गोलियों को थोड़े जल में घोलकर ३-३ घण्टे पर एक-एक चम्मच पिलाने की व्यवस्था देता हूँ। प्रायः दिखायी पड़ा है कि २४ घण्टों के भीतर जलन घट गयी और रोग का क्लेश गायब हो गया तथा रोगी निरामय हो गया। जहाँ ऐसी जलन होते रहने पर चिकित्सक बहुत देर में पहुँचे हों तो ब्रायोनिया ३० शक्ति की एक गोली जीभ पर डाल दी जाय। सल्फर ३० की शक्ति इससे भी अधिक है। इसका भी उसी तरह प्रयोग होना चाहिए। बालकों के मस्तिष्क प्रदाह के साथ सन्निपात ज्वर हो तो उस रोग को भी यह औषध आराम कर सकेगी। जहाँ पहले अन्य कोई औषध न दी गयी हो, वहाँ इसी औषध से विशेष लाभ होगा। यदि रोग बहुत बढ़ चुका हो अर्थात् मस्तिष्क में जल भर गया हो तो बेलेडोना या ब्रायोनिया कोई लाभ नहीं देगा। यदि अधिक विलम्ब न हुआ तो हेलिबोरस से लाभ हो सकता है। सल्फर और एपिस से भी उससे अधिक फल मिलता है। एक बार मैंने एक रोगी को मरणासन्न अवस्था में सल्फर सेवन कराया था। फलस्वरूप वह रोगी अच्छा हो गया।

ऊपर लिखित औषधों के अतिरिक्त और भी कुछ उपयोगी औषधों का विवरण नीचे दिया जाता है :—

कूप्रम—मस्तिष्क पर प्रभाव डालने के लिए यह एक उत्तम औषध है। यदि हाथ-पैरों की उँगलियों में आक्षेप होने लगे, छाती के अन्दर ऐंठन हो और मूर्च्छा के साथ दाँत बन्द हो जाय तो इससे बहुत लाभ होता है। यदि विसर्प या अन्य प्रकार के दाने चमड़े पर निकले हैं या बच्चों के दाँत निकलते समय मस्तिष्क में जलन होने लगे तो इस औषध

से महान उपकार होगा। मेरे ख्याल से वेलेडोना की अपेक्षा कूप्रम अधिक उपकारी है।

एकोनाइट—मेरे विचार से यह औषध बालकों के मस्तिष्क-प्रदाह के लिए सफल नहीं है, किन्तु दाँत निकलते समय या पेट में कृमि होने के कारण मस्तिष्क में जलन मालूम हो तो प्रलाप भयकर होने पर भी यह औषध तुरत फायदा दिखायेगी।

एपिस—चमड़े पर के दाने या जुलपित्ति के चकत्तों के दब जाने से मस्तिष्क में जलन होने लगे तो यह सबसे उत्तम दवा है।

वेलेडोना—मस्तिष्क और मस्तिष्क-झिल्ली में प्रदाह होने लगे तो यही एकमात्र औषध है। यक्ष्मा के दानों के कारण आने वाले मस्तिष्क-प्रदाह को छोड़कर यह औषध सभी प्रकार की दिमाग की जलनों के लिए अत्यन्त उपयोगी है, बल्कि मेरे विचार से सबसे पहले इसी औषध का सेवन आवश्यक है। जहाँ दिमाग में जलसचय हो, वहाँ भी इस औषध से लाभ होता है। मैंने ऐसी परिस्थिति में कूप्रम, हायोस, ब्रायो और स्ट्रैमो से अधिक लाभ पाया है।

ब्रायोनिया—यदि वेलेडोना के सेवन के बाद भी कुछ दर्द बाकी रह जाय तो अन्त में यह औषध रोगी को बहुत शीघ्र अच्छा कर देगी। यदि सिरदर्द दिमाग के एक ओर से शुरू होकर दूसरी ओर चला जाता हो और दर्द भाला भोंकने की तरह हो तो यही एकमात्र औषध है। सिर में दर्द, दपदपाहट, दवाव और काँटा गड़ने की तरह हो तो वेलेडोना ही औषध है। यहाँ चेहरे का रग पीला, भूरा या लाल क्यों न हो उस पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है।

कैल्केरिया—रोगी के मस्तिष्क में जल भर गया हो या यक्ष्मा के दानों के कारण मस्तिष्क में जलन होने लगे तो यह औषध विशेष उपकारी है। अधिक दिनों तक रोग भोग होने पर इसकी २०० शक्ति से लाभ होता है।

कैम्फोर—लू लगने के कारण मस्तिष्क में जलन पैदा हो तो उसके लिए डॉ० नोक और डॉ० ट्रिंक आदि श्रेष्ठ चिकित्सक इसी औषध की प्रशंसा करते हैं। किन्तु जो लोग ग्लोनायन, बेलेडोना और ब्रायोनिया के गुण जानते हैं, उन्हें इस औषध की आवश्यकता नहीं होती।

ग्लोनायन—लू लगने के बाद मस्तिष्क में जलन पैदा हो तो यही श्रेष्ठ औषध है। यह औषध वातजनित मस्तिष्क रोगों या मस्तिष्क में रक्त-संचय में भी लाभदायक है। सन्निपात ज्वर वाले रोगियों को इसका सेवन कराया जाय तो बहुत उत्तम फल मिलेगा। जहाँ मस्तिष्क भरा मालूम हो तथा बहुत ही कष्ट का अनुभव होने लगे तो यह लक्षण इस औषध का निर्देशक है। यहाँ सिर को हिलाने से भी कष्ट अधिक होता है। यद्यपि मर्क्यूरियस बच्चों के मस्तिष्क झिल्ली-प्रदाह के लिए यथेष्ट सहायक है, ऐसे क्षेत्र में नये चिकित्सकों को उपदेश देता हूँ कि यदि बेलाडोना, ब्रायोनिया और खासकर सल्फर से विशेष लाभ न हो तो मर्क्यूरियस से वे सफल हो सकेंगे। ओपियम भी ह्यायोस और स्ट्रैमो की तरह अच्छी औषध है, जो उन औषधों के साथ पारी-पारी से सेवन कराने पर मस्तिष्क में जलसंचय को घटा सकता है तो भी ओपियम ऊपर की दो अन्तिम औषधों की तरह मूलरोग-सम्बन्धी मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह को प्रशमित करने में समर्थ है। नवचिकित्सकों को इस बात को गाँठ बाँध लेना चाहिए। सर्दी दब जाने के बाद मस्तिष्क में प्रदाह उत्पन्न हो तो पल्सेटिला उत्तम औषध है, कर्णस्राव या अन्य पुराना सूजाक आदि में यह औषध स्वाभाविक निःस्राव लाने में सफल है, यदि ऐसा २४ या ४० घण्टों में न हुआ तो सल्फ का प्रयोग करना आवश्यक है, जैसे कि पहले कहा गया है कि मस्तिष्क में जलसंचय होने पर उसकी कठिन अवस्था के लिए इससे बढ़कर और कोई औषध नहीं है। यथार्थ में मस्तिष्क-प्रदाह या शीतला के दब जाने से उत्पन्न प्रदाह, लालबुखार या अन्य चर्मोद्भेद के लिए भी यह उत्तम औषध है। मस्तिष्क-प्रदाह तो इस औषध से २४ घण्टों के अन्दर शान्त हो जायगा। ऐसी स्थिति में यदि अन्य उपसर्ग दिखायी दें तो

सल्फर ३० की ३ गोलियों को पानी में घोलकर ३–४ घण्टे पर १–१ चम्मच पिलाते जायँ तो लाभ अवश्य होगा। डा० हार्टमेन ने अपनी चिकित्सा पुस्तक में विशेष उत्तेजना के क्षेत्र में इसके गुणों की जो प्रशंसाएँ की हैं उनसे मैं सहमत नहीं हूँ। मेरे विचार से वह मस्तिष्क के पक्षाघात और मस्तिष्क में जलसंचय में लाभदायक है। ज्वर के समय चमड़े पर दाने निकलें तो यह अधिक उपयोगी है। ३० शक्ति की अपेक्षा २०० शक्ति को मैंने अधिक उपयोगी पाया है। अन्य चिकित्सकों के मत से भी इसकी उच्च शक्ति अधिक सफल है और वह भी विचूर्ण की अपेक्षा घोल विशेष लाभकारी है। अन्य चिकित्सक ऐसी स्थिति में कोनियम, सिना, कार्बोवेज, आर्टिमिशिया, फेरम लैकेसिस, डिजिटेलिस आदि को उपयोगी मानते हैं, किन्तु मेरे विचार से जिंकम के साथ आरोग्य-साधन में उनकी तुलना नहीं हो सकती। यदि ठीक लक्षण देखकर इसका प्रयोग किया जाय तो उन औषधों से यह अधिक लाभकारी प्रमाणित होगा।

४. मस्तिष्क-शोथ
(Hydrocephalus)

१—बालकों के मस्तिष्क में जलसंचय के क्षेत्र में पहले इस पुस्तक के भीतर बहुत कुछ लिखा गया है। उसके अतिरिक्त यहाँ मुझे विशेष कुछ कहना नहीं है, केवल मस्तिष्क में जलसंचय के कुछ भेद बताता हूँ। डा० शिकर्ट और डा० मार्शल हाल ने सबसे पहले इसके भेदों को बताया है।

२—एक १५ मास के शिशु में मैंने सबसे पहले ऐसा विकार देखा है। कुछ ही दिनों में वह सूखकर काँटा हो गया। उसकी नाड़ी की गति बहुत तेज थी। उसे रंग-बिरंगे दस्त होते थे, आँखों की पुतलियाँ बहुत फैली हुई थीं। मैंने विचार कर देखा कि मस्तिष्क के लक्षणों से बढ़कर पेट के कष्ट अधिक हैं। इस कारण मैंने सल्फर की ३० शक्ति से इलाज करना शुरू किया। शुरू में उसकी ऊँचाई घट जाने पर भी हरे-पीले दस्त आते ही रहे। ऐसी स्थिति के लिए फास्फोरस उत्तम औषध है, इसे मैं जानता

हूँ। इस कारण इसकी ३० शक्ति की ३ गोलियाँ जल में घोलकर दिया और २-३ घण्टे पर १-१ चम्मच पिलाने के लिए कह दिया। फलस्वरूप उदर के लक्षणों के साथ-साथ मस्तिष्क के लक्षण भी घटते गये। २४ घण्टों के भीतर रोग बहुत घट गया। ऐसी ही चिकित्सा दो दिनों तक करने के बाद मैंने मात्राओं की अवधि बढ़ा दी। फलस्वरूप मल सफेद हो गया। इसके अनन्तर मैंने कैल्केरिया ३० की २ सूखी गोलियाँ उसकी जीभ पर डाल दीं। अन्त में जब मैंने डा० शिफर्ट का लेख पढ़ा तब मैं रोग का मूल कारण समझ गया। इसके बाद इस प्रकार के रोगी की चिकित्सा फास्फोरस और कैल्केरिया से करता रहा। जहाँ फास्फोरस से लाभ न हुआ वहाँ मैंने जिंकम ३० के विचूर्ण से विशेष सफलता प्राप्त की। एक रोगी में दस्त चिकने आते थे, उसके सिर और हाथ-पैर ठण्ढे हो गये, उसे भी मैंने जिंकम से ही आराम किया है। इस प्रकार की चिकित्सा करते रहने से सन्निपात ज्वर का प्रलाप या अन्य प्रकार के तीव्र ज्वर नहीं आते (डॉ० हेम्पल ने लिखा है कि मस्तिष्क में जलसंचय के क्षेत्र में बेलेडोना और सल्फेट अव एट्रोपिन को कभी नहीं भूलना चाहिए)।

३—बच्चों के दिमाग में जलसंचय (Chronic Hydrocephalus) का रोग पुराना हो जाने पर सल्फर और कैल्केरिया की ३० शक्ति विशेष लाभकारी है किन्तु ध्यान रहे कि यदि बच्चा गंडमाला विष से आक्रान्त हो या सिर के दाद या औषधों के बाहरी प्रयोग से वह उभरा हो तभी इन औषधों से लाभ होगा। मेरे हाथ में ऐसे तीन रोगी आये थे और मैंने उन्हें इन्हीं दो औषधों से आराम किया था। आर्सेनिकम के सेवन से उन तीनों के सिर में फिर से दाद प्रकट हो गया था, किन्तु मस्तिष्क का जल सूख गया था। कुछ लोग कहते हैं कि हेलिबोरस और बेलेडोना बच्चो के सिर में जलसचय होने पर विशेष गुणकारी हैं। किन्तु इन दोनों औषधों को पारी-पारी से नहीं देना चाहिए। हर एक औषध के प्रयोग के बाद उसके फल को देखकर ही दूसरी औषध देनी चाहिए। साधारणतया मैं इसकी ३० शक्ति की २ गोलियों को थोड़े जल में घोलकर रोगी को पिलाता हूँ; वह भी

सुबह और शाम १-१ चम्मच आठ दिनों तक। इसके अनन्तर इसकी ३० शक्ति की २-२ गोलियों को जीभ पर देने की व्यवस्था देता हूँ, वह भी आठ दिनों तक ही। उसके बाद कोई औषध न देकर मैं केवल फल की प्रतीक्षा करता हूँ।

५—मस्तिष्क में अस्वाभाविक कोमलता

(Softening of the Brain, Ramollissement)

युवक रोगियों में मस्तिष्क की कोमलता पहचानना कठिन है। वृद्धावस्था आने पर यदि ऐसा रोग हो तो उसका निदान किया जा सकता है। शुरू में इस रोग के लक्षण साफ प्रतीत नहीं होते। पुराने अनुभवी चिकित्सक भी ऐसी स्थिति को नहीं समझ पाते। यदि इस रोग के आरम्भ में फास्फोरस और कैल्केरिया का सेवन कराया जाय तो कुछ दिनों में इसे आराम किया जा सकता है। कुछ सन्देहजनक लक्षण नीचे दिये जाते हैं :— पहला सिरदर्द सदा एक ही स्थान में होता है और कभी-कभी वह भयकर हो जाता है। ऐसी अवस्था बहुत दिनों तक चलने पर रोगी की विचार-शक्ति बहुत परिमाण में घट जाती है। प्रश्न का उत्तर देने में वह बहुत विलम्ब करता है, बार-बार सिर में चक्कर आता है और चलने में वह लड़खड़ाता है, कभी पिछले पैर को घसीटकर चलता है। यदि सुरसुराहट, खालीपन और कमजोरी प्रधान हो या हाथ-पैर में तेज जलन हो, सिर के जिस ओर दर्द हो उसके विपरीत अंश के पैर में तेज दर्द हो तो मैं फास्फोरस ३० से चिकित्सा शुरू करता हूँ। मैं इसकी ३ गोलियों की १-१ मात्रा सूखी अवस्था में जीभ पर छोड़ना हूँ, इस प्रकार आठ या दस दिनों तक औषध देने के बाद मैं पानी में घोल कर सुबह और शाम १-१ चम्मच पिलाने की व्यवस्था करता हूँ और उसके बाद फल देखने के लिए कुछ अधिक समय तक प्रतीक्षा करता हूँ। ४० से ५० वर्ष की उमर वाले कुछ रोगियों को मैंने इसी प्रकार की चिकित्सा से आराम किया है। इन रोगियों के हाथ-पैरों में पक्षाघात हो गया था और उनकी इन्द्रिय-शक्ति घट गयी थी। उस औषध से ऐसे लक्षण

दूर हो गये। बचे-खुचे लक्षण कैल्केरिया से मिट गये। शुरू में लैकेसिस से कुछ लाभ हुआ था, किन्तु फास्फोरस की क्रियाशक्ति के सामने वह नगण्य था। एक ६० वर्ष के रोगी के ऐसे लक्षण ग्रैफाइटिस से आराम हो गये। उसके सिर में जो चक्कर था, वह फिर नहीं आया। रोगी समझता था कि मैं सामने गिर पड़ूँगा; उसके दर्द के साथ ऊँघाई, बेहोशी और ओकाई आती थी, लेट जाने पर कुछ शांति मिलती थी, उमर अधिक होने के कारण कुछ अधिक समय के बाद ही उसके लक्षण घट गये। ४० से ५० वर्ष की उमर वाले रोगियों में चिकित्सा सहज है। इससे अधिक उमर वाले रोगियों की चिकित्सा करते रहने से उनका जीवन कुछ अधिक दिनों तक चल सकता है। यदि ऐसे वृद्ध रोगियों के हाथ-पैरों में शोथ दिखायी पड़ें और कभी-कभी मृगी का आक्रमण हो तो उन्हें बचाना कठिन है। एक ७० वर्ष की बुढ़िया का इलाज एक बार मुझे करना पड़ा था। उसके कान, नाक आदि इन्द्रियाँ एकदम शिथिल हो चुकी थीं। बात कहना भी मुश्किल था। इस रोग का पहला दौरा तो मेरी औषध से रुका। साल भर के बाद फिर वैसा ही दौरा हुआ। उसके बाद औषध सेवन करते हुए भी हफ्ते-हफ्ते पर दौरा होने लगे। फिर तो आगे वह चल बसी। एक ६३ वर्ष का पक्षाघात-ग्रस्त रोगी का मैंने इलाज किया। रोगी बहुत दुर्बल हो चुका था, पैर की उँगलियाँ सड़ रही थीं। मैंने आर्सेनिक ३० शक्ति का सेवन कराकर उसे भी रोका, किन्तु अन्त में शोथ के बढ़ने से वह चल बसा। वैसी अधिक उमर में शोथ के जल को सुखाना सहज नहीं है।

अध्याय—३

सिरदर्द

(Headache)

१—विशेष लक्षण वाला सिरदर्द (Symptomatic Headache)—नये चिकित्सकों के लिए ठीक औषध खोज निकालना और सिरदर्द को एकाएक रोक देना सम्भव नहीं है। इस रोग में अनेक प्रकार के लक्षण प्रकट होते हैं। अनुभवी चिकित्सक ही उन्हें समझ सकते हैं और ठीक औषध देकर आराम भी कर सकते हैं। आवासीमी के लिए उपयोगी औषध का निर्णय करना तो प्रथम चिकित्सक के लिए प्रायः असम्भव है। आवासीमी के सम्बन्ध में आगे बताया जायगा। सिरदर्द के साथ आने वाले कुछ अन्य उपसर्ग इस प्रकार हैं :—अधिक मानसिक परिश्रम से थकाने वाला सिरदर्द, मस्तिष्क मे रक्त-सचय के कारण सिरदर्द, स्नायुरोग या वातरोग से उत्पन्न सिरदर्द, अपच के कारण सिरदर्द, जुलपित्ती से उत्पन्न सिरदर्द, अधिक सर्दी-जुकाम के कारण सिरदर्द आदि। ऊपरलिखित विभिन्न प्रकार के सिरदर्द के लिए औषधें भी विभिन्न प्रकार की हैं। एक प्रकार के सिरदर्द में दूसरे प्रकार के सिरदर्द की औषध देने से कुछ भी लाभ न होगा। इस कारण औषध चुनने में विशेष ध्यान देना चाहिए। किन-किन अवस्थाओं में सिरदर्द बढ़ता है या घटता है और उसके साथ अन्य कौन-कौन उपसर्ग दिखाई पड़ते हैं, इस पर भी ध्यान रखना चाहिए। यदि औषध का चुनाव ठीक हो तो आरोग्य बहुत ही शीघ्र सम्पादित होता है। इन अवस्थाओं के प्रति ध्यान रखकर मैं नीचे कुछ निर्देश दूँगा, जिनका मुझे बहुत दिनों तक सिरदर्द की चिकित्सा करने पर अनुभव प्राप्त हुआ है।

२—सर्दी-जनित सिरदर्द (Catarrhal Headache)—सर्दी के दब जाने के बाद होता है। यदि सर्दी के दब जाने के साथ निरन्तर सिर में दर्द होता रहे, ललाट पर भारी बोझ-सा मालूम हो और नाक के बन्द हो जाने से बड़ा कष्ट मालूम हो तो मैं सदा ही नक्स वाम का इस्तेमाल करता हूँ, जिससे इस प्रकार के रोग के सभी लक्षण दूर हो जाते हैं। यदि दर्द फाड़ने या सूई चुभने की तरह हो, खासकर यदि वह आँख के पपोटों के ऊपर हो या चबाने वाले दाँतों के भीतर हो और नाक से गाढ़ा श्लेष्मा निकले तो मैं ब्रायोनिया से बढ़कर अन्य किसी औषध को नहीं जानता। यदि सर्दी दब गयी हो, फलस्वरूप पागल कर देने वाला सिरदर्द पैदा हो तो एकोन तुरन्त फायदा करेगा, उसी तरह बेलेडोना भी खासकर यदि ऐसा बोध हो कि खोपड़ी फूटकर उड़ जायगी। यदि साँस खींचने या हवा का झोंका लगने से सिरदर्द बहुत बढ़ जाय तो चायना से उत्तम फल मिलेगा, खासकर यदि खोपड़ी छूने पर दर्द मालूम हो। मैं ज्वर की उत्तेजना के साथ ऐसे रोगियों को अन्य विशेष लक्षण न रहने पर एकोनाइट की एक मात्रा सेवन करा देता हूँ, चाहे खुली हवा में सिरदर्द बढे या घटे, यह औषध सिरदर्द को एकदम दूर कर देगी या कुछ घटा देगी, तब नक्स वाम, ब्रायो या बेल के सेवन से रोगी पूर्णतया आराम हो जायगा।

३—सिर मे रक्त-सञ्चय होने पर सिरदर्द (Congestive Headache)—यदि रोगी के चेहरे पर खून की झलक दिखायी पड़े, आँखें लाल मालूम हों और दर्द बहुत तेज हो तो एकोन ही मेरी मुख्य औषध है, चाहे उस समय भयंकर प्रलाप भी रहे। यह औषध बेलेडोना, नक्स वामिका, ब्रायोनिया की अपेक्षा अवस्था को बदल देने के लिए अधिक उत्तम है। उसके बाद इन औषधों से बाकी लक्षण घट जाते हैं। यदि सिर बहुत भारी या भरा मालूम हो, मानो वह फट जायगा, साथ में चेहरा पीला और मिजाज चिड़चिड़ा हो, सिर को हिलाने से सिरदर्द बहुत बढ जाय तो मैं ब्रायोनिया देकर उत्तम फल पाता हूँ। यदि सिर को हिलाने से वैसी अवस्था

घट जाय और विश्राम में बढ़े तो मैं रस टाक्स देता हूँ। यदि गरदन की दो बड़ी नाड़ियों के दपदपाहट के कारण सिरदर्द हो, सिर में दबाव या भरेपन का अनुभव हो, साथ में ऊँघाई रहे तो मैं बेलेडोना की अपेक्षा अन्य किसी औषध को अच्छा नहीं समझता, जो भयंकर उपसर्गों के लिए भी उत्तम काम करता है। जहाँ अचेतपन, प्रलाप की बक-बक, मुख की विकृति, मुख के कोनों में ऐंठन आदि लक्षण ऊपरलिखित रक्तसंचय वाले सिरदर्द के लिए भी यह अच्छी औषध है। यदि गरदन के पीछे वाले कड़ेपन के साथ वैसा सिरदर्द हो तो बेलेडोना से भरपूर सहायता मिलती है। यदि सिरदर्द सुबह या खाने के बाद हो तो नक्स वामिका ही सर्वश्रेष्ठ औषध है। यदि ऋतुकाल में स्त्रियों को वैसा सिरदर्द हो तो मुझे पल्स से लाभ मिला है। उसी तरह एकोन और बेल से भी लाभ हुआ है। जहाँ बहुत ही दुःखदायी शिरोवेदना से कष्ट होता है और सिर को हिलाने से पागल हो जाने की तरह तेज दर्द होता है, वहाँ मैं ग्लोनायन से आराम करता हूँ। जिस रोगी में सिर में रक्तसंचय होने की आदत हो और सिर के भीतरी भाग में हथौड़ी पीटने या दपदपाने वाला दर्द हो, चाहे ऋतुकाल में या दो ऋतुओं के बीच में वैसा दर्द हो और खासकर जहाँ प्रचुर रक्तस्राव होने की आदत हो, वहाँ इस प्रकार के दर्द के लिए मैं कैल्केरिया ३० की ३ गोलियों की एक मात्रा २-३ घण्टे पर देता हूँ, जिससे स्थायी आराम होता है। जहाँ रात को दपदपाने वाला सिरदर्द हो, वहाँ के लिए साइलीशिया उपयोगी है, ऐसा दर्द मानो खोपड़ी फट जायगी, साथ में ललाट पर गर्मी और भारी दबाव, ऐसा लगता है मानो ललाट फट जायगा, खासकर इस प्रकार का आक्रमण कुछ समय तक लगातार चलता रहे।

४—पाकाशयिक सिरदर्द—उदर के विकार के कारण जो सिरदर्द रहता है और जिसके साथ मिचली और कै होती है, वहाँ मैं इपिकाक से लाभ पाता हूँ, चाहे जीभ साफ रहे या लेपवाली हो, यदि सिरदर्द का निदान पाकाशयिक विकार के कारण हो वह भी फल, खट्टी चीज या चर्बी खाने से उत्पन्न हो तो वैसी स्थिति में मैं पल्स, आर्स या

एण्टिम देता हूँ, अधिक शराब पीने से या रात को अधिक ऐश-आराम करने से यदि सिरदर्द हो, वहाँ नक्स वाम की तरह कार्बो वेज को भी उत्तम औषध समझता हूँ। किन्तु कभी-कभी इस अन्तिम औषध से मुझे धोखा खाना पड़ा है (डा० हेम्पल का अभिमत है कि डा० जार बहुत उच्च शक्ति की औषध दिया करते थे। एक मनुष्य ने रातभर में ३६ गिलास शराब पी ली थी। दूसरे दिन वह बेहोश हो गया, सारे अङ्ग काँपने लगे, उसका चमड़ा कचकड़ा-सा कड़ा मालूम होने लगा, नाड़ी छोटी और धीमी चलने लगी, उसने समझा कि मैं मर रहा हूँ, वह बहुत ही क्लेश पा रहा था। मैंने उसे नक्स ३० एक घण्टे के लिए दिया, किन्तु उससे कोई उन्नति नहीं दिखाई पड़ी, उसके बाद मैं उसी की ५ बूँदें पानी में घोलकर उसे पीने को दीं। कुछ मिनटों के बाद उसके शरीर से पसीना निकलने लगा, दिनभर वह पसीने से तराबोर रहा, उसकी गन्ध शराब की सी थी, दूसरे दिन वह बहुत दुर्बलता का अनुभव करने लगा, नहीं तो उसकी हालत अच्छी ही कही जाती थी। अब वह समर्थ हो गया।) यदि उस प्रकार के व्यभिचारी आदमी में कब्जियत रहे या सिर की ओर रक्त का प्रवाह होता चले और सोच-विचार करने से दर्द बढ़े, मानो उसकी खोपड़ी के टुकड़े-टुकड़े हो जायँगे और खुली हवा में जाने पर या भोजन के बाद दर्द बढ़े तो मैं सदा ही नक्स वाम देता हूँ और उसका फल भी अच्छा मिलता है। दूसरी ओर जहाँ मिचली न हो और सिर को सामने झुकाने से रोगी को ऐसा अनुभव हो मानो मस्तिष्क, ललाट के भीतर से बाहर निकल पड़ेगा, वहाँ भी नक्स वाम से मुझे उपकार मिलता है। जिस सिरदर्द के साथ वमन रहे, किन्तु वह आधासीसी की तरह नहीं, या वातरोग के कारण भी नहीं, बल्कि परिपाक-शक्ति की कमी के कारण अपच होने से उत्पन्न हुआ हो, वहाँ मैं साइक्लेमेन की सिफारिश करता हूँ। डा० हेरिंग के विवरण से मालूम होता है कि कब्जियत के साथ सिरदर्द होने पर वेरेट्रम एल्ब सफल औषध है। जहाँ कब्जियत के साथ वमन और मिचली हुई रहे और गले तथा सिर में दर्द रहे वहाँ मैंने वेरेट्रम से चिकित्सा की है और फल

भी अच्छा मिला है। उस प्रकार के सिरदर्द में आर्सेनिकम, एसारम और सल्फर से मुझे आशातीत सुफल मिला है, किन्तु डा० रुकर्ट अपनी औषधों की सूची में सिरदर्द के लिए एकोन, कैल्के, कालो, इग्नेशिया, सेंगुइनेरिया तथा सीपिया के नाम भी गिनाये हैं। मैं स्वीकार करता हूँ कि आधासीसी में वैसे लक्षण वाले सिरदर्द में उपकार मिला है, जहाँ आधासीसी का दर्द घट जाने के बाद वमन हो, किन्तु जहाँ आधासीसी के पहले ही मिचली और कै हो, यहाँ तक कि सिरदर्द के भी पूर्व वैसे लक्षण हों, वहाँ भी इन औषधों से लाभ मिला है। यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि आधासीसी की अपेक्षा और भी अन्य प्रकार के सिरदर्द हैं, जिनका निदान पाकाशयिक गड़बड़ी नहीं है और जहाँ मिचली और कै बाद में होती है, जैसे कि वातजनित, स्नायविक तथा विशेष रूप से मृगीजनित सिरदर्द हो, वहाँ भी इन्हीं औषधों से उपकार पाया गया है।

५—वातजनित सिरदर्द के लिए, जिसके साथ कभी वमन न हो, वात के कारण सिरदर्द बहुत दुःखदायी न हो, किन्तु दर्द सिर के एक स्थान से दूसरे स्थान में चला जाता हो, वहाँ मर्क ही अत्यन्त लाभदायक औषध है, खासकर यदि वह फाड़ने, जलने या चुभने वाला हो या उसका दौरा रात को ही विशेष रूप से हो और जब रोगी बिछौने में लेटा हो। मर्क के बाद पल्स अच्छा है, खासकर जिन स्त्रियों का ऋतुस्राव अल्प और श्वेतप्रदर अधिक हो और शाम को ५ बजे से रात १० बजे तक दर्द बहुत भयकर हो, वह भी सिर के एक पार्श्व में आक्रमण करे और वहाँ से कानों और दाँतों तक फैले। यदि पसीना दब जाने के कारण सिरदर्द होने लगे और सिर के केश वाली खोपड़ी में अल्प गरम पसीना रहे तो कैमोमिला ही उत्तम औषध है। यदि फाड़ने या खोदने वाला दर्द चेहरे और कनपटियों में फैले और गरदन के भीतर भी पहुँचे तो ब्रायोनिया से मुझे बहुत लाभ मिला है, किन्तु पुरुषों के लिए, जो चिड़चिड़े स्वभाव वाले हैं और जिन्हें जोड़ों में बार-बार वात का आक्रमण हो उनके लिए भी ब्रायोनिया ही उत्तम औषध है। यदि वमन से सिरदर्द घटे जो बहुत ही अधिक दुःखदायी हो,

वहाँ नक्स वाम कभी-कभी सफल होता है या वातजनित सिरदर्द के लिए खासकर सीपिया और स्पाइजेलिया उत्तम प्रमाणित हुआ है। सिरदर्द के लिए थूजा से मुझे बहुत लाभ मिला है, खासकर जहाँ दर्द चेहरे और चबाने वाले दाँतों में पहुँच जाय और सुबह दर्द बढे अथवा शाम को ३ या ४ बजे बढ़ जाय तो भी थूजा से ही वह पूर्णतया आराम हो जाता है।

६—गठियाजनित सिरदर्द के साथ आधासीसी या वातजनित सिरदर्द नहीं है। इस प्रकार के सिरदर्द में मस्तिष्क के भीतर बहुत तेज कोंचने या सूई चुभोने वाला दर्द रहता है, जो प्रायः वमन से घट जाता है, वह भी नक्स वाम से उपशम प्राप्त होता है। डकार के साथ सिरदर्द हो तो उसका उपशम इपिकाक से होता है। यदि सिरदर्द के साथ बहुत तेज मिचली रहे तो ब्रायोनिया से वह घट जायगा। यदि रोगी डकार से बहुत अधिक परिमाण में गैस निकाले तो सीपिया और स्पाइजेलिया और किसी-किसी क्षेत्र में कालोसिन्थ लाभदायक हैं, खासकर यदि दर्द बायीं तरफ अधिक हो और वह सुबह से शाम तक बहुत तेज रहे और उसके साथ घबराहट और बेचैनी रहे।

२—मूलरोग सम्बन्धी सिरदर्द
(Idiopathic Headache)

इस प्रकार के सिरदर्द अनेक प्रकार के होते हैं। बहुत-से लेखक आधासीसा, स्नायविक सिरदर्द, मिचली वाला सिरदर्द आदि नामों से वर्णन करते हैं, किन्तु लक्षणों के अनुसार इनमें बड़ा अन्तर है, किन्तु सभी में एक लक्षण समान है, जो सिर के एक अंश मे होता है और समय-समय पर इनका दौरा होता है और प्रायः इनके साथ वमन रहता है। गठिया-जनित सिरदर्द के सम्बन्ध में ऊपर जो कुछ लिखा है, उसके आगे आधा-सीसी, वातजनित सिरदर्द और स्नायविक सिरदर्द के सम्बन्ध में यहाँ कुछ विवरण दिया जाता है।

१—असली आधासीसी (True Megrim) यथार्थ स्नायविक सिरदर्द के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, जैसे कि मृगी, प्रसूतावस्था के आक्षेप या अन्य ऐंठन वाले आक्रमण की तरह ही है और यह पाकाशय से उत्पन्न सिरदर्द नहीं है, किन्तु जब आधासीसी बहुत तेज हो जाती है तो पाकाशय में जलन होने लगती है। इसके अतिरिक्त इसका एक दौरा २४ से ३६ घण्टों तक रहता है और इसका आक्रमण एकाएक होता है और जब वह बहुत तेज होता है तब वमन होने लगता है। उसके बाद दर्द घटने लगता है और कुछ समय के बाद वह एकदम गायब हो जाता है और दूसरे आक्रमण के पहले तक रोगी बिल्कुल स्वस्थ रहता। यह विशेष ध्यान देने योग्य बात है कि बेलेडोना, नक्स वामिका, कैल्केरिया, यहाँ तक कि इग्नेशिया (यह अन्तिम औषध खासतौर पर मृगी-रोगाक्रान्त स्त्रियों के लिए है।) उसी तरह सल्फर और साइलेशिया भी तथा मृगी प्रतिषेधक औषधें मेरे चिकित्सा-व्यवसाय में हर समय स्थायी आरोग्य देती हैं, किन्तु आधासीसी के लिए सीपिया और स्पाइजेलिया दोनों ही विशेष लाभदायक औषधें हैं। कभी-कभी इनसे तेज दर्द कुछ कम हो जाता है। आज तक आधासीसी के जितने रोगी मेरे चिकित्साधीन आये हैं, उन सभी के लिए मैंने बेल की ही व्यवस्था दी है, वह भी यदि दर्द अधिकतया सिर के दाहिनी ओर हो। दूसरी ओर यदि दर्द बायीं ओर हो और यदि रोगी रोशनी की अपेक्षा हल्ला-गुल्ला सहन न कर सके तो मेरे विचार से स्पाइजेलिया ही उत्तम औषध है, खासकर यदि दर्द तड़के शुरू हो और दोपहर तक बढ़े, किन्तु यदि इस औषध से आराम न हो तो मैं उसके बदले नक्स-वाम, स्टेन और सल्फर की व्यवस्था देता हूँ और उसका फल भी अच्छा होता है। यदि आधासीसी सिर के दाहिने पार्श्व में हो तो सैंगुइनेरिया और सीपिया से सामयिक लाभ होता है, पहले में यदि रोगी शिकायत करे कि उसकी आँखें बाहर निकलना चाहती हैं और सिर टुकड़े-टुकड़े होकर फट जायगा, किन्तु सीपिया में दाहिनी आँख के ऊपर डंसने या कोंचने वाला दर्द है और आँधी-पानी के समय वह बहुत बढ़ जाय, ठण्डी उत्तरी वायु से

भी बढ़े। ऐसे क्षेत्रों में दर्द किस प्रकार का है, उस पर मैं ध्यान नहीं देता, केवल यदि रोगी शिकायत करे कि उसके सिर में लहराने की गति मालूम होती है; मानो सिर पानी से भरा है और चेहरे के एक अंश में ठण्ढक मालूम हो और बेल से कुछ उपशम न हो तो मैं अन्य औषधों के साथ खासतौर पर प्लेटिनम की व्यवस्था देता हूँ, क्योंकि वह आरोग्य साधना में बहुत ही सहायक है। एक अन्य रोगी में सिरदर्द चलने, दृढ़ता के साथ कदम रखने या सिर को हिलाने से बहुत अधिक बढ़ जाय कि सहन करना कठिन हो तो ग्लोनायन तुरन्त आराम देगा। कैल्केरिया किन्तु अन्य प्रकार के सिरदर्द में लाभदायक है और उससे स्थायी आरोग्य भी होता है। वह भी जहाँ यौवनकाल में भी खोपड़ी पर के उद्भेद अन्य औषधों से दबा दिये गये हों और दर्द हथौड़ी पीटने या भाला भोंकने जैसा मालूम हो, साथ में सिर के चारों ओर ठण्ढक प्रतीत हो। इस प्रकार के सिरदर्द के लिए एकोन, मर्क, हिपर सल्फ से मुझे विशेष लाभ नहीं हुआ, किन्तु स्नायविक सिरदर्द के लिए वे विशेष उपयोगी सिद्ध हुए हैं, वह भी असली ऐंठनवाली आधासीसी की अपेक्षा वातजनित सिरदर्द के लिए अधिक उपयोगी हैं। दूसरी ओर इस प्रकार के सिरदर्द के साथ यदि रोगी जोर-जोर से रोने लगे और मिचली बढ़ते-बढ़ते बेहोशी आ जाय और उसके बाद आँखों की दृष्टि भी धुँधली हो जाय तो साइलीशिया से पूर्ण आरोग्य होता है।

२—स्नायुशूल वाला सिरदर्द (Neuarlgice Headach)—आधासीसी की तरह यह भी एक प्रकार का सिरदर्द है, क्योंकि यह भी समय-समय पर आता है। साधारणतया इसका आक्रमण सिर के एक ओर होता है और किसी-किसी स्थल में बहुत कै होने लगती है। ऐसा सिरदर्द एकबार बन्द हो जाने के बाद पुनः शुरू हो जाता है और कुछ दिनों तक एक ही समय ऐसा सिरदर्द होता है और कभी रुक-रुककर ऐसा दर्द होता है। ऐसे सिर दर्द के लिए नक्स वाम के अतिरिक्त स्पाइजेलिया एक विशेष औषध है, खासकर यदि दर्द सिर के बायीं ओर हो, रात को या दोपहर के पहले इसका आक्रमण हो, खासकर आँखों के भीतर और उसके साथ

ऐसा अनुभव होने लगे कि आँखें बहुत बड़ी हो गयी हैं या दर्द समूचे चेहरे में फैल जाय, दाँत और गरदन तक में भी। ऐसे स्थल में नक्स वाम तड़के के सिरदर्द के लिए भी उपयोगी है, यदि दर्द सूई चुभने की तरह हो, वह भी सिर के एक ओर, आँखों के गढे या नाक की जड़ में शुरू हो, दर्द चोटी तक पहुँचे, जिससे खट्टी कै हो और दर्द के मारे रोगी पागल-सा हो जाय या बेहोश हो जाय और सभी इन्द्रियाँ दर्द के कारण विकल हो जायँ। इन औषधों के आगे भयकर फाड़ने और ऐंठने वाले दर्द के लिए कालोसिन्थ ही सबसे उत्तम औषध है, जो दर्द बायी ओर हो, खासकर यदि परेशानी और शोक के कारण सिरदर्द बढे तथा झुकने, पीठ के बल लेटने, आँखों को घुमाने या सिर को हिलाने से बढे। ऐसे क्षेत्रों में मैं बेल, ब्रायो, कैमो, एकोन और सल्फ से बहुत सफलता पा चुका हूँ, खासकर यदि दर्द आँखों के ऊपर भौंहों में हो, साथ में कड़ुवी कै और चेहरे में पीलापन और ठण्ढक मालूम हो। एक रोगी की दाहिनी कनपटी और सिर के दाहिने अंश में फाड़ने और जलने वाले तेज दर्द के लिए ब्रायोनिया ने मुझे बहुत सहायता दी। भयकर क्रोध के अनन्तर ऐसा दर्द हुआ था और बहुत तड़के शुरू हुआ था और रात को बहुत अधिक बढ़ जाता था, सिर के बायी ओर भयं-कर फाड़ने वाला दर्द हो तो कैमोमिला, नाक की जड़ में ऊपर ऐंठन वाला या डसने का-सा दर्द रहे, साथ में अत्यन्त स्नायविकता और बहुत स्पर्शकातरता केवल गन्ध के लिए हो और मृत्यु का अत्यन्त भय हो तो एकोन ही सबसे उत्तम औषध है। बायीं आँख के ऊपर बहुत ही कष्टदायक दर्द हो और जो शाम को शुरू हो और रात को बहुत अधिक बढे तो सल्फर अत्यन्त उपयोगी है।

३—स्नायविक सिरदर्द (Nervous Headache)—वात प्रकृति वाले व्यक्तियों में ही ऐसा सिरदर्द होता है तथा जो लोग मृगी रोग से आक्रान्त हैं और हर चीज से डरते हैं। जो लोग अति भोग से शरीर के शुक्र का नाश कर चुके हों, उनमें भी ऐसा ही स्नायविक सिरदर्द होता है। पूर्वोक्त दोनों प्रकार के सिरदर्दों की अपेक्षा इस प्रकार के सिरदर्द

में समय निश्चित नहीं रहता। इसके प्रधान कारण हैं—मानसिक परिश्रम, मासिक ऋतु का विकार आदि। यह थोड़े या अधिक समय तक चलता रहता है। ऐसे सिरदर्द के लिए ठीक औषध चुनना कठिन काम है, किन्तु इस प्रकार के सिरदर्द के लिए औषधों की संख्या अल्प है। मृगी रोग से आक्रान्त रोगों के इस प्रकार के सिरदर्द के लिए एकोन प्रथम औषध है। दूसरों की बातचीत सुनते रहने से भी ऐसा सिरदर्द होता है। रोगी चलने-फिरने या आवाज करने के शब्द को भी सहन नहीं कर सकता, सिर में ऐसा दर्द होता है मानो वह कुचल गया है, थोड़ा भी मानसिक परिश्रम करने से वह दर्द बढ़ जाता है, ऐसी स्थिति में आरम। कानों में गर्जन सिर के भीतर पानी की तरह लहरें प्रतीत होती हैं। खासकर मृगी से आक्रान्त व्यक्तियों के लिए बेलेडोना। नाक की जड़ में कोई बोझ है, ऐसा अनुभव, अधिक काफी पीने वालों के सिरदर्द के लिए कैमोमिला, दिमाग कुचल जा रहा है और अत्यन्त वृद्ध व्यक्तियों के सिरदर्द के लिए चायना। मृगी रोगाक्रान्त स्त्रियों के लिए तथा मासिक के समय सिरदर्द में जब ऐसा अनुभव हो, मानो वह खोखला हो गया है तो कावयूलस। ऐसा अनुभव मानो सिर में कील ठोंकी जा रही है या मस्तिष्क कुचल डाला गया है—काफिया। कभी-कभी रोगी दर्द के मारे छटपटाता है, चिल्लाता है, रोता है, मारता है, ऐसी अवस्था में भी काफिया उत्तम औषध है। मृगी रोगों के लिए जब दर्द नाक पर दबाव, डालता है, आँखों में चमक पीले रंग का पेशाब अधिक मात्रा में, करवट बदलने से दर्द बढ़ता है तो इग्नेशिया। जो लोग प्रायः बैठे रहते हैं, ऐसे साहित्यिकों और वृद्धों के लिए नक्स वामिका। यदि रोगी काफी अधिक पीता हो, सिर में कील ठोंकने का सा अनुभव हो और यह दर्द खाने के बाद, तीव्र प्रकाश में, आवाज या खुली हवा में बढ़ जाय तो भी नक्स वामिका ही उत्तम औषध है। अतिरजः वाली स्त्रियों में सिरदर्द हो और चीजें छोटी दिखाई पड़ें तथा नाक की जड़ में ऐंठन के साथ दर्द अधिक हो तो प्लेटिना। जिन स्त्रियों का ऋतु बन्द है और जो चिड़चिड़ा मिजाज वाली हैं, उनके

लिए सिपिया। ऐसी स्त्रियों में अत्यन्त स्पर्शकातरता, चलने-फिरने में अनिच्छा हो, अधिक मानसिक परिश्रम के करने से सिरदर्द बढ़े और जल्दी चलने से मस्तिष्क में धड़कन होने लगे तो उनके लिए साइलीशिया उपयोगी औषध है।

४—यहाँ कुछ साधारण निर्देशक लक्षण लिखे जाते हैं जिनसे नये चिकित्सक औषध निर्वाचन सहज में कर सकेंगे—

मस्तिष्क के भीतर ऐसा अनुभव मानो वहाँ ऊपर से पानी गिर रहा है—बेलेडोनना, प्लेटिना। विशेष रूप से मृगी रोगाक्रान्त व्यक्तियों में कानों के भीतर गर्जन और सनसनाहट हो तो आरम, बेलेडोना। मस्तिष्क के भीतर कोई चीज चल-फिर रही है या अपना बोझ समाप्त करना चाहती है तो—नक्स वाम। कोई मस्तिष्क को कुचल रहा है—आरम, नक्स वाम, चायना, वेरेट्र एल्ब, काफिया। मानो सिर में कोई छेद बना रहा है—सीपिया, स्पाइजेलिया, सैंगुइनेरिया, इग्नेशिया, चायना। ऐसा अनुभव मानो सिर के भीतर घाव है—पल्स, सीपिया। ऐसा सिरदर्द मानो दिमाग शिकंजे मे कसा जा रहा है—पल्स, वेरेट्र एल्ब, सल्फर। खरोंचने या ऐंठन वाला सिरदर्द—एकोन, प्लेटि। ऐसा दर्द मानो खोपड़ी के भीतर कील ठोंकी जा रही हो—इग्ने, काफिया, नक्स वाम। दिमाग पर मानो हथौड़ा पीटा जा रहा है—एकोन, इग्ने, कैमो, सीपि, कैल्के, सल्फ। ऐसा लगता है मानो सिर के टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं—ब्रायोनिया, चायना, मर्क। ऐसा अनुभव मानो भीतर की सारी चीजें निकल पड़ेंगी—ब्रायो, इग्ने। मानो सिर के भीतर खाली है—काक्यू पल्स। मानो सिर पर भारी दबाव है—काफि, इग्ने, कैमो, नक्स वाम, ब्रायो, चायना। मानो दिमाग को कोई चीर-फाड़ रहा है—ब्रायो, कैमो, चायना, कालो, मर्क, पल्स। मस्तिष्क के भीतर सूई चुभने का-सा दर्द—ब्रायो, कैमो, कालो, एकोन, सीपि। भीतर से बाहर की ओर आने वाले गोली लगने जैसा तेज दर्द में—इग्नेशिया। दर्द असहनीय है—एकोन, काफि, कैमो। सिर के दर्द के मारे रोगी चिल्लाने लगता है—सीपि, एकोन, काफि, कैमो, वेरेट्र,

एल्व, साइलि। दर्द के कारण रोगी को लेट जाना पड़ता है—नक्स वाम, कालो, सेंगुइ, साइलि। सिर पर कुछ भी स्पर्श सहन नही होता—ब्रायो, चायना, कालो, सीपि, सल्फ। केशो वाली खोपड़ी में भी दर्द—वेल, चायना, वेरेट एल्व। जहाँ हिलने-डुलने से दर्द वढे—ब्रायो, चायना, नक्स वाम, सीपि, एकोन, सल्फ। आँखो को घुमाने से भी दर्द वढ़ता है—वेल, ब्रायो, पल्स, सीपि, कालो, नक्स वाम। आँखें खोलते ही सिरदर्द वढ़ता है—चायना, सीपि। लेटी अवस्था से एकाएक उठ जाने पर दर्द वढे—वेरेट एल्व। सिर को नीचे की ओर झुकाने से दर्द वढे—वेल, ब्रायो, नक्स वाम, कालो, पल्स, स्पाइजि। खड़े से एकाएक वैठ जाने पर दर्द वढ़े—पल्स। जोर से चलना शुरू करते ही वढ़े—ब्रायो, नक्स वाम। खुली हवा में द्रुत चलने से वढे—इग्ने कैल्के। जोर से सिर हिलाने पर भी वढे—ग्लोन, नक्स वाम। दूसरो की वातें सुनने पर भी दर्द वढे—एकोन, वेल, सीपि, स्पाइजि। लम्वे कदम वढ़ाते रहने से भी वढे—वेल, चायना। शोर-गुल सुनने से वढे—एकोन, काफि, नक्स वाम, वेल, ब्रायो, सीपि, स्पाइजि। वाजों का वजाना सुनने से वढे—काफि, उज्ज्वल प्रकाश से वढ़े—एकोन, इग्ने, पल्स, नक्स वाम। खुली हवा में दर्द वढ़े—नक्स वाम, सल्फ, कैल्के, स्पाइजि, चायना, काफि। पीठ के वल लेटे रहने से दर्द वढे—कालो, वेरेट एल्व। भोजन करने के वाद ही दर्द वढे—इग्ने, नक्स वाम। काफी पीने से वढे—इग्ने, नक्स वाम। सन्ध्या के समय सिरदर्द शुरू हो—पल्स, कालो, इग्ने। सन्ध्या समय लेट जाने पर दर्द वढे—इग्ने। रात को वढे—चायना, सल्फ, साइलि। सुवह दर्द शुरू हो—चायना, इग्ने, नक्स वाम, स्पाइजि। दोपहर के वाद दर्द वढे—कालो। आँखें वन्द कर लेने से दर्द घट जाय, सीपि, कैल्के। सिर को कसकर वाँध देने से सिरदर्द घटे—पल्स, सीपि, कैल्के, नाइट एसि। लेट जाने पर घटे—चायना, सीपि, कैल्के। सिर को झुकाने से दर्द घटे—इग्ने। आराम से पड़े रहने से दर्द घट जाय—चायना, सीपि, स्पाइजि। रात को सोने पर घटे—सीपि।

यदि दर्द सिर के दाहिने पार्श्व मे हो—वेल, सीपि, सेंगुइ, कैल्के। सिर के वायी ओर दर्द हो—कालो, एकोन, सल्फ, स्पाइजि, नक्स वाम। नाक की जड मे दर्द हो—एकोन, इग्ने, प्लेटि। भौंहो के ऊपर दर्द हो—वेल, नक्स वाम। कनपटियो मे तेज दर्द हो—वेल, कैमो, चायना, इग्ने, पल्स, नक्स वाम। सिर को चोटी पर दर्द हो—चायना, सल्फ, कैल्के। मस्तक के गहरे भीतर दर्द—ब्रायो, इग्ने, सीपि, कैल्के, चायना। सिर के पिछले भाग मे दर्द हो—सल्फ, पल्स, सीपि। ललाट पर दर्द हो—वेल, ब्रायो, कालो, इग्ने, नक्स वाम, प्लेटि, सल्फ, कैल्के, सीपि, स इलि।

यदि दर्द के साथ घवराहट रहे—एकोन, काफि, कैमो, नक्स वाम, वेरेट एल्व। जिस दर्द से मनुष्य पागल हो जाता है—एकोन, नक्स वाम, वेरेट एल्व। दर्द के मारे मृत्यु का भय हो—एकोन, प्लेट। सिर पर फोड़ा हो—हिपर, साइलि। सिरदर्द की गर्मी से सिर के वाल झड़ने लगें—सल्फ, साइलि। सिर में पसीना होने लगे—कैमो, कैल्के, साइलि। सिर में चक्कर आवे—नक्स वाम, पल्स। कानो के भीतर सनसनाहट की आवाज—पल्स वेल। दर्द के मारे दृष्टि धुंधली हो जाती है—इग्ने, पल्स। चेहरा पीला पड़ जाता है—इग्ने पल्स, नक्स वाम, वेल। चेहरे पर तमतमाहट दिखायी पड़े—वेल, एकोन, नक्स वाम। केवल एक गाल में लाली—कैमो। चेहरा फूल गया हो। कैमो। नकसीर होने लगे—एकोन, ब्रायो, पल्स। दर्द के मारे लगातार मिचली—इग्ने, पल्स, सल्फ। कै होने लगे—वेल, सिप, नक्स वाम, पल्स, सेंगुइ, कैल्के, वेल। दर्द के साथ पतले दस्त होने लगे—वेरेट एल्व। ऐंठन के साथ पेशाव हो—इग्ने कालो। धड़कन के साथ दर्द—पल्स। दर्द के मारे नाक से कफ निकलने लगे—पल्स। मूर्च्छा, साथ में शरीर का ठण्ढापन और ठण्ढा पसीना—वेरेट एल्व। दर्द के मारे दिमाग इतना कमजोर कि मामूली शब्द से भी रोगी चौंक उठे—इग्ने।

बाल झड़ना
(Falling of the Hair)

इस रोग को आराम करना बहुत ही कठिन बात है। गजे सिर में केश बढ़ाना भी सहज काम नहीं है। औषध देने पर भी कहा नहीं जा सकता कि कितने दिनों में गजे सिर में फिर से केश उगेगा। एक रोगी को एलोपैथिक चिकित्सकों ने बहुत दिनों तक पारा सेवन कराया था। फलस्वरूप उसके सिर और भौंहों के सारे बाल झड़ गये थे। होम्योपैथिक पद्धति से भी आरम औषध सेवन कराने पर गंजे सिर में भी केश निकल आये थे। उसके बाद मैंने ग्रेफाइटिस और हिपर दिया था।

कान के पास खोपड़ी पर गंज दिखाई पड़े तो फास्फोरस उपयोगी है। दुःख और चिन्ता के कारण यदि युवकों के केश सफेद हो गये हों तो फास एसि से लाभ होगा। यदि सिर पर खुजली हो, रूसी गिरे और बाल झड़े तो लाइको। ऐसी स्थिति के लिए ब्रायो और कैल्के भी उपयोगी है। यदि केश बहुत सूखे या उलझे हुए हों तो केलि कार्ब। युवकों के गंज के लिए बेराइटा कार्ब और लाइको अच्छी दवा हैं। मेरे ख्याल से लाइको ही अधिक उपकारी है। (डॉ० हेम्पल के मत से गंज के लिए आर्स अच्छी दवा है।) जहाँ केश अपनी जड़ों की कमजोरी के कारण झड़ गये हों, सिर और सारे शरीर का चमड़ा सूखा मालूम हो और रोगी कितना ही खाता-पीता क्यों न हो उसका शरीर सूखता जाता है।

—:o:—

अध्याय—४

नेत्रों के रोग

(Ophthalmic Affections)

१—साधारण आँख आना रोग

(Simple Ophthalmia)

इस प्रकार के रोगों में, चाहे पलकें आक्रान्त हों या आँख के गोले या श्वेतपटल पर इसका आक्रमण हो, मेरी सदा से एकोन ही प्रधान औषध है, जिसे आरम्भ में सेवन कराने से मैं कभी व्यर्थ नहीं हुआ, चाहे प्रदाह के द्वारा वहाँ के अंग कैसे ही प्रभावित हुए हों। किन्तु जब श्वेतपटल या कनीनिका में प्रदाह हो, तब अन्य औषधों की आवश्यकता हो सकती है, जिनका विवरण मैं क्रमशः दूंगा। यदि एकोन से रोग आराम न हो तो मैं निम्नलिखित औषधों का प्रयोग करता हूँ—

१—पलकों के साधारण प्रदाह में, साथ में प्रकाशान्तक रहने से तथा यदि उसके साथ प्रचुर कफ वाला निस्सरण हो तो तुरन्त सल्फर या यदि पलकें ऐंठन के साथ बन्द हो जायँ और जोर से उन्हें खोलने पर खून निकलने लगे तो बेल। यदि पलकों में प्रदाह हो, मानों उनमें विसर्प हो गया हो तो मैं हिपर से बढ़ कर औषध नहीं जानता और यदि वे उलट जायँ तथा सल्फ से विशेष फल न हो तो मैं मर्क देता हूँ, खासकर यदि रोगी आग की रोशनी सहन न कर सके और श्वेतपटल तथा पलकों की कोमलास्थि के बीच वाली ग्रन्थि में घाव हो गया हो या पलकों का चमड़ा छूटने लगे। आँखों के पुराने घावों में मेरे हाथ के रोगी के लिए पल्स और सल्फ अत्यन्त अधिक उपयोगी प्रमाणित हुए हैं। यदि ये दोनों औषधें सहायता न दें तो युफ्रेशिया और सीपिया कभी कभी लाभदायक सिद्ध हुए

हैं। किन्तु यदि रोगी बार-बार आँखें खोले और बन्द करे तो युफ्रेशिया ही अच्छी दवा है। मर्क और बेल के बाद हिपर उत्तम फलदायक सिद्ध हुआ है, वह भी यदि नेत्रों के जलन हो, कुचल जाने जैसा कष्ट मालूम हो और नेत्रों के कोने आक्रान्त हो गये हों तथा नेत्रों की भीतरी ग्रन्थि में पीब पैदा हो गया हो, फलस्वरूप रात को पलकों का सट जाना। जब युफ्रेशिया या पल्स से आराम न हो। अन्य एक रोगी में नेत्रों के बाहरी कोनों में पुरानी जलन तथा घाव थे जो एण्टिम क्रूड से जादू की तरह अच्छे हो गये थे। रस टाक्स हर स्थान पर उपयोगी नहीं है, खासकर यदि पलकें मुश्किल से खोली जा सकें और यदि उन्हें खोलने की चेष्टा करते ही चरपरे तथा चमड़ा छिल जाने वाले आँसू धाराओं से गालों पर से बह निकलें या पीला पीब वाला कफ निकले तो वह कुछ लाभ दे सकता है। यदि पलकों का भीतरी भाग ही प्रदाहित हो, साथ में आँखें ऐंठन के साथ बन्द हो जायँ, उस स्थिति में दर्द कैसा ही क्यों न हो आर्स ही एकमात्र औषध है, जहाँ युफ्रेशिया आँख आना रोग को आराम न कर सके, जिसके साथ अत्यन्त अधिक सर्दी का उपसर्ग रहे तथा पलकों में जलन और डसने का-सा दर्द रहे, साथ में चरपरा और चमड़ा छिल जानेवाला आँसू बहे। यदि नवजात शिशुओं की पलकों में वैसी जलन रहे तो अन्य औषधों का व्यवहार करना आवश्यक होगा जिनके सम्बन्ध में नीचे क्रमशः बताया जाता है—

२—श्वेतपटल-प्रदाह (Conjunctivitis)—यहाँ भी आर्स ही आवश्यक औषध है, खासकर यदि श्वेतपटल में नीला-सा लाल रंग हो, साथ में जाल की तरह कोषों का गुच्छा तथा पलकों के भीतर दाने और उभार सूजन की तरह दिखाई पड़े। आर्स के बाद हमारे पास बेल और सल्फर हैं, यदि प्रदाहित तथा लाल श्वेतपटल भीतर की ओर प्रसारित हो गया हो; यदि श्वेतपटल थैले की तरह लटक गया हो तो सल्फ ही सर्वोत्तम औषध है। यदि कोषों में साधारण रक्तसंचय के अतिरिक्त आँखों में अन्य कोई परिवर्तन न हो तो पल्स और मर्क इस विशृंङ्खला को सुधार देंगे।

३—आँखो के श्वेतपटल मे जलन (Inflammation of the Sclerotica)—इस प्रकार के प्रदाह के लिए मर्क ही उत्तम औषध है। यदि श्वेतपटल लगातार लाल, फूला हुआ तथा घाव वाला हो तो अधिकांश क्षेत्रों में सल्फर देने से उत्तम फल मिलता है। यह औषध प्रदाह के वाकी बचे उपसर्गों को दूर कर देती है।

४—कनीनिका-प्रदाह (Inflammation of the Cornea)—ऐसे कष्टों के लिए मैंने हिपर, आर्सेनिकम, कैल्केरिया और सल्फर से विशेष लाभ पाया है। चक्षुओं में घाव हो जानेपर भी ये ही औषधें उपयोगी हैं। यथार्थ में इस प्रकार की अवस्था होने पर हिपर और सल्फर की अपेक्षा आर्सेनिक, कैल्केरिया और यूफ्रेशिया अधिक उपकारी पाये गये हैं। खास-खास स्थलों में मुझे आर्सेनिक से ही चिकित्सा आरम्भ करनी पड़ी थी और अधिकाश रोगी मेरे हाथ में इसी से अच्छे हो गये हैं।

५—समूचे नेत्रो मे प्रदाह (Inflammation of the whole-eye)—ऐसी स्थिति में एकोन ३० अच्छी औषध है। आधे प्याले जल में २ गोलियाँ घोलकर ३-३ घण्टे के बाद १-१ चम्मच पिलाने से प्रदाह वन्द हो जायगा। यदि एकोन से पूर्णतया आराम न हो तो सल्फर से लाभ होगा। इससे भी विशेष उपकार न हो तो आर्सेनिकम अच्छी दवा है। पल्सेटिला उस अवस्था में गुणकारी है जहाँ आँखों के भीतर सूई चुमने का-सा दर्द और चिलक होने लगे और खुली हवा में आँसू अधिक निकलें और बहुत कीचड़ जम जाय और दृष्टि की क्षीणता हो। ऐसी अवस्था में क्रोकस भी अच्छी दवा है। यदि पलकें आँखों के गोलों में चिपक जायँ और प्रकाश एकदम सहन न हो तो मर्क ही सबसे उत्तम औषध है।

६—नवजात शिशुओ का आँख आना (Ophthalmia of new born infants)—यहाँ भी एकोन ही श्रेष्ठ औषध है। किन्तु रोग शुरू होते ही इसका व्यवहार करना आवश्यक है। इससे घण्टे भर में प्रदाह घट जायगा और कुछ उपसर्ग बाकी बचें तो मर्क्यूरियस और डल्कामारा

उन्हें साफ कर देगा। यदि रोग अधिक बढ़ गया हो तो सल्फर से अधिक उत्तम कोई दूसरी औषध नहीं है। इसके अनन्तर आवश्यकता हो तो कैल्केरिया दिया जा सकता है। ऐसी स्थिति में रस भी लाभदायक है। किन्तु पलकों को खोलने पर यदि श्लैष्मिक झिल्लियाँ कुछ मोटी मालूम हों और उनमें लाली तथा सूजन आ गयी हों तो रस ही सबसे अच्छी दवा है। यदि कैल्के से पूर्णतया रोग आराम न हो जाय तो लाइको और नाइट एसि से उपकार होगा। यदि शिशु आँखों को खोलना न चाहे तो युफ्रेशिया अच्छी औषध है। (डा० हेम्पल के मतानुसार नवजात शिशुओं के आँख आना रोग में जब पीब बढ़ने लगे तो सिल्वर नाइट्रेट का घोल पलकों को उलट कर रूई से लगा देने से विशेष लाभ होगा। १ ग्रेन सिल्वर नाइट्रेट को १ औंस चुवाए हुए जल में घोलकर लगाना उचित है। ३-४ घण्टे के अन्तर पर इस प्रकार का उपचार करने से पीब का आना बन्द हो जायगा तथा सूजन गायब हो जायगी)।

७ पुराना आँख आना रोग (Chronic Ophthalmia)—इस अध्याय के ३ और ५ में उल्लिखित औषधें ऐसी स्थिति में लाभदायक प्रमाणित न हों तो सल्फर, युफ्रे और कैल्के से विशेष उपकार होगा। खासकर जब कनीनिका पर घाव हों और आँखों में जलन अधिक हो शाम को दीपक की रोशनी सहन न हो तो यही दो अन्तिम औषधें उपकारी सिद्ध होंगी। यदि आँखों के गोलों में दर्द अधिक हो और ऐसा लगे मानो वे बाहर निकल पड़ेंगे तो आर्स उपकारी होगा। यदि चिलक अधिक हो तो सीपिया लाभकारी सिद्ध होगा।

२. आँख आना रोग के विशेष भेद

(Specific Forms of Ophthalmia)

१—सर्दीसहित आँख आना (Catarrhal Ophthalmia)—इसके लिए युफ्रेशिया अमोघ औषध है, यदि नाक से अधिक सर्दी बहती हो तो ऐसी स्थिति में उसके साथ पल्स, आर्स और हिपर अत्यन्त लाभकारी

औषधें हैं। यदि नेत्रों से आँसू अधिक बहते हों, शाम को दर्द बढे, आँखें रात्रि को सट जायँ, आँखें खोलने पर सब चीज धुँधली दिखायी पडे तो पल्स सबसे उत्तम औषध है। यदि आँखों से गरम आँसू बहे तो आर्स अच्छी दवा है। आँखों को देखने से मालूम हो कि उनमें खून भरा हुआ है तो नक्स वाम या वेल अधिक उपकारी सिद्ध होगा। यदि सफेद परदा बहुत लाल हो गया हो और आँखों के बहुत भीतर से दर्द आता हो तो वेल उत्तम औषध होगी। यदि आँखों के कोने अधिक लाल हों और रोशनी बिल्कुल सहन न हो तो नक्स वाम बहुत ही उपकारी सिद्ध होगा। यदि आँसुओं के लगने से गालों की छाल उतर गयी हो और नाक से चरपरा स्राव निकले तो मर्क और आर्स अच्छी दवाएँ होंगी।

२—वात वाला आँख आना रोग (Rheumatic Ophthalmia)—ऐसी अवस्था में एकोन ही अच्छी दवा है। इससे विशेष लाभ न हो तो पल्स जादू दिखाएगा, खासकर जब सध्या समय डक मारने जैसा दर्द हो। यदि पल्स से अधिक उपकार न हो तो मर्क बचे-खुचे उपसर्गों को दूर कर देगा, खासकर यदि रात को कष्ट अधिक हो। कुछ रोगियों के लिए ब्रायो और रस उपकारी सिद्ध हुए हैं। इसी अवस्था में स्पाइजि भी अच्छी दवा है, जब कि कनीनिका के आस-पास कुछ नीला-सा घेरा दिखायी पड़े। पुराने रोगियों के लिए सल्फ अच्छा काम देता है। यदि कनीनिका के आस-पास छाले पड़ गये हों तो युफ्रेशिया उपकारी है। एक रोगी के सिर में इतना अधिक पसीना आया कि समूचा सिर तर हो गया और उसी कारण कष्ट बढ़ गया। उसके लिए ब्रायो की अपेक्षा एकोन और रस उपकारी सिद्ध हुए थे। यदि चिलक के दर्द के कारण रोगी रात को सो न सके तो वेरेट एल्ब सफल सिद्ध होगा, वह भी यदि आबहवा ठण्ढी और तर हो।

३—सन्धिवात का चक्षु-प्रदाह (Arthritic Ophthalmia)—ऐसी परिस्थिति में एकोन ही श्रेष्ठ औषध है। कुछ ही घण्टों के भीतर यह दर्द को घटा देगा। यदि कुछ उपसर्ग रह जायँ तो बेलेडोना या सल्फर

उन्हें मिटा देगा। इस प्रकार के चक्षु-प्रदाह के लिए सल्फर अच्छी दवा है, कनीनिका में अधिक प्रदाह होने पर भी। यदि ऐसे कष्ट के साथ सिरदर्द बढ़े तो मैं सबसे पहले बेलेडोना देता हूँ। यदि आधासीसी हो और दर्द फाड़ने की तरह प्रतीत हो तो कालो कभी-कभी सहायक होगा। यदि आँखों के गोले कुछ छोटे मालूम हों तो काक्यूलस से लाभ होगा। यदि इसके विपरीत गोले बड़े प्रतीत हों और ऐसा लगे कि वे गढ़ो में नहीं समायेंगे और ऐसा प्रतीत हो कि वे बाहर निकल पड़ेंगे तो स्पाइजि ही उत्तम औषध है। लाइको सन्धि-प्रदाह में सबसे उत्तम औषध है। मैं इसी औषध का प्रयोग कर सन्धि-वात वाले आँख आना रोग को आराम करने में अधिक सफलता पाता हूँ। कनीनिका में क्षय शुरू हो गया हो तो कैल्के ही अच्छी दवा है।

४—गण्डमाला वाला आँख आना रोग (Scrofulous Ophthalmia)—यदि रोगी को अधिक मात्रा में पारा सेवन न कराया गया हो तो मैं मर्क से विशेष उपकार पाता हूँ। खासकर आँखों में चिलक जैसा दर्द हो और रात को बिछौने में लेट जाने पर कष्ट बढ़े और यदि पहले मर्क का सेवन कराया गया हो तो हिपर से चिकित्सा आरम्भ करनी चाहिए। इसके अनन्तर मैं बेल देता हूँ। यदि दर्द तेज हो और गोले भीतर धँसे हुए हों तो भी बेल से उपकार होगा। यदि पलकें सट गयी हों और आँखों से चरपरे आँसू बहते हों तो मेरे विचार से पल्स उपकारी औषध है। इसके अनन्तर मेरा साधारण नियम है कि सल्फर या उसके बाद कैल्के दिया जाय। इन दोनों औषधों को कुछ समय तक प्रभाव डालने के लिए देना चाहिए। यदि कैल्के से लाभ न हो तो मैं वहाँ नाइट्रिक एसिड देता हूँ। गण्डमाला रोग वाले आँख आना रोग में मैं इसी तरह चिकित्सा करके सफल हुआ हूँ।

५—प्रमेहजनित आँख आना रोग (Gonorrhoeal Ophthalmia)—यदि सूजाक के कारण ऐसा रोग हो तो मैं एकोन से चिकित्सा

आरम्भ हूँ, करता जिससे प्रदाह घट जाता है। यदि इससे भी स्राव बन्द न हो तो नाइट्रिक ऐसिड अच्छी दवा है। वह रोग को एकदम नाश कर देगा। ऐसी परिस्थिति में पल्स भी कुछ काम कर दिखाता है। ऐसी हालत में डॉ० रोजन वर्ग ने चायना की बड़ी प्रशंसा की है। किन्तु मुझे इससे कोई लाभ नहीं हुआ। इस कारण मैं समझता हूँ कि उन्होंने जिन रोगी का विवरण दिया है, उसके मूल में सूजाक नहीं था।

३—कुछ साधारण निर्देशक लक्षण

(A few General Indications)

१—आँख आना रोग में यदि पलकें चमकीली लाल हों तो एकोन और हिपर। पलकें उलट गयीं हों तो मर्क, वेल, हिपर। एकदम बन्द हो गयी हो तो हायोस, वेल, रस और आर्स। भीतर की सतह में सुजन आ गयी हो तो आर्स, रस, वेल। पलकों के सिरों पर घाव हो तो मर्क। रात्रि के समय पलकें सट जाती हो और पीव की तरह कीचड़ निकले तो युफ्रे, पल्स, हिपर, नक्स वाम, कैल्के, एकोन, सल्फर। यदि श्लैष्मिक झिल्लियो से पीव बहने लगे तो युफ्रे, फास, पल्स, हिपर, रस, लाइको। यदि पलकें एकदम सूख गयी हों—वेरेट एल्व। कनीनिका में नीली-सी लाली—आर्स। पलको मे सूजन भीतर प्रसारित—वेल, रस, सल्फ, आर्स, एकोन। थैले की तरह पलकें लटक जायँ तो सल्फर। यदि पलकों में दाने हो तो आर्स। आँखो मे बहुत लाली—आर्स, युफ्रे। श्वेतपटल यदि बीच में फैल जाय—मर्क, सल्फ। मामूली लाली—वेल, आर्स, युफ्रे। श्वेतपटल पर छाले—मर्क, सल्फ, युफ्रे। आँखों के चारों ओर फुन्सियाँ—मर्क, हिप। कनीनिका पर घाव—युफ्रे, आर्स, सल्फ, कैल्के, हिप। कनीनिका का धुँधलापन—युफ्रे, सल्फ, कैल्के, रस, मर्क, वेल। कनीनिका पर धब्बे—युफ्रे। आँखों में मस्से—आर्स, लाइको। पतली परतों के भीतर पीव—आर्स, हिप, मर्क।

२—कष्टानुभव के अनुसार प्रकाशातंक—एकोन, वेल, सल्फ, मर्क, हिपर, कैल्के, नक्स वाम, खासकर सन्ध्या समय रोशनी से कष्ट बढ़े—मर्क, कैल्के। आग की लौ असह्यनीय—मर्क। बार-बार पलकें बन्द हो जायँ—युफ्रे, क्रोकस। जलन वाला दर्द—आर्स, हिपर, कैल्के, वेल। आँखें मानो कुचल गयी हैं—हिपर। गोले मानो बहुत बड़े हो गये हैं और बाहर निकल पड़ेंगे—स्पाइजि, आर्स। आँखें मानो बहुत छोटी हो गयी हैं और भीतर धँसी हैं—काक्कस। पलकों के भीतरी स्तरों में सुरसुराहट, खासकर शाम को—चायना। आँखों में डंक मारने जैसा दर्द—मर्क, कैल्के। आँखों के आस-पास भी दर्द—वेल, हिपर, आर्स। आँखों में फाड़ने और खींचने जैसा तेज सिरदर्द—वेल, युफ्रे, काली, काक्कस, स्पाइजि, वेरेट एल्व। आँखों में धुंधलापन, बार-बार पोछना पड़े—पल्स, क्रोकस। आँखों के आगे चिनगारियाँ और प्रकाश की झलकें—वेल।

३—पलकों को खोलने के लिए बहुत जोर लगाना पड़ता है—वेल, ब्रायो। आँखें खोलने के लिए जोर देने से काटने जैसा भारी दर्द—मर्क। सन्ध्या समय कष्ट बढ़े—पल्स, कैल्के, चायना। रात को कष्ट बढ़ जाय—मर्क, वेरेट एल्व। सुबह कष्ट बढ़े—नक्स वाम।

४—आँखो से आँसू अधिक बहे—युफ्रे, पल्स, एकोन, आर्स, वेल, हिपर, मर्क, सल्फर, सीपिया। चरपरे आँसू निकले—आर्स, पल्स, युफ्रे। पलकों को अलग करने पर खून निकले—वेल, नक्स वाम।

५—बिलनी। यहाँ भी पल्स ही मुख्य औषध है, किन्तु यदि उससे विशेष फल न हो तो मैं सीपिया और साइलीशिया देता हूँ। पलकें कुछ मोटी और कड़ी हो जायँ और उनमें यक्ष्मा के दाने दिखायी पड़ें तो स्टेफि या थूजा उत्तम औषध है।

४. आँख आना रोग के विभिन्न भेद
(Ophthalmic Affections of Various kinds)

१—आँखों में पीव होना (Hypopion)—यदि पीव कनीनिका के तन्तुओं में बन जाय तो आर्स, हिपर, मर्क और सल्फर उत्तम औषधें

हैं। इसी रोग से आक्रान्त एक रोगी मेरे पास आया। उसकी उमर १० साल की थी। उसकी दाहिनी आँख में पुतली नहीं दिखायी पड़ी। बायीं आँख में पुतली के स्थान में एक छोटा-सा दाग था। इतिहास से पता लगा कि आँख के गढे का पीब सूख जाने से उसकी आँखों की ऐसी दशा हुई थी। लक्षणों के अनुसार मैंने उसे आर्स ३० की दो गोलियाँ दी। आर्सेनिक की उपकारिता ऐसे स्थलों में मैं देख चुका था। दो दिनों के बाद उसे दूसरी मात्रा दी गयी और बालक को एक सप्ताह बाद लाने के लिए उसके घर वालों को मैंने कह दिया। इन थोड़े दिनों में उसकी आँखा में आशा से अधिक परिवर्तन दिखायी पड़ा। बायीं आँख प्रायः साफ थी। दाहिनी आँख की पुतली साफ दिखायी पड़ने लगी। ऐसी उन्नति देखकर मैंने उसे पुनः आर्स ३० की दो गोलियाँ दीं और आठ दिनों के बाद जब वह बालक मेरे पास लाया गया तो देखा कि उसकी आँखों में कोई दोष नहीं है। किन्तु एक नया उपसर्ग दिखायी पड़ा—सिर में दाद के बहुत से दाने निकल आये। रस टाक्स और सल्फर देने से वह उपसर्ग भी गायब हो गये।

२—नेत्रों से रक्त का स्राव (Sanguinous Effusion)—ऐसा एक रोगी मेरे पास आया। मैंने बेल और नक्स वाम देकर उसे आराम कर दिया। किन्तु एक दूसरे रोगी को मुझे कैमो भी देना पड़ा था।

३—आँख की पलकों मे कीचड आना (Lippitudo)—ऐसी अवस्था के लिए युफ्रेशिया विशेष लाभदायक औषध है। इससे उपकार न हुआ तो सल्फर, कैल्के, सीपिया और किसी-किसी रोगी के लिए एकोन तथा बेल आवश्यक हो सकते हैं।

४—नासूर के कारण आँसू आना (Fistula Lachrymalis)—सल्फर से यह कष्ट दूर हो जाता है। मैंने इसी औषध से इस प्रकार के अनेक रोगियों को आराम किया है। कहीं-कहीं कैल्के से भी काम लेना पड़ा था और कहीं-कहीं लाइको का भी इस्तेमाल करना पड़ा था। (डॉ० हेम्लप का अभिमत है कि यहाँ साइलि उपयोगी है। वे ऐसे रोग में साइलि,

पल्स और एकोन से चिकित्सा करते थे। (ब्रिटिश जर्नल अव होम्योपैथी पत्रिका में रिपोर्ट छपी थी कि साइलि से ऐसा एक रोगी आराम हुआ है)।

५—पलकों के ऐंठन के कारण आँखें बन्द होना (Spasmodic Closing)—चक्षुरोग की इस अवस्था के लिए, यदि वहाँ प्रदाह न हो तो हायोस के बराबर कोई दूसरी औषध नहीं है। उसके असफल हो जाने पर बेल और सीपिया लाभदायक हैं। डॉ० हेम्पल के मतानुसार जेल्स ही ऐसे रोग में उपकारी है।

६—कनीनिका के रोग (Affections of Cornea)—किसी-किसी की आँखों की कनीनिका पर सफेदी छा जाती है। ऐसी स्थिति में युफ्रेशिया ही उत्तम औषध है। यदि उससे विशेष लाभ न हो तो सल्फर, कैल्के और नाइट एसि अच्छी औषधें हैं। किन्तु इनका प्रयोग लम्बी अवधि के बाद होना चाहिए। यदि कनीनिका कुछ मोटी दिखाई पड़े तो मैं कैल्के देता हूँ और इसी से अच्छा फल मिलता है। एक रोगी में केनाबिस देने से अधिक लाभ हुआ था। किन्तु वहाँ भी उसके अनन्तर मैं कैल्के और नाइट एसि देकर सफल हुआ था।

७—आँखो के अण्डो का बाहर निकल आना—शुरू में इस रोगी के लिए मेरा बहुत समय गया। क्योंकि मुझे सन्देह था कि यह रोग किसी दूसरे रोग का रूपान्तर मात्र था। वैसी स्थिति में इस नये उपसर्ग का इलाज करना निरर्थक है। किन्तु यह नया रोग अधिक फैल न जाय इसके लिए मुझे कैल्के, लाइको, सल्फर और नाइट एसि का प्रयोग करना पड़ा। मेरे पास एक रोगी आया। उसकी आँखों में ऐसा विकार ८ वर्षों से था। उसकी दृष्टि-शक्ति एकदम नष्ट हो गयी थी। उसकी आँख शंख की तरह बाहर निकल आयी थी। मैंने भीतर से चिकित्सा करना आरम्भ किया। कैल्के, सल्फ, नाइट एसि, लाइको आदि कुछ औषधें देने पर भी जब कोई लाभ न हुआ तो मैंने अन्त में एपिस दिया। एक सप्ताह की चिकित्सा से गोले छोटे होते गये और ८ सप्ताहों की चिकित्सा से वे अपने गढ़े में चले गये। कुछ अन्य लक्षण दिखायी पड़े तो लाइको दिया गया।

अन्त में एपिस देने से सारे उपसर्ग जाते रहे। इस रोग को असाध्य मान लिया गया था। किन्तु मेरी चिकित्सा से आँखें अपनी स्थिति में आ गयीं।

८—मोतियाबिन्द—इस विकार के लिए सल्फर मेरे हाथ में उत्तम सिद्ध हुआ है। मैं एक मात्रा देकर अधिक समय तक प्रतीक्षा करता हूँ। जब देखा की सल्फर से विशेष उपकार नहीं हो रहा है तो कैल्के तथा लाइको का प्रयोग किया जाने लगा। इसके भी असफल होने पर मैग्ने, केना और साइलि देने से उपकार हुआ। वृद्धों के लिए मैं कॉनियम ३० की ६ गोलियाँ सेवन के लिए तथा पानी में घोल कर बाहर से प्रयोग करने के लिए देता हूँ। मोतियाबिन्द के कारण एक जन्मान्ध बालक मेरे पास आया था। सल्फर के सेवन से उसे बहुत लाभ हुआ। अन्त में युफ्रे और लाइको से वह निरामय हो गया।

९—धुन्ध—जब आँखों से सारी चीजें धुँधली दिखायी पड़ती हैं तो फास्फोरस ही उसकी निश्चित औषध है। यदि उससे लाभ न हो तो लाइको और साइलि देने से अवश्य लाभ होगा।

१०—ऐंचाताना—मैं इस रोग के लिए बच्चों को हायोस और बेल देता हूँ। यदि इनसे लाभ न हो तो एल्युमिना।

५ दृष्टि के दोष
(Defects of vision)

१—दृष्टिमाद्य। यदि आँखों से अधिक काम लिया गया हो तो वे कमजोर हो जाती हैं और आँखों से कुछ भी नहीं सूझता। ऐसी स्थिति में रूटा ही उत्तम औषध है। किन्तु किसी-किसी स्थान में बेल और युफ्रे भी उपयोगी सिद्ध हुए हैं। किन्तु इस अवस्था में आँखों के बाहरी लक्षणों का दवाओं के लक्षणों के साथ मेल रहने पर ही लाभ होगा। अधिक शराब पीने वालों के लिए चायना सर्वोत्तम औषध है। किसी-किसी रोगी में सल्फर और बेल देने से भी मुझे उपकार मिला है। इनके अतिरिक्त नीचे लिखी औषधें भी उत्तम हैं :—

२—दृष्टि का धुँवलापन, मानो जाली के भीतर से देख रहा है—कैल्के, लाइको, नेट म्यूर और सीपिया उत्तम औषधें हैं। नेत्रों के आगे जाला या काली-काली बिन्दियाँ दिखाई पड़ें तो कास्टि, सीपि, फास, साइलि। समय-समय पर दृष्टि धुँधली हो जाती है—कैल्के, लाइको, नेट म्यूर, सीपि, साइलि। ऐसा मालूम हो कि आँखों के आगे काला परदा फैला हुआ है—फास, साइलि। लिखते समय अक्षर आपस में मिल जाते हैं—ड्रोसेरा, नेट म्यूर, साइलि। दृष्टि के सामने चिनगारियाँ दिखायी पड़े तो—कैल्के, नेट म्यूर, सीपि, साइलि। बिना कारण एकाएक अन्धापन आ जाय तो -साइलि और फास उपयोगी औषधें हैं।

३—रतौंधी—कुछ लोग रात को अन्धे हो जाते हैं। प्रथम औषध बेल है, उसके बाद वेरेट एल्ब। यदि दिन में कुछ नहीं दीखता और रात को थोड़ा-थोड़ा दिखायी पड़े तो साइलि, फास और सल्फ से रोगी एकदम अच्छा हो जायगा।

४—एक के दो दिखायी पड़ना—इस रोग के लिए बेल, साइक्यू और ड्रोसेरा अच्छी दवाएँ हैं। कभी-कभी रोगी चीजों का निचला आधा भाग ही देखता है। उसके लिए लाइको और कास्टि उत्तम औषधें हैं। लम्बाई की ओर आधा अंश दिखायी पड़ना लक्षण में आरम लाभदायक है।

५—निकट की चीजें ही दिखायी पड़ती हैं। यदि युवकों की ऐसी अवस्था हो और वह भी कमजोर करने वाली, बीमारी के बाद हो तो कार्बो-वेज, फास, फास एसि; चायना, कैमो, कार्ब और पेट्रोलियम अच्छी औषधें हैं। दूर की चीजें दिखायी देना। ऐसी स्थिति में कोनियम, ड्रोसेरा, सल्फर, कैल्के और साइलि उपकारी औषधें हैं। अधिक शराब पीने के कारण ऐसी अवस्था हो चायना, कैल्के और सल्फर, नक्स वाम भी अच्छे प्रमाणित हुए हैं किन्तु अनेक चिकित्सक ऐसी स्थिति में नक्स वाम की बहुत प्रशंसा करते हैं।

६—प्रकाशातंक। रोशनी देखने से डर जाना लक्षण में एकोन, मर्क, बेल विशेष सहायक हैं। यदि वे औषधें सफल न हों तो सल्फर, आर्स

और फास से अवश्य उपकार होगा। यदि रोगी उज्ज्वल प्रकाश को भी अल्प समझे तथा और भी अधिक प्रकाश माँगे या अधिक प्रकाश के कारण प्रलाप हो तो एकोनाइट और उससे लाभ न हो तो स्ट्रेमो, साइलि या सल्फर निश्चित सहायक प्रमाणित होंगे।

७—आंशिक या पूर्ण अन्धापन—यदि मस्तिष्क पर चोट लगने से ऐसी अवस्था हो और अन्धापन आ गया हो तो मेरे विचार से चिकित्सा का कोई फल नहीं होगा। ऐसे अन्धेपन के कारण हैं—दृष्टिनाली का सूख जाना, मस्तिष्क की कमजोरी, किसी दूसरे रोग से शरीर क्षीण हो जाना। ऐसी अवस्थाओं को कोई औषध सुधार नहीं सकती। किन्तु यदि रोगी युवक हो तो मैं सल्फर और मर्क की सिफारिश करूँगा। एकदम अन्धापन आने पर भी उन दोनों औषधों के बाद मुझे चायना, ड्रोसेरा, आरम, केल्के, साइलि और फास्फोरस लाभदायक सिद्ध हुए हैं। इनमें से कोई एक औषध पूरा काम नहीं करती। पारी पारी से सभी का सेवन कराना उचित है। कुछ रोगियों के लिए नेट म्यूर और सीपिया से सुफल मिला है। डॉ० हैनिमैन ने 'पुतलियों की सिकुड़न' के सम्बन्ध में कुछ लिखा है, मैं उसे स्वीकार करता हूँ। अपने चिकित्सा-व्यवसाय में मैंने उसे कई बार सही पाया है। डॉ० हैनिमैन ने ऐसे रोगियों के लिए जिकम की सिफारिश की है। किन्तु मुझे आज तक उससे कोई लाभ नहीं हुआ है। खुजली, दाद आदि चर्म रोग हो जाने के बाद अन्धापन आ जाय तो सल्फर अवश्य ही महौषध है। यदि बहुत अधिक सिरदर्द के बाद अन्धापन आया हो तो सीपिया भी लाभदायक सिद्ध होगा।

—:०:—

अध्याय—५

कानों के रोग

(Affections of the Ears)

स्वयं कानों की बीमारियाँ

(Diseases of the Ears themselves)

१—कान के बाहरी भाग मे प्रदाह (Inflammation of the Outer Ear, Otitis externa)—यदि कान के बाहर सूजन आ गयी हो तो पल्स निश्चित औषध है, चाहे दर्द भयकर क्यों न हो, जिसके बाद मर्क की एक मात्रा कदाचित् आवश्यक हो सकती है। यदि प्रदाह कान के भीतर तक पहुँच जाय और ऐसे प्रदाह का प्रभाव दिमाग में भी पहुँचे तो बेल सर्वोत्तम औषध है।

२—कान के भीतरी अंश में प्रदाह—यदि ऐसे प्रदाह का प्रभाव कान के ढोल तक पहुँच जाय तो चिकित्सकों को बहुत सावधान होना चाहिए। किन्तु इस प्रकार का प्रदाह बहुत कम दिखायी पड़ता है। प्रायः गण्डमाला के रोगियों में ऐसा प्रदाह दिखायी पड़ता है। यदि वहाँ पीव बन गयी हो और उसे बाहर आने का रास्ता न मिले तो जीवन की आशंका होती है। यदि इस रोग के कठिन लक्षणों में पहले ही चिकित्सक ध्यान दें तो चिकित्सा से भीतरी पीव कान के छेद से बाहर निकल जाती है और कभी नीचे की नाली के रास्ते उतर जाता है। इस रोग के साथ शूल का दर्द हो और ऐसा लगे कि सिर बहुत छोटा-सा हो गया है, चेहरे में आक्षेप, एकाएक बहरा-पन, कानों में गर्जन आदि इसके कठिन लक्षण हैं। इस भीतरी पीव को बाहर निकाल देने के लिए हिपर, लैक या मर्क सहायक हैं। किन्तु यदि

जलन के कारण कान के छेद बन्द हो गये हों और पीब को निकालने का रास्ता न मिले तो औषधों के अभाव से वह भीतर ही सूख जाता है और छेद के किनारों पर पपड़ी के रूप में वह जम जाता है। कभी कभी पपड़ियाँ छेद को बन्द कर देती हैं। यदि गरम जल की भाप लगाकर उन पपड़ियों को नरम बना दिया जाय तो रोगी की प्राणरक्षा हो सकती है, नहीं तो रोगी की मृत्यु हो सकती है। मेरे इस दीर्घकाल तक के चिकित्सा-व्यवसाय में ऐसे कर्ण-प्रदाह वाले केवल तीन ही रोगी मिले थे। तीनों ही गरीब के बालक थे। इन तीनों में प्रदाह और सूजन घट जाने पर पीब बन गया और वह बह गया। एक बच्चे का कर्णस्राव एक दिन एकाएक रुक गया। औषधों और गरम जल की भाप से कोई लाभ नहीं हुआ। दूसरे दिन बच्चा मर गया। कान के भीतरी भाग की सूजन को दूर करने के लिए मुझे बेल और मर्क से सफलता मिली है। कभी-कभी भयकर सिरदर्द के लिए मुझे ब्रायो का व्यवहार करना पड़ा था।

३—कान का दर्द (Otalgia, Earache)—गठियावात वाली स्त्रियों के लिए कान के दर्द में पल्स ही उत्तम औषध है, खासकर जब दर्द चेहरे के आर-पार फैल जाता है और रोगी बतलाता है कि कान के भीतर से दर्द बाहर की तरफ आ रहा है। कान के भीतर सूई गड़ने की तरह दर्द तथा बाहरी भाग में जलन हो तो मर्क लाभकारी औषध है और भी जहाँ सारे शरीर में पसीना निकलता रहे, किन्तु रोग का कष्ट न घटे तो भी मर्क ही औषध है। कान के भीतर झटके और जोर की आवाज हो तो आर्निका अच्छी दवा है। कान के भीतर चीरने-फाड़ने जैसा दर्द गले तक पहुँचता हो तो बेलेडोना, इसी के साथ आँखों, सिर और कानों में छेद होने की तरह दर्द रहे तो बेलेडोना। कानों में सुरसुराहट, सुन्नपन और ठण्डक मालूम हो और दर्द ऐंठन की तरह प्रतीत हो तो प्लेटिना। पसीना दब जाने से कान में दर्द हो, वह भाला भोंकने की तरह मालूम हो तो कैमो। यदि इनमें से एक भी औषध लाभदायक प्रतीत न हो तो सल्फर और कैल्के उत्तम प्रमाणित होंगे, खासकर यदि कान में अधिक या अल्प पीब हो। कान में

भाला भोंकने की तरह दर्द हो तो उसके लिए मर्क और साइलि। कानों में दपदपाहट तथा चोट लगने की तरह दर्द हो तो सल्फर, फास और कैल्के। सूई चुभने का-सा दर्द कानों में मालूम हो तो साइलि। चीरने-फाडने के दर्द के लिए मर्क, पल्स, कैमो। कान के भीतर वेग के साथ घसीटने की तरह दर्द के लिए प्लेटिना, मर्क और बेल। यदि उसी समय कान बहुत सूखे मालूम हों तो कैमो, जो स्पर्शकातर रोगी दर्द सहन न कर सके उसके लिए आर्निका और कैमो। जब कान के वाहरी भाग में प्रदाह और भीतरी भाग में ठण्ढक मालूम हो तो मर्क। जब कान में दर्द दौरे के रूप में आता है और छूने तथा हिलने-डोलने से बढ़ता हो तो बेल। कान का दर्द जब शाम को बढ़े तो पल्स और सल्फर। रात को दर्द बढे तो मर्क और डल्का। सुबह दर्द बढे तो नक्स वाम और कैल्के। कानों में अधिक ठण्ढ लग जाने के कारण दर्द हो तो कैमो, मर्क और डल्का। कानों के भीतर डंक मारने जैसा दर्द हो, वाहरी भाग लाल दिखायी पड़े और कानों के भीतर भिनभिनाहट सुनाई पडे तो चायना।

४—कान से पीव बहना (Otorrhoea, Discharges from the Ear)—कान में जलन होने के बाद उससे पीव बहने लगे तो पल्स या सल्फर उपयोगी औषधें हैं। यदि लालबुखार, चेचक आदि के अनन्तर कान बहने लगे तो बेल, हिपर, मर्क अच्छी दवाएँ हैं। शीतला के बाद कान बहे तो कभी-कभी पल्स से लाभ होता है। कर्णस्राव बहुत दिनों का हो तो मर्क से अवश्य लाभ होगा। किन्तु ऐसी स्थिति में सल्फर, लाइको और साइलि उपकारी औषधें हैं। किन्तु इनका प्रयोग लम्बी अवधि के अनन्तर होना चाहिए। यदि कान बहने के साथ-साथ भीतर की तरफ पपड़ी पड़ जाय तो ग्रैफाइटिस ही सबसे अच्छी फायदेमन्द दवा है। यदि स्राव से सड़ी गन्ध निकले तो मर्क हितकर है। कभी-कभी सल्फर और कैल्के के असफल होने पर कास्टि।

५—यदि कान की मैल परिमाण में अधिक निकले तो सबसे प्रथम औषध कोनियम ही होगी। मैल कम निकले तो कैल्के या कार्वोवेज निश्चित औषध है। यदि उस मैल में बदबू निकले तो कार्वोवेज और कास्टिकम लाभकारी दवाएँ है।

२. कर्णेन्द्रिय के दोष

(Defects of the Sense of Hearing)

१—कानो मे शब्द होना (Noises in the Ears)—यदि सिर के भीतर खून जमा हो गया हो और उसी के कारण कानों में तरह-तरह के शब्द हों तो आर्निका, नक्स वाम, बेल और फास अत्यन्त लाभकारी औषधें है। यदि उसके साथ गठियावात के लक्षण मिलें तो मर्क, पल्स, कैमो और कास्टि से लाभ होगा। जो मनुष्य बहुत ही चिड़चिड़े मिजाज के हैं, उनके कानों में आवाज आने पर एकोन, काफि, कार्वो वेज और सल्फर। यदि आवाज के कारण कानों से कम सुनायी पड़े तो आर्निका, सल्फर, एकोन और लाइको। यदि कानों में घंटियों के बजने-सी आवाज आवे, खासकर कमजोर आदमियों के लिए तो चायना। यदि कानों में भिनभिनाहट की आवाज सुनायी पड़े तो कास्टि और कार्वो-वेज। किन्तु यदि धीमा शब्द भी कानों में आकर गुंजन पैदा करे तो ग्रेफाइटिस।

२—ऊंचा सुनायी पड़ना (Hardness of Hearing)—यदि कर्णस्राव के साथ ऊँचा शब्द भी धीमा सुनायी पड़े, पल्स और मर्क से लाभ न हो तो सल्फर, कैल्के, लाइको और कास्टि। यदि उसके साथ नाक से सर्दी बहती हो, पल्स, मर्क और कैमो से लाभ न हो तो कैल्के, आर्स, कार्वोवेज। यदि कान के भीतरी नाली में भी सर्दी का असर हो तो ग्रैफा-इटिस। यदि चेचक आदि रोगों के बाद दाने बैठ जाने से कानों से कम सुनायी पड़े तो कार्वोवेज, पल्स या मर्क। लालबुखार के बाद ऊँचा

सुनायी पड़े तो वेल, लाइको, नाइट एसि और हिपर। छोटी चेचक के बाद हो तो सल्फर। गठिया रोग के बाद हो तो सल्फर, डल्का, ब्रायो और कास्टि। सिर में अधिक खून जमा होने से वैसा हो तो वेल, सल्फर, साइलि और नक्स वाम। जहाँ अर्श के रक्तस्राव के बन्द हो जाने के बाद कान से कम सुनायी पड़े तो नक्स विशेष रूप से उपयोगी है। स्नायु के विकार के कारण बहरेपन के लिए, खासकर सन्निपात ज्वर के अनन्तर आर्निका, फास, पेट्रो। दाने या घाव दब जाने के बाद कानों की वैसी स्थिति हो तो आर्स, सल्फर, कास्टि और एण्टिम क्रूड। गले की कौड़ियो के बढ जाने से ऊँचा सुनायी पड़े तो मर्क, नाइट एसि और स्टेफि। मनुष्य के मुख से निकलने वाली ध्वनि पूरी सुनायी न दे तो फास्फोरस। ऐसा लगे मानो कान बन्द हो गये हैं तो कोनियम, साइलि, मर्क और पल्स। यदि कभी शब्द के साथ कान खुल जाय और पूर्णिमा को कम सुनाई पड़े तो साइलीशिया। कानों में बहुत अधिक सूखापन हो और कुछ भी मैल न निकले तो कार्बोवेज या कैल्के।

३. कान और उसके आस-पास के विकार

(Phenomena around the Ears and in their Neighbourhood)

१—फुन्सी या दाने (Eruptions)—यदि कान के पिछले भाग में गीलापन मालूम हो और उसके आस-पास दाने निकलें तो कैल्के और ग्रैफा उत्तम औषधें हैं। यदि उस अवस्था के साथ अन्य कष्टदायक लक्षण मौजूद हों तो ओलिएण्डर और पेट्रोलियम गुणकारी सिद्ध होंगे। कानों के पिछले भाग में यदि पपड़ियाँ पड़ गयी हों तो ग्रैफा, हिपर, लाइको, सल्फर, मेराइटा और ओलिएण्डर विशेष उपयोगी हैं।

कर्णमूल-प्रदाह (Parotitis, Mumps)—यदि मेरे सामने इस रोग से ग्रसित रोगी आ जाय तो मैं शुरू से ही मर्क ३० से चिकित्सा आरम्भ करता हूँ। किन्तु उसके साथ अन्य विकार रहे, सूजन का रङ्ग पीला हो और ज्वर न रहे तभी यह ओषध उपकारी सिद्ध होगी। मैं अब तक आधे गिलास पानी में २ गोलियाँ छोड़कर घोल बना देता और २-२ घण्टे के अनन्तर रोगी को १--१ चम्मच ओषध पिलाने की व्यवस्था देता हूँ। यदि कर्णमूल की सूजन बहुत लाल हो तो मैं बेल का सेवन कराता हूँ और वही उस रोग को आराम कर देता है। यदि विसर्प के घाव के समान जलन हो तो मैं कभी-कभी रस का प्रयोग करता हूँ और उससे उत्तम फल मिलता है। यदि उस रोग के कारण मस्तिष्क भी आक्रान्त हो तो मेरे हाथ में बेल या ब्रायो अच्छा फल दिखाता है। यदि किसी तरह सूजन न घटे, बल्कि कड़ी हो जाय तो प्रायः कार्बोविज से लाभ होता है। ऐसी स्थिति में कभी-कभी कार्बयूल्स भी लाभकारी है। यदि सूजन में पीव बन जाने की शंका हो तो मैं कैल्के या केलि कार्ब देता हूँ। खासकर यदि कान के पीछे कड़ी सूजन हो, साथ में अन्य कष्ट मध्यरात्रि के बाद बढ़े तो वही औषध है। यदि पीव में सड़न आयी हो या न भी आयी हो तो मैं आर्स या कभी-कभी रस या फास या साइलि भी देता हूँ। यदि कर्णमूल-प्रदाह के साथ यक्ष्मा ज्वर की अधिकता हो तो कार्बो वेज या कार्बयूल्स। लालबुखार के बाद वैसी सूजन आवे तो आर्स, रस, बेराइटा कार्ब, कैल्के, केलि कार्ब और लाइको। यदि ज्वर घट जाने के बाद कर्णमूल-प्रदाह हो तो आर्स सबसे उत्तम प्रमाणित होगा। यदि सिर का गज दब जाने के बाद कर्णमूल में प्रदाह हो तो रस या आर्स। गण्डमाला रोगियों में वैसा कष्ट हो और मर्क, कार्बोविज, रस असफल रहे और उसके साथ दूसरी ग्रन्थियों में भी प्रदाह हो तो बेराइटा, कैल्के और सल्फर। यदि आमाशय पर दर्द का प्रभाव पड़े तो डल्का और बेलेडोना। ऐसी स्थिति में लाइको भी अच्छी दवा है। यदि कर्णमूल-प्रदाह के कारण गर्भाशय में प्रभाव पड़े तो बेल या सीपि और यदि अण्डकोषों में प्रभाव पड़े तो आर्स। डॉ० रिकर्ट की चिकित्सा

ग्रन्थ के भाग ४, पृष्ठ ३६४-५ में डॉ० शीलिंग का जो विवरण छपा है वह कर्णमूल-प्रदाह के लिए उपयोगी नहीं है। क्योंकि वैसी स्थिति में कर्णमूल का कष्ट एक बाहरी लक्षण है। मैंने अनेक स्थलों में ऐसे रोग को ललाट, गरदन या उसके पास से आरम्भ होते देखा है। कभी कभी वह सूजन उन्हीं अङ्गों में निराबद्ध रहती है और कभी वह चेहरे, छाती और पेट तक पहुँच जाती है। ऐसी स्थिति में कार्बोवेज बहुत ही लाभदायक है। यदि रोगी बहुत ही अधिक घबराने लगे तो आर्स देना अच्छा है।

—:o:—

अध्याय—६

नाक के रोग तथा सर्दी

(Affections of the Nose and Catarrh)

१—नाक का बाहरी भाग (External Nose)—नाक के बाहरी भाग में सूजन और लाली हो तो हिपर या आरम उपकारी सिद्ध होगा। किन्तु ध्यान रहे कि वैसी अवस्था सर्दी के कारण न उत्पन्न हुई हो। यदि सूजन चमकीली हो और नाक के भीतर सूखापन रहे तो फास। यदि सूजन के साथ विसर्प का घाव रहे तो रस या बेल। यदि नाक की नोक में सूजन दिखाई पड़े, जैसे कि शराबियों में होती है तो रस और रूटा। किन्तु यदि गण्डमाला रोगियों में वैसा हो तो कैल्के सबसे अच्छी दवा है। गण्डमाला रोग के बढ़ जाने के कारण यदि नाक में सूजन आयी हो तो कैल्के, आरम, कास्टि। यहाँ बेल और हिपर भी अच्छी दवाएँ हैं। यदि उपदंश रोग के कारण नाक में सूजन हो, तो मर्क और नाइट एसि। पारा सेवन के कारण वैसी सूजन के लिए आरम और हिपर। यदि नाक के बाहरी भाग की सूजन पर घांव हो जाय और उस पर पपड़ी जमे तो कैल्के। किन्तु उससे लाभ न हो तो कास्टि। ऐसी स्थिति में कभी-कभी एनिमेलिस से भी उपकार होता है। यदि नथनों के किनारे जलन और सूजन हो तो बेल, मर्क और हिपर।

२—नाक का भीतरी भाग (The Inner Nose)—नाक के अन्दर पपड़ी पड़ गयी हो तो पल्स, कैमो और हिपर। किन्तु ध्यान रखें कि ऐसा घाव किसी आकस्मिक कारण से उत्पन्न हुआ हो। बहुत दिनों से नाक के भीतर कष्ट हो तो फास, थूजा, आरम। यदि नाक के भीतर वाली श्लैष्मिक झिल्लियों से पीब बहने लगे और बहुत दिनों से सर्दी के कारण रोगी कष्ट पाता हो तो पल्स या सीपिया। यदि गण्डमाला रोगी में

नाक से पीप का स्राव हो और नाक के भीतर पपड़ियाँ पड़ गयी हों तो कैल्के, रस, हिपर, आरम, सल्फर, साइलि। (डा० हेम्पल का अभिमत है कि ऐसी अवस्था में केलि कार्ब ही सफल औषध है।) यदि नाक से बदबू निकले तो कैल्के या नाइट एसि। ऐसी अवस्था में कभी-कभी फास या ग्रैफा लाभदायक सिद्ध हुआ है। उपदंश का रोगी यदि अधिक परिमाण में पारा खा चुका हो तो आरम से आराम होगा। ऐसी अवस्था में नाइट एसि भी आश्चर्यकारक औषध है। ऐसी परिस्थिति में आरम २ विचूर्ण और नाइट एसि ३० का प्रयोग अच्छा है।

नाक में अर्बुद (Nasal Polypi)—कभी-कभी नाक में अनेक जड़ों वाला फोड़ा बन जाता है, वहाँ के लिए संगुनेरिया अच्छी औषध है। ऐसी अवस्था में ट्यूक्रियम से कुछ रोगी अच्छे हुए हैं। वह एक स्त्री थी, जिसे कई सालों तक सर्दी का कष्ट था। रेशे वाले नासार्बुद के लिए कैल्के और कभी-कभी इसके पहले सल्फर की २–४ मात्राएँ देनी चाहिए, वह भी लम्बी अवधि के बाद। अपने नियम के अनुसार मैं रक्तस्राव साथ रहने पर रेशे वाले नासार्बुद के लिए फास को पसन्द करता हूँ।

४—नकसीर (Haemorrhage from the nose, nose-bleed, epistaxis)—यदि युवक रोगी की नाक से रक्त बहे तो सर्वप्रथम एकोनाइट देने से विशेष लाभ मिलता है। जिन युवती स्त्रियों का मासिक स्राव बन्द हो गया है उनके नकसीर के लिए ब्रायो या पल्स (डॉ० हेम्पल का मत है कि ऐसी परिस्थिति में हेमामेलिस अच्छी दवा है)। यदि ऐसी दवाएँ सफल सिद्ध न हों और रोगी के सिर में चक्कर आवे, दृष्टि धुँधली हो जाय, कानों में भिनभिनाहट का शब्द हो तो मैं अक्सर बेल या नक्स वाम देता हूँ। यदि चेहरा पीला पड़ गया हो तो बेल, चायना, कार्बोविज और वेरेट एल्ब। रोगी को बार-बार मूर्च्छा आने लगे, हाथ-पैर ठण्ढे हो जायँ और चायना से लाभ न हो तो वेरेट एल्ब। यदि रक्तस्राव के पूर्व नाक से सुरसुराहट मालूम हो तो और बेल से कोई फायदा न हो तो आर्निका या रस। कृमिरोग वाले बच्चों को सिना

देने से लाभ होता है। यदि नाक से ज्यादा खून गिरे और इसी औषध से वह न रुक जाय तो क्रोकस, चायना, कार्वोविज या सीपिया। ऐसी स्थिति में हेमामेलिस विर्जिनिका भी उपकारी औषध है। यदि रोगी का शरीर सूख गया हो तो चायना, कार्वोविज, सिकेलि और वेरेट एल्व। यदि मामूली गर्मी या उत्तेजना के कारण नकसीर वहे, जैसे कि शराब अधिक पी लेने से होता है तो एकोन। किन्तु इसके आगे ब्रायो या नक्स वाम की आवश्यकता हो सकती है। यदि नकसीर शाम को वहने लगे तो पल्स। रात को बहे तो मर्क, आर्स, ब्रायो और रस। खासकर सुवह वहे तो नक्स वाम और ब्रायो। नाक पर चोट लगने से नकसीर वहने लगे तो आर्निका या सीपिया। झुकने से नकसीर वहे तो रस और कार्वोविज। मैं खून के रंग या परिमाण के प्रति ध्यान नहीं देता, क्योंकि यदि अन्य उपसर्गों का मेल रहे तो औषध से लाभ अवश्य होगा। यदि नकसीर के साथ अन्य उपसर्ग हों तो मैं चमकीले लाल रंग के रक्तस्राव के लिए वेल और आर्न देता हूँ। यदि खून काला हो और तुरन्त जम जाय तो मर्क की अपेक्षा मैं क्रोकस देता हूँ।

५—सर्दी यदि बहुत अधिक हो, नाक से पानी की तरह सर्दी निकले, नेत्रों में जलन रहे, आँखों से अश्रु-प्रवाह भी अधिक मात्रा में हो तो वहाँ युफ्रेशिया अच्छा काम करता है। यदि स्राव बहुत अधिक न होकर उसमें से पतली पीब की तरह का श्लगम निकले तो वहाँ मर्क बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। यदि मर्क से सफलता न मिले और स्राव चरपरा और चमड़ा छुड़ा देने वाला हो तो ऐसी स्थिति में आर्सेनिक से विशेष लाभ होता है। जब नाक से सर्दी का अत्यन्त वहाव हो रहा हो अथवा नाक वन्द हो गयी हो तब भी आर्सेनिकम से बहुत उपकार होता है। जब सिर में भारीपन, ललाट में फाड़ने की तरह तेज दर्द या नाक में सूखापन हो तब नक्स वाम के प्रयोग से विशेष लाभ होता है। यदि नक्स वाम से कोई उपकार न दिखायी पड़े तो ब्रायोनिया देना चाहिए। यदि नाक से सर्दी का प्रवाह केवल सन्ध्या को हो और दिनभर बिलकुल बन्द रहे तो वहाँ भी

नक्स वाम ही गुणकारी सिद्ध होता है। जब सर्दी का स्राव बलगम की तरह कुछ गाढा हो, स्राव का प्रवाह बारी-बारी से हो अथवा नाक बन्द रहे तो ऐसे स्थलों में पल्सेटिला बहुत ही लाभप्रद होता है। परन्तु स्राव पानी-सा पतला रहने पर पल्सेटिला के सेवन से कोई लाभ नहीं होता है। जब नाक से हरा, पीला और गाढ़ा स्राव बहुत अधिक परिमाण में निकल रहा हो, सन्ध्या के समय या कमरे में आने पर नाक बन्द हो जाती हो, खुली वायु में स्राव अधिक होता हो तब पल्सेटिला से बढ़कर उत्तम औषध कोई दूसरी नहीं है। जहाँ स्राव से बहुत अधिक बदबू निकल रही हो, वहाँ मर्क देने से सफलता मिलती है। जिन स्थलों में नाक का केवल एक ही नथना बन्द हो, ठण्डी वायु में साँस लेने के कारण शिरोवेदना होती हो तो ऐसे स्थलों में हिपर ही सर्वश्रेष्ठ औषध है। ठण्डी हवा लगने से बढ़ने वाली सर्दी में जहाँ हिपर से कोई लाभ न हो वहाँ मर्क देने के बाद बेलेडोना का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होगा। ऐसी परिस्थिति में यदि रोगी में नक्स वाम या आर्सेनिकम के उपसर्ग प्रकट हों और उपरोक्त दोनों औषधों के सेवन से भी कोई लाभ न मिले तो इपिकाक से विशेष फल मिलता है। यदि नथनों के किनारे लाल होकर सूज जायँ और उनमें दर्द का अनुभव हो तो मर्क, बेलेडोना, हिपर या केमोमिला का व्यवहार करना उचित होगा। रोगी में सूँघने की शक्ति न रह जाय तो पल्सेटिला, साइक्लेमेन या इपिकाक से लाभ होता है। नाक से छींक अधिक आने पर साइक्लेमेन का व्यवहार बहुत ही प्रमाणित होता है। जब सर्दी के साथ रोगी में नकसीर की भी अवस्था हो तब आर्सेनिक, पल्सेटिला या बेलेडोना का प्रयोग सफल होता है। सर्दी के साथ सिरदर्द होने पर इग्नेशिया, नक्स वाम, बेलेडोना या ब्रायोनिया उत्तम फल दिखाता है। सर्दी के साथ हरारत रहने, खासकर बच्चों का एक गाल लाल होने, ठण्ढ मालूम पड़ने या प्यास की अधिकता रहने पर कैमोमिला से विशेष फल मिलता है। हाथ-पैरों में दर्द का अनुभव होने पर मर्क्यूरियस का प्रयोग अच्छा है। यदि चेहरे और सिर में गर्मी, आग के पास बैठे रहने पर भी सर्दी का बोध हो

तो नवस वाम का प्रयोग विशेष लाभदायक होता है। जिन स्थानों में सर्दी का निःस्राव एकाएक बन्द हो जाय, सिर में दर्द हो, ज्वर के साथ भयंकर प्रलाप का वेग रहे वहाँ एकोनाइट ही सर्वश्रेष्ठ औषध है। जब एकोनाइट का कोई विशेष प्रभाव न पड़े तब बेलेडोना या ब्रायोनिया के सेवन से रोगी को आराम होता है। जब दर्द जलनयुक्त या फाड़ने का-सा हो तब चायना और पल्सेटिला का व्यवहार उपयोगी सिद्ध होता है। जब किसी कारणवश सर्दी दब जाय और रोगी की हालत दमे की-सी हो जाय तब इपिकाक का प्रयोग करने से शीघ्र ही रोगी की हालत में सुधार होता है। यदि इपिकाक से सुफल न मिले तब आर्सेनिकम के प्रयोग से अवश्य ही लाभ होता है। पुरानी सर्दी में कॅल्केरिया, सल्फर और साइलीशिया बहुत ही उच्च कोटि की औषधें प्रमाणित हुई हैं। सर्दी की अवस्था में अत्यधिक छींक आने, सिर तथा कानों में दर्द होने पर साइक्लेमेन ही एकमात्र औषध है। एक रोगिणी, जिसकी आयु ६० वर्ष की थी वह कई सालों से सर्दी का कष्ट भोग रही थी। लक्षणों के अनुसार उसे साइक्लेमेन दिया गया, जिसके फलस्वरूप वह स्त्री केवल २४ घण्टे में ही रोगमुक्त हो गयी। इस औषध का प्रभाव रोगी पर आश्चर्यजनक रूप से होता है।

—:o:—

अध्याय—७

चेहरे और होठो के रोग

(Affections of Face and Lips)

१. चेहरे का स्नायुशूल

(Prosopalgia, Neuralgia of the Face)

इस रोग के लिए विभिन्न औषधों की प्रशंसा की गयी है। कोई भी नया चिकित्सक इसके द्वारा उपयुक्त औषधियों का चुनाव कर सकता है। यदि वह ऐसा न कर सके तो उसे चिकित्सा के लिए सर्वथा अयोग्य समझना चाहिए। सिरदर्द के प्रकरण में मैंने जिन उपायों का उल्लेख किया है, इसमें भी उन्हीं उपायों का आधार ग्रहण करना चाहिए। अर्थात् स्पष्ट कारणों के आधार से रोग का पृथक्करण हो, जैसे (१) रक्त की अधिकता के कारण उत्पन्न शूलदर्द, (२) गठियावात-जनित शूल और (३) स्नायविक शूल। अब आगे इन्हीं कारणों पर हम क्रमानुसार विचार व्यक्त कर रहे हैं :—

१—रक्ताधिक्य वाला (Congestive)—इस प्रकार के शूलदर्द के लिए आर्निका, नक्स वाम, फास्फोरस, बेलेडोना, ब्रायोनिया और लैकेसिस बहुत ही लाभकारी औषधें हैं। गालों में टपकन की तरह का दर्द होने पर आर्निका, गालों के दबाव से टपकन में ह्रास होने पर ब्रायोनिया का प्रयोग फलदायी है। जब दर्द फाड़ने की तरह हो, खासकर बायीं आँख के निचले अंश में रहे तो लैकेसिस का व्यवहार उत्तम है। यदि इसके साथ सिरदर्द, सिर में चक्कर आदि उपसर्ग मौजूद रहें तो नक्स वाम, फास्फोरस या बेलाडोना से बहुत लाभ होता है।

२—वात वाला (Rheumatic)—जब गालों में लाली और गर्मी हो तब एकोनाइट से विशेष उपकार होता है। जब दर्द रात को असहनीय हो, एक गाल लाल तथा दूसरा पीला रहे तब कैमोमिला अच्छा काम करता है। जब रात्रि में चेहरे के दाहिनी ओर फाडने-सा दर्द रहे तब कास्टिकम से विशेष लाभ होता है। जब दर्द बायीं ओर हो और छूने से उसमें वृद्धि हो तब कालोसिन्थ का प्रयोग फलदायक होता है। जब दर्द वाले भाग के नयनों से सर्दी का स्राव बहुत अधिक हो और आँखों से अत्यन्त आँसू निकल रहे हों तब पल्स का व्यवहार करना चाहिए। जब दर्द प्रतिदिन नियमित समय पर, दौरे के रूप में, सीली आबहवा में हो तब स्पाइजेलिया से निश्चित लाभ होता है। दर्द जब बात करने, खाने, निगलने आदि से बढे तथा उस दर्द का प्रभाव जबड़ों और मसूड़ों पर भी हो तब फास्फोरस ही उपकारी औषध है, खासकर जब रक्त का संचार सिर की ओर हो। फाड़ने का-सा दर्द, खिंचाव, साथ में गर्मी और लाली, जो कनपटियों तथा गालों तक फैलती हो और जिसके कारण रोगी बहुत कष्ट पाता हो, वहाँ वेरेट्रम एल्बम के सेवन से ही लाभ होता है।

३- चेहरे का स्नायुशूल (Facial Neuralgia)—इस दर्द के लिए नक्स वाम, बेल, कैमो, प्लेटि, चायना, हायोस, मेजे, कैप्सि, पल्स और फास हितकर औषधें हैं। जहाँ औषध के उपसर्गों का मेल न हो और चेहरे के दाहिनी ओर शूलदर्द अधिक हो तो वहाँ बेल से अच्छा फल मिलता है। यदि दर्द खासकर रात्रि के समय हो, दर्द फाड़ने जैसा प्रतीत हो, जिसके कारण रोगी बेचैन हो जाय तो कैमो का प्रयोग करना अच्छा है। जब दर्द रात्रि में न होकर प्रातः हो तो नक्स वाम ही उचित औषध है। जहाँ दर्द ऐंठन की तरह का हो, उसका प्रभाव गाल की हड्डियों पर भी पड़े तो हायोस और प्लेटि से लाभ होता है। जब शूलदर्द चेहरे के कड़े भागों पर हो तो विशेषतः हायोस, कैप्सि या स्टेफि, खासतौर से दर्द जब स्पर्श से या शाम को बढ़ता हो। शूलदर्द के साथ सुरसुराहट का अनुभव होने पर बेल का ही प्रयोग होना चाहिए। जिस दर्द में फाड़ने

या खिंचने का बोध हो तथा जलन भी रहे उसमें चायना, हिप और स्टेफि
से बहुत उपकार होता है। फाटने या डसने की तरह दर्द में रस देने से
सफलता मिलती है।

४—साधारण निर्देशक लक्षण—जिस दर्द के साथ जलन का बोध
हो उसके लिए कालो, बेल, स्पाइजि और स्टेफि का प्रयोग हितकर सिद्ध
होता है। जब दर्द बिजली की तरह एकाएक मालूम हो तब पल्स, बेल,
स्पाइजि से सुफल मिलता है। छेदने वाले दर्द में चायना, प्लेटि और फास
बहुत ही गुणकारी होते हैं। मरोड़ने या निचोड़ने की तरह दर्द में प्लेटि,
वेरेट एल्ब और हायोस। चीरने की तरह दर्द में—पल्स, बेल, फास।
दबाव के साथ आने वाले दर्द में—कैप्सि, पल्स, बेल, स्टेफि, हायोस।
फाड़ने की तरह दर्द में—कॉस्टि, कालो, चायना, बेल, वेरेट एल्ब, स्टेफि
और हिप। खिंचाव वाले दर्द में—फास, वेरेट एल्ब, चायना और हिप।
कुतरने या काटने वाला दर्द में—बेल, रस। डसने या सूई चुभने वाले दर्द
में—कालो, पल्स और वेरेट एल्ब। झटका लगने वाले दर्द में—पल्स,
स्पाइजि। खुजलाहट और सुरसुराहट वाले दर्द में—बेल। विशेषतः रात्रि
के आक्रमण में—कैमो, कॉस्टि, चायना, पल्स, प्लेटि और बेल। प्रातः या
दोपहर से पूर्व आने वाले दर्द में—नक्स, बेल, स्पाइजि। शाम को या
दोपहर के बाद वाले में—पल्स, बेल। स्पर्श से बढ़ने पर—कालो,
चायना, स्पाइजि, स्टेफि और हिप। भोजन के बाद वृद्धि होने में—फास,
स्पाइजि। बात करने या मुँह खोलने में—फास। गीली आबहवा में—रस,
वेरेट एल्ब और स्पाइजि। मुख्यतः दाहिने अंश में—कॉस्टि, प्लेटि, बेल,
वेरेट एल्ब। बाएँ अंश में—कालो, कैलो और नक्स वाम।

५—यदि शूलदर्द के साथ सिर में गर्मी मालूम हो—आर्न, एकोन,
ब्रायो, स्टेफि। सिर में चक्कर—प्लेटि, फास, बेल। चेहरे पर शोथ—
कालो, प्लेटि, फास, बेल—स्पाइजि। अत्यन्त अश्रुप्रवाह में—पल्स, बेल,
स्पाइजि। नाक से बहुत अधिक स्राव होने पर—पल्स, बेल, स्पाइजि।
घबराहट और बेचैनी की हालत में—आर्स, एकोन, स्पाइजि।

२—चेहरे और होठों के अनेक रोग
(Various Phenomena in the Face and on the Lips)

१—गालो का शोथ (Swelling of the Cheeks)—यदि इस प्रकार की सूजन दन्तपीड़ा के फलस्वरूप हो, क्षीण दाँतों से सम्बन्धित हो, सिरदर्द की अधिकता और सिर में चक्कर मालूम पड़े तो सर्वप्रथम बेल का प्रयोग ही उचित होगा। जब इससे दर्द कुछ भी न घटे, दर्द के साथ टपकन और फाड़ने-सा अनुभव रहे तब मर्क से लाभ होता है। इससे २४ घण्टों के अन्दर ही सूजन दूर हो जाती है। यदि कुछ सूजन रह भी जाय तो उसे हिप खतम कर देता है। जहाँ सूजन बहुत कड़ी हो, वहाँ आर्न से विशेष लाभ होता है। सूजन में लाली के साथ कड़ापन हो तो कैमो ही उपयोगी सिद्ध होता है। जब सूजन म लालिमा के साथ-साथ पीलापन भी हो, मुँह से बदबू भी निकल रही हो तो तब बेल अच्छा फल दिखाता है। ऐसे स्थलों के लिए डा० हेरिंग ने बेल की बहुत अधिक प्रशंसा की है। परीक्षण के द्वारा यह महान उपकारी औषध प्रमाणित हुआ है। जिस स्थल मे सूजन का रंग बैंगनी-सा हो, वहाँ के लिए लैक अत्यन्त फलप्रद औषध है।

२—चेहरे का विसर्प या जहरवाद (Erysipelas of the Face)—जिस विसर्प में चिकनाहट प्रतीत हो वहाँ बेल की ३० शक्ति की ३ गोलियों को जल में घोलकर ३–३ घण्टे के अन्तर पर रोगी को १–१ चम्मच की मात्रा में देना बहुत ही लाभदायक है। जहाँ विसर्प का आक्रमण सिर पर हुआ हो, वहाँ रस से उपकार होता है। प्रदाहित अंगों पर छाले निकल आने के बाद इसका प्रयोग करना उत्तम होता है। जब प्रदाहित अंग लाल होने के अतिरिक्त पीला दिखायी पड़े और रस तथा बेल से कोई लाभ न हुआ हो तो एपिस अच्छा काम करता है। प्रदाहित अंश जब बैंगनी रंग का दिखायी पड़े तो लैक से निश्चित लाभ होता है। जब विसर्प स्थान बदलने के साथ किसी एक ही जगह स्थायी समय तक रहे, रोगी में बहुत अधिक कमजोरी आ जाय तो आर्स से अत्यन्त लाभ होता है। उपरोक्त विसर्प में जब रोगी

बिल्कुल ही अशक्त हो जाय तब ग्रैफा का सेवन कराना हितकर होगा। इसके सेवन से रोगी एकदम चंगा हो जाता है। जब किसी बाहरी प्रयोग के कारण विसर्प एकाएक दब जाय तब क्यूप्रम के समान गुणकारी औषध कोई नहीं है। यह मस्तिष्क आक्रान्त हो जाने पर भी आशातीत फल देता है। यदि इससे पहले रोगी को बेल या ब्रायो न दिया गया हो तो इस अवस्था में उसके प्रयोग से विशेष फल मिलता है। क्योंकि इससे दबा हुआ विसर्प बाहर प्रकट हो जाता है। जिन रोगियों का विसर्प स्वय ही दब जाय, उसका कोई कारण ज्ञात न हो सके, रोगी शरीर से बहुत कृश हो तो उसे बहुत ही अशुभ लक्षण समझना चाहिए। एक बार एक रोगी को बेल देने के बावजूद मस्तिष्क आक्रान्त हो गया, विसर्प बिल्कुल गायब हो गया, मस्तिष्क के आवरणों में उत्तेजना के कारण उसमें भीषण प्रलाप उत्पन्न हो गया। तदनन्तर रोगी की तीसरे दिन अस्पताल में मृत्यु हो गयी।

३—होठों का शोथ (Swelling of the Lips)—यदि ऊपर के होंठ में सूजन या कड़ापन हो तो बेल उपयोगी सिद्ध होता है। इसके बाद कैल्के, मर्क और सल्फर का प्रयोग उचित है। होंठों के फटने या उनसे रक्त निकालने के क्षेत्र में आर्स, कार्बो, इग्ने और ब्रायो उत्तम प्रमाणित हुए हैं।

४—गालो और होठो के मृदु घाव (Ulcers of a benign Kind)—साधारण घाव के लिए बेल पर्याप्त है। यदि इससे फायदा न हो तो आर्स सेवन कराना चाहिए। यदि इन घावों का आक्रमण रुक-रुक कर होता रहता हो तो साइलि और सल्फ देना अच्छा है। गण्डमालाग्रस्त बच्चों के गालों के घाव के लिए भी यह उपकारी है। उनके लिए भी आर्स और बेल की जरूरत पड़ती है। ऐसे घावों के पुनराक्रमण को रोकने के लिए कैल्के, सल्फ और साइलि उपयोगी औषधें हैं। इन औषधों का प्रयोग लम्बी अवधि के बाद करना चाहिए। एक रोगी में ६ वर्षों से थूक पैदा करने वाली ग्रंथियों में घाव हो गया था। वह घाव गालों के आर-पार तक हो गया था। रोगी सभी चिकित्साओं से हताश हो गया था। ऐसी

परिस्थिति में कैल्के की ३० शक्ति की २ गोलियों को पानी में घोलकर लगातार एक हफ्ते तक देने से रोगी का घाव भर गया और वह बिल्कुल रोगमुक्त हो गया।

५—चेहरे और होठो का कर्कट (Carcinoma and Schirrus)—ऐसे स्थानों में कड़े अर्बुद निकल आने पर कोनि, आयो और साइलि की ३० शक्ति प्रयोग करने से बहुत भला होता है। जिस औषध का भीतर सेवन किया जाय उसी औषध का बाहरी प्रयोग फोड़े पर भी करना चाहिए। प्रायः सभी रोगियों के लिए ऊपर-कथित तीनों औषधियों की आवश्यकता पड़ती है। कभी-कभी तो इनके साथ कैल्के और सल्फ का भी प्रयोग करना पड़ता है। कर्कट रोग में सड़ने वाले घाव के लिए सबसे पहले आर्स का उपयोग करना आवश्यक होता। तदनन्तर पूरक औषधों के रूप में कोनि, सल्फ और साइलि का सेवन कराना चाहिए। एक स्थान में डा० रिकर्ट की चिकित्सा में डा० ईवान का फास्फोरस के द्वारा कर्कट रोग के घाव को काबू में करने का उल्लेख मिलता है। परन्तु यह भ्रमपूर्ण जान पड़ता है। मेरे विचार से वह घाव दाद या खाज का रहा होगा, जिस पर बेल और साइलि के द्वारा सहज में ही अधिकार पाया जा सकता है। डॉ० गैसपेरी ने नक्स वाम के द्वारा जो वास्तविक कर्कट घाव को आराम किया था, कुछ अंशों में विश्वसनीय है। उक्त घाव नीचे के होंठ पर हुआ था। सम्भवतः गाँठ पर पड़ी हुई काली पपड़ी को खुरच डालने से ऐसा हुआ था। उस प्रकार की गाँठ अत्यधिक दुश्चिन्ता के कारण बन गयी थी।

—:o:—

अध्याय—८

दाँतों और मसूड़ों के रोग
(Affections of the Teeth and Gums)

१. दन्त-वेदना
(Toothache)

जब तक चिकित्सक के पास औषध निर्वाचन के लिए कुछ निश्चित लक्षण न हो, तब तक उसे सही औषध के चयन में बड़ी कठिनाई होती है। मेटेरिया मेडिका में ऐसे अनेक औषधों का वर्णन है, जिनके द्वारा दन्त-वेदना में उपकार हुआ है। चिकित्सकों को औषधियों की एक ऐसी सूची तैयार कर लेनी चाहिए, जिनके द्वारा रोगी प्रायः लाभान्वित हुए हों। उन्हें चाहिए कि वे अपने रोगियों के लक्षण लिखकर सूची में औषधियों की खोज करें। ऐसा करने से औषध-चयन में सुगमता होगी। विगत ४० वर्षों से दन्त-पीड़ा के लिए जिन औषधों का प्रयोग किया जाता रहा है उसे तथा दन्त-वेदना के कारणों का यहाँ निरूपण किया जाता है :—

१—खोखले और सड़े दाँतों में दर्द—जिस स्थान में किसी विशेष औषध के उपसर्ग विद्यमान न रहें, वहाँ बिना किसी सोच-विचार के कैमो ३० की २ गोलियाँ रोगी की जीभ पर रख देनी चाहिए। ऐसा करने से बहुत-से रोगी लाभान्वित हुए हैं और उनके खोखले तथा हिलते हुए दाँत बिना दर्द के ही निकल गये। यदि दर्द लम्बे समय से हो और कैमो का कोई प्रभाव दिखायी न पड़े तो लक्षणों के अनुसार एण्टिम या पल्स देना अच्छा है। उक्त दोनों औषधों में से किसी एक औषध से जादू की तरह असर होगा। जब दर्द दाँतों से शुरू होकर सिर तथा कानों तक पहुँचे और

खासकर रात को दर्द बढ़े तब मर्क से विशेष लाभ होता है। इस प्रकार के दर्द सर्दी-गर्मी के कारण बढते रहते हैं। फाड़ने या खिंचने वाले दर्द खास-तौर से पोले दाँतों की जड़ में होते हैं। दर्द कानों तक पहुँचे, कनपटियों में दर्द के कारण टपकन हो, कोई चीज चबाने से दर्द बढे, टण्ढा पानी आदि तरल वस्तु पान करने से दर्द में वृद्धि होने पर स्टेफिसेग्रिया ही एकमात्र उपयोगी औषध है। जब दर्द कुछ छूने या चबाने से बढे, रोगी समझता है कि उसके दाँत ढीले हो गये हैं अथवा उसके स्नायु आवरणरहित हैं और उनमें हवा का स्पर्श हो रहा है तब वहाँ ब्रायोनिया से बहुत उपकार होता है। जहाँ किसी प्रकार की औषधियों से लाभ न हो, वहाँ कैल्के अथवा साइलि से निश्चय ही लाभ होता है।

२—सिर की ओर रक्त-सचार में वृद्धि होने के कारण दन्त-पीड़ा—जब गाल बहुत गरम या लाल हो तब एकोनाइट सूँघने से दर्द का तुरन्त निवारण होता है। एकोनाइट के असफल होने पर बेल, कैमो या हायोस के प्रयोग से अवश्य ही लाभ होता है। दाँत दुखने के समय चेहरा पीला हो जाने पर पल्स अत्यन्त लाभप्रद प्रमाणित होता है। यदि मस्तक या हाथों की नाड़ियों में बहुत तनाव हो तो आर्न या चायना का प्रयोग करना फलप्रद है। जब उपरोक्त औषधों से फायदा न हो और दर्द का बार-बार आक्रमण होता रहे तब कैल्के देने से अवश्य ही लाभ होगा।

३—स्नायविक दन्त-वेदना—इस प्रकार का दर्द अक्सर स्त्रियों में ही देखा जाता है। इसमें निश्चित औषधों को सुँघाने से ही दर्द दूर हो जाता है। इसके लिए सबसे पहले एकोन का प्रयोग करना चाहिए। जब असह-नीय दर्द के कारण रोगी चिल्लाता, काँपता, रोता या छटपटाता रहे तब कॉफि का प्रयोग उत्तम सिद्ध होता है। बहुत अधिक मात्रा में कहवा पीने के कारण होने वाले दर्द में कैमो से बहुत उपकार होता है। खासकर दर्द जब रात को बढे, दर्द चोट लगने, खोदने या डक मारने की तरह हो, दर्द वाला गाल लाल रग का हो तब उक्त औषध से सुफल मिलता है। जब दर्द बीड़ी-सिगरेट आदि पीने, खाना खाने के बाद या सुबह-शाम

चढ़े तो इग्नेशिया अच्छा काम करता है। जिन रोगियों का स्वभाव चिड़चिड़ा हो और अधिक हाथ-पैर न हिलाते हों उनके लिए नक्स वाम ही उत्तम औषध है। जब दर्द मानसिक परिश्रम, खुली वायु या प्रातःकाल चढ़ता हो तब बेल, स्पाइजि और हायोस लाभप्रद औषधें हैं। असहनीय दर्द यदि परिवर्तनशील भी हो तो बेल बहुत ही लाभदायक होता है। जो रोगी चिड़चिड़े मिजाज के हों, दर्द गालों में टपकन के साथ हो या रोगी में प्रलाप का भाव मौजूद रहे तो हायोस अच्छा फल दिखाता है। जब दर्द का असर सभी दाँतों पर एक साथ ही पड़ता हो अथवा एक ही दाँत के मूल या सिर पर बिजली की तरह भयंकर झटके की तरह प्रतीत हो और उस असहनीय दर्द के कारण रोगी चिल्ला उठे तो वहाँ स्पाइजि के समान कोई अन्य औषध नहीं है।

४—वातजनित दन्तवेदना—ऐसे दर्द में सर्वप्रथम पल्स और मर्क का प्रयोग करना उचित है। जब समूचे चेहरे में डसने, फाड़ने, मुँह से लार बहने, रात में लार का स्राव बढ़ने, मसूड़ों के फूलने और बिस्तर की गर्मी से दर्द बढ़ने के स्थान में मर्क बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। पल्स भी ऐसे दर्द में फायदा करता है, किन्तु जब दर्द चेहरे के एक ओर हो, शाम को कर्णवेदना, मसूड़े से रक्तस्राव होना, चेहरा पीला पड़ना, गरम चीज खाने-पीने, गरम कमरे में बैठने, बिस्तर की गर्मी से बढ़ने आदि के स्थलों में इसका प्रयोग मुख्य रूप से होता है। जब दर्द बड़ी दाढ़ों में हो, सारे सिर और गालों तक फैले या एक दाँत से दूसरे दाँत में चला जाय, रोगी ऐसा समझे कि उसके दाँत ढीले और लम्बे हो गए हैं, सिर को हिलाने-डुलाने से या दर्द रहित करवट लेटने से दर्द बढ़ने पर ब्रायो से विशेष उपकार होता है। रात में फाड़ने या सूई चुभने की तरह दर्द के लिए कैमो बहुत ही लाभदायक औषध है। खासकर कैमो का प्रयोग वहाँ होता है, जहाँ दर्द असहनीय हो, पसीना होने के बाद सर्दी लग जाय, जबड़े के नीचे की ग्रन्थियाँ फूल जायँ, कुछ खाने-पीने के पश्चात् दर्द का पुनराक्रमण हो और पीड़ित स्थान पर शोथ के कारण लाली हो। मींग

जाने के वाद दर्द होने, रात में या खुली हवा में दर्द वढ़ने और गर्मी से घटने पर रस वहुत ही उपयोगी प्रमाणित हुआ है। लक्षणों के अनुसार नक्स वाम तथा स्पाइजि का भी प्रयोग किया जा सकता है।

५- गठियाजनित दन्तवेदना (Arthritic)—इसके लिए नक्स, स्पाइजि, व्रायो, रस, सीपि लाभप्रद हैं। जव इसका दर्द वहुत दिनों का पुराना हो, वहाँ कैल्के, लाइको और सल्फर का प्रयोग वहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है।

६—विशेष निर्देशक लक्षण (Special Indications)—प्रकृति, स्वभाव तथा विशिष्ट कारणो के अनुसार स्त्रियों के लिए कुछ उपयोगी औषधों का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है :—

कैल्के, कैमो, चायना, और वेल। मासिक रजस्राव के समय में—कैमो, कैल्के और काफि। वालक को स्तनपान कराने के काल में—कार्बो, चायना। गर्भ के समय—कैल्के, सीपि, वेल, पल्स, हायोस और मैग कार्ब। अन्य स्थितियों में मैग कार्ब की कदाचित् ही आवश्यकता पड़ती है। वच्चों के लिए—एकोन, कैमो, पल्स, वेल, और मर्क। चिड-चिड़े मिजाज तथा झगड़ालू मनुष्यों के लिए—कैमो, व्रायो। क्रोधी स्वभाव वालों के लिए—नक्स तथा व्रायो। रुदनशील, उदास—एकान्तसेवी तथा सन्तप्त व्यक्तियों के लिए—इग्ने, पल्स और रस। स्नायविक व्यक्तियों में, जो दर्द सहन न कर सकें—एकोन, कैमो, काफि, हायोस, काफी पीने वालो के लिए—कैमो, नक्स, मर्क। सर्दी लगने के पश्चात्—एकोनाइट, कैमो, मर्क, रस, डल्का, वेल, नक्स। जव रोगी पानी में भीग गया हो तव रस से विशेष उपकार होता है।

७—वेदना को विशेषता के अनुसार—जव दर्द के मारे रोगी पागल हो जाय—एकोनाइट, काफि, कैमो, वेरेट एल्व और हायोस। खोदने जैसा दर्द—कैल्के, कैमो, वेल, नक्स, स्पाइजि, स्टैफि। टपकन वाला दर्द—एकोनाइट, कैमो, कैल्के, वेल, पल्स, हायोस, सल्फ। दाँतों में

हवा घुसने का-सा बोध—ब्रायो। मानो दाँत बढ़ गये हैं—आर्स, कैमो, ब्रायो, नक्स, रस, हायोस। दाँत ढीले होने पर—ब्रायो। दाँतों के वास्तविक ढीलेपन में—नक्स, मर्क, आर्स, कैमो, रस, हायोस। चीरने-फाड़ने-सा दर्द—पल्स, बेल, मर्क, कैमो, रस, ब्रायो, हायोस, स्पाइजि। दाँतों में झटके का दर्द—मर्क, कैमो, ब्रायो, नक्स, सल्फ, स्पाइजि। स्नायु मानो खींचकर ढीले छोड़ दिये गये हों—पल्स। जलने जैसा दर्द—इग्ने, कैल्के, बेल, रस। दाँतों की सम्पूर्ण पंक्तियों में दर्द—कैमो, स्टेफि, रस, मर्क। चेहरे के समूचे भाग में दर्द—कैमो, पल्स, रस, मर्क। जबड़े की हड्डी तथा चेहरे पर दर्द—एकोन, पल्स, मर्क, नक्स हायोस, सल्फ, रस। गालों और जबड़े की हड्डियाँ आक्रान्त होने पर—ब्रायो, बेल, साइलि, स्पाइजि। दर्द कानों तक बढ़ने पर—पल्स, कैमो, बेल, मर्क, रस, स्टेफि, सीपि, सल्फ। आँखों पर होने के समय—बेल, पल्स, स्पाइजि, स्टेफि। समूचे सिर पर—नक्स, पल्स, मर्क, ब्रायो, कैमो, हायोस, सल्फ और रस।

८—दर्द में वृद्धि होने के अनुसार निर्देशन—सम्पर्क या स्पर्श से बढ़ने पर—चायना, बेल, ब्रायो, आर्स, पल्स, रस, आर्नि, स्टेफि, मर्क। दाँतों के जीभ से लगने पर—इग्ने, कार्बो, चायना, मर्क। मुख की गति-विधि से—कैमो, नक्स। चबाने से—ब्रायो, नक्स, कार्बो, स्टेफि, आर्स, सल्फ, मर्क। दाँतो को परस्पर दबाने से हिप, सीपि, चायना। शरीर को हिलाने से—चायना, ब्रायो, नक्स। भोजन करने के बाद—कैमो, मर्क, नक्स, इग्ने, स्टेफि, ब्रायो। भोजन करते समय—कार्बो, पल्स, सल्फ, बेल। पानी पीने से—कैमो। चाय पीने से—इग्ने, कैमो, चायना। शराब पीने से—इग्ने, आर्स, नक्स। काफी पीने से—इग्ने, कैमो, नक्स। खुली हवा में—नक्स, बेल, ब्रायो, रस, चायना, स्टेफि, सल्फ। मुख्यतः वायु में—सीपि, पल्स, रस। खासकर हवा के झोंके से—कैल्के, चायना, सल्फर, बेल, सीपि। मानसिक परिश्रम करने से—इग्ने, बेल, नक्स। आवाज सुनने से कैल्के, आर्स, ब्रायो। दूसरों को आपस में

बात करते सुनकर—आर्स, ब्रायो। सर्दी से—सल्फ, मर्क, एण्टिम, कैल्के, आर्स। खासकर ठण्ढी हवा से—मर्क, सल्फ, बेल, हायोस। ठण्डे पानी से, खासकर पीने से—कैल्के, ब्रायो, एण्टिम, सल्फ, स्टेफि, कैमो, पल्स, नक्स, मर्क। विशेषतः ठण्ढे पानी से हाथ-मुँह धोने पर—कैल्के, सल्फ, मर्क। मुँह के भीतर ठण्ढी वायु खीचने पर—कैल्के, सल्फ, बेल, ब्रायो, मर्क, नक्स। सामान्य या अत्यन्त उष्ण वस्तु के सम्पर्क से—ब्रायो, कैमो, पल्स, काफि, स्पाइजि, बेल। विशेषतः गरम खाद्य के कारण—कैमो, ब्रायो। बहुत अधिक गरम चीज पीने से—नक्स, मर्क, कैमो; गरम कमरे में—सल्फ, कैमो, पल्स। बिस्तर में—बेल, ब्रायो, एण्टिम, कैमो, पल्स, मर्क। लेट जाने से—रस, इग्ने। नीरोग पार्श्व पर लेटने से—इग्ने। पीड़ित पार्श्व पर लेटने से—आर्स। आराम करते समय—रस। खासकर बैठ जाने पर—रस, पल्स। दाँत खोदने से—पल्स। धूम्रपान से—ब्रायो, इग्ने।

९—दिन के समयानुसार निर्देशन (Indications according to the time of day)—सन्ध्या को वृद्धि—ब्रायो, इग्ने, रस, नक्स, एण्टिम, बेल, मर्क, पल्स। शाम को बिस्तर से—एण्टिम क्रूड, मर्क। सो जाने पर—आर्स। रात मे—काफि, मैग, कार्ब, ब्रायो, साइलि, सल्फ, आर्स, स्टेफि, रस, कैल्के, बेल, पल्स, कैमो, मर्क। आधी रात से पहले—कैमो, बेल, ब्रायो। आधी रात के बाद—नक्स, स्टेफि, मर्क। प्रातः काल—कार्बो, इग्ने, बेल, नक्स। विशेषतः जागते ही—कार्बोवेज, बेल, नक्स।

१०—उपशम की स्थिति के अनुसार निर्देशन (Indications according to ameliorating circumstances)—बिस्तर में बैठ जाने से घटना—रस, मर्क, आर्स दबाने से—रस, बेल, चायना, पल्स। खुली हवा में—एण्टिम क्रूड, ब्रायो, पल्स। टहलने से—पल्स। ठण्ढक से पल्स। खासकर ठण्ढे पानी से—ब्रायो। ठण्ढे पानी में गीली उँगलियों के द्वारा दाँतों को छूने से—कैमो। मुख्यतः सर्द हवा से—

पल्स। गाल पर ठण्डा हाथ रखने से—रस। झुककर बैठने से—मर्क। पीड़ित पार्श्व की ओर लेटने से—ब्रायो। आराम के समय—मर्क। दाँतों को खोदने से खून आ जाने पर—बेल। गर्मी से—स्टेफि, नक्स, रस, पल्स, मर्क, आर्स। तम्बाकू सेवन से—मर्क।

११—साथ वाले कष्टों के अनुसार निर्देशन (Indications according to accessory ailments)—जब सिर की ओर रक्त का प्रवाह अधिक हो—आर्न, कैमो, चायना, ब्रायो, कैल्के, हायोस, बेल, एकोन। चेहरा तमतमाया हुआ होने पर—आर्न, कैमो, बेल, नक्स, ब्रायो, एकोन,। पीला चेहरा होने पर—स्पाइजि, सीपि, पल्स, गालों में शोथ—सल्फ, कैल्के, पल्स, आर्न, कैमो, नक्स, बेल, मर्क। मसूड़े फूलना—रस, चायना, बेल, सल्फ, नक्स, स्टेफि, मर्क। मसूड़ों में दर्द—कैल्के, कार्बो, स्टेफि, मर्क। लार का अधिक स्राव—रस, बेल, डल्का, मर्क। मुँह या गले का सूखापन—चायना बेल। बिना प्यास से—पल्स। निचले जबड़े की ग्रन्थियों में सूजन—डल्का, कैमो। हाथ-पैरों में दर्द के साथ—पल्स, रस, कैमो, ब्रायो। संग्रहणी के साथ—मर्क, रस, कैमो। कोष्ठबद्धता के साथ—स्टेफि, ब्रायो, नक्स। ज्वर के साथ—कैल्के, रस, मर्क, एकोन। सर्दी लगने पर—पल्स। हाथों और उसकी उँगलियों के किनारे ठण्ढे आर्स। चिड़चिड़ा, क्रोधी और असहनशील स्वभाव में—नक्स, कैमो, ब्रायो, एकोनाइट। दुःखी, कातर और रुदनशील—रस, पल्स। अत्यधिक स्नायविकता और बेचैनी की हालत में—वेरेट एल्ब, हायोस, कैमो, काफि और एकोनाइट।

२. मसूड़ों के विविध रूप

१—मसूड़ों से खून निकलना (Scurvy of the Gums)—इस रोग के लिए कार्बोविज और मर्क मुख्य औषधें हैं। जब रोग का वेग अल्प हो, एकाएक ठण्ढ लगने के कारण रोग उत्पन्न हुआ हो, मुख से लार का स्राव होता हो या न भी होता हो तब डल्का का प्रयोग करना ही सर्वश्रेष्ठ है।

ताजा हवा के अभाव में रोग होने पर या रोगी द्वारा हाथ-पैर न हिलाये जाने पर कैम्पि अथवा नक्स का प्रयोग फलप्रद होता है। अधिक नमक खाने से रोग होने पर नेट्रम म्यूर, आर्स या कार्वो देना उत्तम है। ऐसी अवस्थाओं में उपरोक्त औषधों से विशेष सफलता मिलती है। पारा सेवन के कारण इस प्रकार का रोग होने पर आर्स, लैके, चायना और कार्वो देने से लाभ होता है। मसूड़ों से खून निकलने और उससे बदबू आने पर कार्वो का सेवन बहुत ही आवश्यक होता है। यदि सड़न की अवस्था मालूम पड़े तो लैक या आर्स का व्यवहार करना चाहिए। जहाँ यक्ष्मा ज्वर में कार्वो से लाभ न हो वहाँ आर्स गुणकारी सिद्ध होता है। (डॉ० हैम्पल के मतानुसार मसूड़ों से खून गिरने पर हाइड्रस, आयोड और मर्क का प्रयोग करना बहुत उत्तम है। कार्बोलिक एसिड या पोटास परमैंगनेट का बहुत हल्का घोल तैयार कर उससे गलगला करने से रोगी को बहुत आराम होता है।)

२--मसूड़ों के विभिन्न लक्षण--फोड़ों के लिए—नक्स, मर्क और बेल बहुत लाभप्रद हैं। यदि इनका आक्रमण बार-बार होता रहे तब कास्टि का प्रयोग करना चाहिए। दाँत से मसूड़ों के पृथक् होने पर—फास्फो एसि, फस्फो, स्टेफिसे, कार्वो और मर्क बहुत लाभजनक हैं। मसूड़ों का स्पर्श करते ही खून निकलने पर—पल्स, कास्टि, कैल्के, रस, फास्फो एसि, फास्फो, मर्क, नेट म्यूर और कार्वो। यदि मसूड़ों पर छाले पड जायँ—स्टेफि, नेट-म्यूर। मसूड़ों में घाव होने के कारण पीव आने पर—आर्स, स्टेफि, कास्टि, कार्वो, मर्क। भगन्दर के समान घाव—सल्फ, कास्टि, कैल्के। मसूड़ों के फूलने पर—रस, चायना, हिप, सल्फ, ब्रायो, बेल, नक्स, स्टेफि, मर्क। जब मसूड़ों में सूजन और प्रदाह हो—नेट म्यूर, कैम्पि, कार्वो, बेल, नक्स, मर्क। मसूड़ों में दर्द होने पर—कैमो, पल्स, हिप, कैल्के, स्टेफि, आर्स, कार्वो, मर्क। जब मसूड़े सफेद या पीले-से दिखायी पड़ें—स्टेफि, मर्क। मसूड़ों में जलन होने पर—कैमो, बेल, मर्क, आर्स। यदि मसूड़ों का रंग लाल हो—कैमो, बेल, मर्क। स्पाज की तरह कोमल मसूड़ों के लिए—सल्फ, स्टेफि, कार्वो और मर्क।

३. शिशुओं का दन्तोद्गम
(Dentition of Children)

बच्चों में दाँत निकलने के समय प्रायः निम्नलिखित प्रकार के कष्ट दिखायी पड़ते हैं—(१) स्नायविक उत्तेजना, (२) ज्वर, (३) आक्षेप, (४) आक्षेपिक कास, (५) अतिसार और (६) दाने या उद्भेद।

१—स्नायविक उत्तेजना (Nervous irritability)—इसमें आर्स या काफि के प्रयोग से तुरन्त लाभ होता है। इसके लिए सुँघाने वाली दवाओं का चुनाव करना चाहिए जिसे बच्चा सुँघाने के पश्चात् सो जाय। कभी-कभी बेल से भी लाभ होता है। जिन बच्चों में पेट दर्द का कष्ट अधिक रहता हो उनके लिए कैमो का प्रयोग उत्तम है।

२—ज्वर (Fever)—इसके लिए खासकर एकोनाइट का घोल ही उत्तम प्रमाणित होता है। कभी-कभी दोबारा आक्रमण की रोक-थाम के लिए क्रमशः बेल, कैमो या साइलि का प्रयोग भी करना पड़ता है।

३—आक्षेप (Convulsions)—जब आक्षेप का दौरा बहुत तीव्र न हो, बच्चा नींद में डर के कारण चौंक पड़ता हो तो इग्ने से लाभ होता है। यदि बच्चे में बहुत अधिक, रोना, चिल्लाना और कराहना हो तो कैमो का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है। जब उपरोक्त दोनों औषधों से रोग न घटे और आक्षेप का वेग शुरू से ही प्रबल हो तो वहाँ बेल ही निश्चित औषधि है। इसके सेवन से थोड़े समय में ही दौरे का भयङ्कर आक्रमण रुक जाता है। जब ऐसा दौरा होने पर बच्चा अपने सिर को तकिए में रगड़े, उसका चेहरा, बारी-बारी से लाल तथा पीला दिखायी पड़े तो तुरन्त ही सल्फ सेवन कराना आवश्यक है। जब २–३ दिन तक सल्फ सेवन कराने पर भी कोई लाभ न हो तो निश्चित रूप से कैल्के का व्यवहार करना चाहिए।

४—आक्षेपिक कास (Spasmodic Cough)—जब बच्चों में काली खाँसी के समान आक्षेपिक कास का दौरा दिखायी पड़े तब इपिकाक का प्रयोग उत्तम होता है। इसके असफल होने पर सिना देना चाहिए। खाँसी के साथ हल्के आक्षेप मे उक्त दवाओं से फायदा होता है। छाती में घुटन के लिए जब इपिकाक से कोई फल न मिला हो तो वहाँ क्यूप्रम के प्रयोग से अत्यन्त सहायता मिलती है।

५—अतिसार (Diarrhoea)—जब बच्चों को बहुत अधिक दस्त हो रहे हों तो मर्क के व्यवहार से विशेष उपकार होता है। इससे यदि कदाचित् सफलता न मिले तो सल्फर निश्चय ही ठीक कर देता है। जहाँ बच्चे में कोष्ठबद्धता हो तो उसे ब्रायोनिया निश्चय ही ठीक कर देता है। यदि इससे लाभ न हो तो नक्स वाम और मैग-म्यूर कभी व्यर्थ न होंगे।

६—जब दाँत मसूड़ो को फोड़कर निकले तब सल्फर बहुत ही उपयोगी प्रमाणित होता है। परन्तु कैल्केरिया इससे भी कहीं अधिक गुणकारी औषध है। इन दोनों औषधियों की सहायता से बच्चों के दाँत सुगमतापूर्वक निकल आते हैं तथा उनमें ऐंठन, आक्षेप आदि लक्षण भी नहीं आने पाते।

—:०:—

अध्याय—९

मुख और जीभ के रोग
(Affections of the mouth and Tongue)

१—मुख-गह्वर में होनेवाले विकार
(Affections of the Buccal Cavity)

१—मुखक्षत और छोटे-छोटे घाव (*Aphthae and small ulcers*)—छालों को दूर करने के लिए मर्क प्रधान औषध है। यह केवल मुख-गह्वर (Buccal Cavity) के छालों के लिए ही नहीं, अपितु आँतों की श्लैष्मिक झिल्लियों के छालों के लिए भी अत्यन्त उत्तम औषध है। मर्क के ५–६ दिनों के बाद सल्फ और यदि वह सफल सिद्ध न हो तो कैल्केरिया का व्यवहार फलप्रद होता है। ऐसी स्थिति में सल्फ्यूरिक एसिड और बोरैक्स भी अच्छा काम करते हैं, परन्तु वे मर्क, सल्फ और कैल्केरिया की समानता नहीं कर सकते। सड़न वाले छालों के लिए आर्स बहुत ही लाभदायक है। बच्चों के दाँत निकलने के समय छोटे-छोटे छालों के कारण उत्पन्न घावों के लिए स्टेफि, मर्क, बेल, बोरैक्स, नाइट्रि एसि और नेट म्यूर बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

२—पेट मे दर्द (Stomachache)—बच्चों के लिए मर्क विशेष उपकारी है। इसके बाद कार्बो वेज या बोरेक्स भी अच्छा काम करता है। स्थूल शरीर वाले युवा व्यक्तियों के लिए कैप्सिकम से विशेष सहायता मिलती है। क्षीणकाय वालों के लिए नक्स वाम और सल्फर विशेष गुणकारी होते हैं। गठियावात के कारण पेटदर्द उत्पन्न होने पर मर्क अथवा

डल्कामारा ही सेवन करने योग्य हैं। रक्त निकलने की प्रवणता में कार्वोवेज, स्टेफि, नेट म्यूर और मर्क विशेषतः उपकारी हैं। पारा सेवन के कारण होने वाले उदरशूल के लिए कार्वोवेज, डल्का, लैक या कैल्के विशेष हितकारी हैं।

३—मुख से बदबू निकलना (Fetor of the mouth)—यदि इसके साथ कोई अन्य उपसर्ग न रहे तो आर्स, कार्वो वेज, आर्न, वेल और मर्क से सुफल मिलता है। कभी-कभी पल्स, रस, सल्फ और साइलि से भी विशेष सफलता मिलती है। जब दुर्गन्ध प्रायः प्रातःकाल ही निकलती हो तब आर्न, वेल, साइलि, नक्स और सल्फ का व्यवहार हितकारी होता है।

४—विशेष निर्देशन के सम्बन्ध में निम्नलिखित औषधें हैं—मुखक्षत में—आर्स, स्टेफि, नेट म्यूर, नाइट्रि-एसि, मर्क तथा कभी-कभी हेलिवोरस भी। श्लैष्मिक तहों की सूजन में—डल्का, मर्क। लार में—व्रेल, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रि-एसि, मर्क, डल्का। मुँह से दुर्गन्ध आने पर—नक्स, हेलिवो, डल्का, नाइट्रि-एस, कार्वो, मर्क। मसूडों की सूजन में—नक्स, नेट्र-म्यूर, नाइट्रि एसि, कार्वोविज। मसूडों से खून गिरने पर—मर्क, कार्वो, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रि-एसि। गरदन की ग्रन्थियाँ फूल जाने पर—हेलिवो, मर्क, डल्का। अतिसार के साथ—आर्स, नाइट्रि एसि, मर्क।

२—लार गिरना

(Ptyalism)

वातजनित लार के लिए डल्कामारा के बढ़कर अन्य कोई औषध नहीं है। कुछ समय पहले इस औषधि का एक बार अत्यधिक प्रभाव देखने को मिला था। एक युवती स्त्री कमरे का जंगला खोल कर सो गयी। फलस्वरूप उसकी गरदन तथा नीचे का जबड़ा दोनों अकड़ गये और मुँह से लार

बहने लगी। लार का स्राव लगातार होता रहता था। लार के स्राव से मुँह से लेकर छाती तक अनेकों छाले पड़ गये। बहुत सोच-विचार करने पर भी उसके रोग के कारण का कोई निर्णय न हो सका। उस रोगिणी को आठ दिनों तक नाइट्रि-एसि, मर्क, केलि-क्लोर, नेट्रम-म्यूर और फास्फोरस दिया गया। परन्तु उक्त औषधों से कोई लाभ न दिखायी पड़ा। एक दिन अकस्मात् उसके रोग का कारण मालूम हो गया। अब उसे डल्कामारा ३० शक्ति की २ गोलियाँ दी गयीं। उससे लार का बहाव तुरन्त रुक गया और ३ दिनों के भीतर ही उसके सारे कष्ट जाते रहे। (डॉ० हैम्पल के मतानुसार ऐसी अवस्था में एकोनाइट का व्यवहार भी लाभदायक होता है।)

३—जीभ के रोग

(Affections of the Tongue)

१—जीभ की सूजन तथा उसके साधारण प्रदाह और स्फीति (Simple glossitis)—इसके लिए मर्क ही सर्वोत्तम औषध के रूप में व्यवहृत होता है। इसके पश्चात् लैकेसिस और एपिस का स्थान है। एक रोगी में इन दोनों औषधों के साथ-साथ मर्क का सेवन भी बहुत लाभदायक पाया गया। कदाचित् मर्क के कामयाव न होने पर बेलेडोना से निश्चय ही सफलता मिलती है। (डॉ० हैम्पल का कथन है कि विस्फोटक प्रदाह में एकोनाइट का व्यवहार आवश्यक है।)

२—घाव तथा कड़ी गाँठें—यदि जीभ भर कड़ी गाँठ बन जाय तो मर्क बहुत ही लाभदायक औषध है। इसी के समान बेलेडोना और साइलीशिया भी काम करता है। ब्रायोनिया का प्रयोग भी लाभप्रद होता है। कर्कट वाले अर्बुद के लिए आर्सेनिकम या साइलीशिया उपकारी सिद्ध होते हैं। यदि बहुत अधिक क्षत न हो तो ये दोनों औषधें ही रोगी के लिए पर्याप्त हैं।

३—जीभ के नीचे गिल्टी (Ranula)—ऐसी गिल्टी के लिए मर्क का प्रयोग सबसे पहले करना चाहिए। एक बार एक रोगी में इससे लाभ होते न देखकर थूजा का सेवन कराना पडा तथा एक दूसरे रोगी में थूजा के असफल होने पर नाइट्रि एसिड और मर्क का प्रयोग किया गया, जिससे वह रोगी रोगमुक्त हो गया।

४—जिह्वा मे दर्द (Pain in the tongue, Glossalgia)—एक रोगी की जीभ में घाव की तरह भीषण दर्द होता था, उसे कैल्केरिया से आराम हो गया तथा दूसरे रोगी में जीभ झुलस जाने की तरह पीड़ा थी। वह दूसरा रोगी कास्टिकम देने से चंगा हो गया।

—:o:—

अध्याय—१०

मुख-गह्वर के रोग

(Affections of the Fauces)

१. विभिन्न प्रकार के गल-प्रदाह

(Inflammations of the Throat according to their various kinds)

वास्तव में मुख के रोगों का वर्गीकरण करना अत्यन्त असम्भव कार्य है। फिर भी कुछ लोगों ने इसके कई भेद बतलाये हैं, जैसे—गलकोष-प्रदाह, कौवा-प्रदाह या टान्सिल का शोथ। यथार्थ में ये सब एक ही हैं। सही अर्थों में इनका भेद उनके कारणों के अनुसार होना चाहिए, जैसे—(१) कफज, गलक्षत, (२) छाले, (३) डिफ्थीरिया अर्थात् गल-झिल्ली-प्रदाह, (४) सर्दीजनित, (५) वातजनित तथा (६) सड़न पैदा करने वाला। इन वर्गों में गले के प्रायः सभी रोगों का समावेश हो जाता है।

१—दाहक गलक्षत और तालुमूल-प्रदाह—वास्तव में कफ के विकार गले में किन्हीं-किन्ही स्थानों पर ही आते हैं। जब आते भी हैं तो उनका असर सबसे पहले टान्सिल पर ही पड़ता है। अन्य प्रकार के बताये हुए प्रदाहों के अतिरिक्त कफज प्रदाह का एक विशिष्ट स्थान है। सर्दीजनित और गठियावात के गलरोग साधारण प्रकार के गिने जाते हैं। इनकी चिकित्सा अल्प समय में ही हो जाती है। होम्योपैथी की पद्धति जानने वालों के लिए इनमें कोई कठिनाई नहीं होती। यदि ज्वर का वेग बहुत प्रबल हो तो एकोनाइट की ३० शक्ति से चिकित्सा की शुरुआत करनी चाहिए। इसकी ३ गोलियों का पानी में घोल बनाकर ३-३ घण्टे के अन्तर पर चम्मच

की मात्रा में सेवन कराते रहना चाहिए। यदि गले की फोड़ी बहुत फूली हुई हो तो बेलेडोना से उपकार होता है। रोगी में सिरदर्द तथा सिर की ओर अधिक रक्तसंचार होने पर भी इसी से लाभ होता है। यदि यह असफल हो जाय तो स्थिति को देखते हुए निम्न औषधों का उपयोग करना चाहिए :—

हिपर—निगलने के समय बहुत अधिक दर्द, कानों और गरदन की ग्रन्थियों तक भाला भोंकने की तरह का दर्द और गरदन तक खिंचाव-सा तेज दर्द रहने पर।

लैकेसिस—जब गरदन पर छूना सहन न हो अर्थात् अत्यन्त स्पर्श-कातरता तथा सुबह सोकर उठने के बाद कष्ट में वृद्धि होने पर।

साइलीशिया—जब टान्सिल की सूजन बराबर बढ़ती जा रही हो, टपकन के साथ भाला भोंकने-सा दर्द हो और बेलेडोना तथा हिपर देने के बावजूद भी कोई लाभ न हुआ हो।

बेलेडोना देने के बाद भी जब घाव की प्रारम्भिक अवस्था शुरू हो गयी हो तब मर्क ही श्रेष्ठ औषध है। इसके सेवन से २४ घण्टे के भीतर ही घाव बह जाता है। इसे सेवन कराने से पहले इस बात का ख्याल रखना चाहिए की घाव अच्छी तरह पक गया हो। यदि घाव पूरी तरह से पक्वा-वस्था में न हो तो इसके प्रयोग से घाव में प्रदाह उत्पन्न हो जाता है और रोगी की स्थिति जटिल हो जाती है। टान्सिल के अत्यधिक कड़ेपन में प्रायः इग्नेशिया अच्छा काम करता है। इसका निर्देशक लक्षण है—टान्सिल पर खुले मुँह वाले चौड़े आकार के घावों का बनना। जो छाले प्रायः जल्दी ही फूटकर चारों ओर फैल जाते हैं, उनके लिए बेलेडोना की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु दर्दरहित क्रमशः बढ़ने वाले घावों के लिए मर्क बहुत गुणकारी प्रमाणित होता है। जब इस प्रकार के कफज रोग सूजन के साथ हों, टान्सिल के बजाय तालु (Velum Palate) ही अधिक आक्रान्त या प्रदाहित जान पड़े तब फास्फोरस, आर्सेनिकम और ब्रायोनिया ही

विशेष रूप से फायदेमन्द होते हैं, जहाँ कि पहले एकोनाइट या बेलेडोना के प्रयोग से कोई सहायता न मिली हो। यदि केवल गले का कौवा (Uvula) ही प्रदाहित हुआ हो तो लैकेसिस या काफिया से लाभ होता है। टान्सिल के पुराने शोथ में बैराइटा कार्ब, सीपिया, सल्फर या कैल्केरिया अत्यन्त उपयोगी हैं।

२—छालों वाला मुख-प्रदाह—टान्सिल पर सफेद रंग के बहुत ही बारीक चौड़े आकार के घाव हो जाते हैं। जब ऐसी अवस्था में इग्नेशिया, कार्बोविज या मर्क के द्वारा कोई लाभ न हुआ हो तो वहाँ नाइट्रिक एसिड का प्रयोग करना अच्छा होता है। अधिकांश अवस्थाओं में इसी तरह कैप्सिकम भी काम करता है, जब कि छालों में जलन और मुख-गह्वर (Fauces) में दबाव की अनुभूति विद्यमान रहे।

३—गलझिल्ली-प्रदाह (Diphtheric Angina) साधारणतया इस रोग की सबसे सरल पहचान यह है कि गले में झिल्लियाँ बनती हैं। यदि रोगी की समुचित चिकित्सा न हो तो वह शीघ्र की काल के गाल में चला जाता है। इस रोग की चिकित्सा में पहले चिकित्सक लोग बेलेडोना, बेराइटा कार्ब, ब्रायोनिया, आर्सेनिकम तथा फास्फोरस का व्यवहार किया करते थे। परन्तु अब इसके लिए एपिस ही सर्वोत्तम औषधों में गिना जाता है। इस रोग में भूल कर भी मर्क का प्रयोग नहीं करना चाहिए। क्योंकि इसके प्रयोग से पीव उत्पन्न होता है। गलझिल्ली-प्रदाह के एक रोगी को एक बार मर्क दिया गया था। उसके लिए मर्क की १२ शक्ति का घोल पीने की व्यवस्था की गयी थी। घोल में से १–१ चम्मच पानी ३–३ घण्टे के अन्तर पर देने के लिए निर्देश किया गया था। दूसरे दिन देखने पर वह छोटा घाव बहुत बड़े आकार में परिवर्तित हो गया था। उस घाव के ऊपर अंगुली के बराबर मोटी झिल्ली भी जम गयी। फलस्वरूप उस रोगी की दुःखद मृत्यु हो गयी थी। (डॉ० हैम्पल के मतानुसार इङ्गलैण्ड के होम्योपैथिक चिकित्सक जार लिखित औषधों के अतिरिक्त आयोडाइड अव् मर्क (Iodide of Merc.) दूसरे या तीसरे क्रम के विचूर्ण के रूप में

या फाइटोलैक्का का सेवन कराया जाता है। इसके अतिरिक्त रोगी को प्रायः क्लोरेट या पोटाश परमैंगनेट का गलगला भी कराने का विधान है।)

४—सर्दीजनित-प्रदाह (Catarrhal Angina)—इसका आक्रमण प्रायः गलकोष (Pharynx), तालु या कौवे पर ही मुख्य रूप से होता है और यह विकार साधारणतया एकोनाइट से घट जाता है। यदि यह सफल न हो तो नक्स वाम देना चाहिए जब कि रोगी के गले में खुरखुरापन या खरोंच-सा मालूम पड़े। यदि आक्रान्त स्थान का रंग चमकीला लाल, वहाँ सूखापन और निगलने में कष्ट हो तो बेल देना चाहिए। जब पीड़ित अंग में डंक मारने के साथ बहुत सूखापन रहे, निगलने में कष्ट हो तो ब्रायो ही उत्तम फल देता है। जब हवा के झोंके से गले में प्रदाह हो, गले में गुदगुदाहट और खाँसी हो, निगलने में कष्ट हो और निचले जबड़े की ग्रन्थियाँ प्रदाहित हों तब कैमोमिला बहुत ही उपकारक सिद्ध होता है। जब गला खुली हवा में खराब हो जाय, खाँसी आवे, कौवा बढ़ गया हो, तालु से मुख-गह्वर तक ऐसा अनुभव हो कि गले में कफ रुक गया है, जिसके कारण रोगी में निगलने की इच्छा हो तब काफिया ही एकमात्र उपयोगी औषध माना गया है। गले मे खरोंच, छील डालने की तरह अनुभूति, प्यास के बिना ही मुँह में सूखापन, निगलने के समय गले में सूई चुभने का बोध तथा शाम को इन सभी उपसर्गों की वृद्धि होने पर पल्सेटिला बहुत ही गुणकारी प्रमाणित होता है।

५—वातज-प्रदाह (Rheumatic Angina) इस विकार के कारण गले, सिर, गरदन या हाथ-पैरों में फाड़ने की तरह दर्द होता है। इस रोग में एकोनाइट का उपयोग सर्वोत्तम होता है। जिन लोगों का स्वभाव चिड़चिड़ा या रूखा हो और एकोनाइट से लाभ न हुआ हो उनके लिए ब्रायो उपकारी है तथा जो स्वभाव से मृदु और शान्त हैं, उनके लिए पल्स का प्रयोग गुणकारी है।

६—सड़े घाव का प्रदाह (Gangrenous Angina)—सबसे पहले गलकोष-प्रदाह (Diphtheria) और इस घाव की वेदना में अन्तर समझ

लेना बहुत आवश्यक है। इसकी वेदना छालों के कारण ही होती है। इसके लिए आर्स या साइलि बहुत लाभदायक हैं।

७—गले का पुराना प्रदाह—इसके लिए प्रायः बेराइ-कार्ब, सीपि, पल्स, कैल्के, लैक या पेट्रो अत्यन्त लाभप्रद औषधें हैं। गले में यदि बार-बार कष्ट होता रहे तो बेराइ, लैक और सीपि का सेवन कराना बहुत ही फलदायक प्रमाणित होगा।

२. मुख-गह्वर-शूल के विशेष निर्देशक लक्षण
(Special Indications in Angina Faucium)

१—एक-एक अंग की अवस्था के अनुसार—तालु-पार्श्व ग्रंथियों की सूजन—एकोन, बेल, हिप, लैक, मर्क, कैल्के, सीपि, साइलि।
तालु-प्रदाह—बेल, फास।

गले की कौड़ी में सूजन—लैक, काफि। घेरेदार सुर्खी—मर्क। चारों ओर फैलने वाली सुर्खी—बेल। रङ्ग गहरा और नीला—लैक, आर्स, मर्क, सल्फ। रक्तवह नाड़ियों में खून का भराव—पल्स। सूजन पूर्ण रूप से दिखायी पड़ने पर—बेल, लैक, हिप, साइलि, मर्क, बेराइ-कार्ब, सीपि, सल्फ। घाव—लैक, इग्ने, मर्क, साइलि, सल्फ, आर्स, कैप्सि, कार्बो वेज, नाइट्रि-एसि। पानीदार छाले—आर्स। सड़न वाले घाव—आर्स, बेल, साइलि, लैक।

२—दर्द के अनुसार (क) निगलने के समय जलन—बेल हिप। दबाव—आर्स, मर्क, इग्ने। गले में किसी गाँठ के फँस जाने का-सा अनुभव—लैक, हिप, बेल, कैमो, नक्स, सीपि, सल्फ। डंक मारने-सा दर्द—मर्क, बेल, हिप, नाइट्रि-एसि, पल्स सल्फ। जलन का बोध—नक्स वाम, इग्ने। गले में घुटन और सिकुड़न—बेल, लैक।

(ख) निगलने की दो क्रियाओं के भीतर जलन—आर्स, एको, कैप्सि। डाट लगे होने की अनुभूति—इग्ने, काफि, सल्फ। डंक मारने या भाला भोंकने की तरह दर्द—इग्ने, एकोन, पल्स, सल्फ। जलन का-सा

बोध--इग्ने, नक्स, पल्स, आर्स, सल्फ। सिकुड़न का-सा अनुभव—एकोन, सीपि और आर्स।

३—कष्ट वृद्धि की अवस्थाओं के अनुसार—सन्ध्या समय—पल्स। रात में--मर्क। सुबह--नक्स। सोने के पश्चात्—लैक। व्यायाम के बाद—एकोन, ब्रायो। गरदन झुकाने और मोड़ने पर--कैमो, ब्रायो। गरदन छूने से—लैक, ब्रायो। पानी पीने से गले में घुटन—बेल, लैक। चित लेटने पर—साइलि, एकोन। बोलने से—एकोन, नक्स। ठण्ढी हवा से—नक्स, काफि, हिपर, मर्क आर्स।

४--साथ वाले अन्य रोगों के अनुसार--सिर की ओर रक्त-प्रवाह की प्रबलता बेल। गरदन पर सूजन बेल, ब्रायो। गरदन या निचले जबड़े की ग्रन्थियों पर सूजन—ब्रायो, कैमो, मर्क, नाइट्रि-एसि। लार का स्राव—मर्क, डल्का, हिप, लैक, नाइट्रि-एसि। गले में कफ की अधिकता होने पर—मर्क, बेल, लैक। मुँह से बदबू आने पर—मर्क, बेल, लैक, नाइट्रि-एसि। ज्वर में—एकोन, बेल, ब्रायो, लैक, पल्स, मर्क।

३—अन्ननली के रोग

(Affections of Oesophagus)

१—अन्ननली के प्रदाह के लिए--प्रायः एकोन ही यथेष्ट होता है, फिर भी रस टाक्स की आवश्यकता पड़ती है। इनके अतिरिक्त कान्थ्यूलस, पेट्रोलियम से भी विशेष फल मिलता है। सबसे पहले रस देने से यदि लाभ न हो तो आर्स देना चाहिए।

२—अन्ननली के आक्षेप के लिए ये सर्वश्रेष्ठ औषधें हैं :—काक्यू, कूप्रम, बेल और हायोस।

अध्याय—११

परिपाक-क्रिया की विशृंखला

(Derangements of the Digestive Functions)

१—अस्वाभाविक क्षुधा

(Morbid Appetite)

१—ह्रास प्राप्त क्षुधा (Diminished Appetite) यदि ऐसी अवस्था में मन्दाग्नि रोग न हो और केवल रोगी में भोजन की अरुचि या कभी-कभी मिचली का भाव रहे तो निम्नलिखित औषधों से बहुत लाभ होता है—नक्स, वेरेट एल्ब, चायना, सल्फ, कैल्के, हिप, आर्स, लैक, साइलि। गर्मी के दिनों में जब गर्मी की अधिकता के कारण भूख घट गयी हो तो ब्रायो, एण्टि क्रूड और कार्बोविज से उपकार होता है। वास्तविक अरुचिपन में—एण्टि क्रूड, नक्स, पल्स और वेरेट एल्ब से सफलता मिलती है। गरम खाना खाने से पैदा होने वाली अरुचि—पल्स, कैल्के। मास खाने में अरुचि—सल्फ, पल्स, लाइको। रोटी से अरुचि—चायना, पल्स, सल्फ। दूध पीने मे अरुचि—इग्ने, सीपि। तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट आदि के धूम्रपान में अरुचि—पल्स, आर्स, इग्ने, कैल्के। मुँह का स्वाद कड़ुवा होने पर—ब्रायो, एण्टि क्रूड, कार्बोविज, नक्स, कैमो, वेरेट एल्ब, सल्फ, रस, पल्स, चायना। पानी या किसी तरल वस्तु में कड़ुवाहट मालूम होने पर—पल्स, चायना। मास, मक्खन आदि कड़ुवा मालूम होने पर—पल्स, चायना। खाद्य या पेय निगलने के बाद उसका स्वाद कड़ुवा मालूम होने पर—पल्स, ब्रायो, आर्स। सुबह का नाश्ता करने से पूर्व मुँह में कड़ुवाहट—ब्रायो, मर्क, सल्फ, कैल्के, साइलि। मुँह का स्वाद गन्दा—नक्स, आर्स, मर्क, पल्स, रस। मुख की विरसता—पल्स, चायना,

ब्रायो, नक्स, वेरेट एल्ब, सल्फ, रस। मुँह का स्वाद फीका--पल्स, चायना, ब्रायो, नक्स, वेरेट एल्व, सल्फ, रस टाक्स। भोजन का स्वाद नीरस जान पड़ना—आर्स, मर्क, ब्रायो, पल्स, नक्स, चायना। चर्वी-सा—साइलि, कास्टि। मुँह में बलगम भरे होने का अनुभव--वेल, वेरेट एल्व, रस, आर्न। मुँह में नमकीन का-सा स्वाद--सल्फ, नक्स, कार्बो वेज। सभी खाद्य पदार्थों का स्वाद नमकीन-सा- सल्फ कार्बो वेज। मुँह का स्वाद खट्टा--सल्फ, कैल्के, चायना, नक्स, आर्न। सभी चीजें खट्टी मालूम होना--पल्स, नक्स, चायना, कैल्के। रोटी का स्वाद खट्टा मालूम होने पर—वेल। भोजन के पश्चात् मुँह में खट्टापन--साइलि, कार्बो वेज, पल्स, नक्स। पानी पीने के बाद मुँह में खट्टापन—सल्फ, चायना, नक्स, विशेषतया दूध पीने के बाद—कार्बो वेज, सल्फ, नक्स। मुँह का स्वाद मीठा —सल्फ, पल्स, वेल, ब्रायो, चायना, वेरेट एल्व, मर्क। रोटी मीठी लगने पर—मर्क, पल्स। बीयर शराब का स्वाद मीठा लगने पर—पल्स। स्निग्ध पदार्थ, दूध या मांस मीठा लगने पर--पल्स। जड़ी-बूटी का-सा स्वाद--वेरेट एल्व, कार्बो वेज, पल्स, नक्स। चरचराहट मालूम पड़ने पर—वेरेट एल्व। धूम के स्वाद का—सल्फ, पल्स। मिट्टी की तरह का स्वाद मालूम पड़ने पर—चायना, हिप, पल्स, इपिका। (हर तरह की चीजें खाने की इच्छा—देखिए न० २)

२—राक्षसी भूख (Increased appetite, Canine Hunger)—राक्षसी भूख के लिए कैल्के, लाइको और साइलि बहुत ही उपयोगी औषधें हैं। टाइफस के बाद अधिक भूख लगने पर वेरेट एल्व से बहुत लाभ होता है। जब भस्मक रोग न होकर केवल भूख की ही अधिकता रहे—चायना, सिना, वेरेट एल्व, मर्क, सीपि, सल्फ। रात्रि में भूख की अधिकता होने पर यह बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। जब भूख की अधिकता के साथ-साथ मुँह में लार और मिचली भी रहे तो साइलीशिया ही सर्वोत्तम औषध है। बच्चों में कैल्केरिया समान रूप से उपयोगी है।

३—हर तरह की चीजें खाने की आकांक्षा (Vagaries of Appetite)—प्रायः मन्दाग्नि रोग पुराना हो जाने पर ऐसी अवस्था उत्पन्न होती है और स्वाभाविक क्षुधा नष्ट हो जाती है। इसका अन्तिम लक्षण औषध-चयन के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। ऐसी स्थिति में निम्न-लिखित औषधियाँ विशेष लाभप्रद हैं :—

कड़ुवा चीज खाने की लालसा—डिजि, नेट म्यूर। ब्राण्डी पीने की इच्छा—हिप, सल्फ, आर्स, लैक। मिट्टी की चीजें खरिया, चूना आदि खाने की इच्छा—नाइट-एसि, नक्स। शराव पीने की इच्छा—हिप, आर्स, कैल्के, चायना, स्टेफि, सल्फ। लकड़ी या कोयला खाने की इच्छा—(प्रायः मृगी की रोगिणियों में)—कोनियम, साइक्यूटा। स्वादिष्ट खाद्य खाने की इच्छा—इपिका, चायना। नमकीन वस्तु खाने की चाह—कार्बो वेज, कैल्के, वेरेट एल्व। खट्टी और ठण्ढी चीजें खाने की इच्छा—एकोन, आर्न, सल्फ, हिप, चायना, आर्स, पल्स, वेरेट एल्व। मीठी वस्तु खाने की इच्छा—चायना, केलि कार्व, लाइको, एपिस, एकोन-कार्ब। भुने हुए मांस खाने की इच्छा—कास्टि। समुद्र की मछली खाने की इच्छा—नाइट्रि एसि, वेरेट एल्व। विचित्र प्रकार की चीजें खाने की इच्छा—हिप, पल्स। विशेषतः मदिरा पान की लालसा—कैल्के, एकोन, ब्रायो, हिप, लैक और स्टेफिसे।

४—मद्यपान की तीव्र इच्छा (Drinking mania)—ब्राण्डी पीने की पुरानी आदत को छुड़ाने के लिए ब्राण्डी में ईल-नामी मछली जिन्दा डाल देनी चाहिए। मछली मर जाने के बाद जब वह सड़ जाय तो ब्राण्डी को पिलाना चाहिए। इसकी बदबू के कारण वह व्यक्ति ब्राण्डी पीना छोड़ देगा। बीयर शराब पीने की आदत में इससे किसी प्रकार का लाभ नहीं होता। शराब पीने में अरुचि उत्पन्न करने के लिए आठ-आठ दिनों के अन्तर पर सल्फर और लैकेसिस का सेवन कराना अच्छा है। इसी प्रकार ब्राण्डी छुड़ाने के लिए यदि ईल मछली न मिलसके तो आठ-

आठ दिनों के अन्तर पर हिपर और आर्सेनिक का प्रयोग करना उत्तम है। अधिक वीयर पीने वालों के लिए नक्स और रसटाक्स बहुत ही फायदेमन्द हैं। एक बार बहुत अधिक वीयर पाने वाले एक रोगी में शिरो-वेदना हो रही थी। उसे पहले रसटाक्स और उसके बाद नक्स दिया गया। नक्स वाम का सेवन आठ दिनों तक करने के पश्चात् उसे वीयर पीने से घृणा हो गयी और उसने वीयर पीना एकदम वन्द कर दिया। वीयर की अपेक्षा ब्राण्डी या शराब १-२ सप्ताह के लिए छुड़ा देना सहज है।

२—पाकाशय की शिकायतें
(Gastric Complaints)

१—हृदय की जलन, पाकाशय मे अम्ल [मुंह में पानी आना] (Heartburn, acid Stomach, waterbrash)—आमाशय में अम्ल की वृद्धि से कलेजे में जलन होने लगती है। इस विकार के लिए नक्स वाम और पल्सेटिला बहुत उपयोगी औषधें हैं। यदि इनसे लाभ न हो तो कैल्के, कैप्सि, चायना सल्फ, कार्बो वेज का सेवन कराना लाभप्रद सिद्ध होगा। जब रोगी को खट्टी डकारें बहुत अधिक आती हों, अपच की डकार भी आती हो या न भी आती हो तो निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग बहुत ही गुणकारी प्रमाणित होता है—फास, कैमो, एकोन कार्व, लाइको और नेट-म्यूर। यदि दूध पी लेने के बाद खट्टी डकार उठती हो तो प्रायः कैल्के, कार्बो वेज, सल्फ, चायना और लाइको से सफलता मिलती है। चर्वीदार पदार्थ खाने पर—कार्बो वेज, नेट-म्यूर और सीपिया से लाभ होता है। मुँह मे पानी आने पर नक्स, ब्रायो और पल्स, लाभकारी औषधे हैं। यदि इनसे सफलता न मिले तो साइलि, सल्फ, कैल्के, आर्स, कार्वो वेज और सीपि का प्रयोग करना अच्छा होता है। यदि खाना खाने के बाद मुँह में लार आवे तो साइलि, सल्फ, ब्रायो मुख्यतः उपकारी हैं। जब प्रातः नाश्ता से पूर्व मुंह से लार आती हो तब नक्स और सल्फ देना चाहिए।

२—जुगाली या पागुर (Rumination)—इसके लिए विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। ऐसा लक्षण प्रायः उन लोगों में देखा जाता है, जो बहुत जल्दी-जल्दी खाना खाते हैं और उसके बाद पशुओं के समान मुँह चलाते रहते हैं। इस पर ध्यान न देने के कारण आगे चलकर यह बहुत दुःखदायी होती है। विशेषतः सल्फर और फास्फोरस के प्रयोग से यह विकार हमेशा के लिए और बहुत जल्दी दूर हो जाता है। इसके अतिरिक्त कभी-कभी लाइको, ब्रायो, कैमो और इग्ने की भी आवश्यकता पड़ती है। यदि अजीर्ण के कारण खट्टी डकार आती हो तो फास्फोरस और सल्फर के व्यवहार से निश्चय ही लाभ होता है।

३—मिचली और कै (Nausea and Vomiting)—यदि रोग बहुत अधिक पुराना न हो तो इसे पाकाशय की गड़बड़ी का कारण समझा जाता। एक हिस्टीरिया की रोगिणी को कई बार उल्टी होती थी। उसकी उल्टी में पीले या हरे रंग का पानी दिखायी पड़ता था और कितनी ही बार तो अजीर्ण का ही कै होता था। चिकित्सकों ने पहले तो उसके पेट में कैन्सर होने का अनुमान किया। अन्त में पाचन-क्रिया का विकार समझकर उसे फास्फोरस की ३० शक्ति दी गयी। जिसके फलस्वरूप तुरन्त ही कै बन्द हो गयी। इसके बाद अब उसके लक्षण फिर कुछ बदलने लगे। इस बार मेरुदण्ड में यक्ष्मा रोग होने का अनुमान लगाया गया। बाद में इसकी शंका भी जाती रही। अन्त में कास्टिकम की ३० शक्ति के प्रयोग से उसके उपसर्ग गायब हो गये। उल्टी बराबर के लिए बन्द हो गयी और फिर कभी उसका आक्रमण न हुआ। रोगिणी स्वस्थ होकर चलने-फिरने लगी। मिचली और कै की चिकित्सा प्रारम्भ करने से पूर्व आकस्मिक कारण, पाकाशय और स्नायुमण्डल की स्थिति पर ध्यान देना आवश्यक होता है। सर्दी की चिकित्सा के लिए इपिकाक उत्तम है। जहाँ कारण जाना न जा सके, वहाँ नक्स वाम का व्यवहार करना उचित है। यह आकस्मिक तथा पाकाशय-विकार के कारण उत्पन्न कै के लिए भी लाभप्रद है। यदि किसी

प्रकार के भय के कारण मिचली या उल्टी होती हो तो वहाँ एकोनाइट से विशेष लाभ होता है। यदि इस रोग का प्रधान कारण शोक, चिन्ता, दुःख आदि हो तो फास्फोरिक एसिड या इग्नेशिया से बहुत लाभ होता है। यदि रोग की उत्पत्ति क्रोधावेश के कारण हो तो कैमोमिला और ब्रायोनिया लाभदायक सिद्ध होते हैं। सर्दी लगने के बाद रोग होने पर—इपिका, बेल, डल्का, आर्स या क्यूप्रम का प्रयोग लाभकारी होता है। गरमी लग जाने के बाद—ब्रायो वा एन्टिम-क्रूड, गुणकारी होते हैं। रात्रि में जागने के बाद—नक्स, इपिका, पल्स और आर्न। पाकस्थली की गड़बड़ी के कारण—पल्स, एन्टिम-क्रूड, इपिका, ब्रायो, नक्स और आर्स। नशीली चीजों के व्यवहार के कारण—कार्बोवेज, नक्स वाम और आर्सेनिकम। तम्बाकू पीने की आदत न होने पर तम्बाकू पीने के कारण, पल्स या इग्ने। मस्तिष्क पर रगड लगने के कारण—आर्न, रस या ब्रायो। गाड़ी मे सवारी करने या जल में तैरने के बाद—काक्यू, आर्स, पेट्रो। गर्भ-वती स्त्रियों के लिए—इपिका, सीपि, सल्फ। साथ में चक्कर होने पर—पल्स, एन्टिम क्रूड, एकोन, नक्स, सल्फ, वेरेट एल्ब। चेहरा बहुत पीला होने पर—पल्स, आर्स, वेरेट एल्ब। जबान साफ रहने पर—इपिका, सिना, वेरेट एल्ब। अच्छी भूख लगने पर—वेरेट एल्ब। हिचकी अधिक होने पर—हायोस, वेरेट एल्ब, नक्स। उदरशूल के साथ—कार्बोवेज, आर्स, वेरेट एल्ब, फेरम, फास्फो एसि, कैल्के, नक्स। घबराहट के साथ—आर्स, नक्स। मूर्च्छा की अधिकता होने पर—वेरेट एल्ब, कैल्के। अत्यन्त कमजोरी में—इपि, आर्स, वेरेट एल्ब। अजीर्ण की कै मे—आर्स, पलस, सल्फ, वेरेट एल्ब, इपिका, नक्स, फेरम फास, साइलि, सल्फ। तरल कै में—इपिका, आर्स, वेरेट एल्ब, साइलि, हायो। कै के साथ कडवा पदार्थ रहने पर—एकोन, कैमो, पल्स, नक्स, एण्टिम क्रूड, आर्स। खट्टा स्वाद आने पर—फेरम, नक्स, फास, चायना, कैमो, कैल्के, पल्स, सल्फ। हरे रग के पानी की तरह—एकोन, पल्स, आर्स, वेरेट एल्ब। केवल कफ ही निकलने पर—इपिकाक, पल्स,

सल्फ, वेल, मर्क। काले रंग का—आर्स, वेरेट एल्ब, फास, चायना। पानी की तरह—इपिका, सल्फ, व्रायो, वेल। जब केवल रात मे ही मिचली और कै हो—फेरम, चायना, आर्स, पल्स (विशेषत इपिकाक भी)। प्रातः नाश्ता करने से पूर्व—नक्स, वेरेट एल्ब। विशेषतया खाना खाने के बाद—नक्स, इपि, आर्स, वेरेट एल्ब, फेरम, साइलि, फास, सल्फ। विशेषतः पानी पीने के बाद—आर्स, फेरम, वेरेट एल्ब, साइलि और व्रायो।

४—समुद्री बीमारी (Sea-sickness) समुद्री यात्रा करते समय जहाज चलने के कारण मिचली और कै की अवस्था में काक्यू, आर्स, सल्फ और सीपि से बहुत लाभ होता है। इनमें काक्यू और आर्स सर्व-श्रेष्ठ औषधें हैं। कुछ स्थानों में आर्सेनिकम से आशातीत लाभ होता है।

५—रक्त-वमन खून की कै (Haemotemesis) यदि इस रोग की अवस्था पेट पर चोट लगने के कारण न हुई तो इपिकाक के समान गुणकारी दूसरी दवा नहीं है। पेट पर चोट लगने की हालत में आर्निका ही उत्तम है। अनेक अवस्थाओं में इपिकाक से रोगी को लाभ पहुँचा है। यदि यह उपकारी साबित न हो तो आर्सेनिक श्रेष्ठ है। इसका व्यवहार उस समय होना चाहिए जब खून का रंग प्रायः काला और गहरा हो और पाखाना भी उसी तरह का होता हो। साथ ही बेचैनी, कमजोरी और शरीर में ठढक हो। जब इससे रोगी को कोई सहायता न मिले और रोगी बिल्कुल शीर्ण हो गया हो तो कार्बो वेज से अच्छा फल मिलता है। यदि बवासीर के रोगी को खून की कै हो रही हो, पेट में अत्यधिक रक्त का जमना हो अथवा पेट में बार-बार दर्द होता हो, वमन अजीर्ण का हो तो नक्स वाम से बढकर कोई दूसरी औषधि नहीं है। यदि मासिक धर्म का रक्तस्राव नाक या मुंह के रास्ते से होता हो तो वहाँ हायोसायेमस अत्यन्त लाभजनक औषध है। इस प्रकार की एक रोगिणी को लैकेसिस और एक अन्य

रोगिणी को फास्फोरस ने आराम कर दिया था। (डा० हैम्पल ने लिखा है कि जिन लोगों के शरीर में रक्त की अधिकता हो, शरीर हृष्ट-पुष्ट अथवा दुबला-पतला, इकहरे बदन वाले, चुस्त, फुर्तीले और वात-पित्त प्रकृति के हों तो उन लोगों के लिए एकोनाइट का भी स्मरण रखना चाहिए।)

३—पाकाशय की कमजोरी और मंदाग्नि

(Weakness of the Stomach and Digestive Derangements)

१—पाकाशय की आकस्मिक विशृंखला (Accidental Derangement of the Stomach)—तरह-तरह के गरिष्ठ खाद्य खा लेने पर एण्टिम-क्रूड, पल्स, ब्रायो और इपिका सर्वश्रेष्ठ औषधें हैं। जब जीभ पर मैल की मोटी परत पड़ गयी हो, खाद्य पदार्थों की डकार आये और किसी चीज के खाने में अनिच्छा हो तब एण्टिम-क्रूड का व्यवहार बहुत लाभदायक होता है। जब मुँह का स्वाद गन्दा, स्निग्ध, गहरा जैसा, साथ में सर्दी तथा आधा-सीसी के दर्द में पल्सेटिला बहुत उपयोगी है। यदि सर्दी-गर्मी दोनों का असर हो, सिर फट जाने का बोध आदि स्थलों में ब्रायोनिया से अच्छा लाभ मिलता है। यदि मिचली या वमन की अनुभूति हो और सिर में कुचलने का बोध रहे तो इपिकाक ही उपकारी है। भारी और स्निग्ध पदार्थ खाने के बाद पल्स, कार्बो वेज, सल्फर, टेरक्सीकम, इपिकाक तथा आर्सेनिक बहुत उपयोगी हैं। अधिक रोटी खा लेने के बाद—ब्रायो, रस, सीपि, सल्फ। अधिक अण्डे खा लेने के बाद—पल्स, कालिच। बरफ अधिक पीने या बरफ में रखे फल या शरबत आदि अधिक पी लेने के बाद—पल्स, आर्स, कार्बो वेज। गर्मी के दिनों में बरफ का पानी पीने पर—कार्बो वेज, नक्स वाम, बेलेडोना और ब्रायो। सिरका या किसी अन्य क्षारों के अधिक व्यवहार के बाद—एकोन, कैल्के, कार्बो वेज, आर्स, हिप, कास्टि, सीपि, सल्फ। मछली विशेषतः दूषित मछली खाने के बाद—कार्बो वेज, पल्स, चायना, रस। अधिक काफी पीने के बाद—नक्स, कैमो, काक्यू। अधिक दूध

पीने के बाद—ब्रायो, सल्फ। अधिक फल खाने के बाद—पल्स, आर्स, ब्रायो, वेरेट एल्ब। अधिक नमकीन खाद्य खाने के बाद—कार्बोवेज, आर्स। गोभी खाने के बाद—ब्रायो। खट्टा पदार्थ खाने के बाद—एकोन, आर्स, हिप, सीपि, स्टेफि, कैल्के, कास्टि, लैके। तम्बाकू पीने के बाद—पल्स, नक्स, चायना। अधिक चाय पीने के बाद—चायना, फेरम। शराब या ब्राण्डी पीने के बाद—नक्स, कार्बोवेज। खट्टी शराब पीने के बाद—एण्टिम-क्रूड। नयी बीयर पी लेने के बाद—चायना, नक्स, रस, फेरम, आर्स, एण्टिम-क्रूड। साथ में सिरदर्द होने पर—पल्स, ब्रायो, इपिका। बहुत अधिक डकार उठने पर—एण्टिम-क्रूड, ब्रायो, नक्स, पल्स, सीपि, आर्स। जब साथ में कै भी हो रही हो—इपिका, टार्टर एमेटिक, पल्स, ब्रायो, सीपि। पेट फूलने या अफरा होने पर—चायना, ब्रायो, नक्स, पल्स, फास। साथ में पेटदर्द होने पर—पल्स। दस्त होने पर—इपिका, पल्स, आर्स, नक्स। जब नींद न आती हो—काफि, पल्स। ज्वर होने पर—ब्रायो, एकोन, एण्टिम-क्रूड, इपिका, नक्स, कैम्फि। जब शरीर पर दाने निकल आये हों—इपिका, ब्रायो, पल्स।

२—पाकाशय की पुरानी कमजोरी (Chronic weakness of the stomach)—इस रोग के लिए किसी एक औषध का निर्देश नहीं हो सकता। प्रायः नक्स, सल्फ, कैल्के आदि के सेवन से लाभ होता है। इसके लिए सहायक औषधियों के रूप में इन्हें दिया जाता है—हिप, लैक, आर्स, आर्न, कार्बोवेज, लाइको, चायना, डिजि और वेरेट एल्ब, खासकर निम्न लक्षणों के बाद :—

(१) अधिक मानसिक परिश्रम करने के बाद—नक्स, आर्न। अधिक बैठे रहने की आदत वाले व्यक्तियों के लिए—ब्रायो, नक्स, सल्फ। अधिक दिनों तक पूरी नींद न आने से—आर्न, पल्स। अधिक मदिरा पीने से—नक्स, सल्फ, आर्स। आर्द्र मौसम और ताजी हवा न मिलने के कारण—चायना, वेरेट एल्ब। चोट लगने या अधिक बोझ उठाने के

स्वाद से—आर्स, कैल्के, सीपि। दाँतों में दुखाव होने से—[illegible], कार्बोवेज, लाइको, आरम। अम्ल, गैस्ट्रिक आदि के अधिक स्राव में—[illegible], कार्बोवेज, सल्फ। अधिक भोजन करने से—[illegible], नक्स, आर्स, इपिका, कार्बोवेज, [illegible]। अधिक शराब पीने से—[illegible], [illegible], मर्क, नक्स।

(२) बहुत अधिक डकार आने पर—[illegible], कार्बोवेज, [illegible], [illegible], पल्स, एण्टिम क्रूड, आर्नि, आर्स। खाने के बाद [illegible] आने पर—कार्बोवेज नक्स, सल्फ। क्षुधा का ह्रास (देखिए १—१), क्षुधा भंग (देखिए १—२)। असाधारण आकांक्षाएँ (देखिए १—३)। कलेजे में जलन और मुँह में पानी आना (देखिए २—१)। [illegible] (देखिए २—२)। बार बार वमन होना—इपिका, नक्स, पल्स, आर्स, एण्टिम-क्रूड, हिप, कार्बोवेज, कैमो, [illegible], आर्नि, वेरेट एल्ब। (देखिए २—२)। आमाशय में दुखन—आर्स, आर्न, नक्स, [illegible], [illegible], कैमोमिला (देखिए अगला अध्याय)। पाकाशय में खाना बहुत अधिक समय तक पड़ा रहने पर—चायना, हिप, सल्फ, कैल्के, पल्स, आर्स। पाकाशय खराब हो जाने पर—हिप, [illegible], कार्बोवेज। अफरा—कार्बोवेज, लाइको, आर्स, [illegible], नक्स, ब्रायो। कब्ज—नक्स, सल्फ, [illegible], हिप, ब्रायो, वेरेट एल्ब। दस्त आने पर—इपिका, पल्स, वेरेट एल्ब, कार्बोवेज।

(३) जब कोई चीज हजम न हो—पल्स, हिप, सल्फ, कैल्के, [illegible]। जब रोटी न पचे—चायना, सल्फ, सीपि। खाने के बाद खाद्य पदार्थ हजम न होने पर—नक्स, सल्फ, कैल्के, हिप, कार्बोवेज। [illegible] स्निग्ध वस्तु भी कष्टदायक प्रतीत हो—पल्स, कार्बोवेज, सीपि। दूध न पचने पर—ब्रायो, कार्बोवेज, लाइको, सल्फ, कैल्के। जब खट्टी चीजों से कष्ट हो—कैल्के, सीपिपि, कास्टि, स्टैफि, बेल, एण्टिम क्रूड, ब्रायो, [illegible], लक। जब तरल पदार्थ कष्टकर हो—नक्स, सल्फ, चायना, आर्स, वेरेट एल्ब, पल्स, साइलि, आर्न, फेरम, नक्स, इग्ने। जब पानी पीना कष्ट-

दायक हो—पल्स, एकोन, काक्यू, आर्स, रस, चायना, वेरेट एल्व, सल्फ्यूरिक एसिड।

(४) मन्दाग्नि के साथ सिर में चक्कर आने पर—नक्स, पल्स, आर्न, एण्टिम क्रूड, लैक, वेरेट एल्व। सिर में गड़बड़ी होने पर—नक्स, आर्न, पल्स, एण्टिम क्रूड। चेहरे में पीलापन—नक्स, सीपि। चेहरा पीला और मुरझाया हुआ होने पर—लैक, नक्स, आर्स, वेरेट एल्व। खाकर ठण्ढक—वेरेट एल्व, कार्बो वेज, चायना, पल्स। अधिक निर्बलता में—चायना, वेरेट एल्व, आर्स।

—:०:—

अध्याय—१२

पाकाशय के रोग

(Affections of the Stomach)

१ प्रदाहजनित रोग

(Inflammatory Affections)

१—तरुण पाकाशय-प्रदाह (Acute gastritis)—इस रोग में एकोनाइट सर्वोत्तम औषध माना गया है। इस रोग से ग्रस्त कई रोगियों को एकोनाइट की ३० शक्ति की ३ गोलियों का घोल २–३ घण्टे के अन्तर से १–१ चम्मच सेवन कराया गया था। फलस्वरूप २४ घण्टे के अन्दर ही इसका प्रभाव दिखायी पड़ा और ४ दिन के भीतर ही रोगियों को इस औषध ने स्वस्थ कर दिया। जिन स्थलों में एकोनाइट रोगी को पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ न करा सका वहाँ वेल, ब्रायो, इपिका या नक्स देने से पूर्ण आरोग्य की प्राप्ति हुई। परन्तु यदि रोग की अवस्था बढ़ चुकी हो अर्थात् रोगी के हाथ-पैर ठण्ढे हो गये हों, दस्त आने लगे हों और रोगी एकदम अशक्त हो गया हो तो एकोनाइट से कोई लाभ नहीं पहुँच सकता। ऐसी अवस्था के लिए वेरेट एल्ब ही गुणकारी होगा। यदि उसका प्रभाव न दिखायी पड़े तो २ घण्टे के बाद आर्स का प्रयोग उपयोगी सिद्ध होगा। इन औषधों के प्रयोग के समय यह स्मरण रखना चाहिए कि जब तक रोगी में इनके स्पष्ट लक्षण न दिखायी पड़ें तब तक इनका प्रयोग भूलकर भी नहीं करना चाहिए। जब दस्त शुरू न हुए हों—केवल वमन ही हो, गले में घुटन हो और घबराहट का भाव हो तो ऐसी दशा में इनके प्रयोग से उपद्रव बहुत बढ़ जाते हैं। ऐसी अवस्था में इनके व्यवहार से रोगी में प्रलापयुक्त टायफायड हो जाता है। यदि उपरोक्त स्थिति आ ही जाय तो

वेल का प्रयोग करना चाहिए। तन्द्रा और मूर्च्छा का भाव रहने पर हायोस भी बहुत उपकारी औषध है।

२—पाकाशय की कोमलता (Softening of the Stomach, Gastromalacia)—इसके लिए क्रियोजोट का प्रयोग बहुत उत्तम है। इसकी ३० शक्ति की २ गोलियों को पानी में घोलकर १-१ चम्मच की मात्रा में २-४ घण्टे के अन्तर पर रोगी को सेवन कराना चाहिए। (डॉ० हेम्पल की राय में इस रोग के लिए सिकेलि कार का प्रयोग बहुत उपयोगी है।)

३—पाकाशय का पुराना प्रदाह (Chronic Gastritis)—जैसे पुरानी मन्दाग्नि। इसकी चिकित्सा के लिए भी रोगी की अवस्था के अनुसार विभिन्न औषधियों के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है। चिकित्सा भी दीर्घ-काल तक चलनी चाहिए। रोगी को तरह-तरह की बहुत-सी दवाएँ खिलाने से भी कोई लाभ नहीं होता। लक्षणों के अनुसार निर्दिष्ट औषधों को लम्बी अवधि के अन्तर पर देना चाहिए। इस रोग में प्रायः निम्नलिखित औषधों की आवश्यकता पड़ती है : ब्रायो, नक्स, लाइको, फास, आर्स, सीपि और सल्फ। जब आमाशय के गढे में जलन के साथ दर्द, स्पर्शकातरता और न पचे हुए खाद्य का वमन हो तब आर्सेनिकम बहुत उपयोगी है। यदि आमाशय पर किसी प्रकार की चोट लगी हो, वहाँ कुचल गया हो, अत्यन्त परिश्रम या ठण्ढा पेय पीने के कारण मन्दाग्नि हो, खाना खाने के तुरन्त बाद ही कै हो जाती हो, थोड़ा-सा खाते ही पेट में दर्द होता हो या चलने-फिरने से दर्द होता हो तो ब्रायोनिया से बहुत लाभ पहुँचता है। आमाशय में जलन के साथ दर्द, खट्टी डकार, अफरा आदि के स्थलों में कार्बो वेज उत्तम औषध है। आमाशय से गले तक जलन, सम्पूर्ण कमर में जलन, आमाशय में दर्द, जो कमर तक फैलता हो, खाना खाने के बाद अफरा, कमर पर कपड़े का सहन न होना तथा कभी-कभी कै होना आदि लक्षणों में लाइकोपोडियम बहुत उपकारी सिद्ध होता है। पुराने शराबियों के आमाशय में कड़े दवाव का बोध, अफरा आदि लक्षणों में नक्स वाम

उत्तम दवा है। आमाशय में कड़ापन, साथ में हल्का दर्द, जो समूची कमर में रहता है। बहुत अधिक खट्टी डकार, पानी-सा वमन, खाना खाने से कष्ट मे वृद्धि, डकार के साथ खाद्य वस्तु के टुकड़ों का निकलना और मुँह का स्वाद खट्टा या कड़ुवा होने आदि के स्थल में फास्फोरस से लाभ होता है। जब पाकाशय का निम्न छिद्र काफी कड़ा हो, हल्के से हल्का खाद्य खाने पर भी पेट मे दर्द मालूम पड़ता हो, खट्टी डकार तथा वमन में खट्टा कफ-सा पदार्थ मिला रहता हो तब सीपिया से ही अच्छा फल मिलता है। सूजन के आरम्भ होने तथा खट्टी डकार आने पर सल्फर गुणकारी है। (विशेष लक्षण २, ३ देखिए)।

४—पाकाशय का कर्कट रोग (Carcinoma, Schirrus)—चाकलेट के रङ्ग के समान वमन होते रहने में फास्फोरस और लाइको-पोडियम बहुत उपकारी सिद्ध हुए हैं। जब वमन में कफ, खट्टी चीजें या खाद्य वस्तुएँ ही निकलती हों तब वहाँ लाइको, क्रियोजोट, फास, नक्स, सीपि, सल्फ और कार्बोवेज से बहुत लाभ होता है।

५—छेदो वाले घाव (Perforating Ulcers)—इसकी सबसे सरल पहचान यह है कि आमाशय के किसी स्थान में दर्द, दर्द में कमी-वेशो, दबाव से वृद्धि, खट्टे कफ की अथवा खाद्य वस्तुओं की-सी डकार आती है। ऐसी स्थिति में फास्फोरस विशेष चमत्कार दिखाता है। ऐसे एक रोगी को आर्सेनिक से लाभ हुआ था। उसके रोग का निदान बिल्कुल स्पष्ट न हो सका, केवल आर्सेनिक के प्रभाव से वह ४ वर्षों तक रोगरहित रहा। एक बार किसी कारणवश उसे देहाती क्षेत्र में जाना पड़ा। जिसके फलस्वरूप वह पुनः बीमार पड़ गया। वहाँ उसकी एलोपैथिक चिकित्सा की गयी और वह रोगी चल बसा।

२. हृदय-शूल
(Cardialgia, Pains in the Stomach)

१—हृदय शूल, पाकाशय-शूल (Cardialgia, gastralgia)—जब तक रोगी में किसी विशिष्ट औषध का लक्षण न मिले तब तक नक्स

वाम का ही व्यवहार करना चाहिए। स्त्रियों के लिए इग्नेशिया। ऐसा करने से प्रायः स्थायी रूप से लाभ होता है। नक्स वाम का उपयोग प्रायः उस अवस्था में हितकर है, जब आमाशय में ऐंठन या दबाव मुख्य रूप से हो, खायी हुई वस्तुओं की कै हो, मुख्यतः जब रोगी काफी या ब्राण्डी पीने का आदी हो, काफी पीने के बाद लक्षणों में वृद्धि हो और अर्श से ग्रसित हो। इग्नेशिया—जब खाना खाने के बाद हर बार हृदय-प्रदेश और अन्ननली के ऊपरी भाग पर दबाव पड़ता हो, मानो भोजन वहीं पड़ा है या पेट बिल्कुल ढीला होकर लटक रहा है अथवा पल्सेटिला या नक्स वाम के प्रयोग से कोई लाभ न हो सका हो। कैमोमिला—जब आमाशय में पत्थर-सा बोझ मालूम हो, विशेषतः रात को अथवा जिन स्थानों में नक्स वाम से पर्याप्त सहायता न मिली हो। काक्यूलस—जिन स्त्रियों में अल्परज की शिकायत हो, जो दुःखी या चिन्तित रहा करती हों, मुँह से लार का स्राव, घुटन के साथ दर्द, जो उदर-गह्वर की गहराई तक पहुँचता हो, उन स्त्रियों के लिए विशेष लाभकारी है। पल्सेटिला—पाकाशय में डंक मारने-सा दर्द, मिचली या कै, खाली पेट में दाँत से काटने या कैंची से कतरने-सा दर्द, खाना खाने के बाद आमाशय में दबाव, सूई चुभने-सा बोध, खासकर भारी चीज खाने के कारण जठराग्नि कमजोर पड़ जाने और साथ में पतले दस्त होने, अल्प-रज या प्रदर रोग की अवस्था में बहुत ही लाभप्रद है। लाइकोपोडियम—पुराने हृदय-शूल के लिए उपकारी है। पेट के आस-पास कपड़ों का दबाव सहन न होना तथा थोड़ी-थोड़ी देर बाद छाती में घुटन का अनुभव होना इसके लक्षण हैं। बेलेडोना—अक्सर उन स्त्रियों के लिए गुणकारी है, जिनमें अतिरज हो, दर्द के कारण पीछे झुकना पड़े या साँस रोकना पड़े, आर्सेनिक—ऐसी अवस्था में लाभ पहुँचाता है जब जलन के साथ कष्ट-दायक दबाव हो, खासकर खाना खाने के बाद या बिना खाना खाये ही वमन हो जाने पर। ब्रायोनिया—भोजन के बाद या भोजन करते समय पाकाशय में पत्थर जैसे बोझ की अनुभूति, डकार आने से आराम, विष्टम्भता

और हिलने-डोलने से कष्ट में वृद्धि होने पर। कार्बोवेज—जो स्त्रियाँ बच्चों को स्तनपान कराती हैं, विशेषतः उनके लिए गुणकारी है। इनमें जलन के साथ दर्द, दाँत या कैंची से कतरने की तरह, जिसके कारण रोगिणी को दुहरा हो जाना पड़ता है, लेटने से कष्ट में वृद्धि, हृदय में बार-बार जलन का बोध और किसी गरिष्ठ पदार्थ का न पचना रहता है। इसी तरह चायना भी स्तनपान कराने वाली स्त्रियों के लिए उपकारी है। जब रस, रक्त या वीर्य का अधिक स्राव हो चुका हो, खट्टी डकार बहुत आती हो, खाना खाने या पानी पीने के बाद पेट में अफरा और चलने-फिरने से आराम मालूम पड़ता हो तब इससे लाभ होता है। फास्फारस—आमाशय में ऐंठन के साथ दर्द, जो बाएँ पार्श्व तक जाता है, बाद में वह दर्द हृदय और बाएँ कन्धे तक जाता है अथवा पेट का कष्ट गर्मी पाकर घट जाता हो तब इससे बहुत सुफल मिलता है। सीपिया—आमाशय-शूल में विशेष लाभप्रद है। विशेषतः प्रदरस्राव से पीड़ित स्त्रिया, जिन्हें अल्प-रज हो और उनका चेहरा मटमैले रग का हो, उन्हें इससे बहुत फायदा होता है।

उपरोक्त औषधों में से निम्नलिखित औषधियाँ क्रम के अनुसार व्यवहार में लायी गयी हैं :—

(अ) पुरुषों के लिए—नक्स, ब्रायो, कैमो, कार्बोवेज। (आ) स्त्रियों के लिए—इग्ने, पल्स, काक्यू, सीपि और (इ) बिना लिंगभेद के—कैमो, बेल, फास, लाइको, कैल्के, आर्स, नक्स, कार्बो वेज, चायना। (विस्तृत विवरण के लिए देखें नीचे न० ३—विशेष लक्षण)।

२—स्नायविक-शूल (Neuralgia)—आमाशय के स्नायविक शूल के लिए आर्सेनिक और फास्फोरस विशेष लाभदायक हैं। यहाँ तक कि ये दोनों औषधियाँ अनेक पुराने रोगियों के लिए भी लाभकारी प्रमाणित हुई हैं। इस औषध की ३० शक्ति की ३ गोलियों को पानी में घोलकर दिया जाता है और कभी-कभी तो २ मात्रा से अधिक देने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

३—विभिन्न प्रकार के हृदशूल के विशेष लक्षण (Special Indications in the various kinds of Cardialgia)—(१) जलन के साथ दर्द—आर्स, कार्वो वेज, नक्स, लाइको, फास। मन्द-मन्द शूलदर्द—नक्स, इग्ने, ब्रायो, कैमो, लाइको, सीपि, कार्वो वेज, फास। पत्थर की तरह दवाव मालूम होने पर—ब्रायो, कैमो, इग्ने, कैल्के। चीरने-फाड़ने या मरोड़ के साथ होने वाले दर्द में—नक्स, लाइको, पल्स, वेल, फास, कैल्के। अफरे का अनुभव—ब्रायो, लाइको। टपकने का-सा दर्द—ब्रायो, लाइको, आर्स, पल्स। दुखने की तरह या जैसे घाव होने की तरह जलन—आर्स, कार्वोवेज, पल्स, ब्रायो, नक्स, चायना। दांतो से कुतरने जैसा दर्द—वेल, फास, आर्स, नक्स। डक मारने-सा दर्द—वेल, ब्रायो, पल्स, आर्स, फास, नक्स। ऐंठन वाली सिकुड़न—नक्स, ब्रायो, वेल, फास। (२) यदि शूलदर्द पीठ तक पहुँचे लाइको, फास, नक्स वाम, आर्स, कार्वो वेज, सीपि। गलकोष तक दर्द पहुँच जाने पर—फास, लाइको, कैल्के। दर्द छाती तक होने तथा साथ में श्वासकृच्छ्रता रहने पर—लाइको, काक्यू, क्यूप्रम, नक्स, वेल, सीपि, फास। समूचे उदर मे दर्द—काक्यू, नक्स, लाइको, कैल्के, आर्स। (३) कभी-कभी दर्द होने पर—नक्स, आर्स, सीपि। खासकर प्रातःकाल दर्द होने पर—नक्स, आर्स, कैल्के, लाइको। विशेषतः रात मे – आर्स, नक्स, लाइको। खड़े होने तथा टहलने पर वृद्धि होने पर ब्रायो। लम्बे डग भरने या गलत कदम उठाने से—ब्रायो, पल्स। खासकर बाजुओं को हिलाने से—नक्स। छूने या दबाने से—आर्स, ब्रायो, लाइको, कार्वो वेज, चायना। पेट पर कपड़ों का दवाव पड़ने से—नक्स, लाइको। खाना खाने के बाद कष्ट बढ़ने पर—नक्स, फास, आर्स, लाइको, वेल, ब्रायो, पल्स, चायना, सीपि, कैल्के। वातकारक खाद्य खाने के बाद—बेल, ब्रायो, लाइको। विशेषतः स्निग्ध पदार्थ खाने के बाद—कार्वो वेज, पल्स। विशेषतः आराम के समय—चायना। खास-

कर लेट जाने पर—कार्वो वेज, लाइको। (४) व्यायाम के द्वारा सुधार आने पर—चायना, कैल्के। शरीर को दुहरा करने से—वेल, व्रायो, कैमो, आर्स, नक्स। पीछे की ओर झुकने और साँस रोकने से—वेल। विशेषतः लेटने से—व्रायो। खाना खाने से क्षणिक आराम मालूम पड़ने पर—फास। विशेषतः डकार आने से—व्रायो, काक्यू, वेल, कैल्के। साधारण तौर से गर्मी के कारण—आर्स। विशेषतः बिछौने की गर्मी से—फास, लाइको। आमाशय पर दबाव पड़ने से—व्रायो, कार्वो वेज। (५) जब साथ-साथ सिर में चक्कर भी आ रहा हो—नक्स, पल्स, लाइको। सिरदर्द के साथ—नक्स, लाइको, व्रायो, सोपि। चेहरे पर तमतमाहट आना—नक्स, वेल। पीला चेहरा—आर्स, वेल, व्रायो, पल्स, लाइको। पाण्डु जैसा पीले रंग का चेहरा—नक्स, सीपि। मुँह मे पानी आना—व्रायो, पल्स, साइलि, नक्स, काक्यू। अम्लपित्त तथा हृदय में जलन—कार्वो वेज, फास, नक्स, व्रायो, चायना, आर्स, कैल्के, सीपि। डकार आने पर—व्रायो, नक्स, काक्यू, लाइको, आर्स, कैल्के, पल्स, सीपि। खाद्य पदार्थों की कै—फास, व्रायो, नक्स। मिचली—नक्स, काक्यू, लाइको, सीपि, वेल। खाली उबकाई आने पर—नक्स, आर्स, लाइको, वेल। कै होने पर—नक्स, आर्स, लाइको, पल्स, कार्वो वेज, काक्यू, फास, व्रायो, सीपि। विशेषतः खाद्य वस्तुओं की कै—नक्स, आर्स, लाइको, फास, पल्स, काक्यू, कैल्के। अफरा होने की शिकायत—नक्स, चायना, कार्वो वेज, लाइको। कोष्ठवद्धता—नक्स, व्रायो, लाइको, सोपि, कैल्के। अतिसार—पल्स, आर्स, कैल्के। वातार्श—नक्स, सोपि, कैल्के, आर्स, पल्स।

—:०:—

अध्याय—१३

यकृत, प्लीहा और उदर की पेशी

(Liver, Spleen and Diaphragm)

१. यकृत के रोग

(Affections of the Liver)

१—यकृत की नयी जलन (Acute Hepatitis)—इस रोग के लिए सर्वप्रथम एकोनाइट की ३० शक्ति का प्रयोग अच्छा होता है। इसकी २ गोलियों को एक प्याला पानी में घोलकर १-१ घण्टे बाद १-१ चम्मच की मात्रा में पिलाते रहने से ३-४ दिन के भीतर ही रोग के सारे उपसर्ग नष्ट हो जाते हैं। यदि कुछ बाकी भी रह जाता है तो उसे ब्रायो, बेल या मर्क दूर कर देते हैं। यदि एकोनाइट के सेवन से कुछ सुधार दिखायी पड़ने के बाद प्रगति रुक जाय तो ब्रायो का व्यवहार गुणकारी होता है, खासकर जब कि दर्द सूई चुभने-सा और सिर की ओर रक्तसंचार की अधिकता हो। जब रोगी का चेहरा पाण्डु रोगी की तरह पीला, मुँह का स्वाद कड़ुवा और प्यास की अधिकता हो तब मर्क से बहुत लाभ होता है। इनके अतिरिक्त कैमोमिला और नक्स वाम भी बहुत प्रभावशाली औषधें हैं। जब यकृत में सूई चुभने का-सा दर्द, सिर में दबाव के साथ दर्द, पेट या कमर पर कपड़े का सहन न होना और वमन की प्रवृत्ति हो तब नक्स वाम से विशेष सहायता मिलती है। जब यकृत रोग के साथ चिन्ता और घबराहट का भाव हो, मुँह का स्वाद बहुत कड़ुवा और रोग का मूल कारण क्रोधावेश हो तब कैमोमिला बहुत उपकारी है। यदि प्रारम्भ में उचित चिकित्सा न हुई हो, रोग बराबर बढ़ता ही जाय अथवा नक्स, मर्क, ब्रायो आदि औषधें निष्फल हो गयी हों तो वहाँ लाइकोपोडियम और सल्फर से अवश्य

ही सफलता मिलती है। सल्फर का प्रयोग उस दशा में करना चाहिए जब कि डक मारने का-सा दर्द हो। यदि पीब आने की आशंका हो और वह आशंका लैकेसिस से दूर न हुई हो तो आर्स के द्वारा आशातीत लाभ होता है, खासकर जब कि मुँह या मलद्वार से काले रंग का मल आ रहा हो। जब पीब आ गयी हो और लैकेसिस तथा हिपर से कोई लाभ न हुआ हो तो केलि-कार्ब का व्यवहार करना उचित है। यदि हरे रंग का चिकना मल निकल रहा हो तो पल्सेटिला की अपेक्षा मर्क से विशेष लाभ होता है।

२—यकृत की पुरानी शिकायतें (Chronic Liver-Complaints)—यदि इस रोग में आमवात प्रधान हो तो एकोनाइट, ब्रायोनिया, बेलेडोना तथा लाइकोपोडियम अच्छा फल दिखाते हैं। यकृत की पुरानी सूजन किसी भी प्रकार की क्यों न हो, मैग्नेशिया म्यूर के बाद लाइको सर्वश्रेष्ठ औषध प्रमाणित है। ऐसी अवस्था में बेल, सल्फ, कैल्के और नक्स वाम भी लाभप्रद औषधें हैं। गठियावात के रोगियों में प्रायः जब यकृत पर सूजन न हो और दर्द यों ही होता हो तो वहाँ निम्नलिखित औषधों का उपयोग लाभकारी है :—लाइको, बेल, ब्रायो, चायना, नक्स, सल्फ। यदि शोथ भी हो—कैल्के, चायना, आर्स, लैके, मैग-म्यूर, नक्स, सल्फ। इनके अतिरिक्त लाइको, कोनियम, फेरम और केलि-कार्ब भी लाभकारी औषधों में से हैं। यदि यकृत कड़ा हो गया हो तो मुख्यतः बेल, ब्रायो, केलि-कार्ब, मैग-म्यूर, नक्स तथा सल्फर उपयोगी हैं। यदि ज्वर के पश्चात् यकृत में रोग उत्पन्न हुए हों तो आर्सेनिक, कैल्केरिया और सल्फर विशेष गुणकारी हैं। यदि रोगी में पहले से ही सन्धि-प्रदाह या आमवात की प्रवणता रही हो तो कैल्केरिया और लाइकोपोडियम विशेष रूप से लाभप्रद सिद्ध होते हैं। जब यकृत में देर से पीब उत्पन्न हुआ हो तो लैकेसिस, केलि कार्ब और साइलिशिया का प्रयोग करना उचित होता है। (देखें पैरा न० ४)।

३—पाण्डु या कामला रोग (Jaundice)—इस रोग में शरीर बिल्कुल पीला हो जाता है। इसकी प्रारम्भिक अवस्था में जब ज्वर की

प्रबलता रहे तो एकोनाइट से चिकित्सा आरम्भ करनी चाहिए। इसके वाद मर्क का व्यवहार करना चाहिए। यदि ज्वर न हो और रोग कई सप्ताह का पुराना हो गया हो तो सबसे पहले रोगी को ८ दिनों तक चायना का सेवन कराना लाभकारी होगा। यदि चायना से अच्छा फल न मिले तो मर्क देना लाभप्रद है। इस प्रकार अनेक रोगी लाभान्वित हुए हैं, चाहे उनके रोग का कारण कुछ भी रहा हो। जिन रोगियों में यकृत-विकार के साथ-साथ ज्वर भी था, वे भी ४–५ दिनों में रोगमुक्त हो गये। पुराने रोगियों में जहाँ चायना और मर्क के सेवन से लाभ न हुआ हो, वहाँ सल्फ, बेल, नक्स और सीपिया से विशेष सहायता मिलती है। इसके लिए आर्सेनिक, उससे भी बढ़कर आरम, डिजिटेलिस, फास्फोरस और साइलीशिया उपयोगी सिद्ध हुए हैं। (डॉ० हेम्पल का मत है कि जब कामला रोग से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव न पड़ा हो तो पोडोफाइलम ३० शक्ति का प्रयोग बहुत लाभकारी होता है। पाण्डुरोग की भयकर अवस्था में जब नाड़ी अनियमित और बहुत क्षीण हो तो डिजिटेलिस से बहुत लाभ होता है।)

४—यकृत के रोगों के लिए विशेष निर्देशक लक्षण (Special Indications in Liver-complaint)—यदि (क) यकृत रोगों के साथ सिर में चक्कर हो तो बेल, नक्स, साइलि। जब सिर मे पीड़ा अधिक हो—बेल, नक्स, सीपि, फास, साइलि। जब खाद्य पर अरुचि हो—कार्बोविज, सल्फ। मिचली होने पर—नक्स। कोष्ठबद्धता में—एकोन, ब्रायो, नक्स, कैल्के, कार्बो वेज, सल्फ, मैग-म्यूर। दस्त आने पर—मर्क, चायना, आर्स। खाँसी में–चायना, फास, सल्फ। सुस्ती में—नक्स, सीपि, सल्फ।

(ख) जलन के साथ दर्द—मर्क, लैक, आर्स, ब्रायो। मन्द-मन्द दर्द—एकोन, ब्रायो, कैमो, कार्बो वेज, सल्फ, काक्यू, लाइको, मर्क, नक्स। घाव होने के समान टपकन वाला दर्द—चायना, साइलि, नक्स-वाम, यकृत फूला हुआ न० ३, कड़ापन न० ३। कतरने का-सा दर्द मर्क। डंक मारने या भाला भोंकने-सा दर्द—एकोन, कार्बो वेज, ब्रायो, चायना,

कावयू, लाइको, मर्क, नक्स, सल्फ, सीपि। बोझ की-सी अनुभूति में कार्बो-वेज, नक्स, सल्फ। छाती हिलाने पर दर्द—एकोन, ब्रायो, बेल, कावयू, मर्क, नक्स-वाम।

२—प्लीहा, उदर की पेशी और पाचन-ग्रन्थियों के रोग

(Affections of the Spleen, Diaphragm and Pancreas)

१—प्लीहा के रोग (Affections of the Spleen)—प्लीहा की सूजन में मुख्य औषध एकोनाइट ही है। इससे अल्प समय में ही शोथ रुक जाता है, चाहे रोगी को खून की कै भी होती हो। कुछ उपसर्ग बाकी रहने पर वे आर्निका से दूर हो जाते हैं। यदि स्नायविक उपद्रव का वेग हो, जैसे—तन्द्रा, मूर्च्छा, चौंक पड़ना आदि लक्षणों में एकोनाइट सर्वश्रेष्ठ महौषध है। यदि इसके प्रयोग के बाद भी कोई कष्ट शेष रह जाय तो आर्स, चायना, नक्स या ब्रायो से वह दूर हो जाता है। आर्स और चायना उस दशा में उपयोगी हैं जब रक्तस्राव बन्द न हो रहा हो। प्लीहा के पुराने शोथ में आर्स, सल्फ और कैम्फि लाभप्रद हैं, चाहे तिल्ली यों ही दुखती हो या उस पर सूजन आ गयी हो और वह कड़ी हो गयी हो, खासकर ज्वर के बाद। तिल्ली में सूई चुभने की तरह दर्द होने पर उस दर्द को आर्निका या एकोनाइट दूर कर देते हैं।

३—उदर की पेशी का प्रदाह (Diaphragmitis)—उदर-शूल के एक रोगी को जिसकी उदर की पेशी भी प्रदाहित थी, उसे लाइकोपोडियम से तथा एक अन्य रोगी को काक्यूलस से लाभ हुआ था।

४—पाचन-ग्रन्थियों की जलन (Inflammation of the Pancreatic glands)—एक रोगी को एलोपैथिक चिकित्सकों ने भारी मात्रा में पारा सेवन कराया था। उसे अतिसार हो गया था। पाखाने में हरा-सा या लाल-सा पानी आता था। पाचन-ग्रन्थियों में हलकी जलन होती थी। उसे आयोडाइड अव पोटाशियम की १२ शक्ति तथा कार्बो-वेज दिया गया और वह रोगी ८-१० दिनों के भीतर ही अच्छा हो गया।

—०—

अध्याय—१४

उदर के यन्त्रों के रोग

(Affections of the Abdominal Organs)

१. प्रदाह या जलन

(Inflammation)

१—अन्त्रावरक-झिल्ली का प्रदाह (Peritonitis)—इसके लिए एकोनाइट ३० ही सर्वप्रथम औषध है। यह औषध ३० से ३६ घण्टों के अन्दर ज्वर और सभी भयकर लक्षणों को नष्ट कर देता है। इसकी ३ गोलियों को एक प्याले जल में घोलकर ३–३ घण्टे के अन्तर पर १–१ चम्मच की मात्रा में पिलावें। इसके पश्चात् पुरुषों के लिए ब्रायोनिया और स्त्रियों के लिए बेलेडोना अत्यन्त लाभकारी हैं। यदि रोग पुराना और कष्टदायक हो और इन औषधों से सहायता न मिल रही हो तो मर्क का प्रयोग करना उत्तम है, खासकर जब कि पीव की अवस्था हो। एक ऐसे ही रोगी को मर्क ३० की २ गोलियों को देने से २४ घण्टे के अन्दर ही उस रोगी का पीव मलद्वार से निकल गया। यदि मर्क का प्रयोग असफल रहे तो लाइको या लैकेसिस का व्यवहार करना चाहिए। जब पेट पर सूजन आ जाय तब रस टाक्स के प्रयोग से विशेष लाभ होता है।

२—आँतो का शोथ (Enteritis) इस रोग में खासतौर से जब छोटी आँत पीड़ित हो तब मुख्य रूप से एकोन, बेल और ब्रायो ही लाभकारी औषधें हैं। ऐसी स्थिति में कालोसिन्थ भी बहुत उपकारी सिद्ध होता है। जब छोटी आँत पर सूजन आ जाय तब कभी-कभी ब्रायोनिया की अपेक्षा रस टाक्स अच्छा काम करता है। यदि रस टाक्स से सफलता न मिले तो

लैकेसिस का प्रयोग करना उचित है। मलान्त्र के शोथ में वेलेडोना से बहुत उपकार होता है।

३—साधारण मन्तव्य—जब सूजन जलपूर्ण हो तब सर्वप्रथम ऐपोसिनम और सल्फर का व्यवहार करना चाहिए। पीव होने पर—मर्क या लैकेसिस। जब सड़न की आशंका हो—आर्सेनिक या लैकेसिस। जब इस प्रदाह के साथ-साथ टायफायड के लक्षणों की प्रधानता रहे और वेलेडोना या रस टाक्स से लाभ न हुआ हो तो हायोसायेमस का सेवन करना चाहिए।

४—पुराना प्रदाह—उदर-सम्बन्धी पुराने प्रदाह के लिए सल्फ, कैल्के, फास, सीपि, लाइको, कार्बोवेज और लैक बहुत ही गुणकारी हैं। नीचे सू० २, ८ में विशेष निर्देश दिया हुआ है।

२. उदर-शूल

(Colic)

१—अफरे का शूल (Flatulent Colic)—वायुकारक खाद्य खाने के बाद जब पेट में इस प्रकार का शूल हो तो चायना लाभकारी होता है। यदि चायना असफल रहे तो पल्सेटिला या नक्स वाम का प्रयोग करना चाहिए। जब शूलदर्द का उपरोक्त कारण न हो तब प्रायः वेलेडोना ही यथेष्ट होता है, खासकर जब मलान्त्र वायुपूर्ण प्रतीत हो। अथवा इस प्रकार का दर्द हो मानो मलान्त्र काँटों से भरा है, उसका खिंचाव नीचे की ओर और रक्त का सचार सिर की ओर हो। जब पेट में वायु का इतना अधिक प्रकोप हो मानो पेट फट जायगा, अफरे का वेग छाती की ओर हो तथा डकार के साथ बहुत हवा निकले तब कार्बोवेज के व्यवहार से बहुत लाभ होता है। जब हवा जहाँ-तहाँ रुकी हुई जान पड़े मानो वह बलपूर्वक निकलना चाह रही हो, अफरे का जोर कोख तक हो, छाती में सुई चुभने-सी पीड़ा हो, साथ में अत्यन्त घबराहट और

चिन्ता रहे तो कैमोमिला बहुत लाभप्रद है। कावयूलस—जब हवा पसलियों के नीचे रुक गयी हो, आमाशय में अफरा हो, हवा निकलने पर भी राहत न मिलती हो, मुँह से हवा निकलने पर कष्ट घटता हो। नक्स वामिका—जब अफरे का वेग खासकर कोख, मूत्राशय या मलद्वार पर हो, हवा न निकले और विष्टब्धता हो। लाइकोपोडियम—जब २-४ ग्रास खाना खाते ही पेट में अफरा मालूम पड़े, मानो समूचे पेट में हवा भरी हुई है और उसका भारी दबाव आमाशय पर पड़ रहा है। पल्सेटिला—समूचे पेट में हवा का भराव, गड़गड़ाहट, हवा का न निकलना, आँतों में जोर का अनुभव, मानो कोई पेट को खरोंच रहा है। (डॉ० हैम्पल ने लिखा है कि ऐसे शूलदर्द के लिए डायस्कोरिया विलोसा बहुत ही लाभप्रद औषध है।)

२—पित्तजनित शूल (Bilious Colic)—जब शूलदर्द खासकर क्रोधावेश के कारण हो तब कैमोमिला मुख्य औषध है। इसमें कतरने और ऐंठन की तरह दर्द, मानो कोई अँतड़ियों को गेंद की तरह इकट्ठा कर रहा है, मिचली कड़वी कै या हरे रङ्ग का चिकना मल निकलता है। कालोसिन्थ—जब उपरोक्त अवस्था के साथ तेज ऐंठन और मरोड़ का दर्द हो। आर्सेनिकम—पेट में तेज ऐंठन और घुटन के साथ दर्द, पित्त या कफ का वमन, भारी थकावट, अशक्ति, चेहरे के रङ्ग में परिवर्तन और शरीर से मुर्दे जैसी दुर्गन्ध। कावयूलस—नाभि-प्रदेश में कटन के साथ दर्द, पेट में खिंचाव, डकार का अच्छी तरह न निकलना, कफ या पित्त का वमन और उससे कष्ट में कोई ह्रास न होना। (ऐसे शूल के लिए डायस्कोरिया और एकोनाइट का भी स्मरण रखना चाहिए—हैम्पल।)

३—रक्तार्शजनित शूल (Haemorrhoidal Colic)—इस रोग में नक्स वामिका और सल्फर आशातीत लाभ पहुँचाते हैं। जब तक किसी खास औषध का लक्षण न दिखायी पड़े तक केवल सल्फर ही देते रहें। यदि पेट में अफरा भी रहे तो कार्बो-वेज या नक्स वाम देना उचित है। यदि चिन्ता या घबराहट का भाव अधिक रहे तो आर्सेनिक का प्रयोग

करना चाहिए। यदि इससे पर्याप्त सहायता न मिले तो नक्स वाम देना चाहिए। इसके प्रयोग से सभी उपद्रव शान्त हो जाते हैं। जिन स्थानों में कार्वो-वेज से चिकित्सा प्रारम्भ हुई हो और उससे लाभ न हुआ हो तो वहाँ सल्फर ही एकमात्र औषध है। यह औषद उसके पूरक के रूप में काम करती है।

४—वातजनित शूल (Rheumatic Colic)—इसके लिए बेलेडोना और ब्रायोनिया अत्यन्त आवश्यक औषधियाँ हैं। जब रोगी में गठियावात रहे, वह खूब खाता-पीता भी रहे और उसके कारण रोग उत्पन्न हुआ हो, रोग ने स्थान बदल कर पेट पर आक्रमण कर दिया हो तो वहाँ भी उक्त औषधों से लाभ मिला है। आमवात के सम्बन्ध में नक्स वाम बिल्कुल अनुकूल है, फिर भी यह उन स्थितियों में विशेष रूप से लाभकारी है जहाँ सिर और हाथ पैरों में कतरने-सा दर्द हो, साथ में हृत्शूल और पेटदर्द भी हो, बार-बार पाखाने का वेग, खाद्य पदार्थों का वमन तथा मुंह का स्वाद खट्टा हो। यदि उपरोक्त लक्षणों में नक्स वाम से सहायता न मिले तो काक्यूलस का प्रयोग लाभकारी प्रमाणित होगा। जब दर्द के मारे रोगी चीखता-चिल्लाता रहे, इधर से उधर लुढकता रहे तब वहाँ कालोसिन्थ से तुरन्त उपकार होता है।

५—ऐंठन वाला स्नायविक शूल—जब इस शूल का आक्रमण समय-समय पर होता रहे तब कालोसिन्थ ही एकमात्र उपकारी औषध है। इस प्रकार के शूलदर्द को अकेले ही यह औषध १० में से ६ रोगियों को निश्चय ही रोगमुक्त कर देती है। खासकर जब शूल का दर्द नाभि-प्रदेश में एक छोटी-सी जगह में अत्यन्त भीषण रूप में हो। ऐंठन के साथ-साथ खोदने की तरह का तेज शूल, जिससे रोगी चीखता-चिल्लाता है। कभी-कभी यह दर्द अल्प समय के लिए कुछ घटकर पुनः दुगुने वेग से आक्रमण कर देता है। यदि कालोसिन्थ से पूरी सफलता न मिले तो बेलेडोना का प्रयोग अच्छा है, खासकर जब कि दर्द नाभि के ठीक नीचे हो और रोगी को

काँटा चुभने सा अनुभव हो रहा हो, अफरे के कारण मलान्त्र में हवा के भराव का बोध। इस तरह नक्स, सल्फ, लाइको, काक्यू और इग्ने भी लाभप्रद हैं। अन्तिम तीन औषधें प्रायः हिस्टीरियाग्रस्त महिलाओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी हैं।

६—मासिकधर्म-सम्बन्धी शूल (Menstrual Colic)—इसके लिए कावयूलस ही मुख्य औषध है। इसे सूंघने से ही प्रायः शूलदर्द दूर हो जाता है, खासकर जब अल्परज या नष्टरज भी हो। कैमोमिला में दर्द नीचे की ओर होता है। यह दर्द निचले कटि-प्रदेश से शुरू होता है। पल्सेटिला में मलद्वार पर दवाव और पेट में पत्थर होने का-सा बोध रहता है। बेलेडोना में गर्भाशय पर भारी दवाव मालूम पड़ता है, मानो गर्भाशय बाहर निकल पड़ेगा। नक्स वाम—मिचली, दवाव-सा दर्द, जाँघों तक पहुँचनेवाली ऐंठन होती है। जब रोगी दर्द के कारण अशक्त हो जाय, इधर-उधर लुढ़के या चीखे-चिल्लाए तो यह काफी सहायक है। (डॉ० हैम्पल का मत है कि हेलानियस और कालोफाइलिन भी मासिक धर्म-सम्बन्धी शूल के लिए गुणकारी औषधें हैं। ये दोनों औषधियाँ हमारे मेटेरिया-मेडिका में नहीं आई हैं।)

७—धातु-विषजनित शूल (Colic from metallic Poisoning)—पेंटिंग करने वाले या रंगसाज के उदर-शूल के लिए एल्युमिना, कैमोमिला, प्लेटिनम और कभी-कभी बेलेडोना भी लाभकारी सिद्ध होते हैं। ताँबे का काम करने वालों के लिए हिप, आर्स और वेरेट्र एल्ब भी लाभप्रद औषधें हैं।

८—विशेष निर्देशक लक्षण—(क) यदि शूल का दर्द परेशानी के कारण हो तो कैमोमिला, कालोसिन्थ या कभी-कभी नक्स वाम देना चाहिए। ठण्ढ लगने के बाद कैमो, कार्बो-वेज, कालो, मर्क, पल्स। मन्दाग्नि के बाद पल्स, कार्बो वेज, नक्स, फास, कालो। बहुत अधिक काफी पी लेने के बाद—कैमो, नक्स, काक्यू, कालो, बेल, मर्क। बवासीर

के मस्सो के दब जाने पर—नक्स सल्फ या आर्स। कैमोमिला के दुरुपयोग के बाद—पल्स, इग्ने, नक्स। खाव या मैग्नेशिया खारी मिट्टी खाने के बाद—कैमो, पल्स, कालो। खासकर स्त्रियो के लिए—बेल, काक्यू, इग्ने, पल्स, लाइको। (डॉ० हैम्पल के मत के अनुसार हेलोनियस और कालोफाइलम भी।)

(ख) जलनयुक्त दर्द के लिए—आर्स, कार्बो, वेज, वेरेट्र एल्ब, फास, काक्यू, नक्स। खोदने और ऐंठने की तरह के दर्द—लाइको, नक्स, आर्स, बेल, कैमो, चायना, फास, कालोसि, काक्यू, नक्स, पल्स, सल्फ, वेरेट्र एल्ब। निरन्तर दर्द के लिए—कार्बो वेज, कैमो, काक्कस, बेल, चायना, फास, कालो, नक्स वाम, पल्स, सल्फ, वेरेट्र एल्ब। मरोड के साथ शूलदर्द—कालोसि, पल्स, काक्कस, बेल। मानो पेट काँटो से जकड़ा है—बेल। ऐंठन और घुटन के साथ—काक्यू, कालोसि, नक्स, लाइको, आर्स, वेरेट्र एल्ब, कैमो, बेल, पल्स। मानो अंतड़ियों को कोई गेंद की तरह बटोर रहा हो—कैमो। कतरने-सा दर्द—काक्यू, कालोसि, कैमो, आर्स, फास, लाइको, नक्स, पल्स। फटन के साथ पेट में दर्द कालोसि, काक्यू, कार्बो वेज, आर्स, मर्क, पल्स, वेरेट्र एल्ब, नक्स वाम, लाइको। डक मारने या भाला भोंकने-सा दर्द—लाइको, नक्स, फास, ब्रायो, कैमो, सल्फ। पेट में तनाव का दर्द—चायना, काक्यू, कोलोसि, नक्स, लाइको, कार्बो वेज, पल्स, वेरेट्र एल्ब, स्टैफि। पेट का दर्द मानो कोई नीचे खींच रहा हो—बेल, ब्रायो। दुखने की तरह का दर्द—बेल, नक्स, आर्स, इग्ने।

(ग) मुख्यतः दद जब उदर के ऊर्ध्वभाग में हो—नक्स, चायना, कार्बो वेज, कैमो, काक्यू लाइको, वेरेट्र एल्ब, पल्स। विशेषतः दोनो पार्श्वों में—काक्कस, कार्बो वेज, कालो, सल्फ। विशेषतया बायी ओर—कालोसि, सल्फ विशेषतः उदर के निम्न भाग में—बेल, नक्स, ब्रायो, लाइको, फास, कार्बो वेज। खासकर नाभिस्थल मे—बेल, ब्रायो, चायना,

कालोसि, आर्स, कैमो, काक्यू, लाइको, नक्स, पल्स, वेरेट्र एल्ब। मूत्र-थैली के आस-पास।—नक्स, कार्वो वेज,। जननेन्द्रिय और मलद्वार के मध्यवर्ती स्थान में—वेल, ब्रायो, नक्स, कैमो, कालोफा, हेलोनि।

(ग) वार-वार डकार आने पर दर्द—वेल, कार्वो-वेज, कालो, लाइको, वेरेट्र एल्व। वमन—आर्स, वेरेट्र एल्व, काक्कस, नक्स वाम, कैमो, पल्स, कालो, लाइको, ब्रायो। साथ में बहुत मिचली और वमन की इच्छा—आर्स, काक्कस, कैमो, कालो, नक्स वाम, पल्स, लाइको। पेट में अफरा होने पर—कार्वो-वेज, चायना, वेल, काक्यू, कालोसि, लाइको, आर्स, फास्फो, नक्स, पल्स, वेरेट्र-एल्व, सल्फ। मानो थोड़ी हवा भरी हुई है—वेल, लाइको, काक्यू। पेट फूलकर ढोल-सा हो जाने पर—चायना, कार्वो वेज, नक्स, सल्फ। पेट अन्दर की ओर सिकुड़ना या खिंच जाना—आर्स, लाइको, पल्स, काक्यू। पेट में हवा की रुकावट—नक्स. कार्वो वेज, लाइको, वेरेट्र एल्व, कैमो, काक्यू, सल्फ, पल्स। कोष्ठबद्धता—ब्रायो, नक्स, लाइको, आर्स, कार्वो वेज, काक्यू, कालासि, वेरेट्रएल्व, सल्फर। पतले दस्त—पल्स, कैमो, कालासि, मर्क। उदर-शूल के समय आवाज के साथ वायु का निकलना वेल, कार्वो-वेज, चायना, वेरेट्र एल्व, फास, पल्स, सल्फ। सिर में चक्कर आना—वेल, नक्स, लाइको, फास। सिर की ओर रक्तसंचार की अधिकता में—वेल, नक्स, सल्फ। चेहरा पीला पड़ने पर—नक्स, आर्स, काक्यू, लाइको, पल्स,। चेहरे के बहुत अधिक पीलेपन में—काक्कस, कैमो, नक्स,। पेशाब का घट जाना—नक्स, लाइको, ब्रायो। मूत्र की अधिकता—वरेट्र एल्व, वेल। श्वास कृच्छ्ता कार्वो वेज, पल्स, चायना, सल्फ, लाइको, नक्स, आर्स, वेरेट्र एल्ब। पीठ का दर्द तथा कटिशूल में—नक्स, पल्स, सल्फ, कैमो, लाइको, वेल, कालोसि। शीत की अधिकता में—पल्स, आर्स, मर्क, कर्वो वेज। शरीर और हाथ पैरों का ठण्ढा रहना—वेरेट्र एल्व, आर्स नक्स, कालोसि। ठण्ढा पसीना आने पर—वेरेट्र एलब, आर्स, वेल, कालोसि। शरीर में ताप—कार्वो

वेज, आर्स, कालोसि। अत्यन्त निर्बलता तथा मूर्च्छा—वेरेट एल्ब, आर्स, कार्बोवेज, कालोसि। घबराहट और चिन्ता में—कार्बो वेज, आर्स, वेरेट्र एल्ब, फास्फो, कैमो, कालो, काक्यू, लाइको।

(ड) खासकर जब शूलदर्द शाम को हो-पल्स, वेल। जब प्रातःकाल हो—नक्स, फास, हाइयो, कैमो। सूर्योदय के समय—कैमोमिला। जब खासकर रात में हो—आर्स, वेल, चायना, कैमो, पल्स, सल्फ, रस, नक्स। आधी रात के वाद—काक्यू, पल्स, फास। अग का स्पर्श होने या दबाव पड़ने से दर्द में वृद्धि—बेल, लाइको, कार्बो वेज, काक्यू, कालोसि, नक्स, आर्स, हाइयो, फास, पल्स, रस, सल्फ। लेटी हुई हालत से उठने पर—कालोसिन्थ। लम्बे-लम्बे डग भरने से—नक्स, ब्रायो। लेट जाने से कष्ट में वृद्धि—फास, लाइको, पल्स। चित लेटने से—लाइको। लघु से लघु आहार करने से-कार्बो वेज, लाइको, वेरेट्र एल्ब। मुख्यतः फल खाने में—वेरेट्र एल्ब। खट्टा पदार्थ खाने से—कार्बो वेज। वायुकारक वस्तुएं खाने से—कार्बो वेज, लाइको, चायना, ब्रायो, वेरेट एल्ब। व्यायाम करने से—पल्स, नक्स।

(च) डकार निकलने से आराम मालूम होने पर—काक्यू, लाइको। वायु निकलने से आराम मिलने पर-कार्बो वेज, चायना, वेरेट्र एल्ब, वेल, नक्स। पेट को दवाने से आराम मिलने पर—वेल, कालोसि। लेटने से—आराम मालूम होने पर—नक्स। बैठने पर भी आराम—नक्स वाम। पेट के बल लेटने से—कैल्के, कालोसि, फास। पीछे की ओर झुकने से—वेल, नवस, सल्फ,। शरीर को दोहरा करने से—नक्स, सल्फ।

३—अन्त्रवृद्धि और आँतों का उलझ जाना

(Hernia and Intussusception of the Bowels)

१—आँतो का उलझ जाना, आन्त्रशूल (Intussusception of the Bowels, Volvulus, Ileus)—एक ऐसे रोगी में जिसे ज्वर नहीं था,

भीषण शूल, आँतों की नाली में रुकावट, जिसके कारण न तो पाखाना होता था और न हवा ही निकलती थी, वमन के साथ बदबू निकलती थी और सिकुड़न जलनयुक्त न होकर आक्षेपयुक्त थी। रोगी के लक्षणों के अनुसार उसकी चिकित्सा बेलेडोना से प्रारम्भ की गई जिसके फलस्वरूप अच्छा फल मिला। चौबीस घण्टे बाद भी जब कोई लाभ न दिखाई दे तब नक्स वाम देना चाहिए। यदि वह भी सहायक न हो तो सल्फर का प्रयोग करना उचित है। यदि ज्वर का तापमान अधिक रहे तो एकोनाइट से काम लेना चाहिये। इसके प्रयोग से सूजन कम होकर सिकुड़न दूर हो जाती है। ज्वर का वेग घट जाने पर भी यदि आन्त्रशूल बना रहे और उसे ब्रायो, नक्स, सल्फ आदि दूर न कर सके हों तो बेल या आर्स देना उत्तम सिद्ध होता है। एक रोगी में सड़न के पूर्व रूप उत्पन्न हो गये थे। उसे आर्सेनिक ने ठीक कर दिया। सिकुड़ाव (Stricture) के दो अन्य रोगियों को थूजा के सेवन से तुरन्त लाभ हुआ था। उन्हें वमन शुरू नहीं हुआ था, मलान्त्र बिलकुल बन्द था, आक्षेपिक घुटन भी थी, पीड़ित अंश में बार-बार झटके मालूम होते थे, मानो वहाँ जीवित प्राणी है। उस रोगी को ओपियम और प्लम्बम से कोई फल न मिला था। इसका कारण शायद यही था कि उन रोगियों में विष्टम्भता नहीं थी जो इन औषधों में विशेषता के रूप में पायी जाती है। अर्थात् आक्षेपिक विष्टम्भता से इनका कोई लगाव नहीं है। इसमें जो विष्टम्भता पायी जाती है वह मलान्त्र की शिथिलता के कारण पायी जाती है। (कुछ चिकित्सकों के मत को डॉ० हैम्पल ने लिखा है कि अफीम का इन्जेक्शन देने और अफीम खिलाने से आन्त्रशूल मिट जाता है।) एक १० वर्ष के बच्चे के सिर पर चोट थी। उसके मुँह से दुर्गन्धित मल की उल्टी होने लगी थी, जब कि आमाशय पर सूजन बिल्कुल नहीं थी। उसे सल्फर ३० शक्ति की ३ गोलियाँ दी गयीं जिससे तुरन्त आराम हुआ। इन सभी रोगियों को उपरोक्त औषधों की ३० शक्ति का घोल १-१ चम्मच २-३ घण्टे के अन्तर पर दिया गया था। लक्षणों के अनुसार औषध देने से तत्काल लाभ हुआ था।

२—अन्त्र-वृद्धि (Hernia)—यदि आँत अपने स्थान से हटकर किसी दूसरी आँत से उलझ जाय, बहुत अधिक प्रदाह, पीड़ित अंग में जलन, कड़ुवी डकार और भारी बेचैनी हो तो एकोनाइट ३० की ३ गोलियाँ एक प्याले पानी में घोलकर १–१ घण्टे के अन्तर पर १–१ चम्मच की मात्रा में पिलानी चाहिए। इसके प्रयोग से अल्प समय में ही सारे उपद्रव दूर हो जाते हैं। शेष बचे लक्षणों को सल्फ, लाइको या नक्स दूर कर देते हैं। जब प्रदाह अधिक न हो तो बेलेडोना सर्वश्रेष्ठ है। नक्स वाम भी इसी के समतुल्य लाभकारी है। इस प्रकार आँतों की उलझन से यदि पेट में हवा भी हो तो काक्यू या लाइको फलप्रद है। यदि सड़न के लक्षण शुरू हो गये हों तो आर्स उपयोगी है। इसके अतिरिक्त काक्यू, नक्स, लाइको, बेल और सल्फ भी हर्निया की ऐसी अवस्था में उपकारी है। यदि आँत अण्डकोषों में फँस गयी हो तो नक्स और कैल्के और उर्वास्थि में अटकने पर नक्स, बेल, लाइको। यदि नाभि-प्रदेश में आँत उलझ गयी हो तो नक्स या सल्फर। यदि हर्निया अधिक पुराना न हो तो काक्यू, नक्स, सल्फ और आरम बहुत उपकारी हैं।

४—कृमि रोग

(Worms, Helminthiasis)

१—साधारण कृमि का उपद्रव (Worm-Complaints)—यदि कृमि रोग के कारण बच्चों या युवकों को ज्वर हो जाय तो एकोनाइट बहुत ही उपयोगी है। इसी के समान गुणकारी मर्क, सिना और साइलि भी हैं। यदि रोगी में आक्षेप की प्रबलता हो तो साइक्यूटा उत्तम औषध है। इसके अतिरिक्त बेल, सिना और इग्ने भी लाभकारी हैं। यदि मस्तिष्क के विकार के फलस्वरूप तन्द्रा या मूर्च्छा का भाव हो तो बेलेडोना या सिना का प्रयोग करना अच्छा है। यदि रोगी के मुँह में बहुत अधिक लार आती हो तो एकोन, लाइको और साइलि अत्यन्त लाभप्रद हैं। यदि आमाशय या गले में कोई चीज उठती हुई जान पड़े तो एकोन, सिना, लाइको और स्पाइजि

से बहुत लाभ होता है। यदि वमन का भाव हो तो लाइकोपोडियम और उदर-शूल के लिए एकोन, सिना, लाइको, मर्क तथा पाखाना के लिए कैल्के, सिना, मर्क और स्पाइजि से बहुत सहायता मिलती है।

२—गोल कृमि (Ascarides, Pinworms)—इन गोल कृमि-जनित विकारों के लिए एकोन, सल्फ, मर्क, और सिना मुख्य औषधों में से हैं। इनके पुनर्निर्माण को रोकने के लिए मर्क और सल्फर रामबाण के सदृश हैं। इनकी मात्रा का नियमित रूप से प्रयोग करना चाहिए कैल्केरिया का प्रयोग लम्बे अन्तर पर तथा उससे पहले सल्फर का व्यवहार किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

३—पेट मे केंचुवे (Lumbrici)—इन केंचुवों के निर्माण तथा मलद्वार या मुँह से उनके बहिर्गमन का अवरोध सिना और एकोनाइट के नियमित व्यवहार से ही सम्भव होता है। यदि रोगी के लघुमस्तिष्क और गरदन में दर्द होता हो, कभी-कभी दृष्टि धुँधली हो जाती हो या बिल्कुल ही न दिखायी देता हो तो साइक्यूटा अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है। यदि रोगी में स्थायी रूप से सिरदर्द और अफरा हो तो उसके लिए कैल्केरिया बहुत ही गुणकारी औषध है। यदि रोगी में बहुत अधिक भूख का लगना, मिचली का वेग सुबह होना, पेट से कोई चीज उठकर गले की ओर आने का अनुभव होना (ऐसी अवस्था में मुँह से केंचुवे निकलते हैं और उसके बाद रोगी के सभी कष्ट घट जाते हैं।), उदर-शूल के साथ अतिसार का रहना आदि लक्षण विद्यमान रहें तो स्पाइजिलिया से विशेष उपकार होता है।

४—लम्बे कृमि, फीता कृमि (Taenia)—होम्योपैथिक चिकित्सा-ग्रन्थों में बहुत-सी कृमिनाशक औषधों का उल्लेख किया गया है, जिनमें आर्जेंटम, फ्रेगेरिया, फास्फोरस, पुनिका, ग्रेनेटम, सेवाडिला और स्टेनम आदि मुख्य हैं। चिकित्सकों को समय-समय पर इनका व्यवहार करना पड़ता है। डॉ० रिकार्ट ने हमारी औषधि-भण्डार में पुनिका ग्रेनेटम को भी रख

लिया है। लेकिन इन औषधों से कोई विशेष फल नहीं मिलता। इस रोग में सबसे अधिक ध्यान देने की बात यह है कि मलान्त्र को बिलकुल साफ रखा जाय, जिससे वहाँ कोई प्राणी जीवित न रह सके और वह पैदा होते ही भोजन के अभाव में मर जाय। इस रोग से ग्रस्त तीन बालकों को वर्षों तक सल्फर, कैल्केरिया और लाइकोपोडियम का सेवन कराकर स्वस्थ बना दिया गया। डॉ० हैनिमैन ने लम्बाकार कृमियों के द्वारा उत्पन्न उपद्रवों पर अधिकार पाने के लिए फॅलिक्स मास की अत्यन्त सराहना की है। वास्तव में ही यह प्रसंशनीय औषध है। डॉ० हेरिंग ने अपने वक्तव्य में कहा है कि महीने के कृष्ण पक्ष में सल्फर की २ मात्रा तथा उसके बाद मर्क की १ मात्रा के व्यवहार से लम्बाकार कृमिजनित विकारों पर काबू पाया जा सकता है। परन्तु यह वक्तव्य सत्य प्रमाणित नहीं हो सका। इतना अवश्य ही मानना पड़ता है कि डॉ० हेरिंग बहुत ही अनुभवी, कुशल चिकित्सक, प्रसिद्ध लेखक तथा विचारक थे। (डॉ० हेम्पल ने लिखा है कि लम्बाकार कृमि दूर करने के लिए क्रियोजोट भी एक महान उपकारी औषध है।)



अध्याय—१५

आँतो से रोगाक्रांत मल का निकलना तथा सरलान्त्र के रोग

१. साधारण उदरामय

(Simple Diarrhoea)

मामूली पतले दस्त की अपेक्षा कठिन चिकित्सा अन्य किसी रोग की नहीं है। होमियोपैथ की रीति से ही ऐसा रोग सहज में आराम किया जा सकता है। उसके लिए ठीक औषध चुनना आवश्यक है। उपयोगी औषध की ३० शक्ति की दो सूखी गोलियाँ रोगी की जीभ पर डाल देने से अत्यन्त पतले दस्त रुक जाते हैं। और कठिन इसलिए है कि प्रायः निर्दिष्ट लक्षण नहीं मिलते। पतले मल का रंग भी बदलता रहता है। प्रायः पतला मल बिना दर्द के निकलता है। एकाएक भूरे रंग का पतला मल निकलता रहे, और उसके कारण का पता न चले तो ठीक औषध चुनना कठिन हो जाता है। एकाएक पतले दस्त निकलने लगे तो मैं अपने अनुभव और विश्वास से बता सकता हूँ—इपिकाक, वेरेट्र एल्ब, फास्फोरस, आर्सेनिक, पल्से-टिला आदि उपयोगी हैं। यदि एक औषध से लाभ न हो तो मैं अवस्थाओं के अनुसार दूसरा औषध को ६, १२ या २४ घण्टों तक देख कर उपकार न होने से सल्फर देता हूँ जिससे तुरन्त बहुत ही अपूर्व सफलता मिलती है। किन्तु सभी प्रकार के पतले दस्त उस ढंग के नहीं हैं। यदि चिकित्सक खास-खास निर्देशक लक्षणों के प्रति विशेष ध्यान रखे तो उपयोगी औषध चुनने में विलम्ब नहीं लगता। जिन लक्षणों पर ध्यान रखने से औषध चुनने में सुगमता हो सकती है उसका कुछ दिग्दर्शन प्रथम शिक्षार्थी के लिए यहाँ कराया जाता है।

१—पाकाशय की परिपाक-शक्ति की कमजोरी के कारण पाकाशयिक उदरामय (Gastric diarrhoea)—इसके लिए उत्तम औषधें हैं—पल्स, इपि या आर्स, रस टाक्स, सिके, ब्रायो, डल, सल्फ। पल्स—यदि मल कीचड़-सा हो, साथ में सड़ी गन्ध रहे, मिचली आवे, कै दुर्गन्धित हो, पेट में शूल-सा दर्द रहे, रात को दस्त होने लगे, खासकर फल या बर्फ खाने से पाकाशय में ठण्ढ लग जाय। आर्सेनिक औषध है—इसी अवस्था में यदि दस्त पानी-सा पतला हो, साथ में आँतों के भीतर जलन और काटने जैसा दर्द रहे। इपिकाक—यदि पतले दस्त के साथ बहुत अधिक मिचली हो या वमन भी हो जाय या यदि मल खमीर-सा पतला और बहुत दुर्गन्धित हो। ब्रायोनिया—खासकर यदि प्रत्येक बार खाने या पीने के बाद पतला दस्त हो, साथ में मिचली, मल में न पचा हुआ खाद्य रहे, खासकर गरमी की ऋतु में, फल खाने के बाद या ठण्ढा पेय पीने से या बहुत अधिक खा लेने से। रसटाक्स—दुर्गन्धित मल के लिए, साथ में शूलदर्द, जो पाखाना होने से घट जाता है। ऐन्टिमोनियम क्रूडम—पानी की तरह पतले मल के लिए, साथ में पाकाशय में विशृंखला, जीभ पर सफेद या पीला लेप, डकार की गन्ध न पचे हुए खाद्य की तरह, मिचली और खाद्य में अरुचि। डल्कामारा—यदि रोगी मिचली और कै की भारी शिकायत करे, साथ में भयकर प्यास, मल पानी-सा पतला, उसमें चिकनी वस्तु और कभी-कभी उसमें न पचा हुआ खाद्य, खासकर गरमी की ऋतु में। रिउम—दुर्गन्धित मल के लिए, खमीर की तरह, इपिकाक के अन्य लक्षण भी, लार का बहना और पीला चेहरा। नक्स वामिका—पाकाशय में गड़बड़ी और केवल कफ बार-बार अल्प निकले, उसके साथ शूल का दर्द नीचे से ऊपर तक और जिससे मिचली आवे, हर बार पाखाना फिरने के बाद रोगी अत्यन्त स्नायविक और क्लान्त, साथ में दूध पीने के बाद मुख में खट्टी गन्ध। चायना—शरीर की तरल वस्तुओं के क्षय से यदि परिपाक-यन्त्र कमजोर हो गया हो, साथ में न पचे हुए खाद्य का मल, इसी

तरह खराब पानी पीने के बाद, मल पतला और उसका रंग भूरा-सा, साथ में आँतों के भीतर ऐंठन वाला दर्द, अफरा और डकारें। सल्फर—यदि ऊपरलिखित औषधें मदद न दें और उदरामय पुराना होता चले। इन औषधों के अतिरिक्त निम्नलिखित औषधें कभी-कभी विशेष सहायक हैं, मर्क, बेल, कैमोमिला, वेरेट्र एल्ब, कॅल्केरिया, बशर्ते कि निम्नलिखित खास निर्देशक लक्षण मौजूद रहें।

२—पित्त-जनित उदरामय (Bilious diarrhoes)—भयकर दुःख या क्रोध या आवेग के कारण पतला मल हो तो कैमोमिला से वह बन्द हो जायगा, खासकर यदि मल हरा, पानी-सा पतला, गरम, दुर्गन्धित हो और उसके साथ मुख में कड़ुवा स्वाद रहे, डकार कड़ुई और पित्त का वमन, किन्तु यदि कैमोमिला यथेष्ट न हो तो अनेक क्षेत्रों में ब्रायोनिया से लाभ होगा। अथवा यदि शूल बहुत तीव्र हो तो स्टॅफिसेग्रिया या कालोसिन्थिस उपकारी हैं। यदि ठण्ढ लग जाने से पित्त का पतला दस्त हो और ऊपर-लिखित औषधें मदद न दें तो डल्कामारा, मर्क्यूरियस, पल्स और सल्फ तथा पुराने रोगों में कॅल्केरिया और फास्फोरस उपयोगी प्रमाणित होंगे।

३—प्रदाह-युक्त उदरामय (Inflammatory diarrhoea)—पतले दस्त के साथ जलन रहे और पेचिश की तरह जलन हो, जो बात की प्रकृति वाला हो तो मर्क्यूरियस ही मुख्य औषध है, खासकर यदि उदरामय के साथ तेज काटने वाला शूलदर्द रहे और उसके साथ निष्फल मलवेग हो और मल निकले तो वह पानी-सा कफभरा या खून वाला हो और कभी-कभी वमन हो जाय। डल्कामारा—मर्क्यूरियस असफल रहे, उदरामय पतझड़ के दिन में न होकर गर्मी के दिनों में हो, खासकर रात में, साथ में नाभि-प्रदेश में तेज काटने वाला दर्द रहे। इपिकाक—यदि उदरामय के साथ शूल का दर्द रहे और रोगी चीख मारे तथा सिर चालता रहे, साथ में अल्प और खून भरे कफ का मल निकले या पीला, दुर्गन्धित खमीर-सा मल हो, भारी दुर्बलता, लेट जाने के लिए इच्छा, चेहरा पीला

और आँखों के चारों ओर नीली रेखायें। नक्स वामिका—यदि अल्प मल निकले, उसमें कफ और खून मिला हुआ रहे, साथ में बहुत अफरा, मलत्याग के समय नाभि के स्थान में काटने वाला दर्द हो, निष्फल मलवेग और अवसाद। आर्सेनिकम—यदि मल बहुत अधिक और खासकर मध्य-रात्रि में हो और उसके साथ अल्प कफ या पानी-सा, साथ में भयंकर शूल-सा दर्द या नाभि के चारों ओर जलन, मल-त्याग के पूर्व, समय या बाद में जलन, मल त्याग करते समय मलद्वार में जलन, अत्यन्त अवसाद मूर्च्छा तक। द्रुत कृशता, विकृत और पीला चेहरा और ठण्डा पसीना, कभी-कभी कालासिन्थ ऐसे स्थल में मदद देता है, रोगीशूलदर्द की शिकायत करता है मानों आँतें दो पत्थरों के भीतर खूब दबाया जा रही हैं, साथ में खून और कफ वाला मल और उदर में ढोल-सा तनाव या सिकेलि, यदि आँतों में काटने वाला दर्द बिजली की तरह दौड़े, उसके बाद एकाएक वेग से पतला मल निकले। यदि इनमें से कोई औषध लाभदायक प्रमाणित न हो और उदरामय चार या पाँच दिनों या उससे अधिक दिनों तक चलते रहने की शंका हो, तो बचे-खुचे उपसर्गों को दूर करने के लिए सल्फर मदद देगा। (इस उदरामय में यदि पानी-सा पतला, गन्ध रहित या दुर्गन्धित मल निकले, उसके साथ उदर में रेंगने वाली ठण्डक, मुख में सूखापन, सड़ा या फीका स्वाद, जीभ पर लेप, सिरदर्द, सिर में चक्कर, ओकाई, आँतों में गरमी, ऐसे लक्षण रहें तो एकोनाइट ही उत्तम औषध है। ऐसे उपसर्ग पित्त वाले उदरामय के समूह रूप से समझना चाहिए।)

४—कफ वाला साधारण उदरामय (Simple mucous diarrhoea)—इसमें प्रदाह या दर्द नहीं है, किन्तु मल में कफ मिला हुआ है। इस प्रकार के उदरामय के लिए पल्स विशेष सहायक हैं, खासकर यदि हर बार के मल में रंग बदलता रहे। यदि रात को पतले दस्त हों और पेट में दर्द न रहे तो डलकामारा। यदि चरपरा दस्त हो और वह जहाँ लगे वहाँ का चमड़ा छिल जाय और यदि एकाएक ठण्ड लग जाने से वेग से पतला मल निकले तो सल्फर, यदि दस्त से रोगी एकदम थक जाय तो कालासिन्थ

कभी-कभी लाभदायक होगा। यदि मल खमीर, गाज और दुर्गन्धयुक्त हो तो इपिकाक उपयोगी है। यदि मल पीला, हरा कफ वाला हो, साथ में अफरा और शूल रहे तो कैमोमिला। उसी तरह के मल के साथ यदि जीभ पर चिकना लेप रहे, कड़ुवा स्वाद हो और दर्द न रहे, मल का रंग पीला हो तो सिकेलि। यदि मल के निकलते समय बहुत दर्द हो, साथ में थोड़ा-बहुत कुन्थन रहे तो मर्क कभी-कभी उपयोगी हो सकता है, खासकर यदि रात को ही मुख्यतया पतला मल निकले। यदि सुबह जलपान के बाद ही पतला मल निकले तो नक्स वाम। यदि कफ वाले मल में खट्टी गन्ध हो तो रिउम का निर्देश होता है, ऐसी स्थिति में कैमोमिला ही कभी-कभी लाभदायक है। दर्दरहित कफ वाले पतले दस्त के लिए फास्फोरस, फेरम, आर्सेनिकम, पेट्रोलियम और कैल्केरिया कभी-कभी उपयोगी हैं, साथ में यदि नीचे लिखे अनुसार खास-खास निर्देशक लक्षण रहे।

५—पानी-सा पतला पाखाना (Watery diarrhoea)—साधारणतया पैरों और उदर में एकाएक ठण्ढ लग जाने से ऐसा उदरामय हो या उसके साथ सर्दी या वात रहे या महामारी के रूप में हो और वह भी गर्मी की ऋतु में होने लगे तो ब्रायोनिया या डल्कामारा। (एकोनाइट की जड़ का अर्क प्रथम दशमिक शक्ति में।) और सर्दी की ऋतु में भीवेरेट्र एल्ब खासकर यदि मल में भूरा रंग रहे। यदि मल के साथ दर्द न रहे या उसके लगाने से मलद्वार का चमड़ा छिल जाय, साथ में मलद्वार और पीठ में ऐंठन वाला दर्द रहे तो फेरम बहुधा मदद देगा और यदि उसके साथ अफरा तथा ऐंठन वाला शूल रहे और मल भूरा हो तो चायना। यदि मल हरा या पीला हो, साथ में उदर के भीतर फाड़ने या काटने जैसा दर्द रहे और पिचकारी की वेग से वायु के साथ मल निकले तो कैमोमिला। यदि इस प्रकार का उदरामय पुराना हो जाय तो फास्फोरिक एसिड, कैल्केरिया और सिकेलि उसे आराम कर सकते हैं।

६—गर्मी की ऋतु का उदरामय (Summer diarrhoea)—गरमी की ऋतु की शिकायत। कुछ चिकित्सक कहते हैं कि वेरेट्रम एल्बम

से इस प्रकार का उदरामय जल्दी आराम होता है, किन्तु मेरा अनुभव है कि कालरा के पहले वाले उदरामय के लिए यह महत्वपूर्ण औषध होने पर भी गर्मी की ऋतु के उदरामय के लिए इसकी उपयोगिता अल्प है बल्कि ब्रायोनिया और फास्फोरिक एसिड उससे कुछ अधिक गुणकारी है और डल्कामारा तथा एण्टिम क्रूड और भी अधिक लाभदायक है। यदि बच्चों ने गर्मी के दिनों में ठण्ढा पेय, कच्चा फल खाया हो या उन्हें एकाएक ठंढ लग गयी हो तो ब्रायोनिया और यदि मल में न पचे हुए खाद्य का अंश रहे तो भी वही औषध है। यदि केवल रात के समय ही पतले दस्त हों, वह भी पानी-सा और दर्दरहित हो या भयकर शूलवेदना के साथ मल निकले और वह चिकना हो तो डल्कामारा। यदि पतले दस्त के साथ बहुत अधिक मिचली रहे, साथ में डकार के साथ न पचे हुए खाद्य की गन्ध निकले तथा जीभ पर लेप हो तो एण्टिमोनियम क्रूडम। यदि ब्रायोनिया यथेष्ट न हो तो कार्बो वेज उपकारी सिद्ध होगा। यदि बार-बार पतला मल निकले वह भी अल्प और पीला हो, साथ में सरलान्त्र के भीतर दर्द रहे तो इपिकाक, यदि खाने के बाद ही न पचे हुए खाद्य के साथ पतला मल निकले तो चायना। यदि रोगी बहुत दुर्बल हो तो आर्सेनिकम की तरह नक्स वाम। यदि दर्दरहित पतला, पीला मल पिचकारी के वेग से निकले और कभी-कभी उसके साथ न पचा हुआ खाद्य रहे तो अन्त में सिकेलि, उसी तरह ब्रायोनिया, डल्कामारा और चायना भी है और एक-एक बार के दस्त के बाद रोगी बहुत दुर्बल हो जाता है। यदि ऊपरलिखित औषधें असफल रहें तो फास्फोरिक एसिड पूर्णतया रोगी को आराम कर देगा।

७—बच्चो का उदरामय (Diarrhoea of children)—बच्चों की गरमी की शिकायत, बच्चों के लिए सबसे उत्तम औषध है। इपिकाक, खासकर यदि बच्चे बहुत रोयें या सिर चालें, उदर तना हुआ तथा बार-बार थोड़ा-थोड़ा पीला-झागदार मल निकले तो वही औषध है उसके बाद रिउम अच्छा है, यदि झागदार मल में खट्टी गन्ध निकले, चेहरा पीला, बच्चे

बहुत रोयें या उनके मुँह से लार गिरे। बच्चों का चेहरा लाल, वे चिड़चिड़े और क्रोधी तथा ढीठ हों, सदा गोदी में सवार होकर टहलना चाहें, मल बार-बार पानी-सा निकले, उनका रंग भूरा या वह हरे कफ से मिला हुआ, सड़े अण्डे की तरह बदबू निकले और कभी-कभी कुछ न पचे हुए खाद्य रहें तो कैमोमिला। खासकर बच्चों को अधिक खिलाने से यदि उनके मल में न पचा हुआ खाद्य रहे और चायना से उपकार न हो तो सिकेलि खास औषध है। बच्चे पानी-सा मल बार-बार निकल जाने के कारण पीले हो जायें और दर्द का कष्ट अनुभव करें तो फेरम। यदि पतला मल पिचकारी के वेग से निकले और वह पानी सा भूरा हो और छोटे बच्चे एकदम अवसन्न पड़ जायें और कभी वे ठठरी मात्र रह जायें तो आर्सेनिकम। यदि शीर्ण बच्चों के पेट फूले हों, यदि आर्सेनिकम से यथेष्ट उपकार न मिले तथा ऊपरलिखित औषधों से मल न रुके तो सल्फर। यदि उसी तरह के पुराने उदरामय में सल्फर निष्फल प्रमाणित हो किन्तु पतले मल में सड़े मुर्दे की तरह बदबू हो, कभी-कभी हरा-सा और बाद में भूरा-सा मल निकले और सुखण्डी की तरह कृशता दिखाई पड़े तो कैल्केरिया। बच्चों के दाँत निकलते समय हरे-पीले पतले दस्त हों तो मर्क्यूरियस और सल्फर की आवश्यकता होती है या कभी-कभी इपिकाक, कैमोमिला या आर्सेनिकम। (गर्मी की ऋतु के पतले दस्त के लिए आइरिस वर्स बहुत ही उपयोगी पाया गया है—डॉ० हेम्पल)।

८—अनेक प्रकार के उदर-स्राव (Various kinds of abdominal discharges)—अनपच के दस्त, यकृतजनित दस्त, उदर-विकार-जनित दस्त। जब खाद्य बिना पचे निकल जाता है तो चायना ३० की २ गोलियों की १ या २ मात्राओं से वह अच्छा हो जाता है, यदि लगातार वैसा मल होता रहे और चायना की मात्राओं से लाभ न हो तो सल्फर, कैल्केरिया और फास्फोरस और उसी तरह मर्क और फेरम से भी बहुत लाभ होता है। यकृत के विकार के कारण यदि दस्त होने लगे तो वैसे क्षेत्रों मे पेट्रोलियम देकर रोगी को आराम करने का मौका मुझे मिला था, डॉ०

लोवेथल ने भी इसकी सिफारिश की है। उदर-विकार के कारण यदि दस्त हो तो मुझे कैल्केरिया से लाभ मिला है। डा० शेलिंग ने इसकी सिफारिश की है और सल्फर भी उपयोगी है।

६—पुराना उदरामय (Chronic diarrhoea)—ऐसी स्थिति में अन्य अनेक औषधियाँ यदि खासतौर निर्देशित न हों, तो इस प्रकार की शिकायतों में मेरी प्रधान औषध है सल्फर, उसके बाद अवस्थाओं के अनुसार मैं कैल्केरिया, फास्फोरस या पेट्रोलियम देता हूँ, खासकर यदि रोगी होमियोपैथिक चिकित्सा के अन्दर कुछ दिनों तक रहा हो और ऊपर-लिखित तीन औषधों को छोड़ कर अन्य सभी औषधों का सेवन उसने किया हो। इस अध्याय की संख्या १ से ८ तक में जिन औषधों का विवरण दिया गया है यदि रोगी ने उसमें से एक भी औषध का सेवन न किया हो, तो मैं इसी औषध से चिकित्सा शुरू करता हूँ, उसके बाद यदि यह असफल हो जाय तो मैं सल्फर, कैल्केरिया आदि का इस्तेमाल करता हूँ। यदि रोगी यक्ष्मा रोग से ग्रसित हो तो फेरम और फास्फोरस के प्रति मेरा विशेष ध्यान जाता है। आँतों में पीब का सचय हो गया हो तो सल्फर और कैल्केरिया, सन्निपात ज्वर में प्रायः फास, कालरा के बाद प्रधानतया सिकेलि, फास, फास एसि और सल्फर।

१०—मामूली उदरामय के लिए औषधों का विशेष निर्देश (Special Indications)—जैसे कि (क)—ठण्ढ लगने के बाद ब्रायो, मर्क, डल्का, चायना, वेरेट्र एल्ब, नक्स वाम, कैमो, इपिक, एन्टि क्रूड, सल्फ, खासकर ठण्डा पेय पीने के बाद, ब्रायो, चायना, कार्बो वेज, आर्स, पाकाशय की गड़बड़ी होने के बाद पल्स, एण्टिक्रूड, ब्रायो, नक्स वाम, आस, कार्बो वेज, इपिक, सल्फ, दूध पीने के बाद खासकर लाइको, ब्रायो, सल्फ, फल खाने के बाद पल्स, ब्रायो, आर्स, खट्टी चीज के बाद ब्रायो, एण्टि क्रूड, नक्स वाम, अति मैथुन के बाद ब्रायो, एण्टिक्रूड, नक्स वाम, इपिक, कार्बो वेज, वृद्धों के उदरामय के लिए सिकेलि, फास,

सल्फ, एण्टि क्रूड, ब्रायो, आर्स, नक्स वाम, यदि पतले दस्त कब्जियत में बदल जाय एण्टि क्रूड, फास, सल्फ, ब्रायो, नक्स वाम; यदि क्रोध के बाद पतले दस्त हों तो कैमो, कालो; भय के बाद वेरेट्र एल्ब; शोक और दुःख के बाद फास एसि। (ख) पतले मल के दस्त के लिए पल्स' रिउम, सल्फ, रस, मर्क, नक्स वाम; सड़े मुर्दे की गन्ध वाला मल कार्बो वेज, कैल्के कार्ब; सड़े अण्डे की तरह गन्ध वाला मल कैमो, भारी दुर्गन्धित मल कार्बो वेज, ब्रायो, चायना, आर्स, इपिक, कैमो, मर्क, पल्स, सल्फ; खट्टे गन्ध वाला मल, रिउम, कैल्के, कैमो, सल्फ, खूनभरा और कफ वाला मल, मर्क डल्का, इपिक, सल्फ, नक्स वाम, आर्स, पल्स, रस, कीचड़-सा मल, पल्स, रिउम, इपिक, सल्फ, फास, चायना, कैल्के; पीब वाला मल, वेल, सल्फ, कैल्के, मर्क; जेली की तरह मल, रस, डल्का, कैल्के, खमीर की तरह मल इपिक, रिउम, सल्फ, फटे हुए अण्डे की तरह, पल्स, रस, मर्क, कैल्के, चरपरा चमड़ा छिल जाने वाला मल सल्फ, आर्स, मर्क, फेम, चायना, कैमो; चिकने कीचड़ की तरह, पल्स, सल्फ, मर्क, डल्क, चायना, वेल, कैमो, फास, न पचे हुए खाद्यो वाला मल, चायना, ब्रायो, डल्क, मर्क, कैल्के, फास, सल्फ, फेम, कैमो, सिकेलि, पानी सा मल, कैमो, डल्क, फेम, सिकेलि, वेरेट्रम एल्ब, एण्टि-क्रूड, आर्स, कैल्के, मर्क, फास एसि, चायना, पल्स, नक्स वाम, फास, सल्फ, भूरा मल आर्स, ब्रायो, चायना, वेरेट्रम एल्ब, डल्क, इपिक, सल्फ, सिकेलि, कैमो, कैल्के, फेम, मर्क, पीला मल इपिक, कैमो, डल्क, चायना, कैल्के, आर्स, हरा मल पल्स, कैमो, मर्क, डल्क, आर्स, वेरेट्र एल्ब, कैल्के, सिकेलि, सल्फ, पिचकारी की तरह मल वेरेट्र एल्ब, इपिक, ब्रायो, डल्क, फेम, फास, सिकेलि, सल्फ, आर्स, यदि बहुत डकारो के साथ मल निकले चायना, ब्रायो, एण्टि क्रूड, कैमो डल्क, आर्स, पल्स, वमन की इच्छा के साथ इपिक; ब्रायो, एण्टि क्रूड, वेरेट्र एल्ब, कैमो, आर्स, मर्क, कार्बो वेज, वमन के साथ डल्क, इपिक, वेरेट एल्ब, मर्क, कैमो, आर्स, पल्स, रिउम, सिकेलि, सल्फ, प्यासवर्धित डल्क, आर्स;

शूल के साथ मर्क, कैमो, पल्स, रिउम, नक्स वाम, कालो, रस, व्रायो, आर्स, एण्टि क्रूड, डल्का, सल्फ, वेरेट्र एल्व, केवल मल त्याग के पूर्व शूल, रस; बिना दर्द के, फेरम, वेरेट्र एल्व, डल्का, फास एसि, चायना, आर्स, पल्स, सल्फ, मलद्वार में वहुत अधिक कुन्थन मर्क, नक्स वाम, सल्फ, आर्स, रिउम, इपिक, रस, मलद्वार में जलन आर्स, मर्क, कैमो, डल्का, चायना, पल्स, सल्फ बहुत कमजोरी और अवसाद आर्स, कैल्के, सिकेलि, नक्स वाम, इपिक, चायना, फेरम फास, एकाएक शरीर कृश हो जाना आर्स, कैल्के, मर्क, डल्का, फेरम, रिउम, फास, फास एसि, सिकेलि, सल्फ, यदि पतले दस्त तड़के हो व्रायो, नक्स वाम, सिके; खासकर भोजन के तुरन्त वाद मल निकले सिकेलि, चायना, डल्का, व्रायो, आर्स, फेरम, कालोसिन्थ, शाम को डल्का, पल्स, खासकर रात को मर्क, डल्क, आर्स, सल्फ, कैमो, चायना, पल्स, रस वेरेट्रम एल्व, मध्यरात्रि के पहले पल्स, रस टाक्स, मध्य रात्रि के वाद सिकेलि, आर्स।

२—पेचिश

(Dysentery)

१—यदि पेचिश का रक्तस्राव भयकर ज्वर के साथ हो तो मैं विना द्विविधा के एकोन देता हूँ, विशेष रूप से यदि रोगी सिर और हाथ-पैरों में अधिक फाड़ने वाले दर्द की शिकायत करे, वैसी स्थिति में एकोन दो या तीन दिनों में समूचे रोग को आराम कर सकेगा। यदि एकोन यथेष्ट न हो तब मैं हर क्षेत्र में मर्क विव देता हूँ; खासकर यदि वहुत-सा खूनभरा कफ निकले या भारी मल वेग और तेज शूलवेदना के साथ शुद्ध रक्त निकले। किन्तु यदि मर्क के सेवन के वाद शीघ्र उन्नति न दिखाई पड़े और अन्य चीजों के सिवाय केवल खून लगातार निकलता रहे, साथ में वमन हो तो मैं इपिक देता हूँ। यदि खूनभरा स्राव होते रहने के साथ आँतों में फाड़ने या काटने-वाला दर्द रहे तो मैं वेल देता हूँ। यदि शूल तेज हो और ऐंठन रहे तथा

खूनभरा कफ निकले तो मैं कालो देता हूँ और यदि २४ घण्टों के अन्दर उपकार न हो तो मैं स्टेफिसेग्रिया देता हूँ; यह औषध मेरे हाथ में, डॉ० हेरिंग के द्वारा सिफारिश की हुई अन्तिम दो औषधों की अपेक्षा, अधिक सफल हुआ है।

२—यदि रक्तार्श की चिकित्सा आरम्भ से ही विश्वास के साथ हम लोगों के हाथ में दे दी जाय तो कदाचित् अनेक औषधों की आवश्यकता होगी; ऐसे क्षेत्रों में यदि अधिक बुखार न रहे तो मर्क विव और विशेष रूप से कारोसाइवस, यदि आरम्भ से ही खूनभरा मल कफ के मल में बदल जाय, जिसके बाद सल्फ, पल्स यहाँ तक कि रस कफ को साधारण मल के रूप में निकालने के लिए यथेष्ट होगा।

३—यदि प्रदाहवाला रक्तार्श, साथ में वात का दर्द, यदि एकोन के द्वारा बुखार और खूनी मल आराम किया गया हो तो और शूल का दर्द रह जाय, साथ में मलत्याग के समय थोड़ा-बहुत कुन्थन रहे और कुछ अंशों में स्वाभाविक मल निकले, इसके अतिरिक्त यदि दिन में भारी गरमी और रात को बहुत ठण्डक हो और मर्क से फल न हो तो ब्रायो या नक्स वाम मदद करेगा या यदि मल में केवल कफ रहे, बिना खून के, किन्तु बहुत कुन्थन रहे तो कालिचकम या मल बहुत दुर्गन्धित हो तो इपिकाक।

४—यदि सब प्रकार की चिकित्सा होने पर भी कुछ लक्षण रह जायँ, जैसे कि कुन्थन, बिना दर्द के चिकना मल निकले या समय-समय पर यदि खून वाला मल निकलता रहे तो सल्फर की अपेक्षा उत्तम औषध और कुछ नहीं है, जिसका व्यवहार इस प्रकार के रोग में अवश्य करना चाहिए। जब रोग पुराना हो जाय और रोग के प्रथम आक्रमण में ह्रास हो तो यह औषध बहुत ही उपकारी है।

५—रोग के आरम्भ में यदि उपयोगी चिकित्सा न हुई हो या चिकित्सक को बुलाने में विलम्ब हो और रोग कठिन अवस्था में पहुँच जाय और सन्निपात होने का डर हो, तो कार्ब, बिछौने पर पाखाना हो जाय और उसके

साथ दर्द रहे तथा जीभ भूरी हो जाय और सूखी रहे तो मैं रस टाक्स देता हूँ, और यदि इससे लाभ न हो और मल-मूत्र से दुर्गन्ध निकले और चमड़े पर बैंगनी उद्‌भेद निकले या वह न रहे या रोगी बेहोश पड़ा रहे या अत्यन्त अधिक कष्ट के कारण सिर चालता रहे तो मैं आर्सेनिक से चिकित्सा शुरू करता हूँ। अधिकांश क्षेत्रों में यह औषध अकेली ही आराम कर सकती है। ऐसी स्थिति में कदाचित् ही कार्बोवेज या चायना इस्तेमाल होते हैं। एक स्त्री की ऐसी हालत में एलोपैथिक चिकित्सा से लाभ न होने के कारण मुझे सड़ी अवस्था को काबू में करने के लिए कार्बोवेज देना पड़ा था। उसके बाद आर्स देने से वह रोगिणी एकदम अच्छी हो गयी थी।

६—रक्तार्श के लिए एलोज, बैराइटा, कैन्थर, कैप्स, हीपर आदि की सिफारिश की जाती है, किन्तु मुझे इन औषधों के आरोग्य-साधन में कोई अनुभव नहीं है। उसी तरह मेरा विश्वास है कि नवीन चिकित्सक यदि दीर्घ दिनों के परीक्षित औषधों से चिकित्सा करें तो अधिक सुफल पा सकते हैं। नयी औषधों की परीक्षा करने से अधिक समय वृथा नष्ट होगा।

३—कालरा रोग, कदाचित होनेवाला कालरा
(Cholera Morbus, Sporadic Cholera)

१—बच्चो का कालरा, गर्मी की ऋतु मे दस्त की शिकायतें, बच्चो का कालरा रोग (Cholera Infantum, Summer Complaint, Cholera morbus)—अधिकांश क्षेत्रों में यदि मन्दाग्नि या मस्तिष्क में जल-सञ्चय, किसी अंग में गहरा रोग या पाकाशय की कोमलता रहे और जिसका कारण आकस्मिक हो जैसे कि सर्दी लगना, पाकाशय में गड़बड़ी होना या आबहवा का असर लगना आदि कारणों से हैजा हो जाय तो इपिकाक ही सबसे उत्तम प्रभावशाली औषध है, खासकर यदि पतला मल पीला हो और सफेद कफ का वमन हो, साथ में शूलदर्द रहे तथा रोगी रुदन के साथ सिर चाले तो यही सर्वोत्तम औषध है। यदि वमन में हरा

या पीला-सा कफ निकले और उसके साथ यदि दस्त में कीचड़-सा श्लेष्मा निकले, साथ में यदि रोगी ठण्डा जल पीना चाहे, अधिक अवसाद, शीघ्र-कृशता और हाथ-पैरों में ठण्ढापन हो तो वेरेट्र एल्ब ही प्रधान औषध है, किन्तु यदि चमड़ा गरम और सूखा हो, तरल वस्तु की कै हो और पतला मल पीला-सा और बहुत दुर्गन्धित हो तो एन्टिम-क्रूड ही मुख्य औषध है। यदि सब प्रकार की चिकित्सा होने पर भी बच्चा कृश होता जाय, शरीर बहुत शीतल हो, चेहरा मुर्दा-सा हो जाय, बहुत अधिक बार पाखाना हो; तो आर्स के समान और कोई औषध नहीं है, किन्तु बहुत ही अल्प परिमाण में यह औषध देनी चाहिए, क्योंकि अधिक औषध सेवन कराने से रोग बढ़ सकता है। यदि औषध के कारण रोग बढ़े, इपिकाक न देकर वेरेट्र एल्ब दिया गया हो तो इससे वृद्धि रुक जायगी और मूल रोग भी आराम हो जायगा। यदि ये दोनों औषधें दी गयी हों तो नक्स वाम रोग को बिल्कुल आराम कर देगा, आर्सेनिक के द्वारा वृद्धि होने पर भी। ऐसे रोगों में पृष्ठ १४७ के ८ अनुच्छेद में लिखित उपसर्ग रहने पर कभी-कभी मैंने केम, रस, चायना, सिके और यहाँ तक कि सल्फ से उपकार पाया है।

२—आकस्मिक कारण से उत्पन्न कालरा युवकों में (Sporadic Cholera of adults)—इस प्रकार का कालरा रोग असली या एशियाई कालरा से भिन्न है। इस प्रकार के आकस्मिक कालरा में सदा ही पानी-सा पतला मल निकलता है जैसे कि चावल का धोवन है और वह मुख तथा मलद्वार से निकलता है तथा इस प्रकार के कालरा रोग में श्वासरोधक, ऐंठनवाला तथा पक्षाघात वाला लक्षण कभी दिखाई नहीं पड़ते और साधारणतया एशियाई कालरा की अवस्था में से नहीं गुजरता। ऐसे क्षेत्रों में इपिकाक ही अत्यन्त प्रभावशाली औषध है। यदि यह औषध यथेष्ट न हो और पतले दस्त मध्यरात्रि के बाद या तड़के होने लगें और उसके साथ भयंकर शूलदर्द रहे या एकाएक अत्यन्त अवसाद आ जाय और शरीर ठण्ढा पड़ जाय या पसीना भी ठण्ढा हो तो वेरेट्र एल्ब ही सर्वोत्तम औषध है। यदि वेरेट्र एल्ब

अवसाद को दूर न कर सके और यदि आरम्भ में छाती के अगले भाग में अत्यन्त दर्द, पाकाशय के गढ़े में जलन रहे तो आर्स का ही निर्देश होता है। यदि इन लक्षणों को छोड़कर आरम्भ में रोग का मृदु आक्रमण हो और समय-समय पर लक्षण रहे और रोगी अत्यन्त बेचैन और चिड़चिड़ा हो जाय, जिसे नक्स वामिका के द्वारा काबू में कर लिया जा सकता है। यदि इपिकाक कालरा के मृदु आक्रमण को न रोक सके और वेरेट्र एल्ब का निश्चित लक्षण दिखाई पड़े तो वेरेट्र एल्ब लाभदायक होगा। खासकर जहाँ मल में न पची हुई वस्तु हो और न पचे हुए खाद्य की गन्ध वाला वमन हो तथा हर बार भोजन के बाद पाकाशय और उदर के ऊर्ध्व भाग में तनाव रहे तो चायना उपयोगी है। उसी तरह यदि दस्त और कै हो और उसमें खट्टी गन्ध रहे तो कैमो उत्तम औषध है। इस रोग के मृदु आक्रमण में ये औषधें उपयोगी हैं—डल्का, पल्स, रिउम, सिके, सल्फ और यहाँ तक कि मर्क विशेष रूप से उपयोगी हैं। इनके निर्देशक लक्षण 'वमन' और 'उदरामय' के प्रकरणों में देखिए।

४. एशियाई कालरा
(Asiatic Cholera)

कालरा रोग में यह सबसे कठिन अवस्था है। इसलिए इसकी चिकित्सा बहुत सावधानी से करनी चाहिए। डाक्टर रीकर्ट ने अनेक होमियोपैथिक ग्रन्थों से बातें उद्धृत कर तथा अपना अभिमत और रोग-भेद बताकर जो अनेक प्रकार की चिकित्सा बतायी है उन्हें पढ़कर नवीन चिकित्सक को द्विविधा में पड़ना पड़ता है। किसी ने आर्स किसी ने वेरेट्र एल्ब, दूसरे ने कूप्रम और अन्य चिकित्सकों ने इपिकाक और सिकेलि की सिफारिश की है, किन्तु जो अनुभवी चिकित्सक निर्देशक तथा प्रधान लक्षणों के अनुसार औषध निर्वाचन जानते हैं और कौन औषध किस अवस्था में देनी चाहिए उसका ज्ञान रखते हैं वे इस कठिन रोग की चिकित्सा में कभी विफल नहीं

होते। मैं अगले १—प्रतिषेधक, २—पूर्वावस्था, ३—साधारण अवस्था और ४—असली कालरा इन चार अनुच्छेदों में अपना विचार प्रकट करूँगा।

१—कालरा-प्रतिषेधक (Prophylaxis of Cholera)—डॉक्टर हेरिंग ने हैजे के प्रतिषेधक के रूप में गरम मोजे के भीतर तथा जूते के अन्दर गन्धक चूर्ण रखकर जूता पहनने की सिफारिश की है, किन्तु मुझे ऐसा कोई परीक्षित उपाय नहीं मालूम है जिससे हैजे की तरह कठिन रोग को रोका जा सके। इसके विपरीत मैंने ऐसा व्यक्ति देखा है जिसने कालरा से बचने के लिए वेरेट्र एल्ब, कूप्रम और कैम्फर का सेवन किया था और उससे आराम भी हो गया था। वह सुबह इनमें से एक औषध खाये बिना घर से नहीं निकलता था। किसी ने पतला दस्त होते ही वेरेट्र एल्ब की एक मात्रा ले ली और जब तक दूसरी बार दस्त न आवे तब तक दूसरी मात्रा नहीं ली, फलस्वरूप वह कालरा रोग से मुक्त हो गया। १८५३, १८५४, १८६५ और १८६६ में अमेरिका में बड़े जोर का कालरा फैला था। उस समय के लोगों में जिन रोगियों ने मेरी व्यवस्था के अनुसार वेरेट्र एल्ब का सेवन किया वे कालरा से मुक्त रहे। एक कालरा रोगी मेरे पास आया था। वह दूसरे चिकित्सकों से कुछ भी फल न पाकर मेरे पास आया था और मेरी दवाओं से वह अच्छा हो गया। अवस्था के अनुसार मैंने उसे सल्फर दिया था। उन महामारी के दिनों में मैंने डाक्टर हेरिंग के कथनानुसार मोजे में गन्धक चूर्ण का व्यवहार करने की सलाह देकर और सल्फर सेवन कराकर बहुतों को आराम किया था। इसी तरह कुछ लोग गन्धक सूँघकर दूध पीते और कच्चे फल खाते हुए भी मेरी दवा से अच्छे हुए थे। इन दोनों उपायों के अतिरिक्त मुझे कालरा से बचने के अन्य साधन का ज्ञान नहीं है।

२—कालरा की पूर्वावस्था (Choleroses)—इस शब्द से मैं समझता हूँ कि कालरा होने के पहले एक-दो बार दस्त होते हैं; और हरारत मालूम होती है; अल्प ज्वर भी होता है; जिसके साथ ठण्ढक का बोध तथा जिनमें हवा का झोंका लगने का डर, साथ में रात को गरम पसीना, थकावट,

पाकाशय में गड़बड़ी, भूख की कमी, मिचली, कहीं वमन से आराम और उदर में कष्ट का अनुभव तथा मन्द-मन्द दर्द, लगातार गड़गड़ाहट, पाखाने का वेग, कभी पतला दस्त होने से कुछ आराम, श्वासकष्ट, छाती में दबाव, सिर में चक्कर और सिरदर्द, लगातार सुस्ती और कमजोरी, अन्त में पैरों की पिंडलियों में ऐंठन और वह भी खासतौर पर रात को। इस प्रकार के रोग लक्षणों को उपयोगी औषध सेवन कराकर आराम कर देना ही चिकित्सक का प्रथम कर्तव्य है। इन लक्षणों में पतला दस्त होना ही सबसे कठिन उपसर्ग है। यदि इस पर ध्यान न दिया गया तो कालरा रोग प्रकट हो जायगा जो बिजली की तरह प्राण लेकर ही छोड़ेगा। यदि ऐसा दस्त बिना दर्द के हो और उससे रोगी की बेचैनी घट जाय तो भी उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। ऐसी स्थिति में यदि रोगी ऐसा समझे कि एक-दो बार दस्त होने से पेट साफ हो जायगा तो यह अच्छा ही है और इसकी उचित चिकित्सा न कराये तो भविष्य में वह विकट रूप धारण कर लेता है। सौभाग्य से हमारे पास ऐसी औषधें हैं जिनके द्वारा कालरा के पूर्व होने वाली सभी अवस्थाओं को सुधार सकें। यदि रात का बुखार रोगी को बेचैन कर दे और रात का पसीना उसे दुर्बल बना दे तो एकोन ही एकमात्र प्रतिषेधक औषध है। पाकाशय में गड़बड़ी और मिचली हो तो इपिकाक से आराम होगा, किन्तु विशेष अवस्थाओं के लिए पल्स, नक्स वाम, ब्रायो, कार्बो वेज और वेरेट्र एल्ब अच्छी औषधें हैं। वमन रहे तो इपिकाक, वेरेट एल्ब या कार्बो वेज उपयोगी हैं। समय-समय पर आने वाले दर्द के लिए आर्स या वेरेट्र एल्ब और कभी-कभी कैल्के या कार्बो वेज। पहले दस्त की प्रथम अवस्था के लिए वेरेट्र एल्ब, यदि उसके यथेष्ट फल न मिले तो सल्फ निश्चय आराम करेगा तथा अधिकांश क्षेत्रों में एक मात्रा देने से ही उपकार होगा। कुछ रोगियों के लिए इपिकाक और फास्फोरस या सिकेलि की आवश्यकता हो सकती है। यदि श्वासकष्ट हो तो कार्बो वेज या सल्फ। सिर में चक्कर या सिरदर्द के लिए बेल या कैम्फ की एक बूंद चीनी के साथ मिलाकर। सुस्ती और कमजोरी के लिए चायना या वेरेट्र

एल्व, आर्स, इपि, कार्ब्रो वेज, फेरम। पिंडलियों में ऐंठन के लिए कैमो या कूप्रम, कालो, वेरेट्र एल्ब। इन सभी औषधियों की एक ही मात्रा काफी है, यह भी ३० शक्ति की २ गोलियाँ। यदि आवश्यकता हो और एक मात्रा से कुछ उपकार होकर रुक जाय तो दूसरी मात्रा दी जानी चाहिए, किन्तु कॅम्फर के लिए ऐसा नियम भी नहीं है। इसकी एक मात्रा ही काफी है। मैं इसकी ३ गोलियों को जल में घोल कर हर तीसरे घण्टे एक-एक चम्मच पिलाने की व्यवस्था देता हूँ, उससे २४ घण्टों के अन्दर रोगी के सारे क्लेश जाते रहते हैं।

३—गर्मी के मौसम का कालरा (Summer-complaints)—इस प्रकार के पतले दस्त के साथ ज्वर रहता है और सारे शरीर में वेदना होती है। यह कदाचित् असाध्य भी हो जाता है। यह कालरा का पूर्व रूप नहीं है किन्तु यथार्थ में किसी-किसी व्यक्ति के भीतर इस प्रकार के कालरा के साथ ऐंठन वाला दस्त होता है। इसे कालरा रोग की प्रथम अवस्था नहीं कहनी चाहिए क्योंकि यदि शुरू में सुचिकित्सा हो तो रोगी आराम हो जाता है, जैसा कि कालरा की पूर्वावस्था प्रकरण में बताया गया है। साधारण कालरा रोग से इसे पृथक् समझना चाहिए क्योंकि इसमें दर्दरहित मल निकलता है, पानी सा पतला मल, कभी-कभी हरा-सा, अन्य समय काला-सा या भूरा-सा मल और उसके साथ थोड़ी-बहुत शूल की वेदना है या कभी-कभी आँतों की खुरचन के साथ मल निकलता है, किन्तु असली कालरा के चावल की धोवन की तरह कभी नहीं, यद्यपि उसके साथ मानो कालरा के पतले मल के निकलने के शब्द की तरह आवाज तथा बेहोशी है। ऐसी कमजोरी कि रोगी उठकर बैठ नहीं सकता (जब कालरा के पूर्ववर्ती अवस्था के आक्रमण पर भी और रोगी अपने साधारण काम-काज करता रहता है), चेहरा धँसा हुआ, जलाने वाली प्यास और भारी बेचैनी और अस्थिरता, पिण्डलियों में ऐंठन तथा थोड़ा-बहुत वमन रहते हैं। अगर इस प्रकार के लक्षणों के साथ बहुत तेज के होने लगे तो इपिकाक से विशेष लाभ होता है, खासकर अगर कफ वाला मल तथा पित्त वाला मल निकले। अगर इपि

से लाभ न हो तो वेरेट्र एल्ब देना आवश्यक होता है, खासकर जहाँ हाथ पैर बर्फ की तरह ठंढे हो जायँ तथा बेचैनी और घबराहट अधिक हो। यदि वेरेट्र एल्ब से ठढक और घबराहट न घटे तो आर्स देना चाहिए, खासकर यदि अधिक प्यास, शरीर में अधिक उत्ताप तथा जलन रहे। अगर कै एकदम न हो और पानी-सा दस्त लगातार होता रहे तो फास उपयोगी औषध है, खासकर अगर पतले दस्त के साथ दर्द न हो तथा मल का रंग कीचड़-सा हो, पिचकारी के वेग से निकले तथा कै बिलकुल न हो। बिना दर्द के पतले दस्त हों, मल का रंग हरा सा सफेद या काला-सा हो और कै अल्प हो तथा जीभ पर लसलसापन रहे, उस पर उँगली चिपक जाय और मौसम ठण्ढा न होकर अल्प गरम हो तो फास उपयोगी औषध है। यदि ऐसी अवस्था में फास या फास एसि सहायता न दे तो सिकेलि उत्तम फल दिखा सकता है। यदि इनमें से कोई औषध पूर्ण आराम न कर सके या रोगी की अवस्था का उपशम भी न कर सके तो सल्फ रोगी को बचा लेगा। ऐसी स्थिति में मैं औषध के घोल की व्यवस्था देता हूँ, ३० शक्ति की २ गोलियाँ पानी में मिलाकर देता हूँ। मुझे ऐसे भी रोगी मिले जिनकी जीभ पर सूखी २ या ३ गोलियाँ छोड़ देता हूँ, जिससे २४ घण्टों के अन्दर जादू की तरह सुफल मिलता है। यदि मनुष्य ऐसा रुग्ण न हो कि दिन-रात में एक बार से अधिक मुझे उसे देखने की आवश्यकता न हो तो मैं औषध को नहीं बदलता किन्तु यदि आक्रमण इतना भयंकर हो कि सुबह और रात को मुझे देखना पड़े तो मैं कभी-कभी १२ घण्टों के बाद दूसरी औषध की व्यवस्था देता हूँ, बशर्ते कि पूर्व औषध थोड़ा भी परिवर्तन न कर सके।

४—कालरा (Cholera)—डॉ० शीफर्त ने हमारे एक मासिक पत्र में एक लेख छपवाया है। उसमें लिखा है कि कालरा रोगी यदि रोग के आरम्भ में ही हमारे पास चिकित्सा के लिए आ जाय और हम उसकी अवस्था देखकर रोग का निदान जान सकें तो चिकित्सा से सुफल मिल जाता है, किन्तु मेरी राय में उनका वह मत एक दृष्टि से सही है तथा

दूसरे दृष्टि से गलत है क्योंकि उनसे हैनिमैन का सिद्धान्त गलत हो जाता है और यदि निदान निकालने के लिए उन्होंने वैसा लिखा हो तथा रोग का अज्ञात रहस्य जानना उद्देश्य हो तो भी उनका कथन गलत है। डॉ० हैनिमैन ने इस प्रकार के कार्य का खण्डन किया है। गत ४० वर्षों की खोज और जाँच-पड़ताल करने पर भी शीकर्त के सिद्धान्त से चिकित्सा करने पर रोगी की बाल बराबर भी उन्नति नहीं हुई। इस कठिन रोग के आरम्भ में शरीर या अङ्गों में तथा उनकी क्रियाओं में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं उसका निर्णय करना कठिन है। यदि डॉ० शीकर्त का उद्‌देश्य यह है कि रोग की कठिन अवस्था जानना या निदान का खोज करना हो तो उनके सिद्धान्त का कुछ समर्थन किया भी जा सकता है। विज्ञ चिकित्सक कालरा के विभिन्न भेदों को अच्छी तरह जानते हैं। किन्तु दूसरी ओर यदि उनका आशय यह है कि उनकी खोज हैनिमैन की होमियोपैथी में यह एक उन्नतिशील सुधार है, तो वह उनकी बड़ी भारी भूल है, क्योंकि होमियोपैथी के आविष्कारक डॉ० हैनिमैन की शिक्षा है कि प्रत्येक रोगी के उपसर्गों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने और भी कहा है कि रोग के भेद को अच्छी तरह जान लेना उचित है। उन्होंने अपना उदाहरण देकर निश्चित सिद्धान्त बतलाया है और यह भी प्रमाणित कर दिया है कि एक ही विष अनेक प्रकार के रोग लक्षण उत्पन्न करता है। उनके भेद भी निश्चित और स्थायी हैं। जैसे कि लालबुखार, हैजा, शीतला के दाने, क्रूप खाँसी आदि। उनके मत से रोगों के नामों की रक्षा आवश्यक है किन्तु डॉ० शीकर्त द्वितीय ने कालरा का जिस प्रकार विश्लेषण किया है वह हमारे आर्गेनन की प्रारम्भिक बातों में से एक है। कुछ भी हो, रोग के उपसर्गों के विषय में युक्तिपूर्वक विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। इन्हीं सिद्धान्तों के अनुसार मैं अब निश्चित और परीक्षित औषधों का विवरण दूंगा जिससे हमारी निर्देशित औषधें अव्यर्थ प्रमाणित हुई हैं।

(क) साधारण कालरा (Simple Cholera)—इसका आरम्भ कै-दस्त से होता है किन्तु दोनों में चावल की धोवन की तरह निस्स्वाद

होता है। यदि कै अधिक हो तो मैं इपिकाक से चिकित्सा शुरू करता हूँ। इससे प्रायः सारे उपसर्ग दूर हो जाते हैं। यदि इपिकाक यथेष्ट न हो या यदि शुरू से ही दस्त अधिक हो तो वेरेट्र एल्ब देता हूँ, किन्तु इस अवस्था में मैं आर्स, कूप्रम या कैम्फर कभी नहीं देता क्योंकि इन औषधों से नये दुःखदायी उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। इस कारण शुरू से ऐसी दवा देनी चाहिए जिससे समूचा रोग दूर हो जाय। डॉ० हेरिंग की सिफारिश के अनुसार मैं सल्फर ३० देकर अपूर्व सफलता प्राप्त कर सका हूँ। तीन अमेरिकन यात्रियों ने कालरा से आक्रान्त होकर अपनी जेब से सल्फर निकाल कर खाया और मुझे बुला भेजा। मेरे पहुँचने के पहले ही उस रोग से वे मुक्त हो गये थे। कालरा रोग की भयङ्कर अवस्था में यदि इपिकाक और वेरेट्र एल्ब से फायदा न हो तो सल्फर देना चाहिए।

(ख) उदर मे ऐंठन वाला कालरा (Spasmodic Cholera)—साधारण कालरा रोग की ठीक चिकित्सा न होने पर इस रोग की ऐसी कठिन अवस्था उत्पन्न होती है। कालरा की पूर्वावस्था पर उपेक्षा हुई तो इस प्रकार की परिस्थिति के साथ वमन भी होता है या शरीर में ऐंठन होने लगती है। ऐसी अवस्था में दस्त अल्प होता है या नहीं भी होता है। इस अन्तिम अवस्था के लिए मैं ऐंठन न हटने तक स्पिरिट्स अव कैम्फर की कुछ बूँदें ही सेवन कराता हूँ। यह औषध अधिकाश क्षेत्रों में सफल सिद्ध हुई है, किन्तु यदि यह काम न दे तो मैं अवस्थाओं के अनुसार कूप्रम, सिकेलि, वेरेट्र एल्ब या आर्स देता हूँ। यदि ऐंठन धनुषटकार की तरह हो तो इपि या सिकेलि, यदि हाथ-पैरों की पेशियों में ऐंठन हो तो वेरेट्र एल्ब, सिकेलि या इपिक, यदि हाथ-पैरों की उंगलियों की नोकों से ऐंठन शुरू हो तो कूप्रम, सिकेलि या वेरेट्र एल्ब, यदि पिण्डलियों से ऐंठन शुरू हो तो कूप्रम या सिकेलि, यदि छाती पर आक्रमण हो तो कूप्रम या आर्स यदि ऐसी ऐंठन बहुत अधिक होने लगे, जैसे कि कुचिकित्सित कालरा रोग के दौरान में होता है और कै दस्त बहुत जोर से होने लगता है तो मैं इपिक और वेरेट्र देता हूँ। यदि इन दोनों का प्रयोग न हुआ हो तो

इपिका या कूप्रम पहले देना चाहिए, यदि वमन अधिक हो, यदि दस्त अधिक हो तो वेरेट्र एल्ब या यदि दोनों भयंकर हों या रोगी की शक्ति एकदम घट जाय और यदि हाथ के चमड़े में झुर्रियाँ पड़ जायँ और रोगी की अवस्था अत्यन्त संकटापन्न हो तो भी वेरेट्र एल्ब। यदि वेरेट्र एल्ब से विशेष फल न हो तो मैं पहले सिकेलि देता हूँ, किन्तु यदि ऊपरलिखित सभी औषधें निष्फल प्रमाणित हों तो आर्स। यदि अत्यन्त दुर्वलता, बहुत कष्ट एवं बेचैनी, मृत्यु का भय और पाकाशय के गढे में जलते कोयले की तरह असहनीय जलन रहे तो मैं कालरा की चिकित्सा आर्स के बिना करके सफल नहीं होता।

(ग) श्वासरोधक और नील पाडुरोग वाला कालरा (Asphyctic and cyanotic Cholera)—यदि साधारण कालरा रोग की चिकित्सा न हुई हो तो ऐसी विकट परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। ये दोनों अवस्थायें अक्सर आपस में मिल जाती हैं, जहाँ नाड़ी अनुभव में न आवे और शरीर नीला पड़ जाय और इसके विपरीत भी अवस्था हो और नाड़ी की गति स्थगित हो जाय। साधारण और ऐंठन वाले कालरा रोग की औषधों के अतिरिक्त अन्य औषधें इस प्रकार के रोग में आवश्यक नहीं हैं। जहाँ श्वासरोधक और नील पांडुरोग वाला कालरा हो, वहाँ खासतौर पर वेरेट्र एल्ब, कूप्रम, कैम्फर और आर्स। मैंने अपने चिकित्सा-व्यवसाय में अनेक बार देखा है कि कै-दस्त रुक जाने के पहले ही नाड़ी की गति के लौट आने से आरोग्य की सूचना होती है। यदि कै-दस्त और ऐंठन वाले उपसर्ग पूर्णतया बन्द हो जाने पर भी नाडी की गति न मालूम हो तथा चमड़े में नीलापन रह जाय तो कार्बो वेज और कभी-कभी फास और लारो बहुत ही लाभजनक प्रमाणित होंगे जिससे फेफड़ों और हृदय में पक्षाघात की शंका नहीं रहेगी।

(घ) पक्षाघातयुक्त कालरा (Paralytic Cholera)—१८४६ ई० में एक रोगी को मैं देखने गया, कै या दस्त नहीं था और रोगी पक्षाघात से अचेत पड़ा हुआ था। आँतों, हृदय और पेशियों में पूर्ण पक्षाघात था,

साथ में शरीर नीला पड़ गया था। कार्वोवेज, फास या लारो उसे वचा न सके। मैं उसी दिन बुलाया गया जिस दिन अपने सहकारी डाक्टर क्रोसेरिओ के साथ एक अन्य रोगी को देखने के लिए गया था। उसकी भी हालत ऐसी ही थी। मैंने रोगी की अवस्था और चिकित्सा के क्रम के बारे में अपने साथी को समझा दिया। उसने समय नष्ट न करके कैम्फर के गुणों की जाँच करने की इच्छा की। उसने कपूर के कुछ टुकड़ों को सुरासार में घोल लिया और अपने सामने उससे रोगी के शरीर में अच्छी तरह मालिश करायी। १० मिनट के अन्दर ही रोगी की साँस चलने लगी, नाड़ी भी लौट आयी। ५ या ६ घण्टे के बाद रोगी के शरीर में साधारण जीवन-अवस्था दिखायी पड़ी, दूसरे दिन उसे बुखार आ गया और उसी की चिकित्सा होने लगी।

(ङ) रोग आराम होने के बाद स्वास्थ्यलाभ के समय (Reconvalescence)—रोग आराम होने के बाद स्वास्थ्यलाभ करने वाले मनुष्यों में प्रायः यकृत या फेफड़ों में खून जमा हो जाता है, फलस्वरूप श्वासकष्ट होने लगता है या सिर में रक्त जमा होने से बेहोशी या टायफायड ज्वर के उपसर्ग दिखाई पड़ते हैं। होमियोपैथी के अनुसार अल्प मात्रा के प्रयोग से उन अवस्थाओं का सुधार हो सकता है, जो एलोपैथिक चिकित्सा की अपेक्षा शीघ्र लाभप्रद है। कुछ ऐसे भी रोगी मेरे पास आये जिनकी चिकित्सा भयकर एलोपैथिक औषधों से की गयी थी, वे अन्त में मेरे हाथ में आकर आरोग्य के पथ पर अग्रसर होने लगे। मुझे अनेक विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। मस्तिष्क में भयकर रक्तसचय के क्षेत्र में मैं एकोन ३० की २ गोलियाँ थोड़े जल में घोलकर दो या तीन घण्टे के अन्तर पर एक-एक चम्मच सेवन कराने की व्यवस्था देता हूँ जो शारीरिक स्वस्थ्य की समता लाने में समर्थ है। यदि शरीर के किसी एक स्थान में रक्त जमा हो गया हो, वह भी चिकित्सक के पहुँचने के पहले हो और एकोन से पूर्ण अरोग्य न हो और फेफड़ों में आक्रमण हो चुका हो तो फास और कार्वोवेज, यदि यकृत में खासतौर पर आक्रमण हो तो वेल, ब्रायो,

लैक या मर्क, यदि मस्तिष्क पर आक्रमण हो, साथ में बेहोशी या मूर्च्छा की शंका हो तो बेल या लैक। सन्निपात ज्वर वाले कालरा के लिए, जो एलोपैथिक चिकित्सा के कुपरिणाम से होता है और एलोपैथिक चिकित्सकों के हाथ से जो रोगी मेरे पास चिकित्सा के लिए आते हैं तो चिकित्सा आरम्भ करते ही मैं बेल और हायोस देता हूँ, यदि मस्तिष्क के उपसर्ग प्रधान हों तो ब्रायो या रस टाक्स उपयोगी है, यदि रोग आँतों के सान्निपातिक ज्वर से साथ हो। ऐसा रोग उन औषधों से तुरन्त आराम होता है, यदि समय पर होमियोपैथिक चिकित्सक बुलाये जायँ। ऐसे स्थल में अन्य औषधों की भी आवश्यकता हो सकती है, जैसे कि फास, फास एसि, कार्वोवेज, काक। यदि ऊपरलिखित औषधों से कालरा रोग आराम हो जाने के बाद अन्य उपसर्ग रह जायँ, जैसे कि पाकाशयिक गड़बड़ियाँ, मिचली, अपच आदि तो सल्फर ही उपयोगी औषध है, किन्तु अवस्थाओं के अनुसार कार्वोवेज, मर्क, ब्रायो और रस उसी तरह की लाभदायक औषधें हैं। सल्फ सबसे अधिक अच्छी दवा है, किन्तु यदि वह असफल हो जाय तो कैल्के, फास और सिके के द्वारा आँतों की कमजोरी भी अच्छी हो जायगी। सल्फ और कैल्के के द्वारा बाकी साधारण दुर्बलता सुधर जायगी, किन्तु चायना भी कभी-कभी उपकारक है।

(च) उपसंहार (Conclusion)—यद्यपि कालरा रोग के लिए एमो, कास्टि, आर्जे नाइ, ऐसार, कैन्था, सिके, कानि, डल्का, हेल, जेट्रोफा, स्ट्रैमो, टैबे, टार्ट आदि अन्य अनेक औषधें हैं तथापि मैंने उनमें से किसी का व्यवहार नहीं किया है क्योंकि मैंने उनका निर्देश नहीं पाया, इस कारण अन्धे की तरह उनका प्रयोग मैं नहीं करना चाहता। १८४६ ई० में मैंने कैम्फर का ही प्रयोग किया है, वह भी १२ शक्ति में और १८५३, १८५४, १८६५ और १८६६ में इसकी ३० शक्ति की ३ गोलियाँ थोड़े जल में घोल कर रोगी की अवस्था के अनुसार १।१ चम्मच आधे घण्टे, एक घण्टे, २ या ३ घण्टों के अन्तर पर सेवन कराने की व्यवस्था देता हूँ और यदि उपसर्ग

भयकर न हों जैसे कि कालरा के पूर्वावस्था में रहते हैं या यदि ज्वर न रहे। महामारी के समय उपसर्ग पुराने न हो जायँ तो इसकी ३० शक्ति की २ गोलियों की एक मात्रा सेवन कराने से रोगी अच्छा हो जाता है। इसी प्रकार मैंने कभी पारी-पारी से दो औषधों का सेवन नहीं कराया है, बल्कि बहुत ध्यान देकर जिस औषध को मैं चुनता हूँ, उसकी १ मात्रा देकर फल के लिए प्रतीक्षा करता हूँ, उसके बाद यदि फल सन्तोषजनक न हो तो मैं व्यवस्था-पत्र बदल देता हूँ। इस सिद्धान्त के अनुसार काम करके यथार्थ में ही मैं आश्चर्यजनक फल पाता हूँ और मैं ऐसी चिकित्सा करके सन्तुष्ट हुआ हूँ कि यदि औषध विशेष रूप से निर्देशित हो तो वह छोटी मात्रा दुहरायी जा सकती है तो रोग को वह तुरन्त आराम कर सकती है। कभी-कभी बड़ी-बड़ी मात्राओं की अपेक्षा यह छोटी मात्रा अधिक फलदायक होती है, जहाँ वैसी छोटी मात्रा से कोई फल न मिले तो उसकी बड़ी मात्रा से भी कोई लाभ न होगा। उस हालत में अन्य उपयोगी औषध चुनना चाहिए। इस पुस्तक की भूमिका में मैंने एक कालरा रोगी का विवरण दिया है। वहाँ वेरेट्र एल्ब ३० की गोलियों की १ मात्रा से चावल की घोवन की तरह मल भी आराम हुआ है, नाड़ी की गति बढ़ गयी है, दर्द और बेचैनी घट गयी है और स्वास्थ्य की उन्नति हुई है, दवाखाने में तरल औषध मँगाने के पहले ही मेरा चिकित्सा-कार्य सम्पन्न हुआ। मैंने अपने जीवन में देखा है कि १ मात्रा से ही रोगी अच्छा हो जाता है। किसी-किसी स्थान में मेरे पहुँचने के पहले ही रोग के लक्षण प्रकट होने पर रोगी ने इसकी कुछ गोलियाँ खा ली हैं तथापि यदि उपसर्ग उग्र हों तो एकाधिक मात्राओं की आवश्यकता होती है, वैसे क्षेत्र में मैं रोगी को तरल औषध १५ मिनटों के अन्तर पर १-१ चम्मच सेवन कराता हूँ। दिन भर में कोई बार गोली खिलाने की अपेक्षा इस नियम से फल अधिक मिलता है क्योंकि इससे दवा पाकाशय में पहुँचकर तुरन्त खून में मिल जाती है। इस पद्धति से और भी एक लाभ होता है कि चम्मच भर औषध बार-बार पिलायी जा सकती है जिससे रोगी को कोई हानि नहीं होती। निस्सन्देह यह तरीका

बड़ी मात्रा में बार-बार सेवन कराने की अपेक्षा अधिक स्वास्थ्यवर्धक है। कुछ भी हो, मुख्य बात है उपयोगी औषध का चुनना। यदि इस नियम की उपेक्षा की गयी तो रोगी की अवस्था संकटपूर्ण हो जायगी, चाहे बड़ी मात्रा दी गयी हो। मैंने एक रोगी में देखा कि एक साधारण मनुष्य अपनी चिकित्सा करने लगा, फलस्वरूप उसकी अवस्था बिगड़ती गयी। इसी प्रकार नवचिकित्सक जहाँ इपिकाक ३० से सुफल मिल सकता था अपनी अनुभवहीनता के कारण कूप्रम, वेरेट्र एल्ब और आर्स की व्यवस्था देकर आधे घण्टे के बाद पारी-पारी से दूसरी औषध देते हैं, किन्तु फल उल्टा होता है। इस कारण ऊपर लिखित औषध के सेवन से निश्चित आरोग्य-सम्पन्न होगा। मैंने ऐसी भी चिकित्सा देखी है जिससे रोगी के उपसर्ग बहुत बढ़ गये और प्रदाह अत्यन्त अधिक हुआ, फलस्वरूप रोगी का जीवनान्त हो गया। केवल दो रोगियों में भयंकर उपसर्गों को शान्त करने में मैं समर्थ हुआ था, एक रोगी को सिकेलि और दूसरे को इपिकाक दिया गया था, उसके बाद ऊपर लिखित औषधें बिना विचारे सेवन कराने से कदाचित् ही स्थायी आरोग्य सम्पन्न होता है। यदि एक औषध से लाभ दिखाई न पड़े तो अन्य उपयोगी औषध चुनी जा सकती है। इससे ऐसा सन्देह न होना चाहिए कि पूर्व औषध की शक्ति नष्ट हो जायगी, बल्कि वह अपनी क्रिया को प्रगट कर सकती है। इसके अतिरिक्त इस नयी औषध की आरोग्य-शक्ति में बाधा नहीं होगी। कालरा रोग में भी उपयोगी औषध चुनकर अल्प मात्रा से चिकित्सा शुरू करनी चाहिए और मामूली परिवर्तन को भी देखते रहना चाहिए। दिखाई पड़ेगा कि इस उपाय से धीरे-धीरे रोगी अच्छा हो गया है।

५—कब्जियत
(Constipation)

१—कब्जियत की आदत—लगातार कब्जियत चलती रहे तो जानना चाहिए कि वह शरीर की क्रिया या पुरानी बीमारी का परिणाम है और यह

स्वाभाविक है कि अधिकांश क्षेत्रों में इस रोग को आराम करना सहज नहीं है। मैंने ऐसे भी रोगी देखे हैं कि बहुत दिनों की पुरानी कब्जियत खास औषध से आराम होकर साफ दस्त होने लगा है जहाँ उपयोगी औषध की १, २ या ३ मात्राएँ देने पर ही लाभ हुआ, वह भी दो या चार दिनों तक। उसके बाद मैंने उस औषध को अपना काम करने के लिए कुछ सप्ताहों का समय दिया, बीच में कोई दूसरी औषध देकर उसकी क्रिया में बाधा नहीं डाली। ऐसा उत्तम फल सल्फ, कैल्के, लाइको, सीपिया, ग्रेफा, एलुमिन और केलि कार्ब देने से उत्पन्न हुआ था, जहाँ ब्रायो, नक्स वाम, ओपि, प्लेट, प्लम, कोक और वेरेट्र एल्ब का प्रभाव क्षणिक ही रहा।

२—आकस्मिक कोष्ठ-बद्धता (Accidental Constipation)—किसी एक व्यक्ति में एक सप्ताह तक पाखाना नहीं हुआ, उसकी चिकित्सा होमियोपैथिक चिकित्सक के लिए बहुत कठिन है। ऐसे रोगी के तलपेट में बहुत भारीपन के कष्ट का अनुभव होता है और वह चाहता है कि तुरन्त पाखाना हो जाय। इन्जेक्शन देने पर भी वहाँ कोई फल नहीं हुआ। ऐसी स्थिति में ओपियम से मुझे बहुत ही उत्तम फल मिला, खासकर जिस रोगी में मल का वेग बिल्कुल रुद्ध तथा मलद्वार बन्द मालूम होता है; उसी तरह प्लम और एल्यूमिन सफल है, यदि २४ घण्टों के अन्दर ओपियम की क्रिया न हो। जहाँ बहुत काँखने पर सूखे मल के कुछ टुकड़े ही निकलते हों वहाँ प्लेटिना लाभदायक है। इन औषधों के अतिरिक्त जहाँ विशेष निष्फल मलवेग है वहाँ सल्फ या नक्स वाम लाभकारी सिद्ध हुआ है, खासकर रक्तार्श वाले रोगियों में, जहाँ कब्जियत के साथ पाकाशय में भारी दबाव और मल बहुत कड़ा हो वहाँ लैकेसिस, यदि गरमी की ऋतु में कब्जियत हो तो ब्रायोनिया से वह अच्छी होगी। ऐसी परिस्थिति में ब्रायो और कभी कभी कार्बोवेज से लाभ होता है; जो लोग अधिक समय तक बैठे रहते हैं उनकी कोष्ठबद्धता नक्स वाम, ब्रायो या काक्कस से अच्छी होती है, बच्चों, दूध पीते शिशुओं की कोष्ठबद्धता नक्स वाम या ब्रायो से खुल जाती है, गर्भवती स्त्रियों के लिए सीपिया। नक्स वाम, ब्रायो और

एल्यूमिन, प्रसूति स्त्रियों के लिए ऊपर लिखित औषधों के अतिरिक्त प्लैट, एण्टिम या ओपियम; बहुत अधिक घूमने या गाड़ी की सवारी करने से कोष्ठबद्धता के लिए एल्यूमिन, प्लैट, वृद्ध व्यक्तियों में कोष्ठबद्धता उदरामय में परिणत हो तो एण्टि-क्रूड, फास, लैक, ब्रायो, शराबियों में खासकर नक्स वाम, सल्फ, कैल्के, लैक, रेचक औषध लेने के बाद कब्जियत रह जाय तो ओपि, नक्स वाम, लैक, एण्टि, सीसा रंगसाज आदि के लिए ओपि, प्लेट, एल्यूमिन।

६—सरलान्त्र और मलद्वार के रोग

(Affections of the Rectum and Anus)

१—अर्श की शिकायतें—किसी-किसी रोगी के मलद्वार में अर्श के कारण गिल्टियाँ हो जाती हैं, किन्तु खून नहीं निकलता या कोई दूसरा उपसर्ग भी नहीं होता तो पल्स ही एकमात्र औषध है, इससे तुरन्त आराम मिलता है, खासकर स्त्रियों को, उसी तरह पुरुषों के लिए नक्स वाम; साधारणतया विभिन्न अवस्थाओं के लिए इग्ने, कैप्स, सल्फ, आर्स, यदि गिल्टी बड़ी हो और ऊपर लिखित औषधें यथेष्ट न हों तो बेल, म्यूरि एसि और थूजा कभी-कभी लाभदायक हैं। यदि मलद्वार की गिल्टी बाहर निकल आवे तो सल्फ, कैल्के और नाइट एसि, और यदि मलद्वार के चारों ओर गद्दी की तरह दर्दनाक वृद्धि हो और नक्स वाम, तथा कैल्के यथेष्ट न हो तो म्यूर एसि अति उत्तम फल देगा या वहाँ बहुत खुजली हो तो एकोन, सल्फ, नक्स वाम, कार्बोवेज, इग्ने, आर्स और यदि बाहर निकली हुई गिल्टियाँ सिकुड़ जायँ तो एकोन, इग्ने, बेल, सिपि, यदि उन गिल्टियों में जलन और दर्द हो और पल्स उस अवस्था को प्रशमित करने में समर्थ न हो, किन्तु जलन का दर्द उस अंश में घट जाय तो आर्स या कार्बोवेज और उसी तरह सल्फ, कैप्स, नक्स वाम, यदि उन गिल्टियों में घाव हो तो इग्ने और यदि वहाँ डमने का-सा बहुत दर्द हो तो एकोन, इग्ने, कार्बोवेज, नक्स वाम, सल्फ, नाइट एसि,

यदि गिल्टियों में पीब बन जाय तो पल्स, सल्फ या इग्ने, यदि बार-बार खून निकले, खासकर मलत्याग के समय या बाद में तो एकोन, कार्बोविज, नक्स वाम और उसी तरह कैमो, बेल, सल्फ, म्यूर एसि और केलि कार्ब, यदि तरी से रस टपके तो सीपिया, सल्फ, फास, यदि मलद्वार से बहुत अधिक खून गिरे तो एकोन तुरन्त लाभ पहुँचायेगा, उसी तरह बेल, कैप्स, सल्फ, म्यूर एसि और कभी-कभी इपिकाक, यहाँ तक कि चायना, यदि मलद्वार से लगातार कफ निकलता रहे तो फास, सिपि, एन्टि क्रूड और कार्वोवेज तथा कभी-कभी नक्स वाम, सल्फ, और कैप्स, और यदि कफ के साथ बहुत कुन्थन रहे, और यदि कफ के साथ खून मिला हुआ रहे और सल्फ या नक्स वाम सफल न हो तो कैप्स, इग्ने या पल्स। अन्त में यदि रक्तार्श अन्य उपसर्ग पैदा करे और खून बहना रोक दे, फल-स्वरूप सिर में रक्त का प्रवाह हो तो नक्स वाम, कैल्के या सल्फ से अधिकांश क्षेत्रों में आराम प्राप्त होगा, और इसी तरह कभी-कभी कार्वो वेज या बेल; छाती के अन्दर खून का प्रवाह हो साथ में श्वासकष्ट, दिल की धड़कन आदि रहे तो सल्फ, पल्स, आर्स, उदर में कष्ट हो, पेट फूल जाय, मिचली, उदर में रक्तसंचय हो तो नक्स वाम, सल्फ और कभी-कभी कार्बो वेज, कैप्स, ग्रैफा, कैल्के, यदि रक्तार्श के साथ शूल का दर्द हो, खासकर सल्फ या यदि उसके साथ बहुत अधिक अफरा रहे तो नक्स वाम, या कार्वो वेज और यदि उसके साथ घबराहट और अस्थिरता रहे तो आर्स, यदि उसके साथ पीठ के निचले अंश में पेट में दर्द रहे तो खासकर नक्स वाम या सल्फ, यदि बार-बार दर्द हो तो आर्स; एकोन, बेल, नक्स वाम, कैमो, कैप्स, यदि रात को भारी बेचैनी रहे तथा रक्तकोषों में जलन मालूम हो और भारी दुर्बलता रहे तो आर्स, यदि उसके साथ कब्जियत रहे, मल न निकले तो कैल्के, सल्फ, नक्स वाम, ग्रैफा, आस, साथ में पतले दस्त या नरम मल हो तो पल्स, फास, सल्फ, नाइट एसि या कैल्के, मूत्रथैली में कष्ट के कारण मूत्रकृच्छ् आदि रहे तो एकोन, नक्स वाम, पल्स और कभी-कभी सल्फ। (डॉ० हैम्पल का मत

है कि रक्तार्श में एस्क्यूलस, कालिनसोनिया और हेमामेलिस विशेष उपयोगी है)।

२—मल द्वार और सरलान्त्र के अन्य रोग (Other Affections of the Anus and Rectum)—सरलान्त्र में नासूर हो तो वह सबसे कठिन अवस्था है। ऐसी अवस्था में प्रत्येक बार मलत्याग के साथ वहाँ जलन हो तो प्रायः रोगी कष्टदायक चीर-फाड़ को भी पसन्द करता है, क्योंकि वह कष्ट अधिक समय तक सहन नहीं कर सकता। इस रोग की कुछ हल्की अवस्था में मैंने त्वगोत्पाटन करके, विशेष रूप से इग्ने, कैल्के और साइलि के साथ सल्फ देकर विशेष उपकार पाया है। बार-बार सरलात्र बाहर निकल आवे तो मैं इग्ने और नक्स वाम के अतिरिक्त अन्य कोई औषध नहीं जानता, यदि इससे सुफल न मिले तो सीपि, कैल्के और सल्फ, यदि निकला हुआ सरलात्र उसी समय प्रदाहित हो तो एकोन या मर्क सहायता देगा, यदि वह प्रत्येक बार पेशाब करने के साथ निकल आवे और इग्ने और नक्स वाम लाभदायक न हो तो म्यूर एसि देना चाहिए, यदि चलते समय रोगी के मलद्वार से सरलान्त्र निकल आवे तो आर्न या सीपि और यदि किसी खास कारण के बिना वह निकल आवे, खासकर बहुत तेज उदरामय के बाद हो तो रूटा देना चाहिए (डॉ० हैम्पल ऐसी अवस्था में हेमामेलिस को उत्तम समझते हैं)। यदि सरलान्त्र में कर्कट रोग हो और उसके साथ मलद्वार की संकोचक पेशी में पक्षाघात हो तो उसकी चिकित्सा का मुझे अनुभव नहीं है।

—:o:—

अध्याय—१६

मूत्रयन्त्र तथा मूत्र निर्गमन के रोग
(Affections of the Urinary Organs & Urinary Secretions)

१—एक-एक अंग के रोग
(Affections of Single Organs)

१—गुर्दे के रोग (Renal affections)—तरुण वृक्क-प्रदाह में जहाँ एकोन से लाभ न हो वहाँ कैनाबिस ही मेरी प्रथम औषध है, जिसके द्वारा मैंने थोड़े दिनों में इस रोग को आराम किया है, कभी-कभी एकोन से भी लाभ हुआ है, चाहे पेशाब के साथ खून क्यों न निकले। थोड़े रोगियों में मुझे कैन्थर का प्रयोग करना पड़ा और उसने सूजन के बाद वाले वृक्कप्रदाह को भी आराम किया है जिसके लिए नक्स वाम, पल्स और सल्फ की सहायता लेनी पड़ी, किन्तु गुर्दे में सूई चुभने की तरह दर्द के साथ भयकर शूलवेदना और बहुत अधिक घबड़ाहट के क्षेत्र में बेल से सहायता मिली, उसी तरह जहाँ प्रदाह के साथ ऐंठन अण्डकोषों तक फैले वहाँ पल्स से उपकार मिला है। यदि अधिक शराब पीने के कारण गुर्दे में प्रदाह हो और उसके साथ तरुण ज्वर रहे तो नक्स वाम से अधिक एकोन और केनाबिस से बहुत लाभ होता है। पुराने वृक्कशूल में नक्स वाम और कैन्था से बहुत उत्तम फल मिलता है। यदि दर्द पथरी के कारण हो तो उत्तम औषधें हैं केनाबिस और कभी-कभी पल्स और जिंक, यहाँ तक की लाइको भी उत्तम फल दिखाता है। यदि गुर्दे में पीब हो और वह क्षयप्राप्त होने लगे तो पल्स सार्थक प्रमाणित होगा। इन सभी

क्षेत्रों में दर्द की विशेषता पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह किसी भी औषध के लिए विश्वास योग्य निर्देशक लक्षण नहीं है और यदि नये चिकित्सक इसी दर्द के लक्षण से चिकित्सा करने लगें तो भूल करेंगे।

२ – मूत्रथैली के रोग (Affections of the Bladder) - तरुण वृक्क-प्रदाह में केनाविस जो काम करता है वही काम कैन्थ मूत्राशय-प्रदाह में करता है। यद्यपि इस क्षेत्र में तेज बुखार रहे और प्रथम स्थान में एकोन का निर्देश हो तो वह सभी कष्टों को दूर कर देगा। यदि मूत्रथैली के स्थान में बाहरी ओर बहुत अधिक गरमी और लाली रहे और रोगी दबाव की शिकायत करे तथा काटने और वेग देने से दर्द की बात कहे तो पल्स उसी तरह सफल सिद्ध होगा। अन्य औषध है कैन्थर। खूनी निस्स्राव बूंद-बूंद टपकने पर, पेशाब एकदम रुक जाय तो केनाविस; यदि इससे उपकार न हो और मूत्रथैली बहुत फैल जाय, साथ में बहुत जलन, तेज प्यास और दर्द रहे तो आर्स उत्तम फल दिखायेगा और नक्स वाम प्रदाह दूर होने के बाद जो दर्द और कष्ट बाकी रहे उसके लिए उत्तम औषध है। पुराने वृक्क-प्रदाह में यदि उसके साथ मलद्वार से खून बूंद बूंद गिरे तो कैन्थ बहुत ही लाभदायक है। ऐसे क्षेत्रों में लाइको और कालो की तरह नक्स वाम अधिक उपयोगी है।

३—मूत्र थैली की सर्दी (Catarrh of the bladder)—एकाएक सर्दी लग जाने से बहुत तेज कष्ट होता है वैसी स्थिति में यदि डल्का और पल्स से उपकार न हो तो लाइको कभी-कभी आराम पहुँचाती है, यदि पेशाब से दुर्गन्ध निकले और यदि इस कष्ट के साथ तीव्र प्रसव-वेदना उदर से नीचे जाँघों तक फैले तो कालो। यदि वह सर्दी पुरानी हो जाय तो डल्का, लाइको और पल्स के अतिरिक्त अनेक रोगियों में सल्फ सहायता देता है। यदि सर्दी मूत्रकृच्छ्र के बाद भी रह जाय तो कार्बो वेज या नक्स वाम उपयोगी है। इस प्रकार के रोग में यवा उर्सि की सिफा-

रिश की जाती है। मेरे हाथ के एक ही रोग में इससे यथार्थ और शीघ्र आराम हुआ था जहाँ कफ के साथ खून मिला हुआ था।

४—पेशाव मे खून आना (Haematuria)—ऐसी हालत में यदि अन्य कोई दवा का निर्देश न हो तो केनाबिस ही मेरी उपयोगी औषध है और यदि यह तुरन्त आराम न दे तो कैन्थर। यदि इन दोनों औषधों से कोई फल न निकले और अधिक शराव पीने के कारण ऐसा कष्ट हो तो मैं नक्स वाम देता हूँ; यदि खून निकलने के साथ गुर्दों मे दर्द हो और पेशाव हरा-सा निकले तथा वहाँ अनेक जड़ों वाला फोड़ा हो तो कैल्के; यदि मूत्रथैली मे वहुत अधिक दर्द हो, साथ में तलपेट में गरमी का अनुभव हो और भारी दुर्वलता मालूम हो तो इपिकाक; यदि मूत्रथैली मे जलन का कष्ट हो तो आर्स, कैन्था, सल्फ या पल्स उपयोगी है। [डा० हैम्पल के मत से एकोन भी], मूत्रनली में काटने और डसने का सा दर्द, सल्फ, मर्क या कैन्था, यदि मूत्रथैली से पीठ के निचले भाग और जाँघों में प्रसव-वेदना की तरह ऐंठन हो तो पल्स, सल्फ, नक्स वाम; यदि उसके साथ असाध्य कब्जियत और खून के थक्के निकलें तो लाइको; यदि खून का निस्स्राव हो साथ में पेशाब या पेशाव के वाद खून आवे तो कैन्था, मर्क, कैल्के, लाइको, कैनाविस, यदि खून दो वार पेशाव के वीच मे निकले तो इपि या नाइट एसि, यदि मलद्वार या मूत्रथैली से खून निकले तो एकोन, सल्फ, आर्स, कैल्के, नक्स वाम; कार्वो वेज, [डा० हैम्पल का अभिमत है कि पेशाव में खून आने की अवस्था में एरिजिरन केनेडेन्स को नहीं भूलना चाहिए]।

५—मूत्रकृच्छ्र (Stranguria)—यहाँ भी प्रधान औषध है एकोन खासकर जव पेशाव वहुत कष्ट से बूँद-बूँद गिरे और उसके साथ पेशाब गहरे रंग का लाल और गँदला हो या रक्तार्श के स्राव के दव जाने से विशेष कष्ट होने लगे या अधिक शराव पीने से रोगी वेचैन हो जाय तो नक्स वाम या मासिक ऋतु के दव जाने के कारण मूत्रकृच्छ्र हो तो पल्स। यदि इस

प्रकार के कष्ट के साथ गुर्दे और मूत्रथैली में जलन हो तो ऊपर लिखित औषधों के अतिरिक्त कैनाबिस और कैन्थर उपकारक हैं और यदि पेशाब के साथ कुछ खून मिला रहे तो मर्क, होपर या नक्स वाम। इसके ऊपर यदि बहुत अधिक लगातार पेशाब का वेग हो तो एकोन, नक्स वाम, मर्क, कैन्था, लाइको, यदि पेशाब बूँद-बूँद गिरे तो एकोन, नक्स वाम, कैन्था, कैनाबिस, मर्क; यदि पेशाब करते समय जलन हो तो मर्क, लाइको (डा० हैम्पल के अनुसार एकोन भी); पेशाब करने के बाद दर्द हो तो नक्स वाम। रक्तार्श के स्राव के रुक जाने के बाद खासकर एकोन, नक्स वाम, मर्क, सल्फर, कैल्के, कार्बोवेज, आर्स।

६—मूत्रावरोध (Ischuria)—यदि केवल स्नायविक कारणों से पेशाब रुक जाय, साथ-साथ कब्जियत रहे जो भय या नाराजगी के कारण पैदा हुई हो तो **ओपियम** तुरन्त लाभ पहुँचायेगा। यदि मूत्रथैली पेशाब के रुक जाने के कारण बहुत फैल गयी हो और वहाँ एक प्रकार का पक्षाघात पैदा हो गया हो तो हेल, आर्स या नक्स वाम। मूत्र रुक गया हो या मूत्रथैली में पक्षाघात के कारण पेशाब करने में कष्ट हो तो आर्स, कभी-कभी डल्का।

७—पथरी (Lithiasis, gravel, stone)—मूत्रथैली में पथरी बन जाने पर उसको निकालने के लिए लाइको, कैल्के, यूरि, ओपि और सारसा की जो प्रशंसा की जाती है उससे मैं सहमत नहीं हूँ, क्योंकि पथरियों के बढ़ जाने पर इनकी छोटी या बड़ी मात्रा से कोई फल नहीं होता। मेरे हाथ में पल्स, केना, सारसा और लाइको गुर्दे के शूल घटाने और मूत्र पथरी को मूत्रनली के भीतर से निकाल डालने का आश्चर्यकारक फल दिखाते हैं। ऐसे क्षेत्रों में नक्स वाम, वेल या जिंक कदाचित् ही सफल होता है। जिन रोगियों की मूत्र-पथरी छोटी हो या बड़ी, पेशाब के रास्ते से निकलते समय बहुत कष्ट होता है उनके लिए लाइको, सारसा और कैल्के उपकारी औषधियाँ हैं। यदि पथरी एकदम गायब न हो जाय तो भी मेरी औषधों से वह गल जायगी या उसका आकार बहुत छोटा हो जायगा।

२—मूत्र-निर्गमन में कष्ट

(Morbid Urinary Secretions)

१—अनजान मे पेशाव निकलना, विछौना भीगना (Involuntary urination wetting the bed)—अपने आप पेशाव निकलने के विषय में डा० रीकर्ट की पुस्तक खण्ड २ पृष्ठ ४८ में जो औषध निर्वाचन के लक्षण लिखे गये हैं, उनके सिद्धान्त के अनुसार वे सत्य हो सकते हें, किन्तु मेरे विचार से वे निश्चित लाभकारी औषधें नहीं हैं। मेरे हाथ में उसके विपरीत अवस्थाओं के लिए वे औषधें फायदेमन्द प्रमाणित हुई हैं। किसी खास रोगी के उपसर्गों को देखकर चिकित्सक लक्षणानुसार औषध निर्वाचन करें तो वे सफल हो सकते हैं। किन्तु उस पुस्तक में लिखित लक्षण सर्वत्र चिकित्सक नहीं पाते। ऐसे भी अनेक लक्षण हैं जिनकी सूचना वहाँ नहीं मिली। वहाँ लिखा गया है कि बेलेडोना १४ वार, आर्सेनिक १ वार आदि प्रयोग किये गये हैं, किन्तु हमारे चिकित्सकों ने उनसे कहीं भी सफलता नहीं प्राप्त की है। बच्चों के अपने आप पेशाब होने से मेरे हाथ से सल्फ ने जादू दिखाया है, चाहे वह बच्चा गोरा हो या काला, मोटा ताजा हो या दुवला-पतला, उपेक्षित हो या लाड़-प्यार से पाला-पोसा गया हो, पीला या लाल हो, खुजली दब गयी हो। इस मूत्ररोग के साथ अन्य उपसर्ग के अनुसार कोई औषध निर्देशित न होने तक मैं सदा सल्फर से ही चिकित्सा शुरू करता हूँ, वह भी ८ दिनों में २ या ३ मात्रायें जिसका फल देखने के लिए मैं बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करता हूँ। यदि इस औषध से काम न हो और रोगिणी युवती हो तो मैं सीपि, बेल या पल्स देता हूँ और छोटे वालकों के लिए मुख्यतया कास्टि, छोटे-छोटे बच्चों के लिए कैल्के। इस उपाय से मैं सफल होता हूँ, यहाँ तक कि छोटे बच्चों के रात के बिछौना भिगोने का लक्षण न रहने पर भी मैं उसी औषध से चिकित्सा चलाता हूँ। यदि खास निर्देशक लक्षण मिल जाय तो मैं गण्डमाला वाले रोगियों को खासतौर पर बेल, सल्फ या कैल्के; यदि कृमि का उपसर्ग रहे

तो सिना देता हूँ। यदि रात्रि के प्रथम अंश में कोई बच्चा बिछौना भिगो दे तो सीपिया या कास्टि; और यदि बच्चे दिन-रात अपना वस्त्र भिगोते रहें तो बेल या कास्टि। बड़े लोग यदि पेशाब को रोक न सकें, जो मूत्रथैली की गर्दन में एक प्रकार के पक्षाघात के कारण हो तो मैं कास्टि से उसे आराम करता हूँ, कदाचित् आर्न, हायोस, रस और रूटा की भी आवश्यकता होती है (डॉ० हेम्पल का कथन है कि मूत्र में अण्डलाल का निस्सरण हो तो हेलोनाइन और कान्थिनियल प्रथम अवस्था में उत्तम औषधियाँ हैं।)

२—बहुमूत्र (Diabetes)—पेशाब में श्वेतसार की तरह वस्तु निकले, जिससे शोथ रोग पैदा हो सकता है, ऐसी अवस्था में आर्स, फेर, काल्चि, लाइको और सल्फ को बहुत ही सफल पाया, यदि पेशाब के साथ चीनी निकले, जिसके परिणाम में फेफड़े का यक्ष्मा रोग उत्पन्न हो सकता है तो वहाँ मैं फास एसि, कभी-कभी प्लम और आर्जे का व्यवहार करता हूँ, उसी तरह कार्बोवेज और फास मेरे हाथ में उत्तम फलदायक प्रमाणित हुए हैं; कुछ रोगियों में मुझे सल्फ, मर्क तथा आरम अन्य औषधों के बीच में देने से बहुत लाभ हुआ है। दूध-सा पेशाब हो तो मैंने फास एसि, कार्बोवेज, डल्का और म्यूर एसि से कभी-कभी यथेष्ट लाभ पाया है। बहुत अधिक पेशाब होने पर यदि उसमें रासायनिक परिणाम न हो तो मैं प्रायः सल्फ, रस, नेट म्यूर, साइली से सफल होता हूँ। यदि रोगी को पेशाब करने के लिए रात में बार-बार उठना पड़े तो सल्फ सीपी, साइली, आर्स, नेट म्यूर, रस और कैल्के लाभदायक औषधियाँ हैं।

—o—

अध्याय—१७

पुरुषांग के रोग

(Diseases of the Male Genital Organs)

१—एक-एक अंग के रोग

(Diseases of Single Parts)

(प्रमेह और गरमी के रोगों की चिकित्सा के लिए डॉ० जार की 'गरमी रोग पुस्तक' की डॉ० चास जे० हेम्पल एम० डी० के द्वारा अनुवादित पुस्तक देखिए ।)

१—अण्डकोष-प्रदाह (Orchitis, Inflammation of the testicles)—प्रमेह रोग की चिकित्सा अच्छी तरह न होने पर या उसे दबा देने के कारण अण्डकोषों में प्रदाह उत्पन्न होता है । अधिकांश क्षेत्रों में यह रोग मर्क ३० की ३ गोलियाँ जल में घोलकर ३-३ घण्टे पर १-१ चम्मच देने से आराम हो जाता है । यदि यह यथेष्ट न हो तो पल्स उसी रीति से दिया जाय और कभी-कभी आरम, यदि सूजन में प्रदाह और दर्द हो तो एकोन से रोगी अच्छा हो जायगा । यदि प्रदाह किसी वाहरी चोट से पैदा हो और आर्न निष्फल प्रमाणित हो जाय तो रस और पल्स तथा बहुत पुराने रोगियों में कोनियम से विशेष लाभ होगा । यदि अण्डकोषों के प्रदाह से विसर्प रोग पैदा हो जाय तो बेल, रस, आर्स और मर्क से विशेष उपकार होगा । यदि प्रदाह घट जाने के बाद अण्डकोषों में पुरानी सूजन रह जाय और घट जाने पर भी वह सूजन थोड़ी-बहुत दिखाई पड़े, साथ में दर्द हो तो नक्स वाम से उपकार होगा, यदि वह दर्द ऐंठन वाला या गला रूँधने वाला हो अथवा निरन्तर आक्षेप वाला या दबाने वाला दर्द,

जिसके साथ शुक्र-रज्जु के भीतर तक सूई चुभने या खींचने वाला दर्द हो तो स्पाजिया, और कभी-कभी क्लेमेटिस, यदि अण्डकोष ऐंठन के साथ ऊपर खिंच जायँ और दर्द ऐंठन वाला हो या तपायी हुई सूई चुभने की तरह जलन हो तो स्टेफि। अण्डकोषों की पुरानी सूजन थोड़ी-बहुत कड़ी हो तो आरम सहायता देता और वेराइ, पल्स, लाइको या क्लेमे उपकारी हैं, जब कड़ी सूजन का मूल पहले का सूजाक या अन्य कोई कारण हो।

२—अण्डकोषो मे पानी आ जाना (Hydrocele)—मैंने ऐसे रोगी को ग्रेफा और रोडो से आराम किया है, किन्तु उमरदार आदमियों में वह रोग यदि पुराना हो तो इस औषध से विशेष लाभ न होगा (डॉ॰ हैम्पल के मतानुसार कल्के ही बच्चों के लिए फायदेमन्द दवा है।)

३—कामग्रन्थि के रोग (Affections of the Prostate Gland)—यदि दवे हुए या कुचिकित्सक द्वारा सूजाक दबा दिये गये हों और फलस्वरूप कामग्रन्थि या मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थि में जलन होने लगे तो नाइट्रिक एसिड ३० की गोलियाँ जल में घोलकर पिलाने से समस्त कष्ट दूर हो सकता है। इसके लिए पल्स या थूजा की आवश्यकता नहीं होती। इस ग्रन्थि की पुरानी सूजन नाइट एसि से घट जाती है, किन्तु यदि पीब बन गयी हो तो सल्फ, नाइट एसि के पहले या बाद में देने से उत्तम फल मिलता है। उस ग्रन्थि की पुरानी सूजन और पीब होने के कठिन रोग में सल्फ ३० की गोलियाँ दिन में तीन बार सेवन् कराने से तुरन्त उन्नति दिखाई पड़ती है। यह उन्नति ३ सप्ताहों तक रहती है और बाद में सूजन और कड़ापन घट जाने पर तथा पीब मूत्रनली के भीतर से निकल जाने पर वह उन्नति स्थायी होती है; नाइट एसि के सेवन के बाद ४ सप्ताहों में रोग पूर्णतया आराम हो जाता है। यदि कुछ सूजन रह जाय तो सल्फ की १ मात्रा देने से वह सूख ज.ती है और साइलीशिया के सेवन से थोड़ा-बहुत कड़ापन भी जाता रहता है।

४—लिंगमुण्ड-प्रदाह तथा योनि के बाहरी भाग की दाद (Balano-rrhoea and herpes pudendorum)—यदि लिंगमुण्ड-प्रदाह

साधारण हो या गरमी या सूजाक के कारण उत्पन्न न हो तो वह सीपि या नाइट एसि से बहुत शीघ्र आराम हो जाता है। योनि के बाहरी भाग की दाद के लिए भी ये दोनों औषधियाँ बहुत ही उपकारी हैं। इनसे ८ या १० दिनों के अन्दर सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। यदि बहुत साफ-सुथरा रहने पर भी फिर से जलन का कष्ट होने लगे और सीपिया सहायता न दे तो सल्फर से उपकार होगा। कुछ चिकित्सक इलका और पेट्रोल की प्रशंसा करते हैं, किन्तु मेरे हाथ में वे निरर्थक सिद्ध हुए हैं। डॉ० हेम्पल के मतानुसार यदि गरमी या सूजाक के बिना भी लिंगमुण्ड-प्रदाह हो तो म्यूरियेट आव एमोनिया (Muriate of Ammonia) के घोल का बाहरी प्रयोग करने से उपकार होगा।

२—अस्वाभाविक सम्भोग-क्रिया

(Abnormal Sexual Functions)

१—रात्रि का स्वप्नदोष, हस्तमैथुन (Nocturnal emissions, pollutions)—यदि हस्तमैथुन करने वाले व्यक्तियों में इस प्रकार का वीर्यपात होता रहे या उसके फलस्वरूप वह अंग कमजोर हो जाय या यदि सम्भोग की इच्छा घट जाय तो मैं फास एसि॰ १८ की कुछ मात्रायें देता हूँ और उससे अच्छा फल मिलता है और यदि वह यथेष्ट न हो तो सल्फ, कार्ब या सीपिया से उस कमजोरी को स्थायी रूप में मिटा देता हूँ। यदि रोगी उस समय निरन्तर लिंगोत्थान से कष्ट पाता हो तो नक्स वाम तुरन्त सहायता देगा, यदि वह यथेष्ट न हो तो मैं प्रायः फास, लाइको या कार्बोवेज तथा उसी तरह सल्फ और कैल्के से उत्तम फल पाता हूँ (डिजिटेलिन भी प्रथम या द्वितीय दशमिक विचूर्ण की १ मात्रा सुबह के जलपान के पहले सेवन कराने से लाभ होता है।)

१—वर्धित इन्द्रिय-वासना (Increased sexual possitions)—यदि इन्द्रिय की उत्तेजना शरीर की अपेक्षा मन में अधिक हो और उसके साथ काम-वासना बहुत बढ़ती रहे तो कार्बोवेज, चायना, कैल्के, लाइको

और नेट म्यूर और कभी-कभी वेरेट्र एल्ब तथा हायोस से मुझे अधिक लाभ मिला है। यदि जननेन्द्रिय शिथिल हो गयी हो तो लाइको और कैल्के उपयोगी हैं। यदि इन्द्रिय की उत्तेजना शरीर में अधिक हो, साथ में लिंगोत्थान तथा उस अंग में उत्तेजना हो तो नक्स वाम, फास, नेट म्यूर और प्लेट (पुरुषों के लिए भी)। मेरे हाथ में अत्यन्त लाभकारी प्रमाणित हुए हैं, यहाँ तक कि आरम भी मेरे हाथ में विशेष सफल प्रमाणित हुआ है।

३—नपुंसकता, इन्द्रिय-शक्ति की दुर्बलता (Impotence, weakness of the sexual power)—यदि यथार्थ नपुंसकता हुए बिना भी इन्द्रिय-भोग की इच्छा से स्तब्ध रहे, किन्तु अपने आप लिंगोत्थान होता रहे तो कान, कैन, लाइको या कैल्के कभी कभी नेट म्यूर से आराम मिलता है। यदि पूर्णतया नपुंसकता हो गयी हो और सम्भोग के समय लिंगोत्थान अल्प हो या वह एकदम न हो तो ऐसी अवस्था के लिए लाइको, सल्फ, इग्ने, उसी तरह कैल्के, केनाबिस, कोनियम तथा कैलेडियम उत्तम औषधियाँ हैं, खासकर जो मनुष्य कामोपभोग की कल्पनायें करता रहता है।

४—हस्तमैथुन के कुपरिणाम (Consequences of Onanism)—यदि रोगी उस बुरी आदत को छोड़ना चाहता हो तो नक्स वाम, सल्फ और कैल्के बहुत सहायक होंगे, यदि रात्रि का स्वप्नदोष रह जाय और वह सल्फ और कैल्के से न घटे तो उत्तम औषधियाँ हैं फास एसि, कोनियम और सीपिया।

—०—

अध्याय—१८

स्त्री-जननेन्द्रिय के रोग तथा उसके कार्य

(Diseases of the Female Organs and their functions)

१—मासिक धर्म

(Menses, Catamenia)

१—ऋतु विलम्बित, रजोनिवृत्ति (Absent menses, menostasia)—यदि लड़कियों का प्रथम मासिक धर्म होने में विलम्ब हो तो पल्स, यदि वह सफल न हो, खासकर ऋतु के बदले प्रदर स्राव हो और रोगिणी देखने में पीली तथा उसकी छाती में रक्त संचार होने से कष्ट हो तो ऐसी अवस्था में सीपिया सफल प्रमाणित होगा, किन्तु मैं सीपिया को तब तक सफल नहीं मानता जब तक पल्स तुरन्त कुछ क्रिया न दिखावे। उसके बाद सीपिया कुछ मात्रा में लाभदायक हो सकता है। यदि रक्ताल्पता की अवस्था न होते हुए भी जिसके लिए ऊपर लिखित दोनों औषधें उपयोगी हैं, किसी स्त्री में रक्ताधिक्य दिखाई पड़े तो मैं पल्स न देकर ब्रायो देता हूँ। विशेष-रूप से यदि इस अवस्था के साथ सिर की ओर खून का प्रवाह हो, बार-बार नाक से खून गिरे तो सीपिया के बदले कैल्के देता हूँ; इस उपाय से निम्न गति से मेरा उद्देश्य सफल होता है, यद्यपि मेरे पास ऐसे भी रोगी थे जिन्हें, केलि कार्ब देकर आराम किया है, किन्तु किसी-किसी को बेल से और अन्यों को एकोन और लाइको से आराम किया है।

२—अपर्याप्त, अत्यन्त अल्प मासिक धर्म (Insufficient, too short and too scanty menses)—यहाँ भी यदि खून पीला हो, तो केवल पल्स से ही उपकार नहीं होता, बल्कि ग्रैफा और कार्बोविज से

भी उपकार होता है, सबसे ऊपर सल्फ लाभकारी है। यदि इस अवस्था के साथ उदर में ऐंठन और श्वेत प्रदर हो तथा पल्स अच्छी तरह आराम करने में समर्थ न हो तो काक्कस अपरिहार्य पाया गया है। इन औषधियों के अतिरिक्त और भी अनेक औषधियाँ ऋतुस्राव के गायब होने में उपकारी हैं, विशेष रूप से सीपिया और केलि कार्ब, उसी तरह फास, एलुम, एमो कार्ब और कास्टि भी हैं, यदि अल्प ऋतु के साथ शोक और उदासी रहे तो नेट्रम म्यूर विशेष रूप से उपकारी है, यदि समय के पहले अल्प ऋतु दिखायी पड़े तो साइली लाभदायक है (डा० हेम्पल के मत से अल्प ऋतु के साथ यदि आँतों में ऐंठन का कष्ट रहे तो कालो फाइलिब प्रसिद्ध औषध है)।

३—बहुत ही अधिक रजःस्राव तथा बहुत ही शीघ्र बार-बार ऋतु होना (Extremely profuse and too frequent menses)—यदि लड़कियों में समय से पहले ऋतु हो तो नक्स वाम ही सर्वश्रेष्ठ औषध है, और यदि बार-बार हो तो प्लेट और कार्बोविज, सम्भवतः कैमो भी, खासकर यदि मासिक स्राव के साथ पीठ के निचले भाग में दर्द हो और खून गाढ़ा तथा थक्का-सा हो। यदि केवल स्राव प्रचुर ही नहीं, बल्कि बहुत दिनों तक स्थायी हो तो इपि सफल प्रमाणित होगा, इसी तरह इग्ने भी, खासकर यदि ऋतु प्रकट होने के साथ-साथ उदर में ऐंठन होती रहे और यदि ऋतु स्थायी रूप से प्रकट हो तो ब्रायो, लाइको या फास। अति रजः में निम्नलिखित औषधें उपयोगी पायी गयी हैं। कार्बोविज, नेट्रम म्यूर, कल्के, वेरेट्र एल्ब, फेरम और सेबाइना और कभी-कभी बेल और हायोस भी।

४—रजोलोप, रजोरोध, नष्टरजः (Suppression of the menses, amenorrhoea)—यदि एकाएक भय खाने के कारण ऋतु रुक जाय और यदि तुरन्त औषध दी जाय तो एकोन अल्प समय में ऋतुस्राव करायेगा, इसी तरह प्लेट और पल्स भी। यदि कुछ

२—विभिन्न अंगों से रक्तस्राव

(Discharges from the Parts)

१—जरायु से रक्तस्राव (Metrorrhagia)—यदि रक्तक्षय से विशेष शारीरिक हानि होने लगे और अन्य कोई औषध खासतौर पर निर्दे-शित न हो तो मैं इपिकाक का ही सदा प्रथम औषध के रूप में प्रयोग करता हूं, अधिकाश क्षेत्रों में यह रक्तस्राव को रोक देता है, यदि यह यथेष्ट न हो और रक्तस्राव बहुत तीव्र हो तो मैं सिकेलि देता हूं और यदि उससे तुरन्त आराम न हो तो चायना। बहुत अधिक खून गिर जाने के कारण यदि रोगिणी बहुत कमजोर हो गयी है तो मैं ऊपर की अन्तिम औषध का ही प्रयोग करता हूं। मेरे हाथ में ऐसी कोई भी जरायु से रक्तस्राव वाली रोगिणी नहीं आयी है जिसे ऊपर लिखित ३ औषधियाँ देने से उपकार न हो, जिससे अवस्था के अनुसार अन्य उपयोगी औषध चुनने में मुझे समय मिल जाय। अनेक क्षेत्रों में उपयोगी सूखी औषध की कुछ गोलियाँ जीभ पर छोड़ देने से रजःस्राव बहुत अंशों में घट जाता है और उसके बाद धीरे-धीरे एकदम रुक जाता है, और यदि रक्तस्राव के साथ साधारण आक्षेप रहे तो मैं हायोस देता हूं, यदि रक्तस्राव पुराना हो तो स्त्रियों के लिए, जो बहुत दिनों तक सौरी में न रही हो तो बेल, सेबाइ या सीपि देता हूँ, और यदि ये औषधें यथेष्ट न हों और अन्य कोई औषध खासतौर पर निर्देशित न हो तो मैं सिकेलि, चायना या फेरम से चिकित्सा करता हूं, खास लक्षणों के अनुसार यदि जननेन्द्रिय की ओर बहुत अधिक दबाव रहे तो मैं बेल, सेबाइ, प्लेट या सिके देता हूँ, पीठ के निचले भाग मे बहुत तेज दर्द के लिए बेल, प्लेट, इपि, सिके, क्रोक, चायना, फेरस, रस, प्रसव जैसी वेदना के लिए सेबाइ, सिके, प्लेट, पल्स, क्रोकस, हायोस और फेरम, यदि उसके साथ साधारण ऐंठन और ज्वर की तीव्रता के साथ प्रलाप रहे तो हायोस, यदि खून काला और थक्का-सा हो तो खासकर क्रोक, फेरम चायना, कैमो, पल्स, लाइको,

सेवाइ, यदि खून गहरे रंग का और तरल हो तो ब्रायो, प्लेट, सिके; यदि उज्ज्वल लाल हो तो इपि बेल, कैल्के, लाइको; यदि अत्यन्त दुर्गन्धित हो तो सिके, कैमो, बेल, क्रोक,सिमिसि, ट्रिल, एरिजे। (तरल सल्फ्युरिक एसिड के साथ सिनामोन का अर्क मिला कर प्रयोग करने से योनि का अधिक रक्तस्राव रुक जाता है) यदि गर्भावस्था में जरायु से रक्तस्राव होने लगे और गर्भस्राव होने का डर हो तथा इपि और सिके यथेष्ट न हों तो मैं कैमो या आर्न देता हूँ और यदि ये दोनों भी शीघ्र सहायता न दें तो मैं अवस्थाओं के अनुसार प्लेट, सेवाइ, पल्स, सीपि या फेरम देता हूँ, अधिकाश क्षेत्रों में इपि या सिकेलि ही यथेष्ट है (डॉ० हैम्पल के अनुसार एकोन और हेमामेलिस)। यदि सौरी में वैसा रक्तस्राव हो, चाहे स्वाभाविक प्रसव या गर्भस्राव हो तो मैं पहले इपि देता हूँ और यदि वह यथेष्ट न हो तो सिके, सेवाइ, प्लेट, चायना या फेरम देता हूँ, बशर्ते कि कैमो, लाइको, हायोस या बेल का विशेष रूप से निर्देशक न हो।

२—श्वेतप्रदर (Leucorrhoea)—योनि से निकलने वाले जो स्राव लाल रंग के न हों, उन्हें हमारे बहुत-से होमियोपैथ डाक्टर श्वेतप्रदर की संज्ञा देते हैं, वह स्राव किस कारण से हो रहा है, इस पर वे ध्यान नहीं देते; सम्भवतः चमड़े पर की खुजली या कर्कट रोग के कारण भी वैसा स्राव हो रहा हो अथवा जरायु या योनि के सर्दी-रोग के कारण वैसा हुआ हो या उससे पहले सम्पूर्ण भिन्न कारण हो. जैसे कि दाद, कर्कट या यहाँ तक कि उपदंश के गुप्त घाव या प्रदाह। श्वेतप्रदर के लिए जिन औषधियों का विवरण ऊपर दिया गया है, आधुनिक होमियोपैथ चिकित्सकों के हाथ में जरायु और योनि की सर्दी में वे औषधें सफल नहीं होतीं। किन्तु डॉ० रीकर्ट ने अपने ग्रन्थ में जिन ३० औषधों का विवरण दिया है, नव-चिकित्सकों के लिए वे विश्वास योग्य हैं। सर्दी वाले प्रदर रोग में पल्स, सापि, सल्फ, कैल्के, कावकस, ग्रेफा, लाइको और साइलो से मुझे उत्तम फल मिला है। एकोन, आयोडाइन, क्रियोजोट, बेराइ, कार्बो एनि और

फार्वोवेज, हीपर, केलि कार्व, मेजे, केलि फास, प्लेट, रूटा आदि औषधों के बारे में अन्य लेखकों ने बहुत कुछ लिखा है, किन्तु मेरे सामने किसी भी रोगी में इन औषधों का कोई फल नहीं दिखाई पड़ा। इस कारण मेरी राय में नये चिकित्सक कुछ चुनी हुई विश्वस्त औषधियों पर निर्भर रहें जिनके विषय में सफलता का मुझे स्पष्ट अनुभव है। विशेष निर्देशक लक्षण न रहने पर रक्तहीन रोगिणी, साथ में अल्प ऋतु हो तो मैं सर्दी वाले श्वेतप्रदर की चिकित्सा पल्स से शुरू करता हूँ, वह भी अवस्थाओं के अनुसार। यदि उससे लाभ न हो तो मैं सल्फ या सीपिया देता हूँ। यदि इनसे भी उपकार न हो तो मैं कावकस, कैल्के, ग्रैफा, लाइको, साइली, मैग्ने म्यूर में से किसी एक को चुनता हूँ, वह भी यदि खासतौर पर स्राव जरायु की अपेक्षा योनि से निकले। यदि जरायु में ही आक्रमण हो तो मैं एम कार्व, कावकस, लाइको,, मैग्ने म्यूर, नेट्र म्यूर, सीपि, साइली से विशेष सफलता पाता हूँ। यदि वहाँ की श्लैष्मिक झिल्लियों में सर्दी के कष्ट की अपेक्षा जलन हो और पानी-सा निस्स्राव निकले तो एम कार्व, सीपि, कावकस, ग्रैफा, पल्स, एल्यूम पर मैं पूर्णतया निर्भर रहता हूँ, दाद वाले, चमड़ा छिल जाने वाले श्वेतप्रदर के लिए एम कार्व, मर्क, नेट्र कार्व, नाइट एसि, हिप, कोन, कैल्के, साइली, नेट्र म्यूर, सल्फ, दूध की तरह श्वेतप्रदर के लिए कैल्के, पल्स, साइली, गाढ़े सफेद चिकने श्वेतप्रदर के लिए कैल्के, पल्स, सीपि, नेट्र म्यूर, पीले, चिकने, सीपि, लाइको, दुर्गन्धित श्वेतप्रदर के लिए नेट्र कार्व, नाइट एसि, यदि श्वेतप्रदर के साथ शूल या उदर मे ऐंठन हो तो मैग्ने कार्व, इग्ने, लाइको, नेट्र म्यूर, मर्क, मर्क म्यूर, सीपि, कावकस, कोनियम; साथ में जननेन्द्रिय में बहुत खुजली हो तो सीपि, कैल्के, सल्फ, कार्वोवेज, कोनियम, नेट्र म्यूर, साइली। यदि ऋतु के पहले श्वेतप्रदर हो तो कैल्के, फास, ग्रैफा, कार्वोवेज, चायना, सीपिया, पल्स; यदि वह ऋतु के बाद हो तो पल्स, एल्यूम, ग्रैफा, साइली, रूटा और कैल्के उपयोगी हैं।

३. विभिन्न स्थानीय रोग
(Various Local Affections)

१—जरायु-प्रदाह, जरायु में जलन (Metritis, inflammation of the uterus)—यदि यह प्रदाह तरुण हो और अन्य औषधि के लक्षण न रहें तो मैं हर क्षेत्र में बेल का प्रयोग करता हूँ, जो अधिकांश क्षेत्रों में पूर्ण आरोग्य के लिए यथेष्ट है। जिस रोगी में बहुत तेज बुखार है उसे मैं एकोन २४ घण्टों के लिए देता हूँ। यदि प्रदाह पुराना हो और बेल से फल न मिले तो मैं सीपि, पल्स, रस, काक्कस, मैग्ने म्यूर या लाइको देता हूँ। यदि सड़न या सदा घाव होने की शंका हो और आर्स निष्फल हो जाय तो डॉ० ग्रोस के अनुसार सिकेलि कार्न ही प्रथम उत्तम औषध है। एक असाध्य रोग के क्षेत्र में मैंने इस औषध की आश्चर्यकारक शक्ति देखी है। २८ वर्ष की एक स्त्री के ३ बार गर्भस्राव हुए थे, चौथी बार दिन पूर्ण होने पर उसे एक पुत्र हुआ। पहले तो मैंने इसे असाध्य समझ कर छोड़ दिया था। उसे अन्तिम बार सिकेलि दिया गया था। एक ३८ वर्ष की दूसरी स्त्री ने साबुन का झाग जरायु में डालकर छः बार गर्भस्राव कराया था। उसके बाद उसके जरायु में सड़न पैदा हो गयी, फलस्वरूप योनि से भूरे रंग का, सड़े मुर्दे की बदबू वाला स्राव निकलने लगा और उसमें अत्यन्त अवसाद, दुर्बलता, प्रलाप और सविराम ज्वर के साथ बेहोशी आने लगी थी। उसे भी सिकेलि दिया गया था।

२—योनिभ्रंश, उसमें कड़ापन, घाव और जरायु का कर्कट रोग (Prolapsus, induration, ulcers and carcinoma of the uterus) जरायु की स्थानच्युति में बेल, सीपि, प्लेट ही मेरी सदा से उत्तम औषधियाँ हैं, किन्तु कुछ आधुनिक खास परिस्थितियों में जैसे कि बोझ उठाने या ऊपर चढ़ने आदि में, नक्स वाम, खासकर बहुत ऊँचे पर चढ़ने से जरायु भ्रंश हो तो विशेष रूप से सल्फ या आरम।

कष्टकर प्रसव या प्रसव के बाद ही शय्या-त्याग करने से यदि जरायु की स्थानच्युति हुई हो, बेल और नक्स वाम असफल होने पर अनेक क्षेत्रों

में सिकेलि सफल होता है। अक्सर जरायु की स्थानच्युति के साथ पुरानी सूजन और जरायु का कड़ापन होता है, जिनमें आरम, वेव और सीपि उत्तम औषधियाँ प्रमाणित हुई हैं, उसी तरह कार्वो एनि भी है किन्तु ऐसे औषध की ३० शक्ति ही सफल होती है। मैं यहाँ ३ रोगिणियों का विवरण देता हूँ, जो शहर से बहुत दूर रहती थीं, जिनके जरायु के निम्नभाग में सूजन थी, वहाँ के चिकित्सकों यहाँ तक कि पेरिस के अध्यापकों ने यही निदान किया था। मैंने उसमें से एक को सीपिया से तथा अन्य दो को आरम और वेल से आराम किया था। वह आरोग्य ऐसा पूर्ण था कि उनके पूर्व चिकित्सकों ने बाद में सूजन के चिह्न मात्र भी नहीं पाया था। मेरी चिकित्सा के ६ से ९ महीने बाद उन तीनों स्त्रियों की छाती में पानी आ जाने के कारण मृत्यु हो गयी थी। बहुत दूर रहने के कारण मैं उनकी चिकित्सा नहीं कर सका था। उनकी उमर ४० से ५० वर्षों तक की थी। डा० वेल ने जरायु की गर्दन में मस्से और फूलगोभी की तरह वृद्धि के लिए ग्रैफा और क्रियोस की प्रशंसा की है, एकाधिक रोगिणियों में मैंने इसका उत्तम फल देखा है। इस प्रकार की वृद्धि के लिए थूजा की भी प्रशंसा है, किन्तु मैंने इससे कोई उपकार नहीं पाया। इस कारण मैं नये होमियोपैथिक चिकित्सकों को सलाह देता हूँ कि वे इस औषध की परीक्षा में अपना समय नष्ट न करें। मेरे विचार से जरायु की गर्दन पर के चिपटे घावों के लिए थूजा और नाइट एसि उपकारी औषधें हैं। मैंने ऐसी कई रोगिणियों को इन्हीं २ औषधों से आराम किया है। ऐसे क्षेत्रों में सीपिया भी उपकारी औषध है, किन्तु अधिकाश स्थलों में नाइट एसि ही सफल औषध है। ग्रन्थियों में असली कर्कट रोग तथा ग्रन्थियों में कड़ापन रहने में मैग्ने म्यूर या सेवाइना तथा खुले घाव मे आर्स सफल हैं। किन्तु मैंने इन औषधों से चिकित्सा करके कोई विशेष लाभ नहीं पाया है, केवल उनके कष्टदायक उपसर्ग घट गये थे (डा० हेम्पल के मतानुसार कर्कट रोग आराम करने के लिए हाइड्रस ही उत्तम औषध है। इसी अवस्था के लिए मैंने गेलियम एपेरिनम की व्यवस्था दी है)।

३—डिम्बाशय के रोग (Ovarian affections)—अन्य चिकित्सकों ने इस रोग को आराम करने के लिए ब्रायो और कालो की प्रशंसा की है, मैं उसका समर्थन करता हूँ किन्तु इसमें मेरा कहना है कि अधिकांश क्षेत्रों में ब्रायो के यह रोग पूर्णतया आराम हुआ है नहीं, किन्तु मैं अनेक क्षेत्रों में ब्रायो के साथ-साथ कालो का व्यवहार करता हूँ, खासकर जहाँ रोगिणी में भयकर उदरशूल रहा। कुछ पुराने उदरशूल में आजकल मैं बेल, मर्क, प्लेट, लैके और कान से चिकित्सा करके सफल होता हूँ, इसके अतिरिक्त किसी-किसी क्षेत्र में एपिस भी गुणकारी औषध है।

४—योनि का बाहरी भाग (External Pudendum)—बृहत् भगोष्ठ में थोड़ी-बहुत प्रदाहजनक सूजन हो तो उसके लिए सीपिया ३० की १ मात्रा की २ गोलियाँ ही यथेष्ट हैं। यदि वहाँ का प्रदाह तरुण हो और पीब की शंका हो तो मर्क की २ मात्रा ही उसी अवस्था को सुधार देगी। यदि वहाँ घाव हो या सूजन तथा पीब हो तो सल्फ, कैल्के या साइली सहायता देगा, बशर्ते कि सीपि और मर्क सफल सिद्ध न हों। उस स्थान में खुजली हो तो मुझे सल्फ, कैल्के, कार्बो वेज, कोन, केलि कार्ब, सीपि और साइलि से विशेष उपकार मिला है। (डा० हेम्पल कहते हैं कि यदि वहाँ अधिक रक्तसंचय हो तो बेल ही अच्छा काम करेगा उसके साथ सल्फेट अव सोडा के हल्के घोल से बार-बार धोना भी अच्छा है)।

५—स्तनों के रोग (Diseases of the breasts)—कभी-कभी स्तनों में कड़ी गिल्टियाँ बन जाती हैं और वे बहुत दर्दनाक भी होती हैं, कभी-कभी भाला भोंकने की तरह तेज दर्द भी होता है, कभी-कभी कर्कट रोग से इसे पृथक् समझना बहुत कठिन हो जाता है, किन्तु एक बात जानने योग्य है कि यदि रोगिणी की उमर २० या ३० वर्ष हो तो कर्कट रोग नहीं होता। फ्रांसीसी डाक्टर वालपियों ने सबसे पहले इन फोड़ों का नाम स्नायविक गाँठ रखा था। ऐसी गाँठें ८० वर्ष की उमर तक हो सकती हैं और मृत्यु

तक भी। इन्हीं स्तन-ग्रंथियों को कर्कक भी कहते हैं। मैंने इन गाँठों को कबूतर के अण्डे से लेकर छोटे आड़ू फल तक के आकार में देखा है। इनके आरोग्य के लिए कैल्के, कैमो, वेल, लाइको या फास अत्यन्त उपकारी औषधें हैं [डॉ० हेम्पल के अनुसार एकोन और आयोड भी]। रजोनिवृत्ति काल में भी स्तनों का ऐसा कर्कट बन जाता है, किन्तु मेरे पास जो वैसी रोगिणियाँ आयीं उन्हें मैंने कोनि और कभी-कभी कार्बो एनि तथा साइली और सबसे अधिक ग्रायो से आराम किया है। किन्तु वैसी सभी रोगिणियों को मैं बचा न सका। जिस कर्कट रोग का मुँह खुला था उसे मैं आराम कर सका हूँ। फ्रांस देश में प्रूशिया के राजदूत कौंट गोल्ज ऊपर-लिखित रोग से आक्रान्त थे। वह भी इसी औषध से अच्छे हो गये। दूसरी रोगिणी स्मारना देश के एक व्यापारी की पत्नी थी जो कुछ समय से पेरिस में रह रही थी। वह अपने स्तन के कर्कट रोग की चिकित्सा होमियोपैथी की पद्धति से करा रही थी। जब स्तन के घाव से पीव निकलना बन्द हुआ तो वह अपने देश में पति के पास लौट गयी और दो सालों के बाद उसने आकर दिखाया कि घाव बिलकुल अच्छा हो गया है। केवल वहाँ कुछ लाल दाग रह गये थे जिससे पता लगता था कि वहाँ पीव बनी थी। पहले वह चीर-फाड़ करना नहीं चाहती थी और एक मामूली ठगवैद्य से इलाज करा रही थी। उसने एक दिन उसके घाव पर एक जीवित मेंढक को बाँध दिया वह दूसरे दिन मर गया। उसके बाद घाव से प्रचुर पीव और खून बहने लगा। स्तन का कड़ापन पीव बहने से चला गया और अन्त में घाव सूख गया। किन किन औषधों से वह रोगिणी अच्छी हुई उसका उसे पता नहीं था, किन्तु मैं समझ नहीं सका कि मेंढक ने कैसे काम किया। हमारी होमियोपैथी में उसका कोई प्रयोग नहीं हो सकता, यदि होता तो हमारी औषधों में उसकी भी एक जगह होती। ऐसे रोग में वेल,कार्बो एनि, ग्रैफा, क्लेम, हिप, लैके और क्रियोज की बहुत प्रशंसायें हैं, किन्तु मुझे उनसे कोई सफलता नहीं मिली। किन्तु स्तन के कर्कट में वेल और कार्बो वेज की कुछ उपकारिता है। स्तन में कड़ापन और सफेदपन, किसी-किसी स्थान में प्रदाह होने से

ये दोनों औषधें लाभकारी हैं। अन्य औषधें जलन वाले फोड़े के लिए कोई लाभ नहीं पहुँचा सकतीं। डॉ० फिलिप ने थायर्स से जिस प्रकार के कर्कट को आराम किया है वह स्तन का खुला कर्कट रोग था। मैंने भी अपने चिकित्सा-व्यवसाय में इस रोग में इस औषध की शक्ति प्रत्यक्ष देखी है। उसी के साथ साइली भी लाभप्रद है, किन्तु मेरी रोगिणी बहुत ही कठिन अवस्था में थी। घाव तो बन्द हो गया किन्तु उस सूखे दाग के स्थान में कर्कट का भयकर घाव निकल आया था।

४—स्त्रियों के कुछ विशेष रोग

(Characteristic General Female Diseases)

१—हरित्पाडुरोग (Chlorosis)—स्त्रियों में रक्ताल्पता के कारण कँवल रोग होते दिखाई पड़ता है, जिसमें शरीर, नेत्र, पेशाब आदि पीले हो जाते हैं। ऐसे रोग के लिए डॉ० रीकर्ट ने विस्तारित विवरण लिखा है। उन्होंने इस रोग को आराम करने योग्य औषधों के खास खास लक्षणों के प्रति ध्यान नहीं दिया। उसका फल यह हुआ कि सूक्ष्म परीक्षण से भी पता न चला कि किस अवस्था में कौन लक्षण प्रधान है। कहीं-कहीं उन्होंने कुछ लक्षणों की बात लिखी है सही, किन्तु वे लक्षण कँवल रोग के मुख्य लक्षणों से मेल नहीं खाते। जिन लक्षणों का उन्होंने उल्लेख किया है वे परीक्षित भी नहीं हैं। यह कँवल रोग बहुत धीरे-धीरे बढ़ता है इस कारण चिकित्सक को उपयोगी औषध खोजने के लिए समय मिल जाता है। यदि इससे कुछ विलम्ब भी हो जाय तो भी रोगिणी को विशेष हानि नहीं होती। मेरा अनुभव है कि यह रोग किसी एक औषध से आराम नहीं होता। अनेक औषधें सेवन करानी पड़ती हैं, उनमें नीचे लिखी औषधें प्रधान हैं—पल्स, सल्फ, कैल्के, साीप, ग्रेफा, फास और नेट्र म्यूर। यदि रोगिणी में खराब लक्षण न हो तो मैं पल्स से ही चिकित्सा शुरू करता हूँ। यदि उसके मासिक में कोई परिवर्तन न हो और रोगिणी की अवस्था में कुछ भी उन्नति दिखाई न पड़े तो मैं सल्फर देता हूँ। इससे विशेष फल न होने पर मैं

कैल्के देता हूं। इन तीनों औषधों के द्वारा मेरी चिकित्सा से सभी रोगिणियाँ अच्छी हो गयी हैं। इन औषधों के व्यवहार के बाद भी यदि कुछ उपसर्ग रह जायें तो मैं अवस्थाओं के अनुसार सिप, फास, ग्रैफा, प्लम्बम या नेट्र म्यूर से चिकित्सा करता हूं। इस रोग में मुझे फेरम से कोई लाभ नहीं मिला। ऐसी स्थिति में ऐलोपैथिक चिकित्सकों के सामने कुछ अंशों में असफल होकर भी अन्त में सफल हुआ हूँ। मेरे हाथ की रोगिणी लोहे की सूक्ष्मतम मात्रा सेवन कर भी अच्छी नहीं हो सकी तो उन लोगों के हाथ की रोगिणी बहुत-सा लोहा खाकर भी अच्छी नहीं हुई। कम से कम मेरी रोगिणी श्वासकष्ट से तो बची रहती, दिल की धड़कन भी नहीं होती और न कमजोरी ही आती है। ऊपर से एलोपैथिक चिकित्सकों का लोहा मिश्रित औषध खाकर भी रोगिणी अच्छी नहीं होती है और अत्यन्त कष्ट भोगती रहती है। यदि इस कँवल रोग की रोगिणी ऐलोपैथिक चिकित्सकों की चिकित्सा से कुछ भी फल न पाकर मेरे पास आती तो मैं पल्स से ही इलाज शुरू करता हूँ इसके बाद मैं प्रायः प्लम से अधिक सुफल पाता हूँ और उसके बाद सल्फ और फास से मुझे सहायता मिलती है। विशेष निर्देशक लक्षणों के सम्बन्ध में मेरा निर्णय यह है कि यदि इस रोग के साथ सिरदर्द और सिर में चक्कर रहे तो मैं खासतौर पर कैल्के और सीपि देता हूँ। यदि कानों में या सिर के भीतर भिनभिनाहट-सा शब्द हो तो पल्स और सीपि। यदि चेहरा पीला हो तो सीपि। यदि बार-बार कै हो तो पल्स, सल्फ, कैल्के और फास। यदि पाकाशय मे कष्ट हो और हृदयशूल रहे तो पल्स, सल्फ और कैल्के। यदि पतले दस्त हों तो पल्स, सल्फ और कैल्के। असाध्य कब्जियत हो तो प्लम, सीपि, कैल्के, लाइको। यदि तलपेट में ऐसा दबाव हो मानो अभी ऋतुस्राव होगा किन्तु असल में कुछ भी नहीं निकलता हो तो पल्स, सिपि, नेट्र म्यूर। यदि खासतौर पर प्रचुर श्वेतप्रदर बहता रहे तो पल्स, सल्फ, सीपि और कार्बोवेज। यदि श्वासकष्ट हो तो पल्स, सल्फ, कैल्के, फास, सीपि। यदि दिल की धड़कन अधिक हो तो पल्स, कैल्के, सीपि, प्लम, सल्फ, नेट्र म्यूर। यदि भारी

थकावट और पैरों में भारीपन मालूम हो तो पल्स, कैल्के, प्लम, लाइको, नेट्र म्यूर। पैर के पत्तो मे सूजन या पैरों में शोथ हो तो प्लम, सल्फ। ठण्ढक का बोध हो तो पल्स, कैल्के, सीपि, सल्फ उपयोगी औषधें हैं।

२—मृगी रोग (Hysteria)—स्त्रियों के लिए यह एक सांघातिक रोग है। स्नायविक विश्रृङ्खला ही इसका कारण है। यह विभिन्न रूपों में प्रगट होता है। नया चिकित्सक इसका भयकर रूप देखकर घवड़ा जाता है। वह उसे घातक रोग समझता है। यथार्थ में यह बहुत कठिन रोग नहीं है। हमारे सामने मृगी, सन्यास, अधरङ्ग, काली खाँसी और भयंकर ऐंठन दिखाई पड़ते हैं। मृगी का दौरा एकाएक आता है और रोगिणी बेहोश होकर गिर पड़ती है। उसका हाथ पैरों में खिचाव देखकर घर के लोग डर जाते हैं। अनभिज्ञ नवीन चिकित्सक भी भय खाते हैं। क्षणभर में ऐसी अवस्था होती है मानो रोगिणी अभी मर जायगी और क्षणभर बाद ही वह ऐसे उठ बैठती है मानो कुछ हुआ ही नहीं था, इस समय उस रोग के उपद्रवों का चिह्नमात्र भी नहीं रह जाता। जो कुछ हुआ हो उसे रोगिणी भ्रम ही समझती है। मृगी रोगाक्रान्त ऐसी बहुत-सी रोगिणियाँ मेरे पास आयी जिनमें से कुछ के हाथ-पैर सप्ताहों तक; बल्कि महीनों तक अर्धाङ्ग पक्षाघात की तरह शिथिल थे। वे बिछौने में पड़ी रहतीं, रीढ़ सुस्त प्रतीत होती यहाँ तक की पीठ पर मामूली दबाव भी सहन न होता। उन्हें ऐसा लगता था मानो सारा शरीर काँटों में फँसा हुआ है। उनके शरीर की अवस्था देखकर चिकित्सक प्रायः समझ लेता कि रोगिणी की रीढ़ में विकट रोग हो गया है। यदि मुझमें इस रोग के सभी विषयों का ज्ञान न होता तो शायद मैं भी ऐसा ही निदान निकालता। इस रोग का दौरा कितना ही भयकर क्यों न हो मैं नहीं डरता बल्कि शरीर के कुछ चर्म में बहुत अधिक स्पर्शकातरता, उदर के कुछ दोष और कहीं कहीं स्पर्शज्ञान न रहना आदि लक्षण देखकर मैं इसे मृगी रोग से उत्पन्न अर्धाङ्गवात समझता हूँ। ऐसी ही एक रोगिणी को इग्नेशिया देकर मैं अपूर्व

लाभ पा गया, किन्तु असल में यह औषध किसी अन्य उपसर्ग के लिए थी। उनमें से एक को कास्टिकम और दूसरी को साइक्यूटा से फायदा हुआ था। यदि कोई चिकित्सक यह समझे कि मृगी रोगाक्रान्त रोगिणी को मैं पूर्ण स्वस्थ बना दूंगा तो वह आत्म प्रवचना होगी। बहुत हो सका तो वह उपयोगी औषध सेवन कराकर इस रोग को प्रकाशित कर सकता है। उसके लिए नीचे लिखी औषधें फायदेमन्द हैं इग्ने, मस्क, नक्स मास, साइली, कास्ट, साइक्यूटा, कोनियम, फास, कैमो, काक्कस, पल्स, वेरेट्र एल्व, सीपि, काफि, इपि, क्रोकस, वेल, नक्स वाम, सल्फ। (डॉ० हेम्पल के मतानुसार एकोन भी)। इनमें से साइली, वेरेट्र एल्व, कोनियम, इग्ने, आरम, फास से मुझे विशेष लाभ हुआ है, मानसिक आवेग वाली, विशेष रूप से शोकाच्छन्न मृगी रोग आक्रान्त स्त्रियों के लिए, खासकर जो उदासी के कारण रोती रहती हैं उनके लिए आरम, वेल, प्लेट, वेरेट्र एल्व विशेष उपयोगी हैं। बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजना वाली स्त्रियों के लिए वेल, क्रोक, एकोन, फास, वेरेट्र एल्व, हायोस, वेलेर, मस्क, काफि, सिर मे चक्कर का आक्रमण होने पर फास, एकोन, कोन, आरम, मस्क। मृगीजनित सिरदर्द के लिए इग्ने, काफि, नक्स मस, रस, आरम, प्लेट, मस्क, सीपि। खासकर जब सिर की चोटी में ठंढक का अनुभव हो कैल्के, वैरेट्र एल्व। गलकोष मे आक्षेप, साथ में श्वासकष्ट हायोस, वेल, इग्न, नक्स वाम, काक्कस, मैग्ने कार्ब। यदि ऐसा अनुभव हो कि एक गेंद गले से सिर की ओर चढ़ रही है, एकोन, इग्ने, कान, साइक्यू, वेलेर। हृदय मे आक्षेप के लिए इग्ने, कैमो, काक्कस, मैग्ने कार्ब, नक्स वाम। उदर मे ऐंठन के लिए इग्ने, इपि, काक्कस, नक्स वाम। मूत्रथैली मे आक्षेप के साथ पेशाब करने में कष्ट के लिए पल्स, सापि, ऐसाफी, वेल, नक्स वाम। जरायु मे ऐंठन के लिए इग्ने, काक्कस, मैग्ने म्यूर, काक्यू, कान, सीपि, प्लेट। मृगी के कारण स्वरभग, स्वरलोप के लिए कास्टि, प्लैट, वेल, हायोस। ऐंठन

वाली खांसी के लिए इग्ने, मस्क, वेल, हायोस, फास, पल्स, काफि, एकोन, नक्स वाम। मृगी वाले दमा रोग और फेफड़ों में ऐंठन के लिए इग्ने, सीपि, कूप्रम, मास्क, पल्स, इपि। हृदय में ऐंठन के लिए कैमो, काक्कस, एकोन, पल्स, आरम, कोनियम। पीठ मे दर्द के लिए, जो रीढ़ के नीचे तक फैलता है, नक्स वाम, इग्ने, कूप्रम, वेल, सल्फ। थकावट, अवसाद, वेहोशी के लिए सीपि, मास, इपि, कैमो, इग्ने, नक्स मास, एकोन। मृगी के कारण अचेतपन के लिए इपि, वेल, ओपि, टार्ट एमेट, लैके। साधारण ऐंठन और आक्षेप के लिए इपि, इग्ने साइक्यू, काक्कस, कूप्रम, कास्टि, मास, हायोस, कैमो, नक्स वाम। धनुष्टंकार के आक्षेप, के लिए इपि, नक्स वाम, कैमो, नक्स मास, मास्क। किसी एक पैर या दोनों पैरों के पक्षाघात के लिए कास्टि, साइक्यू, काक्कस, इग्ने, रस टाक्स उपयोगी हैं।

अध्याय—१६

गर्भिणी, प्रसूता, सौरी में रहने वाली, छाती का दूध पिलाने वाली स्त्रियों और उनके बच्चों के रोग

१—गर्भावस्था के रोग

(Ailments incident to Pregnancy)

द्रष्टव्य – इस अध्याय में तथा इस पुस्तक में अन्यत्र जहाँ भी किसी औषध की मात्रा और शक्ति का उल्लेख नहीं है, वहाँ ३० शक्ति की २ सूखी गोलियों की मात्रा ही समझनी चाहिए।

१—पाकाशय के रोग (Gastric difficulties)—अरुचि और भूख की कमी के लिए, जिसके साथ कभी-कभी तेज खाने की इच्छा हो तो सल्फ ही अत्यन्त गुणकारी औषध है, उसी तरह अध्याय ६, अनुच्छेद १, २, ३ की औषधें भी देखिए। मिचली के लिए अत्यन्त आवश्यक औषधें हैं इपि या नक्स वाम और कभी-कभी एकोन, आर्स, पल्स, मैग्ने म्यूर। यदि वमन अधिक हो और इपि तथा नक्स वाम अनुपयोगी सिद्ध हों तो सल्फ की १ मात्रा सदा ही सहायक होगी, उसी तरह सीपिया भी और कभी-कभी, किन्तु कदाचित् ही कैमो, आर्स, फेरम, एकोन, सिकेलि या हायोस। कफ की कै के लिए इपि, एकोन, आर्स, पल्स या सल्फ, न पचे हुए खाद्य की कै हो तो सल्फ, नक्स वाम, इपि, सीपि, फेरम फास। दूध की तरह कफ की कै के लिए सीपि। यदि शूलदर्द होने लगे तो कैमो या नक्स वाम से अवश्य लाभ होगा और कभी-कभी कालो, बेल, पल्स, सीपि या ब्रायो और भी अध्याय १४, अनुच्छेद २ और ८ में जो खास-खास निर्देशक लक्षण दिये गये हैं उन्हीं के अनुसार औषधें भी। पतले दस्त कैमो या पल्स से निश्चय ही आराम होंगे और कभी-कभी

सीपि, एन्टि क्रू, फास, पेट्रोल तथा अध्याय १५, अनुच्छेद ९ और १० में निर्देशित औषधें भी। यदि इनमें से किसी औषध के द्वारा लाभ न हो तो सल्फ तुरन्त लाभ पहुँचायेगा। असाध्य कब्जियत प्रायः ब्रायो या नक्स वाम से अच्छी होगी और कभी-कभी सीपि, लाइको, एलुम या सल्फ से भी।

२—रक्तसचार की विशृंखला (Disturbances of the Circulation)—यदि सिर की ओर रक्त का प्रबल प्रवाह एकोन से न घटे तो बेल या नक्स वाम देना चाहिए। यदि रक्तसंचार उदर के भीतर अधिक हो, साथ में तलपेट के भीतर भारीपन और दर्दनाक तनाव हो, पेशाब करने का बार-बार वेग हो और हाथ-पैरों में अवसाद रहे तो बेल ही उपयोगी औषध है और कभी-कभी नक्स वाम भी। यदि खून का दौरा छाती की ओर हो, साथ में दिल की धड़कन रहे और एकोन यथेष्ट न हो तो पल्स निश्चय ही आराम करेगा और कभी-कभी लाइको, सल्फ, सीपि, चायना, स्पाइजि, नेट्र म्यूर। रक्तसचार की विशृंखला के कारण मूर्च्छा आ जाय तो उपयोगी औषधें हैं इग्ने या इपि, कैमो या नक्स वाम। और साधारण रक्ताधिक्य के लिए एकोन या बेल तथा अध्याय २५ प्रकरण मूर्च्छा में लिखित औषधें भी। जरायु से रक्तस्राव सबसे कठिन अवस्था है, वह भी इपि और सिकेलि से रुक जाता है और कभी-कभी खासकर गर्भस्राव की शंका होने पर यदि वे दोनों औषधें आराम न दें तो प्लेट, सैबाइना, कैमो, क्रोकस या बेल, हायोस, चायना, ब्रायो तथा अध्याय १८ अनुच्छेद १ और २ में लिखित औषधें भी। (डॉ० हेम्पल के अनुसार हेमामेलिस और ट्रिलियम भी उपयोगी हैं) नाक से खून गिरना आदि अन्य रक्तस्रावों के लिए उपयोगी हैं एकोन, ब्रायो, चायना या बेल तथा अध्याय १० में लिखित औषधें भी। रक्तोत्कास के लिए एकोन, इपि, फेरम या आर्न। रक्तवमन के लिए इपि, आर्न, फेरम, सल्फ या एकोन, रक्तार्श को काबू में करने के लिए सर्वोत्तम औषधें हैं पल्स या नक्स वाम तथा कभी-कभी आर्स, कार्बो वेज और नेट्र म्यूर। शिरा-प्रसारण के लिए

पल्स, कार्वोवेज, आर्न, लाइको, सल्फ और साइली। पैर के पत्तों के शोथ के लिए, जो कभी-कभी जाँघों तक फैलता है, ब्रायो की १ या २ मात्रायें उसे सुधार देती हैं और यदि यह यथेष्ट न हो तो सल्फ। भगोष्ठों के शोथ के लिए सीपि या मर्क उपयोगी औषधें हैं।

३–श्वासकष्ट और खांसी—(Difficulties of the Respiration and Cough)—गर्भवती स्त्रियों का यदि श्वासकष्ट खाने के बाद बढ़े और यदि उसके साथ मस्तक की ओर खून का प्रबल प्रवाह रहे तो नक्स वाम उसे प्रशमित करेगा और यदि उसके साथ अफरा, पेट का फुलाव रहे तो सिना और श्वासकष्ट के साथ साधारण रक्ताधिक्य हो तो एकोन। दिल की धड़कन, चेहरे में लाली और भारी घबड़ाहट के लिए भी। यदि उसके साथ अत्यन्त दुर्बलता, चेहरे का पीलापन और सूजन तथा पैर के पत्तों में शोथ रहे तो आर्स, यदि उसके साथ दुर्बल पाकाशय, मुख में कड़ुआ स्वाद और मुख के भीतर पानी भर आना लक्षण में पल्स। यदि वमन की इच्छा हो और चेहरा पीला तथा बेहोशी का आवेश मालूम हो तो इपि। गर्भवती स्त्रियों की खांसी एकोन ३० की ३ गोलियाँ थोड़े पानी में घोलकर सेवन कराने से अच्छी हो जाती है या सीपि और कभी-कभी बेल, नक्स वाम, इपि, पल्स या यहाँ तक कि कोन, डल्का, कास्टि, नेट्र म्यूर या फास, *अध्याय २०, अनुच्छेद २ खाँसी के प्रसग मे निर्देशित* औषधें भी।

४—मूत्रयन्त्र की गड़बड़ियाँ (Urinary difficulties)—गर्भवती स्त्रियों को प्रायः निष्फल पेशाब के वेग से भयानक कष्ट होता है जो पल्स के सेवन से निश्चय आराम हो जाता है। इसके लिए और भी कुछ औषधें उपयोगी हैं, जैसे कि काक्कस, नक्स वाम, फास एसि, सल्फ या कोन, किन्तु इनका व्यवहार बहुत ही कम है। पेशाब एकदम रुक गया हो और पहले कैम्फारा ३० की ३ गोलियों के सेवन से कष्ट घट गया हो तो पल्स उपयोगी है; इसी तरह कभी-कभी एकोन और नक्स वाम का भी निर्देश

होता है। यदि पेशाव का वेग होते ही एकाएक घार में प्रायः अपने-आप पेशाव निकल जाता हो और पल्स तथा सीपि कमजोरी को दूर न कर सकें तो एकोन या वेल प्रायः उसे आराम करेगा। इसी तरह खाँसी के दौरे के समय यदि पेशाव अपने-आप देर से निकल जाय तो नेट्र म्यूर, कास्टि या फास उपकारी हैं।

५—दर्द (Pains)—यदि दाँत के दर्द के समान तेज दर्द हो तो सीपिया के सूँघने से आराम मिलता है, उसके बाद कैमो; पल्स, काफि, नक्सवाम, एकोन, वेल, हायोस या स्टेफि और मैग्ने फार्व, अध्याय ८ के निर्देश के अनुसार देने से लाभ होगा। छाती का दर्द व्रायो या वेल से घट जायगा और कभी-कभी सीपि, नक्स वाम, आरम या सिकेलि से भी। पीठ के निचले भाग का दर्द नक्स वाम, पल्स या वेल, रस या आर्न से घट जायगा। उदर के भीतर के बगल वाले चमड़े में सूई चुभने का-सा दर्द नक्स वाम, वेल, व्रायो, आर्स, पल्स से घट जायगा और गर्भ के सातवें महीने में प्रसव जैसी वेदना हो तो पल्स, नक्स वाम, काफि से आराम होगा और कभी-कभी कैमो, वेल, हायोस, सीपि या नक्स मस से भी।

६—स्नायविक विशृंखलायें (Nervous derangements)—गर्भवती स्त्रियों में प्रायः अनिद्रा होती है, जो काफि या वेल से सुधर जाती है और अन्य क्षेत्रों में एकोन या सल्फ से। सौरी में यदि मृत्यु का भय गर्भवती स्त्रियों को हौवा-सा सतावे तो एकोन ३० की २ गोलियों से वह भय दूर होगा, इसकी दूसरी, तीसरी मात्रा भी देने की आवश्यकता हो सकती है। गर्भावस्था में कदाचित् शरीर की ऐंठन भी हो जाती है किन्तु यदि उससे गर्भ-स्राव होने की शंका हो तो वह भयंकर हो जाती है, ऐसे क्षेत्रों में वेल ही सबसे अधिक विश्वासयोग्य औषध है, इसी तरह कैमो और इग्ने भी या उस समय यदि जरायु से खून निकलने लगे तो इपि और हायोस। डॉ० हैम्पल के मतानुसार गर्भवती या प्रसूता स्त्रियों की ऐंठन के लिए जेलिसिमियम सर्वश्रेष्ठ औषध है।

७—त्वचा के रोग (Cutaneous affections)—गर्भवती स्त्रियों के चेहरे पर कभी कभी भूरे या मैले-से पीले रग के दाग पड़ जाते हैं। उसके लिए सीपिया ही प्रधान औषध है। यद्यपि किसी-किसी के लिए लाइको, ऐण्टि क्रूड या सल्फ की आवश्यकता पूर्ण आरोग्य के लिए होती है। ऐसी अवस्था में मैं नवचिकित्सकों को सावधान कर देना चाहता हूँ कि गर्भ के सातवें महीने के अन्तिम भाग में स्त्रियों के पेट पर जो दरारें पड़ जाती हैं उन्हें आर्निका के लोशन से न धोया जाय, क्योंकि मैंने इसके कुपरिणाम देखे हैं इसलिए मेरा उनके लिए उपदेश है कि मीठे बादाम के तेल से वहाँ मालिश की जाय।

८—जननेन्द्रिय के स्थानीय रोग (Local affections of the Genital Organo)—कुछ निदान जाननेवाले चिकित्सक कहते हैं कि गर्भावस्था में जरायु प्रदाहित होता है, किन्तु मैंने वैसी एक भी रोगिणी नहीं देखी। गर्भावरक झिल्ली के रस के जमा होने से कभी कभी जरायु में शोथ-रोग होता है। यह रस बढ़कर जरायु को प्रसारित करता है और उदर को भी तथा भ्रूण के जीवन के लिए भी यह शका होती है। मैंने केवल एक ही रोगिणी में ऐसा होते देखा है। एक स्त्री के तीन बच्चे किसी ढग से नष्ट हो गये, चौथी बार भी पेट में बच्चा आ गया, और उसके नष्ट होने की सम्भावना हुई। उसने मेरी सहायता मागकर पत्र लिखा। उसकी अवस्था के साथ हाथ-पैरों में सूजन आ गयी। मैंने सल्फर की ३ मात्राओं से उसका शोथ दूर कर दिया। भगोष्ठ की सूजन भी, जो गर्भावस्था में स्त्रियों को हुआ करती है वह भी सीपिया और अर्क से दूर हो गयी।

९—गर्भस्राव होने की शका (Threatening miscarriage)—यदि रक्तस्राव अधिक होता हो तो इपि, आर्न, सिके या सेबाइना से वैसी विपत्ति टल जाती है। कभी-कभी कैमो या पल्स से भी, यदि ऐंठन होने लगे तो इपि, हायोस, प्लेट, कैमो या सिकेलि। गर्भस्राव हो जाने के बाद की चिकित्सा के लिए इसी अध्याय के अनुच्छेद २ में प्रसूतियों के लिए

जिन औषधों का विवरण दिया गया है उनके अतिरिक्त दूसरी दवाओं की जरूरत नहीं है।

२—प्रसव के समय के रोग

(Ailments incident to labour)

१—प्रसव-वेदना (Labour- pains)—तथाकथित कृत्रिम प्रसव-वेदना के समय जब कि जरायु-मुख कोमल रहता है तथा कसकर बन्द रह जाता है, उसी तरह प्रसव की वेदना रुक जाती है। पल्स या सिकेलि उस समय बहुत मदद देता है, कभी-कभी बेल, ओपियम या कैमो भी सहायक हैं। यदि दर्द ऐंठन वाला हो तो बेल ही सर्वोत्तम औषध है। और यदि दर्द बहुत भयकर हो तो काफि, कैमो, नक्स वाम या बेल और उसी तरह एकोन प्रसूति को मरण-भय से बचा लेता है। किन्तु यदि प्रसव होने में बहुत अधिक कष्ट हो और उसे बेहोशी आने लगे, योनि कड़ेपन के कारण नहीं फैलती हो तो पल्स और सिके तथा काफि और नक्स वाम उपयोगी औषधें हैं। यदि भ्रूण गर्भ में एक या दो सप्ताहों से मरा पड़ा हो तो उसे भी पल्सेटिला या सिकेलि निकाल देगा। यदि जरायु की ऐंठन के कारण पेट में बच्चा उलट गया हो तो पल्स उसे ठीक स्थान पर ला देगा।

२—खास-खास दुर्घटनायें (Particular accidents)—प्रसव काल में प्रसूति को मूर्च्छा आ जाना खतरे की परिस्थिति है। इसके लिए एकोन, इग्ने या कैमो अत्यन्त आवश्यक औषध हैं और कभी-कभी काफि, वेरेट्र एल्ब, पल्स या सिकेलि आवश्यक हो सकते हैं। प्रसूता स्त्री के शरीर में ऐंठन होने लगे तो इग्ने, कैमो, बेल, हायोस, इपि या प्लेट, एकोन या काफि फायदेमन्द हैं, अध्याय २८ में ऐंठन के जो निर्देशक लक्षण बताये गये हैं वे भी यहाँ सफल हैं। यदि भीतर या बाहर रक्तस्राव हो तो आर्न, पल्स, इपि। (डॉ० हेम्पल के अनुसार कभी-कभी स्त्रियों में

प्रभावहीन होता है, वैसी स्थिति में जेलिस और वेरेट विट उस अवस्था को सुधार देंगे। ओपियम की १ मात्रा देने से कष्ट का उपशम होगा।)

३—आँवलनाल या फूल का निकलना (Expulsion of the Placenta)—आवश्यक दर्द के न रहने के कारण यदि फूल के गिरने में विलम्ब हो तो पल्स या सिकेल दर्द को बढ़ा देगा। इससे थोड़ी देर में वह गिर जायगा और कभी-कभी काफि, वेरेट्र एल्व, पल्स या सिके से लाभ होगा। यदि आँवलनाल भीतर सट जाय या थोड़ा निकले, फलस्वरूप भयङ्कर रक्तस्राव होने लगे तो पल्स और सिके वाञ्छित सभी फल ला देंगे और किसी-किसी क्षेत्र में प्लेट, सेवाइना, वेल आदि की आवश्यकता हो सकती है।

४—प्रसव के बाद वाली वेदना (After-pains)—यदि प्रसव के बाद दर्द एकदम रुक जाय और जरायु में सिकुड़न न रहे और प्रसव के समय पल्स और सिकेलि का सेवन कराया गया हो तो ओपियम देना चाहिए। यदि प्रसव के बाद वाली वेदना बहुत अधिक कष्ट देने वाली हो तो काफि या नक्स वाम देना आवश्यक है, खासकर यदि मलान्त्र और मूत्रथैली पर दबाव पड़ता हो। यदि वह दर्द बहुत अधिक समय तक रहे तो कैमो और पल्स अत्यन्त उपकारी हैं।

३—प्रसूता स्त्री के रोग
(Affections of Lying-in Females)

१—प्रसव होने के तुरन्त बाद वाले उपसर्ग (Immediate Consequences of Pasturition)—यदि वह अंग फूला और दर्द-नाक हो तो अधिकांश क्षेत्र में उसे आर्निका के घोल के द्वारा बार-बार धो देना आवश्यक है। एक कटोरी जल में इस औषध आर्निका के अर्क की १० बूँदें डाल देने से ही काम चलेगा; यदि फोड़ा हो गया हो और पीब निकलने की शंका हो और वेल या लैक से कोई लाभ न आ हो तो हुमर्क

निश्चय आराम देगा। प्रसव के समय बहुत अधिक कष्ट होने के कारण यदि जरायु बाहर निकल पड़े तो नक्स वाम या सीपिया के सेवन से वह अपने स्थान में चला जायगा, यदि पेशाब में कष्ट हो तो वेल से आराम हो जायगा और मूत्रकृच्छ्र को आराम करने के लिए पल्स या सल्फ, अपने आप पेशाब निकले तो सीपिया उसे रोक देगा। प्रसव के समय यदि रक्तार्श हो तो पल्स उसे सुधार देगा। (डॉ० हैम्पल के अनुसार हेमन भी)। यदि प्रसव के बाद वाला स्राव अल्प या एकदम रुद्ध हो और उसके कारण ज्वर आ जाय तो एकोन अनेक रोगिणियों को आराम देगा या कैमो, यदि शूल, उदरामय या दन्तवेदना होने लगे या कालो, यदि उदर ढोल-सा तना हुआ हो, बेल, हयोस या स्ट्रैमो, यदि उसके रुद्ध हो जाने से प्रलाप या मानसिक उन्माद हो। दूसरी ओर यदि प्रचुर प्रसवोत्तर स्राव हो और उस समय भी वह लाल रहे तो प्लेटि, चायना या सिकेलि की जरूरत होगी और यदि वह एकदम सफेद हो तो पल्स, सीपि या सल्फ, यदि पीब वाला हो तो सीपि, मर्क, चायना या कैल्के। यदि दुग्ध-ज्वर बहुत तेज हो तो एकोन या आर्न आराम देगा। प्रसव के बाद साधारण दुर्बलता के लिए मैं चायना या सिके, सल्फ, नक्स वाम, वेरेट्र एल्ब देता हूँ; प्रचुर पसीना होने पर चायना, एकोन, कार्बोवेज; बाल झड़ने पर लाइका, हीपर, साइलो या नेट्र म्यूर, यदि पेट बड़ा रह जाय तो सीपि या कालो, पीठ के निचले भाग में कड़ापन रहने के कारण झुकना सम्भव न हो तो फास।

२—प्रसव के बाद जननेन्द्रिय के स्थानीय रोग (Local affections of the Sexual Organs as remote consequences of Labour) –ऐसे स्थानों में जरायु के भीतर कभी-कभी साधारण प्रदाह उत्पन्न होता है। साधारणतया बेल या नक्स वाम से वह आराम हो जायगा। जरायु में सड़न पैदा हो तो सिकेलि, बशर्ते कि यदि आर्स से फल न मिला हो। उसके बाद यदि जरायु से रक्तस्राव होने लगे तो मैं बेल, सेवाइना, चायना, प्लेट या सिकेली देता हूँ, जरायु के बाहर निकलने पर जो प्रायः

माता के शीघ्र शय्या छोड़ देने पर होता है, सीपिया, नक्स वाम या वेल; डिम्बाशय प्रदाह के लिए, जो प्रायः होता है मुख्यतया ब्रायो, एपिस या कालो (अध्याय १८ भी देखिए)।

३—उदर की शिकायतें (Abdominal Complaints)—प्रसूता स्त्रियों में कभी-कभी आंतो से जलन होती है, उसे प्रसूति का ज्वर नहीं समझना चाहिए (नीचे देखिए), जो साधारणतया एकोन ३० की २ गोलियाँ जल में मिलाकर देने से आराम हो जाता है। और यदि वह ’क-दम आराम न हो तो बाद मे ब्रायो, वेल, नक्स वाम, कालो, सौरी में स्त्रियों के पेट का शूल कैमो, वेल या ब्रायो से आराम होगा; कब्जियत के लिए ब्रायो या नक्स वाम या ओपियम, प्लेट या सल्फ, कष्टदायक उदरामय के लिए कभी-कभी रिउम, कैमो, पल्स या सिके (अध्याय १४ और १५ देखिए)।

४—प्रसूत ज्वर (Puerperal fever)—चाहे ज्वर अन्त्रावरक झिल्ली प्रदाह या जरायु के शिरा-प्रदाह के कारण हो या महामारी के समय टायफायड ज्वर की तरह का हो तो मैं सदा ही चिकित्सा, यदि मैं शुरू में बुलाया जाता हूँ तो, एकोन ३० की २ गोलियों को १ चम्मच जल में गला कर, आरम्भ करता हूँ। यह एक ही औषध पूर्ण आरोग्य सम्पादन करने में समर्थ है। मैं वेल देता हूँ और यदि अन्त्रावरक झिल्ली मुख्यतया से आक्रान्त हो तो मैं ब्रायो देता हूँ। यदि उस प्रकार का बुखार टायफायड का रूप न ले या शुरू में ही टायफायड के उपसर्ग दिखाई पड़ें और मस्तिष्क के उपसर्ग प्रधान प्रतीत हों तो मैं तुरन्त वेल या हायोस देता हूँ, विशेषतया यदि उसके साथ ऐंठन हो, दूसरी ओर यदि उदर के उपसर्ग प्रधान हों, साथ में पानी-सा पतला दुर्गन्धित पखाना हो, यदि चमड़े पर लाल दाने या फुन्सियाँ दिखाई पड़े तो मैं रस या आर्स देता हूँ। एक असाध्य क्षेत्र में जहाँ टायफायड की तरह बुखार को एलोपैथिक चिकित्सा से लाभ न हुआ तो वह रोगी मेरे, चिकित्साधीन आया। उसका होश करीब-करीब

गायब था, साथ में आँखें इकटक, विकृत और चेहरा पीला, कभी-कभी वक-वक करता था, एक-एक समय प्रलाप बकता था और उसके खुले मुँह से बदबू निकलती थी और जहाँ हायोस, रस या आर्स से कोई उन्नति नहीं दिखाई पड़ी, तब सल्फ ने अति आश्चर्यकारक उन्नति दिखायी, उसके बाद नक्स वाम से वह पूर्ण आराम हो गया। इस प्रकार के रोग में डॉ० हैनिमैन के द्वारा कैमो, काफि और कालो की उपयोगिता बताये जाने पर भी उन औषधों की चिकित्सा के द्वारा जाँच आवश्यक है। मेरे हाथ में उस प्रकार के रोगियों के लिए उन औषधों से कोई लाभ नहीं हुआ। जरायु के शिरा प्रदाह के समय पीब बन जाने पर वह फेफड़ों में जमा हो जाय और फेफड़े के चमड़े तथा कोप-तन्तुओं में एकत्रित हो जाय तो इन औषधों से वह आराम होगा या नहीं, मुझे सन्देह है। इसी प्रकार की एक रोगिणी रस, आर्स, लैके या पल्स देने पर भी कोई प्रभाव न पड़ने के कारण तीन दिनों पर मर गयी थी।

५—प्रसूता स्त्रियो के आक्षेप और अन्य कष्ट (Eclampsia and other Spasms of lying-in women)—इस प्रकार के क्षेत्रों में इग्ने, कैमो, वेल, हायोस या डपि अत्यन्त सफल औषधियाँ हैं और कभी-कभी प्लेट, एकोन या काफि (डॉ० हेम्पल के मत से जेल्सिमियम और ओपियम की उपशामक मात्रायें भी)।

६—प्रसूता स्त्रियो मे मासिक विकृति या उन्माद (Mental Alienations of lying-in women. Malancholy)—एकोन, पल्स, आरम से शोक दूर होगा (डॉ० हेम्पल कहते हैं कि सिमिसिफ्यूगा रेसिमोसा भी); स्नायविक उत्तेजना और क्रोध, साथ में भयजनक स्वप्न तथा भाग जाने की प्रवृत्ति के लिए वेल, हायोस या स्ट्रैमो; धार्मिक उन्माद के लिए सल्फ या वेरेट्र एल्ब, स्त्रियो के कामोन्माद, साथ में योनि के बाहरी भाग में अत्यन्त भोगेच्छा के लिए प्लेट; सभी मनुष्यों को चुमने की प्रवृत्ति के लिए वेरेट्र एल्ब, साथ में काम-विषय की बातचीत

तथा संगीत और उसके समूचे शरीर से बकरे की-सी दुर्गन्ध के लिए स्ट्रैमो तथा साथ में क्रोध, निर्लज्जता, शिष्टता का अभाव और स्त्री अपना गुप्त अंग खोल कर दिखाती है, इसके लिए हायोस।

७—प्रसव के बाद शिरा-प्रदाह (Phlegmasia albadolence)-निश्चित रूप से बेल और रस से आराम होता है, और कभी कभी लाइको या आर्स से और कभी कभी यहाँ तक कि पल्स से भी। स्त्रियाँ अन्य रोगों से आक्रान्त होने पर भी इन्हीं औषधों से अच्छी हो जाती हैं। मैंने इन औषधों से विशेष सफलता पायी है (डॉ० हेम्पल के मतानुसार एकोन से भी)।

४—छाती का दूध पिलाने वाली स्त्रियों के रोग

(Affections of Nursing Females)

१—स्तनों से दूध निकलना (Secretion of milk) यदि दूध अल्प निकले या एकदम रुक जाय तो उसका सुधार पल्स या कैल्के से होगा। यदि भय खाने से एकाएक दूध बन्द हो जाय तो एकोन या इग्ने उसे बहा देगा। यदि क्रोध के आवेश या परेशानी के कारण दूध बन्द हो तो ब्रायो या कैमो, ठंढ लगने से बन्द हो तो पल्स, एकोन या डल्का। यदि दूध खराब है, इस कारण बच्चा उसके पीने से इनकार करे तो मर्क, सिना या साइली से उसका सुधार होगा, और यदि दूध बहुत पतला हो, इसलिए बच्चा उससे लाभ न पाये तो चायना, मर्क या सल्फ। और यदि दूध बहुत जल्दी थक्का बन जाय तो बोरैक्स और लैके तथा यदि बहुत जल्दी खट्टा हो जाय तो रिउम या पल्स। यदि दूध से स्तन फूल जायँ, साथ में दूध न निकले तो ब्रायो या बेल, और कभी-कभी एकोन या कैमो सहायता देगा। लगातार अपने-आप दूध बहने लगे तो बेल, कैल्के या ब्रायो तथा कभी-कभी चायना या पल्स उत्तम औषधें हैं (डॉ० हेम्पल के अनुसार एसा-

फीडिटा की मध्य शक्ति शारीरिक कारणों से या ठंढ लगने के बाद दूध को बढ़ाने में उत्तम औषध है।

२—स्तन (The breasts)—ढेपुनियों में जलन और दरारें अक्सर कैमो या सल्फ से आराम होती हैं और यदि ये औषधियाँ यथेष्ट न हों तो इग्ने, कैल्के या लाइको। यदि स्तन अपने-आप प्रदाहित तथा स्फीत और लाल तथा कड़े हो जायँ तो ब्रायो, बेल या मर्क अधिकांश क्षेत्रों में मदद देगा। यदि स्तनों में फोड़े हो जायँ और पीब बहने लगे तो फास और साइली उत्तम औषधें हैं। डॉ॰ हेरिंग ने कल्पना की है कि ब्रायो और फास बाँयें स्तन पर अधिक क्रिया करते हैं और बेल, रस और कैल्के दाहिने स्तन पर अधिक प्रभाव डालते हैं, किन्तु मैं इस मत का समर्थन नहीं करता और जहाँ स्तन बहुत कड़े और हल्के लाल ग के हों तो मैं प्रायः ब्रायो देता हूँ जिससे उत्तम फल मिलता है और यदि कड़ापन कम हो और प्रदाह से कर्कट रोग होने की शंका हो तो बेल या रस उपयोगी हैं चाहे आक्रमण बायें या दाहिने स्तन पर हुआ हो, यदि दोनों स्तनों पर आक्रमण हुआ हो तो ऊपरलिखित सभी औषधियाँ समान रूप से एक या दोनों स्तनों को सुधार देंगी।

३—बहुत दिनों तक बच्चे को स्तन का दूध पिलाने से यदि माता दुर्बल हो जाय तो चायना या कार्बोविज उसे सबल करेगा। यदि इस दुर्बलता के साथ रात में अल्प या अधिक पसीना निकले, सूखी, भौंकने वाली खाँसी हो, कन्धास्थियों के बीच में दर्द हो, क्षयरोग की कृशता आदि लक्षण दिखाई पड़ें और चायना से अवस्था की उन्नति न हो और बच्चों को भी दूध छुड़ा दिया जाय तो कैल्के और लाइको और किसी किसी रोगिणी के लिए सल्फ से उपसर्ग दूर हो जायेंगे (डॉ॰ हेम्पल के अनुसार एकोन भी)।

४—यदि बच्चे को छाती का दूध छुडा दिया गया हो, किन्तु किसी भी प्रतिषेधक उपाय से दूध का प्रवाह चलता रहे तो उपयोगी औषधियाँ हैं पल्स, कैल्के।

५—छाती का दूध सूख जाने से उत्पन्न उपसर्ग (Metastases of the milk)—बच्चे को छाती का दूध छुड़ा देने के बाद प्रायः माताओं के स्तनों का दूध सूख जाता है, फलस्वरूप अनेक रोगों के उपसर्ग उत्पन्न होते हैं। मैंने ऐसी भी रोगिणी देखी है जिनमें भय के कारण छाती का दूध सूख गया है, क्रोध या अधिक ठण्ढ लग जाने से छाती का दूध सूख जाय और स्तनों में प्रदाह होने लगे तथा उदर के गढ़े में प्रदाह हो, दमा रोग का कष्ट होने लगे या बिना खाँसी के मस्तिष्क में प्रदाह होने लगे, चमड़े पर फुन्सियाँ दिखाई पड़े, चाहे वह थोड़े समय या अधिक समय तक रहें। इसी प्रकार की हालत में यदि माता को उदरामय हो तो एकोन, ब्रायो, वेल या रस से सफलता मिलती है, छाती के अन्दर कष्ट हो तो पल्स, ब्रायो, एकोन, लाइको या कैल्के, मस्तिष्क मे प्रदाह हो तो वेल, हायोस, रस उपकारी हैं। रोग का स्थान परिवर्तन हो तो इसी अध्याय के अनुच्छेद २ और ६ में लिखित औषधियाँ लाभदायक हैं और चमड़े पर के दाने रस, कैल्के, सल्फ या डल्का के आराम हो जायेंगे।

५—नवजात तथा छाती का दूध पीने वाले बच्चों के रोग

(Affections of New-born Infants and Infants at the Breast)

१—नवजात शिशुओं के तुरन्त के कष्ट (Immediate Difficulties of New-born Infants)—प्रसव में बहुत ही अधिक कष्ट हो तो बच्चे कभी-कभी बेहोश होकर पैदा होते हैं, इससे बच्चे की मृत्यु की शंका नहीं करनी चाहिये। ऐसी अवस्था में बच्चे के शरीर के भीतर खून का प्रवाह बाधा-प्राप्त नहीं होता, केवल साँस और पेशियों की गति नहीं रहती, चमड़ा पीला, माँस थुलथुला और चेहरा विकृत प्रतीत होता है। ऐसी स्थिति में 'मृगी रोग' की तरह अचेतपन रहता है, साँस नहीं चलती, हृदय और

नाड़ी की गति अनुभव में नहीं आती, बच्चे का चेहरा फूला हुआ मालूम पड़ता है। चेहरा और चमड़ा कुछ नीला-सा लाल या बैंगनी रंग का था। ऐसी अवस्था में एकोन ३० की केवल एक गोली जीभ पर डाल देने से अवस्था का सुधार हो जाता है या ओपियम के बाद एकोन सेवन कराने से भी नाड़ी का पता न चले या यहाँ तक कि टार्ट एमेट देने से रक्त का प्रवाह उन्नत हो जाय किन्तु साँस बन्द ही रहे। मृत्यु का अनुमान होने पर चायना ३० की ३ गोलियाँ जीभ पर डाल देने से उपकार होता है, यदि इससे उन्नति न दिखाई पड़े और १० या १५ मिनट तक कोई परिवर्तन हो तो उसी तरह टार्ट एमेट दिया जाय या जैसा कि डॉ० हेरिंग ने बताया है कि लैकेसिस की १ मात्रा वैसे क्षेत्रों में जादू दिखाती है। नवजात-शिशु में हरित्पाडु रोग हो जाय तो डिजिट की अपेक्षा सल्फ या कैल्के निश्चित लाभ पहुँचायेगा। नवाजात-शिशु के शरीर का पीलापन यदि जन्म के समय अधिक ठढ लग जाने से पैदा हो तो एकोन या मर्क (पोडोफाइलम भी—डॉ० हेम्पल)। शरीर के तन्तु-कोषो मे कड़ापन हो तो एकोन, ब्रायो या सल्फ की आवश्यकता है। सिर के भीतर गिल्टियाँ बन जायँ और आर्निका के घोल से धो देने पर भी आराम न मिले तो रस देना चाहिए या यदि वहाँ पीब बन गयी हो तो साइली। नवजात-शिशु की छाती फूल जाय तो मैं कैमो, ब्रायो या बेल देता हूँ और यदि उसमें कड़ापन आ जाय तो कैमो या आर्स, नाभि-स्थान मे आँत उतरे तो मैं नक्स वाम या सल्फर देता हूँ। उरु सन्धि मे आँत उतरे तो यदि नक्स वाम या सल्फ यथेष्ट हो तो काक्कस या वेरेट्र एल्बम। यदि अग विकृत या टेढ़े हो जायँ तो मैं प्रायः सल्फ और कैल्के लम्बी अवधि के बाद देता हूँ। यदि नवजात-शिशु के शरीर में कोई जन्मजात चिह्न दिखाई पड़े तो विशेष रूप से कार्बो वेज और उसी तरह सल्फ, कैल्के, सीपि और साइली।

२—शिशु के जीवन के प्रथमाश मे उत्पन्न रोग (Ailments incident to the First period of Life)—छाती का दूध पीने

वाले बच्चों में यदि हिचकी आवे तो प्रायः एकोन या हायोस से आराम मिलेगा और उसी की दूसरी अवस्था में नक्स वाम या पल्स। यदि छाती का दूध पीते समय शिशु की नाक बन्द हो जाय तो नक्स वाम या सैम्ब्यु और उसी तरह कैमो तथा डल्का लाभदायक होंगे (यदि ठण्ढ लगने से अवस्था खराब हो) या कार्बो वेज से फायदा होगा, यदि साँस लेने में कष्ट हो तो कैमो, छाती और कण्ठनली में ऐंठन होने लगे, साथ में चेहरे में पीलापन और खाँसी क्रुप की तरह हो तो एकोन या इपि और कभी-कभी सैम्ब्यु; जलन के लिए साधारणतया कैमो, इग्ने, रस, सल्फ, मर्क, कार्बो वेज, साइली या कैल्के, अनिद्रा हो तो साधारणतया काफि, बेल या कैमो; यदि बच्चा बहुत रोने लगे तो काफि, कैमो, बेल या एकोन, यदि उसके साथ ज्वर, शूल या कर्णशूल (नीचे नं० ३ देखिए) रहे तो काफि, कैमो, बेल या एकोन; यदि कब्जियत रहे तो ब्रायो या नक्स वाम, यदि इससे उपकार न हो तो सल्फ या ऐलूम, पेशाब रुक जाय तो एकोन और पल्स, नक्स वाम या कैम्फो (३० शक्ति तक भी), यदि सरलान्त्र बाहर निकल पड़े तो इग्ने, नक्स वाम, मर्क (हेमामेलिस भी—हेम्पल), बुखार का दौरा होने लगे तो एकोन, चाहे वह दन्तोद्गम, कृमि, ऐंठन होने की शंका या आने वाले किसी अन्य रोग के कारण बुखार हो। बच्चों के अन्य रोगों के विषय में, जैसे कि मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह, मस्तक में जल-सञ्चय, आँख आना, कर्णशूल, दाँत निकलते समय के कष्ट, मुख और गले में घाव, शूल, उदरामय, कूल्हे का प्रदाह, विसर्प, चमड़े पर दाने आदि के विषय में आगे के अध्यायों में चिकित्सा का विवरण देंगे।

३—शिशुओं के कुछ पुराने रोग (A few Chronic affections of infants)—यदि शिशुओं का सिर बहुत बड़ा हो (मस्तिष्क की विवृद्धि के कारण) तो सल्फ, कैल्के, मर्क और साइली से आराम मिलेगा; यदि उनका ब्रह्मरन्ध्र देर से बन्द हो तो मैं सल्फ, कैल्के, पल्स, साइली, यदि बच्चे चलना बहुत धीरे-धीरे सीखें तो उसी तरह सल्फ,

कैल्के, साइली। यदि बच्चों का पेट बड़ा कड़ा हो, साथ में अन्य अंग सूख जायँ तो मैं पहले आर्स देता हूँ और यदि उस रोग के साथ पहले दस्त होते रहे और उस उदरामय को रोक देने से कब्जियत हो जाए तो मैं नक्स वाम, सल्फ और कैल्के लम्बी अवधि के बाद देता हूँ। यदि शिशु की हड्डियों का जोड़ न मिले तो मैं साधारणतया रस से चिकित्सा शुरू करता हूँ। उसके बाद मैं सल्फ, कैल्के और साइली लम्बी अवधि के बाद देता हूँ तथा आवश्यकता के अनुसार अन्य औषधों के बीच-बीच में मर्क और बेल भी देता हूँ। बच्चों के तुतलाने के लिए मेरे हाथ में बेल, मर्क, प्लेट, कास्टि और सल्फ उत्तम औषधें हैं; यदि बच्चा एक वाक्य कह कर उसे पुनः दुहराने लगे तो मैं यूफ्रेशिया देता हूँ।



अध्याय—२०

कंठनली और वायुनली के रोग

(Affections of the Larynx and Bronchia,

१—विविध रोग

(Various Affections)

१—स्वरभग, स्वर के दोष (Hoarseness, defects of the Voice)—सर्दीजनित स्वरभग के लिए, जब कि नजला-जुकाम साथ हो या न हो। प्रायः ड्रोसेरा से यह तुरन्त दूर हो जाता है। यदि स्वर बहुत खोखला और गहराई से आता प्रतीत होता हो। यदि रोगी बहुत ऊँची या बहुत नीची आवाज से बोले तो ड्रोसेरा सल्फर। यदि इसके साथ गले में कच्चापन और दुखन भी हो तथा साथ ही साथ ये दोनों लक्षण छाती में भी पाये जायँ तो उनके लिए कास्टिकम। यदि शीतला निकलने के बाद स्वरभग हुआ हो तो—कार्वो वेज, ड्रोसेरा, कभी कभी डल्कामारा या सल्फर भी उपयोगी प्रमाणित होते हैं। क्रूप खाँसी के बाद—आमतौर पर—फास्फोरस या लाइकोपोडियम। यदि साथ में सर्दी भी रहे तो—मर्क, कास्टि या साइलि। यदि स्वरनली में सरसराहट हो और उसके कारण खाँसी आवे तो—कैमो, मर्क। यदि गले में खुरदुरापन रहने के साथ छींक बहुत अधिक आवे तो—रस टाक्स। सूखी खाँसी साथ में रहने पर—नक्स, कास्टि। खाँसी के साथ कफ वाला बलगम रहने पर—पल्स, सल्फ। पुराना स्वरभग—कास्टि, मैंगेन, लाइको, फास्फो, कार्वो-वेज, साइलि। जिन लोगों को बहुत अधिक बोलना पड़ता है, उन लोगों का स्वरभंग—फास, लेके, कैल्के, कार्वो वेज। स्वर का लोप होने पर—पल्स, सल्फ, कास्टि, फास, हिप, स्टैन, एण्टिम-क्रूड, कैल्के।

जब रोगी स्वर के साथ गाना न गा सके तो—आर्जेण्टम, ग्रैफा, ड्रोसेरा। गाते समय आवाज का फट जाना— ग्रैफाइटिस। प्रातःकाल या सायकाल स्वरभग होने पर—कार्बोवेज। तर और ठण्ढे मौसम में—कार्बोवेज, सल्फ और मर्क।

२—वायु-नलियो की सर्दी (Catarrh of the Bronchial Passages)—यदि ज्वर के साथ गर्मी और चमड़ा खुश्क हो—एकोनाइट। जब इससे लाभ न हो तो—बेल, ब्रायो, फास। जब रात्रि में पसीना अधिक हो—मर्क, पल्स, चायना, कार्बो-वेज। यदि शीत की अधिकता हो, रेंगकर आने वाली सर्दी—एकान वेल, कैमो, मर्क, नक्स वाम। यदि सर्दी से गर्मी की प्रधानता हो पल्स, नक्स, मर्क, आर्स। खासकर सूखा नजला—आर्स, नक्स वाम। बहने वाला जुकाम—पल्स, मर्क, आर्स, युफ्रे। गला बैठ जाना और उसमें खुरदरापन होना—एकोन, कैमो, फास। जब टेंटवे में दर्द हो—एकोन, वेल, ब्रायो, फास, कास्टि, सल्फ। श्वास मार्ग में बहुत अधिक सुरसुराहट होने पर— कैमो, नक्स, ब्रायो, वेल, बरवेस्कम, एमोनियम, ड्रोसेरा फास, इपि, पल्स। गले में खरोच-मर्क, नक्स। गले में बहुत अधिक बलगम आने पर—चायना, पल्स, सल्फ, इपिका। बहुत अधिक सूखी खाँसी में—एकोन, कैमो, हाइयो, इपिका, कास्टि, आर्स, नक्स, ब्रायो, बरवेस्कम, कानियम। आक्षेपिक खाँसी—वेल, एम्बरा, सीपि, इपिका, हाइयो, ड्रोसेरा, फास,। कफजनित खाँसी से बलगम निकले—पल्फ, ब्रायो, फास, सल्फ, मर्क, स्टन, लाइको। जब वायुनलियों में कफ की घड़घड़ाहट हो—पल्स, कार्बो वेज, इपिका, कैमो, हिप, कास्टि, सल्फ, कैल्के। जब साँस में थोड़ी या बहुत रुकावट भी हो—वेल, रस, मर्क, सल्स, सीपि। जब छाती मे सूई की-सी चुभन हो—एकोन, ब्रायो, मर्क, वेल, आर्न, फास, सल्फ। गला और छाती दुखना—कास्टि, कैल्के, नक्स, पल्स। छाती में निर्बलता का बोध—हिपर। छाती और पसलियों में कुचलने का-सा दर्द—ब्रायो, नक्स,

सल्फ, कार्वोविज, मर्क। सिर की ओर रक्त संचार की अधिकता—एकोन, वेल, मर्क, हायोस, ब्रायो, इपिका, पल्स, नक्स, लाइको। सिर में वात का दर्द—एकोन, ब्रायो, मर्क, लाइको, आर्स, पल्स। आँख आना—एकोन, वेल, मर्क, आर्स। आंसू आना—एकोन, मर्क, आर्स। वमन या वमन की इच्छा—इपिका, नक्स, पल्स, कार्वोविज, ब्रायो, सिना, हायोस, ड्रोसेरा, आर्सेनिक, कोनियम। पेट, कोख, छाती और पसलियों की पेशियो मे दर्द—नक्स, पल्स वेल, हाइयो, ब्रायो, सल्फ, मर्क, कार्वोविज। कोष्ठबद्धता—ब्रायो, नक्स, मर्क, आर्न, सल्फ, सीपि। उदरामय—इपिका, मर्क, आर्स, सल्फ। दिल की धडकन—पल्स, आर्स, सल्फ, एकोन, लाइको। हाथ पैरो मे आमवात का दर्द—आर्न, मर्क, ब्रायो पल्स, आर्स, रस, सीपि। भारी कमजोरी और थकान—चायना, इपिका, आर्स, रस, मर्क, फास, सल्फ।

३—इन्फ्लुएंजा (Influenza)—अर्थात् नजले जुकाम वाला बुखार। साधारण ज्वर और इसमें खास भेद यह है कि इसका प्रभाव सभी वात-नाड़ियों पर पड़ता है, हाथ पैरों और सभी हड्डियों में दर्द हो जाता है। ज्वर के साथ प्रदाह के सभी लक्षण मौजूद रहते हैं यहाँ तक कि रोग यदि अधिक भयंकर न हो तो श्वासनलियों की सूजन और फेफड़े के ऊपर की झिल्ली पर सूजन आ जाती है। आजकल यह रोग भीषण रूप में नहीं फैलता। वास्तव में यह नजले-जुकाम के साधारण ज्वर से विल्कुल भिन्न है। जब यह महामारी के रूप में फैलता है तब सभी लक्षण वैसे ही उग्र रूप में दिखायी पड़ते हैं। सर्वप्रथम यूरोप में ४० वर्ष पूर्व जब यह रोग महामारी के रूप में फैला तो इसके लिए रस टाक्स और कास्टिकम सर्वोत्तम समझे जाते थे। आज भी इन औषधों के व्यवहार से पर्याप्त लाभ होता है, विशेषतः जब कि इन्फ्लुएंजा अपने रूप में फैले। इन औषधों से हड्डियों का दर्द, सारे शरीर की पीड़ा आदि लक्षण बहुत जल्दी दूर हो जाते हैं। इसके बाद साधारण खाँसी-जुकाम की चिकित्सा करनी चाहिए। यदि रोग की प्रारम्भिक

अवस्था में ही पसलियों में दर्द हो जाय तो—एकोन, ब्रायो, मर्क या आर्न देना उपयोगी होता है। (विस्तृत विवरण के लिए प्लुरिसी सम्बन्धी अगला प्रकरण देखिए), यदि मस्तिष्क में उत्तेजना के लक्षण मौजूद हों तो—वेल या ब्रायो। यदि यकृत मे खासतौर से विकार हो—वेल, एकोन, मर्क, नक्स, लाइको। विशेष लक्षणों के लिए यकृत-प्रदाह देखिए। यदि फेफड़े आक्रान्त हों—एकोन, ब्रायो, फास, लैक, मर्क, सल्फ। यदि आमवात के दर्द की प्रधानता हो-कास्टि, रस, ब्रायो, एकोन, मर्क, लाइको। यदि रोगी के शरीर में बहुत कमजोरी थकावट और हाथ-पैरों में कुचल जाने की तरह का बोध रहे तो—रस, कास्टि, चायना, फास, आर्स, इपिका।

४—श्वास नली-भुज-प्रदाह (Bronchitis)—साँसनली के साधारण नजले और ब्रोंकाइटिस में मामूली भेद यह है कि ब्रोंकाइटिस में बुखार बहुत तेज, गर्मी अधिक, चमड़े की खुश्की, कष्टकर सूखी खाँसी जो छाती में बहुत गहराई से उठती हुई-सी प्रतीत होती है, फेफड़ों में बरतन की झंकार के समान शब्द सुनाई पड़ना, छाती के ऊपरी भाग में साँस की घुटन आदि लक्षण विद्यमान रहते हैं। यदि रोग के शुरू होते ही रोगी को एकोनाइट का घोल पिला दिया जाय तो २८ घण्टे के अन्दर ही इसके सभी उपसर्ग दूर हो जाते हैं और रोग साधारण जुकाम की अवस्था में रह जाता है, जिसकी चिकित्सा पैरा न० २ के अनुसार होनी चाहिए। यदि प्रदाह बहुत अधिक हो और २४ घण्टे के अन्दर एकोनाइट से कोई लाभ न हुआ हो तो फिर मर्क देना बहुत आवश्यक है। जब बुखार न रहे, परन्तु छाती में घुटन, खाँसी, छाती में दर्द, फेफड़े से कड़क की आवाज तथा और भी अन्य लक्षण मौजूद रहें तो वेल, ब्रायो और कार्बोविज विशेष उपकारी सिद्ध होते हैं। यदि साँस सीटी बजने की तरह निकल रही हो तो—ब्रायो, वेल, सैम्बु, लैक। कफ की घड़घड़ाहट में—लैक, सैम्बु, कार्बोविज, टार्ट एमे, हिप। यदि छाती पर लगातार दबाव मालूम हो—ब्रायो, वेल। छाती

में आक्षेपिक सकोचन—क्यूप्रम, वेल, आर्स, इपिकाक। आक्षेपिक खाँसी के दौरे वेल, इपिकाक, क्यूप्रम, हाइयो। यदि प्रदाह दूर होने के बाद साँसनली में बहुत अधिक कफ जमा हो जाय और साँस घुटने की सम्भावना हो, विशेषतः बच्चों के लिए—इपिका, टार-एमे, सैम्बु, हिप और कार्वो वेज बहुत ही लाभदायक हैं। कभी-कभी आर्सेनिक से भी लाभ होता है। पुराने श्वासनली मुज-प्रदाह में जब कि सूखी और थोड़ा-बहुत ऐंठन वाली खाँसी भी रहे—कैल्के, कार्वोविज, फास, वेल, हायो, क्यूप्रम, इपिका, केलि कार्व, ड्रोसेरा और स्पाजिया। यदि खाँसी में बलगम की अधिकता हो (Blennorrhoea Pulmonum), तो स्टेनम की अपेक्षा सल्फर, कार्वोवेज, कैल्के, कास्टि, फेरम, एण्टिम क्रूड और चायना विशेष रूप से प्रभावशाली औषधें हैं। बूढ़ों के दम घोटने वाली सर्दी के लिए कूप्रम बहुत ही लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त आर्सेनिक और कार्वोवेज भी बहुत गुणदायक है। यदि फेफड़े के पक्षाघात की आशका हो तो टारटर एमेटिक सर्वश्रेष्ठ है। यहाँ लाइकोपाडियम उपकारी नहीं है, जैसा कि डॉ० रिकार्ट ने अपनी चिकित्सा के तीसरे भाग के पृष्ठ १११ पर गलत प्रशसा की है। दम घोंटने वाले इस नजले में डॉ० गोलन ने भी कोई फायदा नहीं उठाया है।

५—कठनली का प्रदाह (Laryngitis)—इसका प्रदाह ब्रोंकाइटिस के प्रदाह से सर्वथा विपरीत है। अन्तर केवल इतना ही है कि इसमें दर्द और साँस-सम्बन्धी कठिनाइयाँ गले तक ही सीमित रहती हैं। जब रोग तरुण रूप (Acute) में हो, साथ में तीव्र ज्वर भी हो तो निश्चय ही एकोनाइट सर्वोत्तम औषध है। यदि साँस घुटने के लक्षण भी साथ-साथ हों तो भी एकोनाइट बहुत फायदेमन्द है। यदि इससे सहायता न मिले तो फिर सैम्बुकस का सेवन कराना चाहिए। जब स्वरनली में बहुत अधिक सरसराहट हो और सूखी खाँसी बनी रह जाय तो इपिका, हायो, ब्रायो, और स्पाजि। यदि खाँसते-खाँसते वमन हो जाय—ब्रायो, इपिका, नक्स,

ड्रोसेरा, वेल। यदि स्वरयन्त्र में दर्द, चुभन और दबाव बाकी रह जाय तो—वेल, ब्रायो, स्पाजि। यदि स्पर्शकातरता हो - वेल, हिप और लैके। जब खाँसते समय बहुत खोखली और गहरी आवाज निकले—ब्ररवेस्कम, स्पाजि, ड्रोसेरा। स्वरमन्त्र के पुराने प्रदाह (Phthisis Laryngea) की सूखी खाँसी के लिए—कास्टि, स्पांजि, ड्रोसेरा, सल्फ, कैल्के, एण्टिम-क्रूड, हिप, आर्जेण्टम, लैक, फास, आर्स। यदि पीव उत्पन्न हो गया हो—सल्फ, कैल्के, कास्टि, हिप, साइलि।

६—श्वासनली के मुँह मे ऐंठन (Spasm of the glottis, Asthma thymicum)—५ साल की एक लड़की को प्रातःकाल यह रोग हो गया और उसमें भीषण वेग से सभी लक्षणों का समावेश हुआ। ऐसा समझा गया कि थोड़ी ही देर में दम घुटने के कारण लड़की मर जायगी। उसके जीवन की कोई आशा न रखकर उसे एकोनाइट की ३० शक्ति की ३ गोलियाँ दी गयीं। १० मिनट के बाद ही उस लड़की में नव-जीवन का संचार हुआ। इसके बाद सभी रोगियों को सर्वप्रथम यही औषधि दी जाने लगी। इसके चमत्कार को देखकर कुछ लोगों ने इसे खाँसी के लिए जादू की गोलियाँ समझ लिया। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि इस घुटन के साथ-साथ यदि अन्य आक्षेपिक लक्षण भी हों तो केवल एकोनाइट से ही उन सभी लक्षणों को दूर नहीं किया जा सकता। इसके साथ अन्य औषधों का प्रयोग करना भी आवश्यक हो जाता है, जैसे—बेलेडोना (खासकर उस दशा में जब कि बच्चा कण्ठमाला विष वाला हो) इपिका, वेरेट्र-एल्ब और इनसे भी बढ़कर कूप्रम। अब तक किसी रोगी को जिकम, एमोनियम कार्ब और मर्क के प्रयोग से लाभ नहीं हुआ है। सल्फर की केवल एक मात्रा से ही इस आक्षेपिक दौरे की प्रवृत्ति दूर हो जाती है।

७—क्रूप खाँसी (Croup, Membranous Croups)—इस रोग की कठिनता के विषय में जैसी लोगों की धारणा है, वैसी कठिनाई चिकित्सा

में नहीं है। इसके लिए चिकित्सक को दत्तचित्त होकर सोच-विचार करना चाहिए। यदि आरम्भ में रोगी को बुखार हो जाय, आटे के घोल के समान पेशाब हो, बालक कुत्ते की तरह खों-खों शब्द करता हुआ या घण्टी की आवाज की तरह खाँसता हो तो ऐसे लक्षणों को खतरनाक नहीं समझना चाहिए। वास्तव में खतरनाक अवस्था तब समझी जाती है जब दम घुटने लगता है और उस समय पीड़ित अंग में पीब भी पैदा हो जाता। ऐसी अवस्था प्रायः ४–५ दिन बाद उत्पन्न होती है। यदि इस दशा में चिकित्सक शीघ्रता के कारण स्पाजिया, आयोडिन या ब्रोमियम की बड़ी-बड़ी मात्राएँ बिना सोचे-विचारे खिला दें, इन्हें हेर-फेर के साथ दें अथवा इपिकाक और ब्रायोनिया अदल-बदल कर दें और रोगी की हालत दम घुटने की हो जाय तो फिर उसके जीवित रहने की कोई आशा नहीं रहती है। किसी औषध की बड़ी मात्रा के प्रयोग से सामान्य रोग भी घातक सिद्ध हो सकता है। रोग पर काबू पाने के लिए रोगी तथा औषधि के लक्षणों का मेल होना बहुत आवश्यक है। आमतौर पर क्रूप खाँसी की चिकित्सा निम्नलिखित प्रकार से होनी चाहिए :—रोग के आरम्भ में ही एकोनाइट ३० शक्ति की २ गोलियों को थोड़े पानी में घोलकर देना चाहिए। जब तक बुखार उतर न जाय और खाँसी से घण्टी बजने की-सी आवाज का निकलना बन्द न हो जाय तब तक इसके घोल से १–१ चम्मच की मात्रा ३–३ घण्टे के अन्तर से पिलायी जाय। ऐसा करने से खाँसी का वेग कम हो जाता है। प्रायः क्रूप खाँसी की प्रदाह वाली अवस्था बहुत ही खराब होती है। ऐसा देखा गया है कि एक बार खाँसी के ठीक हो जाने पर यदि उसे यों ही छोड़ दिया जाय तो कुछ दिनों के बाद उसका पुनः आक्रमण हो जाता है। इस प्रकार के दोबारा आक्रमण से बचने के लिए कुछ अन्तर से लम्बी अवधि तक एकोनाइट के घोल का सेवन कराते रहना चाहिए। जब तक खाँसी ढीली न हो जाय और उससे बलगम न निकलने लगे तब तक इस औषध का क्रम चलाते रहना चाहिए। क्योंकि जब तक रोग की ऐसी अवस्था प्रकट न हो तब तक रोगी के लिए बराबर खतरा बना रहता है। जब बच्चे में साँस घुटने के लक्षण हों

और इस प्रकार का कष्ट केवल रात में ही बढ़े तब भी एकोनाइट का ही प्रयोग होना चाहिए। यदि आक्षेप रुक जाय तो इसका प्रयोग तब तक करते रहना चाहिए जब तक कि नाक से पानी निकलना शुरू न हो जाय। यदि एकोनाइट देते रहने पर भी आक्षेप उत्पन्न हो जाय और वह भी रात में बढ़े तो समझना चाहिए कि पीब का बनना सन्निकट नहीं है। डॉ० हेरिंग ने कहा है कि शाम को और रात में श्लैष्मिक झिल्लियों पर सूजन आ जाती है और वह सूजन दिन में बहुत कुछ घट जाती है। ऐसी हालत में खासकर उस हालत में जब खाँसी सूखी, साँस लेते समय घण्टी बजने की सी आवाज या कौवे की बोली की-सी आवाज निकलती हो तब स्पाजिया का प्रयोग हितकारी है। यदि २४ घण्टे के अन्दर कोई परिवर्तन न दिखायी पड़े और खाँसी में घड़घड़ाहट या आरा चलने का-सा शब्द सुनायी पड़े तो वहाँ हिपर का प्रयोग उत्तम फलदायक होता है। इसके प्रयोग की विधि भी एकोनाइट के घोल के समान ही है। यदि इससे भी कोई सुधार न दिखाई दे तो आर्सनिक देना उचित है। जब रोगी में बहुत अधिक दुर्बलता और दौरे के समय व्याकुलता हो तब इससे अच्छा फल मिलता है। इसके प्रयोग के बाद रोग की वृद्धि रुक जाती है और रोग की ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जाती है, जिसे हिपर, बेलेडोना या फास्फोरस आसानी से दूर कर देते हैं।

यदि रोगी की चिकित्सा में बहुत विलम्ब हो जाय, पीब बनना शुरू हो जाय, नकली झिल्लियाँ बन जायँ, रोगी का चेहरा मुर्दे की तरह पीला पड़ जाय, खाँसते समय चेहरा मैला हो जाय तो रोगी की स्थिति के अनुसार उसे स्पांजिया या हिपर देना चाहिए। (जैसा कि अनुच्छेद न० २ में वर्णित है)। यदि २४ घण्टे के बाद भी इन दोनों औषधों में से कोई भी अनुकूल न पड़े तो फास्फोरस का व्यवहार करना आवश्यक होता है। ऐसी स्थिति में फास्फोरस से उत्तम फल पाया गया है। रोग की उपरोक्त अवस्था रहने पर भी औषध की बड़ी मात्रा कभी नहीं देनी चाहिए।

औषध की अल्प मात्रा पीव को सुखाकर रोगी को स्वस्थ बनाती है, किन्तु बड़ी मात्राएँ केवल कृत्रिम झिल्लियों को ही तोड़ती हैं। जब तक रोग का आक्रमण स्वरयन्त्र और सांस-नलियों तक ही सीमित रहता है तब तक रोगी के लिए कोई खतरा नहीं होता। यदि साँस की बारीक नलियाँ आक्रान्त हो जायँ तो वे इन टूटी हुई झिल्लियों से बन्द हो जाती हैं, और रोगी दम घुटने के कारण मौत के मुँह में चला जाता है, क्योंकि वहाँ से उन्हें खाँसकर बाहर निकाला नहीं जा सकता। यह रोग की अन्तिम अवस्था होती है। इसमें आर्सेनिक या ब्रायोनिया का सेवन नहीं कराना चाहिए। ये दोनों औषधें गलकोष के क्रूप या डिफ्थीरिया में भी यही तोड़-फोड़ करती हैं। इनके विपरीत फास्फोरस और एपिस के द्वारा उनका शोषण होता है। फास्फोरस के उचित प्रयोग करने पर चिकित्सक को कभी निराश नहीं होना पड़ेगा। क्रूप-जनित पीव आने की अवस्था में भी यह सफल औषध है। क्रूप की अन्तिम अवस्था प्राप्त रोगियों की छाती का भली-भाँति निरीक्षण करना चाहिए और ध्यानपूर्वक यह देखना चाहिए कि फेफड़ों पर रोग का आक्रमण कहाँ तक हुआ है। ऐसा करने के बाद ही किसी औषधि का चुनाव चिकित्सक को करना चाहिये। यदि रोग का आक्रमण सांस की बारीक नालियों पर हुआ हो और फास्फोरस देने के ५-७ घण्टे बाद भी रोगी में कोई सुधार के लक्षण न दिखाई पड़े तो उस रोगी को असाध्य समझ लेना चाहिए। क्रूप किसी भी अवस्था का क्यों न हो, यदि वह नाक से जुकाम के रूप में बहने लगे तो निम्न औषधों का प्रयोग करें—

बहने वाली सर्दी—मर्क। सूखी खाँसी—कैमो, एकोन, इपि। स्वर भंग, जो काफी दिनों तक रहता है—फास, हिप, बेल, कार्बो वेज। खोखली खाँसी—बेल, स्पाजि। काफी दिनों तक रहने वाली, कफ वाले बलगम का निकलना—हिपर, फास। क्रूप खाँसी का बार-बार दौरा—सल्फ, कैल्के फास। इन औषधों का व्यवहार मैं लम्बी अवधि के बाद ही कराता हूँ।

८—हुपिंग खाँसी (Whooping Cough)—रोग की प्रथम अवस्था में, जब तक कि आक्षेप शुरू न हुआ हो, खाँसी में खिंचाव और चीत्कार की सी आवाज हो तो एकोन, बेल, नक्स, इपि या सिना देकर रोग के विकास को रोका जा सकता है। इन औषधों से रोग निमूंल नहीं होगा। जब थोड़ा प्रदाह, ज्वर और स्वरयन्त्र में दर्द हो तो एकोनाइट और कभी कभी नक्स वाम से सभी उपद्रव दूर हो जाते हैं। जब स्वरयन्त्र में दुखन, ज्वर का अभाव, खाँसी का दौरा सुबह, भोजन के बाद या शुष्क रूप में हो तब नक्स वाम से विशेष लाभ होता है। नक्स वाम के बाद डल्का-मारा की अपेक्षा फास्फोरस ही विशेष लाभजनक है। एकोनाइट के प्रयोग से जब स्वरयन्त्र का प्रदाह दब गया हो, परन्तु खाँसी बनी हो तो बेलेडोना ही उपकारी सिद्ध होता है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि जिन परिवारों में काली खाँसी का प्रकोप हुआ और उस प्रकोप से बचे हुए लोगों को बेलेडोना ने रोग के पंजे से मुक्त ही रखा। यदि प्रारम्भ में ही खाँसी का रूप आक्षेपिक हो जाय तो इपिकाक से विशेष सहायता मिलती है, विशेषतः उस अवस्था में जब रोगी की साँस में रुकावट और उसकी खाँसी में बलगम की अधिकता हो। सिना—जब रोग के प्रारम्भ में बहुत छींक आवे, विशेषतः उन बच्चों की खाँसी में लाभप्रद है, जिन्हें कृमि की शिकायत हो, बार-बार नाक रगड़ते हों, और बिछौने में पेशाब कर देते हों। ऐसी हालत में इस दवा से काली खाँसी का जोर टूट जाता है। कार्बोवेज—बिना वमन के ही काली खाँसी का दौरा, खासकर सुबह-शाम। जब खाँसी दूसरी श्रेणी में हो अर्थात् आक्षेप उत्पन्न हो गया हो, जिसके कारण बच्चे के शरीर में ऐंठन होती हो तो निम्नलिखित औषधों का व्यवहार विशेष लाभदायक सिद्ध हुआ है :—इपिका, वेरेट्र एल्ब, सिना, कूप्रम, सीपि। पूरक औषधों के रूप में आर्न, केलि कार्ब, बेल और आर्स बहुत लाभदायक हैं और रोगकी प्रबलताको दूरकर देते है। मैंने निम्न स्थितियों के लिए निम्नलिखित औषधियों को विशेष रूप से उपयोगी पाया है :—

श्वासनली के मुँह के आक्षेप में—इपिकाक। यदि आक्रमण से पहले भारी घबराहट हो—कूप्रम। यदि खाँसी आने से पहले बच्चा रोता या कराहता हो—आर्निका। यदि खाँसी के साथ नाक या मुँह से खून निकलता हो—ड्रोसेरा, वेरेट्र एल्ब, इपिकाक, टारटर एमेटिक। जब खाद्य के बदले कफ का वमन हो—ड्रोसेरा, वेरेट्र एल्ब, इपि, टार्ट एम। यदि न पचे हुए खाद्य की कै हो—ड्रोसेरा, इपि, कॅल्के, कॅलि कार्वो, कार्वोवेज। जब खाँसते-खाँसते अपने-आप पेशाब निकल जाय—वेरेट्र एल्ब। खाँसते-खाँसते आमाशय का गढ़ा दुखने लगे—ड्रोसेरा। यदि पेट दुखने लगे—नक्स, वेरेट्र एल्ब। मानो कोई चीज चीरी-फाड़ी जा रही हो—बेल, नक्स। जब साँस रुँधने लगे—इपिका, कूप्रम, वेरेट्र एल्ब, आर्स। जब छाती में दर्द होने लगे वेरेट्र एल्ब, सिना, कूप्रम। हाथ-पैरों में ऐंठन होने लगे—कूप्रम। घनुष्टकार—सिना, कूप्रम, इपि। यदि नकसीर के अन्त में खाँसी रुक जाय—सिना। साथ में छींकें आयें—सिना, बेल। साथ में वमन हो—सिना, इपि, बेल। साथ से गले से पेट तक गड़गड़ाहट हो—सिना। इसके साथ ही देर तक साँस न चले, साथ में रोता और कराहता हो—सिना, आर्न। अन्त में भारी थकान और सुस्ती हो—वेरेट्र एल्ब, आर्स। यदि दो खाँसियों के बीच में सिर की ओर रक्त संचार की अधिकता हो—बेल, ब्रायो। जब गले में घाव और निगलते समय गले मे दर्द हो—कार्वोवेज, बेल। वमन हो और खाँसी के बिना ही वमन हो—पल्स, कार्वोवेज, टार्टर-एमे, इपि, वेरेट्र एल्ब। जब हवा की नालियों में प्रचुर कफ जमा हो जाय—कूप्रम, वेरेट्र एल्ब, सिना इपि। मन्द ज्वर, सुस्ती, कमजोरी, थकावट, हर समय शीत का अनुभव और प्यास की अधिकता—वेरेट्र एल्ब। बारीक दाने (Miliaria)—खासकर इपि, वेरेट्र एल्ब, कार्वोवेज। चेहरा फूला हुआ—खासकर आँखों के बीच में—केलि कार्ब। अन्त में खाँसी का दौरा जब शाम को या रात में हो—ड्रोसेरा, कार्वोवेज, पल्स। खासकर जब प्रातःकाल या आधी रात के बाद हो—केलि कार्ब, ड्रोसेरा। प्रातःकाल और दोपहर से पूर्व—नक्स वाम। भोजन के

बाद इपि, नक्स। खाते समय—कैल्केरिया। खुली हवा में कष्ट की वृद्धि—कार्बोविज। यदि इन औषधों से ऐंठन के साथ आने वाली खाँसी ८–१० दिन में या कभी-कभी इससे भी अल्प समय में कम हो जाय तो शेष कष्ट पल्स, इपि, हिप, कार्बोविज, डल्कामारा या सल्फ से दूर हो जाते हैं। अन्तिम श्रेणी के रोगी में मैं दवा को जीभ पर डाल दिया करता हूँ। औषध की मात्रा प्रायः एक ही देता हूँ और ६ से ८ दिनों तक उसके फल की प्रतीक्षा करता हूँ। नजले की सूजन-प्रदाह और आक्षेप के समय में पानी में औषध मिलाकर देता हूँ और हर बार आक्षेप का नया दौरा होने पर वही पानी १–१ चम्मच की मात्रा में पिला दिया करता हूँ। इस प्रकार के साधन से सफलता निश्चित रूप से मिलती है।

१—विभिन्न प्रकार की खाँसी के आक्षेप
(Paroxysms of cough of Various Kinds)

मन्तव्य (Remarks)—यदि पुरानी खाँसी के स्नायविक या वात-कास (Nervous Cough) कृमि जनित खाँसी और दन्तोद्गम काल की खाँसी आदि अनेक भेद न होते और उन सबका ब्राकाइटिस से कोई सम्बन्ध न होता तो मैं इस रोग का उल्लेख न करता। कास रोग कोई खास रोग नहीं है। यह शारीरिक विकार का केवल एक लक्षणमात्र है। यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि चिकित्सा-क्षेत्र में एक सामान्य लक्षण भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी कारण मैं उनके लक्षणों तथा उनकी चिकित्साओं का उल्लेख कर रहा हूँ। इनके लक्षणों तथा औषधों का वर्णन मेरे अनुभव के आधार पर ही किया गया है।

१—नजले जुकाम की खाँसी (Catarrhal Cough)—तरुण सर्दी के बाद प्रायः खाँसी रह जाया करती है और इसका मुख्य कारण होता है—हवा की नलियों की श्लैष्मिक झिल्लियों की कमजोरी। यदि इस प्रकार के जुकाम का आक्रमण प्रति वर्ष वसन्त ऋतु में या बरफ पड़ने

के मौसम में होना हो तो जानना चाहिए कि निश्चिय ही यक्ष्मा या किसी प्रकार का घाव इसका मूल कारण है। सर्दी के बाद सूखी खाँसी के लिए विशेषतः पल्स, कास्टि, कैल्के, कार्बोवेज या साइलि का प्रयोग करना उत्तम है। यदि ढीली खाँसी में पल्स, हल्का, चायना और फेरम से कोई लाभ न हुआ हो तो एसिड, फास्को, साइलि, सल्फ, कैल्के या कार्बो वेज से विशेष सहायता मिलती है। यदि खाँसी के साथ पुराना स्वरभग, छाती में जलन और दुखन हो तो प्रायः कास्टिकम बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। यदि गले में बहुत अधिक तकलीफ या दर्द न मालूम पड़ता हो तो—सल्फ, फास, कैल्के और कार्बो वेज उपकारी हैं। (अनुच्छेद न० १, २, ३, ४ और ५ में वर्णित औषधियों और उनके खास-खास लक्षणों का भी अध्ययन करना चाहिए।)

२. उदर से उठनेवाली खांसी (Gastric Cough Lussis abdominalis)—यह खांसी बहुधा कृमि-विकार, यकृत - विकार या मन्दाग्नि के कारण उत्पन्न होती है। इसका मूल कारण नष्ट हो जाने पर यह खाँसी दूर हो जाती है। यदि खाँसते खाँसते उल्टी हो जाय तो पल्स, इपि, नक्स, सल्फ, साइलि, फेरम, कैल्क कार्ब आदि का प्रयोग हितकारी है। इन औषधियों से खाँसी और उनके मूल कारण नष्ट हो जाते हैं। कृमिजनित खाँसी या दाँत निकलने के समय आनेवाली खाँसी में सिना और मर्क का व्यवहार बहुत ही उत्तम फल दिखाता है।

३—स्नायविक, आक्षेपवाली या जलनवाली खांसी (Nervous Cough, Spasmodic or irritative Cough)—ऐसी खाँसी प्रायः उन्हीं स्त्रियों में पायी जाती है जो हिस्टीरिया से ग्रसित होती हैं अथवा उन बच्चों में होती है, जिनके दाँत निकल रहे हैं। इसके लिए बेल, हायो, इपि, सिना पल्स, एम्ब्रा, कोनि, वेरेट्र एल्व और कूप्रम अत्यधिक लाभकारी है।

४—रक्तोत्कास (Hoemoptysis)—प्रायः खाँसी या थूक से खून का आना बहुत ही खराब लक्षण माना जाता है। ऐसी अवस्था बहुधा शोष

के आरम्भ में ही होती है। इसके अतिरिक्त खाँसी में अन्य कारणों से भी खून आ सकता है, जैसे हवा की नलियों की श्लैष्मिक झिल्लयों में सूजन का होना। जुकाम में प्रायः ऐसी स्थिति हो जाया करती है। कभी-कभी छाती की ओर अधिक सचार, ऋतु-विकार या रक्तार्श के दब जाने से भी ऐसा होता है। नजले की शोथवाली अवस्था में एकोनाइट को पानी में मिलाकर देने से विशेष उपकार होता है। इसी प्रकार ब्रायो, चायना या पल्स भी हितकारी हैं। रक्तार्श के दब जाने पर एकोनाइट, नक्स, सल्फ, कार्वो वेज या फास का प्रयोग अच्छा है। ऋतु-विकार में पल्स, चायना, ब्रायो, सल्फ, फास। फेफड़े से रक्तस्राव के लिए अगला अध्याय देखिए।

५—खाँसी के अनुसार विशेष निर्देशक लक्षण—सूखी खाँसी के लिए मेरे हाथ में एकोन, नक्स वाम, वेल, हायोस, कैमो, ब्रायो, कैप्सि, रस, सल्फर, कैल्के, कास्टि इग्ने, केलि कार्व बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए हैं। ढीली खाँसी तड़के, किन्तु रात को और शाम को सूखी खाँसी—कैमो, नक्स, कैल्के, साइलि, आर्स, लाइको, पल्स, फास एसि। सारे शरीर को झकझोर देनेवाली खाँसी—वेल, नक्स वाम, मर्क, कैल्के, केलि कार्व, फास, स्टेनम, सल्फर, कार्वोवेज, रस, साइलि, पल्स, इग्ने। गहरी खोखली खाँसी—ड्रोस, हिप, वर्वे, वेरेट्र एल्ब, साइलि, कास्टि, वेल, स्टैफि। सुरसुराहट के साथ खाँसी—कैमो, हायोस, बेल, इपि, मर्क, रस, फास-एसि, सल्फ, लैके, नक्स, स्टैफि, वेरेट्र एल्ब। मानो गले में धूल है, उससे खाँसी—वेल, इग्ने, कैल्के, चायना, आर्स, पल्स, ऐंठनवाली खाँसी—हायोस, इपि, बेल, कार्वोवेज, पल्स, नक्स, सिना, ड्रोस, सूखी, कर्कश, गला छिल जानेवाली खाँसी—नक्स, पल्स, इग्ने, वर्व, हिप, स्टेनम; साँस रुँधनेवाली खाँसी, टार्ट एम, इपि, साइलि, कूप्रम, आर्स, नक्स वाम, मानो गले में गन्धक का धुआँ घुसा है, उससे खाँसी—चायना, पल्स, इग्ने, आर्स, गले के नीचे से मानो खाँसी शुरू हुई है—कैमो, इग्ने, बेल, लैके, चायना इपि, स्टैफि, स्टेनम, कैल्के, कास्टि, मानो खाँसी छाती से उठ रही है—कास्टि; मानो पाकाशय

से उठ रही है— ब्रायो, पल्स सीपि; यदि खाँसी के साथ बहुत बलगम निकले—सल्फ, कैल्के, पल्स, फास एसि, स्टेफि, स्टेनम, कार्बोवेज, हिप, ब्रायो, साइलि, चायना, लाइको, यदि बलगम केवल तड़के निकले—नक्स, कैमो, पल्स, ब्रायो, फास, फास एसि, सीपि, कैल्के, कार्बोवेज। यदि बलगम का स्वाद कड़ुवा हो—पल्स, ड्रोस, कैमो, मर्क, नक्स, यदि उसका स्वाद सड़ा और गन्दा हो—पल्स, फेरम, कार्बोवेज, लाइको, स्टेनम। यदि पुरानी सर्दी के कारण खाँसी आये तो खासकर पल्स, सल्फ; यदि बलगम का स्वाद मीठा-सा हो—फास, कैल्के, स्टेनम, सल्फ, यदि उसका स्वाद खट्टा हो—कैल्के, चायना, नक्स, पल्स, फास, यदि उसका स्वाद खारा-सा हो—लाइको, आस, सल्फ, पल्स, स्टेनम, फास, सीपि, यदि बलगम से दुर्गन्ध निकले—पल्स, सल्फ, सीपि, कार्बोवेज, स्टेनम, कैल्के, साइलि। यदि कफ-सा बलगम निकले—चायना, स्टैफि, फास एसि, सल्फ, पल्स, इपि, लैके, लाइको, साइलि, स्टेनम, कैल्के, डल्का, फास, कार्बोवेज; खूनभरा कफ निकले चायना, मर्क, एकोन, वेल, कार्बोवेज, फेरम, स्टेफि, साइलि, ब्रायो आर्स। शुद्ध खून निकले—एकोन, आर्न, चायना, इपि, फास, ब्रायो, फेरम, आर्स, सल्फ, डल्का। छोटे-पिण्ड निकले—साइलि, कैल्के, लाइको, लैके, हिप, सल्फ, केलि कार्ब, स्टेनम, पानी-सा या पतला कफवाला बलगम निकले—हिप, कार्बोवेज, चायना, पल्स, मर्क, आर्स, फेरम, सल्फ; बलगम में गाढ़ा कफ निकले—पल्स, सल्फ, कैलि फास, साइलि, स्टैनम; पीब वाला कफ, ड्रोस, स्टैफि कैल्के, पल्स, साइलि, चायना, कार्बोवेज, फेरम, मर्क, फास, सिपि, स्टेनम, लाइको, सल्फ; पीला-सा पल्स, ब्रायो, कार्बोवेज, सल्फ, लाइको, फास, कैल्के, फास एसि, स्टेफि, ड्रोस, सिपि, स्टेनम, भूरा या भूरा-सा—कार्बोवेज, लाइको, आर्स, सिपि। हरा या हरा-सा—पल्स, सल्फ, कैल्के, फेरम, मर्क, कार्बोवेज, लाइको, साइलि, आस, स्टेनम, सफेद-सा—कार्बोवेज, फास एसि, सइलि, कैल्के, सल्फ, लाइको, फास, इपि, पल्स, चिमड़ा कफ गले में चिपक जाता है—सल्फ, साइलि, नक्स,

चायना, आर्स, प्रचुर बलगम—पल्स, डल्का, सल्फ, सोपि, स्टेफि, साइलि; यदि बलगम खाँसने से अलग हो गया हो और उसे निकालना कठिन हो तो कास्टि, सीपि।

६ खाँसी शुरू होने पर उसके उत्तेजक कारणो के अनुसार निर्देश—कोई काम करते ही खाँसी आती है—इपि, शरीर को हर बार हिलाते ही खाँसी—ब्रायो, नक्स, फेरम, चायना, फास, साइलि; छाती को हिलाने पर; विशेष रूप से—नक्स, चायना, फास, स्टेनम, साधारणतया ठण्ढ लगते ही डल्का, कार्बोवेज, सीपि, कैमो, पल्स, हिप, ठण्ढा वायु से खाँसी बढ़ती है—डल्का, लैके, इपि, रस; साधारण ठंढक से— कार्बो-वेज, आर्स, हिप, कास्टि, फास, खुली हवा में अधिक खाँसी, फास, सल्फ, आर्स, रस, खाने से बढ़ती है—ब्रायो, लैके, नक्स वाम, फास आर्स, कैल्के। हँसने से खाँसी आती है, ड्रोस, फास, स्टेनम, चायना, पढ़ते समय नक्स, फास, स्टेनम, आधो लेटी हालत में खासकर हायोस, डल्का, पल्स, आर्स, फास, साइलि, सीपि, गहरी चिन्ता से—डल्का, पानी पीने से फिर खाँसी, आर्स, चायना, हिप, लैके, ब्रायो, कमरे की गर्मी से—पल्स, ब्रायो, डल्का, खुली हवा में आराम—पल्स, डल्का, बिछौने में उठ बैठने से—हायोस, गर्मी से या शरीर गरम होने पर—कैमो। दिन के खास समय पर यदि रोज खाँसी आवे या शाम को बढ़े—कार्बोवेज, कैप्स, रस, कंल्के, आर्स, फास, स्टेनम, हिप, पल्स, रात्रि को बिछौने में लेटने पर हायोस, इग्ने, आर्स, कैल्के, कार्बोवेज; पल्स, साधारणतया रात को—मर्क, केप्सि, रस, साइलि, सल्फ, स्टेनम, ड्रोस, कैमो, हायोस, वेल, केलि, कार्ब, पल्स, सिपि, मध्य रात्रि के पूर्व कार्बोविज, रस, मध्य रात्रि के बाद केलि कार्ब, ड्रोस, बेल, नक्स। यहाँ तक कि सोते में भी कैमो, कैल्के, लैके, मर्क, वर्ब, सोने के बाद वृद्धि, लैके, तड़के और शाम को, लाइको, फास; केवल तड़के और शाम को—लाइको, फास, केवल तड़के इग्ने, नक्स, चायना, आर्स, स्टेनम, लाइको, दिन और रात में—कैल्के, कार्बो वेज, लाइको, फास।

७—आनुषंगिक रोगो के अनुसार निर्देशक लक्षण (Indications according of the Accessory Affections)—यदि खाँसी के साथ सिर में रक्तसंचय हो तो बेल, ब्रायो, नक्स वाम, सल्फ। यदि उसके साथ सिर में दर्द रहे तो नक्स वाम, आर्न, ब्रायो, सल्फ, कैल्के, इपि; यदि ऐसा अनुभव हो कि सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे तो नक्स वाम, सल्फ, ब्रायो, केप्स, बेल, सिर में सूई चुभने का-सा दर्द हो तो आर्न, कैल्के, सिर में दपदपाहट इपि, पल्स, आर्स, लाइको, मिचली और कै, इपि, नक्स वाम, पल्स, कार्बो वेज, ड्रोस, ब्रायो, फेरम, कैल्के, साइलि, स्टेन, सल्फ, केप्स, रस, यदि वमन पेट के न पचे हुए खाद्य का हो तो इपि, नक्स वाम, पल्स, कार्बो वेज, ड्रोस, ब्रायो, फेरम, कैल्के, लाइको, खाँसी का दौरा होने के पहले बेल, उदर के ऊर्ध्व भाग और निम्न भाग में बहुत दर्द, नक्स वाम, पल्स, आर्न, ब्रायो, लाइको, ड्रोस, हायोस, फास। यकृत के स्थान में कष्ट चायना, ब्रायो, लाइको, बेल, लैके, नाभि के स्थान में बहुत अधिक दर्द- इपि, नक्स वाम, हर बार खाँसते ही पेशाब होता है—कास्टि, पल्स, स्टैफि, फास, नेट्र म्यूर, कैप्स, उरु संधि में आँत उतरने से बहुत दर्द नक्स वाम, वेरेट्र एल्ब, साइलि, सल्फ, कण्ठ नली में बहुत दर्द—एकोन, आर्न, बेल, हिप, कास्टि, कैल्के, कार्बोवेज, आर्जे, फास, लैके; कण्ठ नली में ऐंठन, इपि इग्ने, हायास, बेल, छाती में दर्द हो तो एकोन, ब्रायो, बेल, इपि, कार्बो वेज, चायना, स्टेफि, फास एसि, केलि कार्ब, नाइट एसि, कास्टि, लाइको, फास, पल्स, स्टेन, श्वासनली में जलन, कार्बोवेज, कास्टि, स्पांजि, सल्फ, आक्रान्त अंशों में दबाव का बोध, बेल, सल्फ, उन अंशों में घाव होने का-सा दर्द—कैल्के, साइलि, फास, हिप, केलि कार्ब, लैके, उन अंशों में सूई चुभने का-सा दर्द-ब्रायो, बेल, सल्फ, वेरेट्र एल्ब, आर्स, फास, पेट्रोल, कैप्स, कार्बोवेज, केलि कार्ब, नाइट, उन अंशों में जलन, कच्चापन और दर्द कास्टि, नक्स वाम, इपि, सल्फ, कार्बोवेज, फास, बेल, स्टेन, आर्जे। छाती में कफ की घड़घड़ाहट इपि, टार्ट एमेट, कैल्के, कैमो, बेल, पल्स, श्वासकष्ट

इपि, सिना, कूप्रम, आर्स, टार्ट एमेट, ब्लोस, वेल, साइलि, श्वासनली में सनसनाने की आवाज—लैके, ब्रायो, चायना, सल्फ, केलि कार्ब, ड्रोस, दिल की धड़कन में पल्स, आर्स, सल्फ, आर्न, कैल्के, नाइट, नेट्र म्यूर। साँस छोटी हो तो सल्फ, रस, साइलि, कैल्के, आर्स, आर्न, कार्बो वेज, कास्टि, साँस का रुँधना इपि, सल्फ, केलि कार्ब, लैक, कूप्रम, लाइको, सिपि, पल्स, हाथ-पैरों में वात का दर्द कास्टि, पल्स, ब्रायो, एकोन, कैप्स, रस, सल्फ, रात का पसीना चायना, कार्बो वेज, आर्स, साइलि, रस, केलि कार्ब, फास, सल्फ, कैल्के। हाथों में अधिक पसीना टार्ट एमेट, सिर में अधिक पसीना टार्ट एमेट, इपि, खाँसी का दौरा समाप्त होने पर भारी दुर्बलता और अवसाद में इपि, चायना, वेरेट्र एल्ब, आर्स, कराहना और रोना आर्न, हिप, सिना, बहुत छींक आना बेल हिप, सिना। द्रष्टव्य—पृष्ठ १६८ में श्वासनली की सर्दी के साथ तुलना कीजिए।



अध्याय—२१

श्वास-कष्ट और फेफड़ो के रोग

(Difficulties of the Respiration, Pulmonary Affections, Diseases of the Heart)

१—श्वास-कष्ट

१—उमरदार आदमियो मे ऐंठनवाला दमा रोग (Spasmodic asthma of adults)—इस प्रकार के रोग में मैं इपिकाक से चिकित्सा शुरू करता हूँ, जिससे बहुत शीघ्र रोग की तीव्रता और बार-बार आक्रमण घट जाते हैं। उसके बाद यदि रोगी ऐसी शिकायत करे कि छाती में लगा-तार दबाव का कष्ट, दो बार के आक्रमणों के बीच में श्वासकष्ट तथा चिमड़ा बलगम निकालने के लिए बहुत कष्ट है तो मैं सल्फर की एक मात्रा देकर बहुत उत्तम फल पाता हूँ, जिसका प्रयोग मैं कई सप्ताहों तक करता हूँ। यदि श्वास-कष्ट का दौरा समाप्त होने पर भी रोगी साँस रुँधने की शिकायत करे तो मैं आर्स की एक मात्रा देता हूँ और यदि केवल सन्ध्या समय बिछौने में जाते ही दौरा होने लगे तो लैकेसिस, यदि निद्रा आने के बाद दौरा तेज हो तो भी लैकेसिस, यदि दौरा सन्ध्या से सुबह तक बढ़े और उसके साथ छाती के अन्दर कफ की बहुत घड़घड़ाहट रहे तो टार्ट एमेट और चायना बहुत शीघ्र आराम देंगे। यदि दमा रोग के साथ श्वासनली की पुरानी सर्दी रहे तो मैं इपि और सल्फ के अतिरिक्त टार्ट एमेट, कूप्रम, पल्स, आर्स, कार्बोविज से अधिक सुफल पाता हूँ, यदि दमा रोग स्नायविक प्रकृति का हो और छाती के भीतर ऐंठन होने लगे तो मैं इपि, नक्स वाम, कूप्रम, वेरेट्र एल्ब, सीपि, लैके और आर्स से विशेष उपकार

पाता हूँ, (डॉ० हेम्पल के मतानुसार लोबेलिया इन्फ्लेटा भी); यदि दमा रोग के साथ हृदय का आंगिक कष्ट रहे तो केलि कार्ब, स्पाजि, लैके, लाइको, आर्स, आरम। यदि इसके साथ छाती के अन्दर खून का प्रवाह रहे तो नक्स वाम, फेरम, ब्रायो या वेल; यदि यह रोग रक्तार्शवाले व्यक्तियों में हो तो नक्स वाम, सल्फ। यदि साँस रुँधने का दौरा शुरू हो तो मैं उसी तरह एक बार आर्स देता हूँ और उसी तरह के रोगों में मैं आर्स या चायना देकर बहुत ही उत्तम फल पाता हूँ, किन्तु यदि ये औष- धियाँ भी यथेष्ट न हों तो वेरेट्र एल्ब या कूप्रम। मृगी रोगाक्रांत स्त्रियों की छाती के भीतर आक्षेप होने लगे तो इपि, यदि वह यथेष्ट न हो तो इग्ने, कैमो, बेल, काफि, एकोन, कैल्के, पल्स और फास से निश्चय आराम होगा। यदि घावों या चमड़े पर के दानों के दब जाने बाद दमा की शिकायत हो तो मैं पहले आर्न, सल्फ और कभी-कभी ब्रायो, रस देकर सफलता प्राप्त करता हूँ, वह भी चमड़े पर दाने निकलने के बाद, कभी-कभी उन दानों के दब जाने से अनन्तर इपि, पल्स, वेरेट्र एल्ब। अन्त में यदि दमा का दौरा बहुत ही अधिक हो या गति से बढ़े तो वेल, चायना, वेरेट्र एल्ब, आर्स, यदि ऊपर चढ़ते समय कष्ट बढ़े तो आर्स; कैल्के, यदि क्रोध या कष्ट के बाद हो तो कैमो, ब्रायो, आर्स, स्टैफि; यदि मामूली शारीरिक परिश्रम से बढ़े तो आर्स, कैल्के, यदि सामने दुहरा हो जाने से कष्ट घट जाय तो नक्स वाम, कैल्के और आर्स।

२—हृदय-शूल, हृदय मे स्नायुशूल के कारण कष्ट (Angina Pectoris, neuralgia Cordis)—अपने समस्त चिकित्सा-व्यवसाय के भीतर इस रोग का यथार्थ स्वरूप मुझे एक ही रोगी में मिला जिसके लिए पेरिस नगर के इलेक्ट्रिक स्कूल के बहुत से होमियोपैथ डाक्टरों ने अनेक प्रकार की औषधें दी थीं, केवल कुछ औषधों को छोड़कर जैसे कि आर्स, स्पाजि और वेरेट्र एल्ब। मैंने इन्हीं तीन औषधों का प्रयोग कर उस रोगी को आराम किया था। वह रोगी ६० वर्ष का था और उसमें वात रोग था और झिल्लियों का कड़ापन भी हो गया था। समय-समय पर, खासकर चलते

समय कभी रात को एकाएक हृदय में कसेपन का अनुभव करता था, छाती पर दवाव, श्वासकष्ट और छाती में सिकुड़न आदि कष्ट भी होते थे और वह इतना अधिक होता था कि उसके शरीर से बहुत अधिक पसीना निकलने लगता था और कभी तो वह वेहोश भी हो जाता था। उसके दौरे के समय आर्स ३० की २ गोलियों की एक मात्रा देने से उसे तुरन्त आराम मिला और ६ महीने बीत जाने पर उसका पुनः दौरा हुआ और हर हफ्ते दौरा होने लगा। दूसरे आक्रमण पर मैंने पुनः आर्स ३० दिया, जिससे तुरन्त दौरा घट गया, किन्तु ५ दिनों के वाद पुनः आक्रमण हुआ। तव मैंने वेरेट्र एल्व दिया। उसके अनन्तर ६ महीने तक कोई आक्रमण उसे नहीं हुआ। तब मैंने फिर से आर्स दिया और उसके बाद वेरेट्र एल्ब भी। किन्तु अवकी वार अच्छा फल नहीं मिला। इस कारण मैंने स्पाजिया दिया। उस दिन से ६ महीने तक वह अच्छा रहा, उसके वाद मैंने दूसरे आक्रमण पर आर्स दिया। अवकी बार प्रथम वार के समान बहुत ही आश्चर्यकारक फल मिला और रोगी दो सालों तक अच्छा रहा। तव वह एलोपैथिक चिकित्सा करते हुए न्यूमोनिया रोग से आक्रान्त होकर मर गया। (डॉ० हैम्पल के अनुसार यदि हृदय में चर्वी की अधिकता हो और उसी कारण हृदय में शूल वेदना होने लगे तो जेल्सिमियम और बेलेडाना भी)।

३—वच्चो का आक्षेपिक श्वासकष्ट (Asthma Miliari of Children)—यह रोग गलनली के आक्षेप की तरह है और कभी-कभी उसके साथ क्रूप खाँसी भी रहती है और छाती के अन्दर ऐंठन भी, किन्तु आरम्भ में प्रदाह नहीं रहता और उसके साथ श्वासकष्ट और श्वासरोध दिखाई पड़ते हैं और बच्चों की साँस गहरी, कभी सायँ-सायँ करने वाली होती है। यदि तुरन्त सेम्ब्यू दिया जाय जब कि बच्चा चौंककर नींद से जग पड़े और उसे श्वासकष्ट होने लगे, उसका चेहरा नीला-सा हो जाय तो यह औषध तुरन्त आराम पहुँचाएगी, किन्तु यदि यथेष्ट न हो तो इपि या आर्स तथा बहुधा कूप्रम से आराम होता है। इसके लिए पिछले अध्याय के अनुच्छेद १ संख्या ६ में गलनली का आक्षेप भी देखिए।

४—पुराना श्वासकष्ट, विना ऐंठन के दौरे के (Chronic Dyspnoea without Spasmodic paroxysms)—अधिक उमर वाले व्यक्तियों में ऐसी अवस्था होती है, जो श्वासनली की पुरानी सर्दी से शुरू होती है और पतझड़ तथा वसन्त ऋतु में साधारणतया यह वहुत ही अधिक वढ़ जाती है, खासकर सीलन और कुहरा वाली आवहवा में। इसके लिए प्रधान औषधें हैं:—सल्फ या कैल्के और उसी तरह लैके, चायना, कार्वो वेज, कूप्रम, केलि कार्व और साइलि भी।

फेफड़ों और फेफड़ो के परदों के अनेक रोग

(Various Affections of the Lungs and Pleura)

१—फेफड़ो के परदो की सूजन और प्रदाह (Pleuritis Pleurisy, inflammation of the Pleura)—तेज बुखार के वाद एकाएक ठण्ढ लग जाय तो भयकर खाँसी हो जाती है और वलगम के साथ कभी-कभी खून भी निकल आता है और पार्श्वों में सूई चुभने का सा तेज दर्द होता है। यदि समय पर हम बुलाये जाते हैं तो समस्त कष्ट एकोन ३० की २ गोलियों को एक चम्मच जल में घोल कर पिला देने से २४ या ४८ घण्टों में जादू की तरह दूर हो जाता है और वैसे ही १-१ मात्रा २-३ घण्टों के वाद दी जानी चाहिए। यदि यह यथेष्ठ न हो तो उसी ढंग से ब्रायो का सेवन कराना उचित है। किन्तु यदि पार्श्वों में तेज कष्ट रह जाय तो केलि कार्व और कभी-कभी नाइट्रिक एसिड सफल होता है। दुर्भाग्य से रक्ताम्बु वाला निःस्राव शुरू होने के पहले हम लोग नहीं बुलाये जाते। यदि पहले टार्ट एमेट के प्रयोग से विशेष फल न मिले तो सल्फ तुरन्त सहायता देगा। यदि निःस्राव वहुत अधिक वढ जाय और सल्फ या टार्ट एमेट से विशेष फल न हो तो आर्स, कार्वोवेज या सिक्विल कदाचित् लाभदायक प्रमाणित होंगे। पार्श्वों में पुराना दर्द रहे या उँगली मारने से सुस्त मालूम हो तो कैल्के कार्व और सल्फ अमोघ प्रमाणित होंगे

किन्तु यदि इन औषधों का प्रयोग पहले ही किया गया हो तो अब ब्रायो और टार्ट एमेट से बहुत ही उत्तम फल मिलेगा। सम्भवतः आगे चलकर कैल्के और सल्फ की एक मात्रा आवश्यक हो सकती है।

२—वातजनित हृदयावरण प्रदाह (Rheumatic Pleurisy)—यह रोग पसलियों के भीतर वाली पेशियों में होता है। कभी-कभी ज्वर के साथ ऐसी अवस्था होती है, कभी-कभी दर्द स्थान बदलता है और आर्निका से यह प्रशमित हो जाता है। अनेक क्षेत्रों में यह औषध हमें एक ओर हटा देती है और तब ब्रायो, रस, नक्स वाम या लाइको से सुफल मिलता है (डॉ॰ हैम्पल के अनुसार सीपि, रेसि भी।)

३—न्यूमोनिया और फुफ्फुस-प्रदाह (Pneumonia inflammation of the Lungs)—इस रोग की प्रथम अवस्था में फेफड़े कड़े हो जाते हैं और छाती पर उँगली मारने से स्पष्ट शब्द सुनाई पड़ता है और वायुनली में साँस का शब्द स्पष्ट सुनाई पड़ता है, वह भी साँस खींचते और खाँसते समय, ऐसी अवस्था में ऊपर लिखित नियमानुसार एकोन देने से सभी कष्ट अल्प समय में घट जाते हैं। यदि इससे तुरन्त फल न हो तो मैं सल्फ ३० की २ गोलियों को थोड़े जल में गलाकर २–३ घण्टे पर १–१ चम्मच पिलाने की व्यवस्था देता हूँ। ऐसा औषध-सेवन २४ घण्टों तक या उससे भी अधिक कराते रहना चाहिए, यदि उन्नति के लक्षण दिखाई पड़ें। यदि रोगी की हालत फिर से खराब हो जाय तो सल्फ और एकोन से उन्नति दिखाई पड़ेगी। यह औषध २४ घण्टों तक देते रहना चाहिए। वह भी यदि उपसर्ग लगातार घटते जायँ। यदि पहले दस्त अधिक हों तो सबसे उत्तम औषध है—सल्फ, कभी रस, यदि सल्फ दस्तों को पूर्णतया रोक न सके। यदि हृदयावरण प्रदाह के साथ वह मिलित न हो तो ब्रायो और आर्न का निर्देश नहीं होता। प्रधानतया वेल ही ऐसी अवस्था के लिए उपयोगी है। यदि एकोन या सल्फ सहायता न दे या यदि मस्तिष्क के उपसर्ग वर्धित हों, जिसके लिए हायोस और कभी आर्स और फास उत्तम]

कार्य करते हैं, वह भी यदि रोगी अचेत होकर पड़ा रहे तो। यदि प्रदाह दूसरी अवस्था में पहुँच जाय और फेफड़ों में कड़ापन प्रतीत हो, साथ में उँगली मारने से शब्द न निकले और श्वासनली में स्पष्ट शब्द हो तो सल्फ ही मुख्य औषध है, यदि पहले इसका प्रयोग न हुआ हो। उसके बाद फास, लैके, टार्ट-एमेट, आर्स और रस इस अध्याय के ४ अनुच्छेद में लिखित उपसर्गों के अनुसार उत्तम औषधें प्रमाणित होंगी। यदि तीसरी अवस्था आ गयी हो और उसके साथ पीब का निःस्राव होने लगे तो फास और लैके, फिर भी सल्फ ही मुख्य औषध है, यदि क्षय रोग के लक्षण मौजूद हों। यदि इसी अवस्था में फेफड़ों में पक्षाघात दिखाई पड़े तो टार्ट-एमेट ही मुख्य औषध है, यदि सड़न शुरू हो गई हो या आशंका हो और साथ में रक्ताम्बु वाला निःस्राव होने लगे तो आर्स और कार्बोवेज, कभी-कभी चायना और साइलि मुख्य औषधें हैं। यदि कुचिकित्सित रोगी में पुरानी पीब निकलती रहे तो सबसे उत्तम औषध है—लाइको, कभी-कभी सल्फ या यदि वह असफल रहे तो फास या आर्स। यदि बहुत दिनों तक रोगी की चिकित्सा न हो तो सल्फ अत्यन्त उपकारी प्रमाणित होगा। इस प्रकार की पीब वाली अवस्था में रस, वेल, मर्क बहुत सफल सिद्ध होंगे। वह भी यदि इस अध्याय के अनुच्छेद ४ में निर्देशित उपसर्गों के अनुसार हो। बूढ़ों के न्यूमोनिया रोग में टार्ट-एमेट खास और केलि नाइट प्रायः उत्तम फलदायक होती हैं, या रोग वाले व्यक्तियों के लिए सल्फ, लैके, फास, कार्बोवेज, आर्स, ऋतुस्राव के दब जाने के बाद, पल्स, लाइको; शिराच्छेदन से अधिक खून निकल जाय तो खासकर चायना, एकोन, सल्फ, रस, कार्बोवेज और आर्स (डॉ० हेम्पल के मतानुसार वेरेट्र विराइड की कुछ बड़ी मात्रायें देने से सैकड़ों न्यूमोनिया के रोगी आराम हुए हैं)।

४—न्यूमोनिया के उपसर्ग (Complications of Pneumonia)—मस्तिष्क में प्रदाह के साथ न्यूमानिया के लिए वेल, फास, रस, हायोस, आर्स की आवश्यकता है (वेरेट्र विट भी—हेम्पल)। साथ में वायुनली

के भीतर सर्दी अक्सर होती है तो मर्क, पल्स, फेन या नक्स वाम, साथ में पित्त की शिकायतें और बलगम पीला तथा पित्त वाला, यह सबसे उत्तम लक्षण है तो टार्ट एमेट और कभी-कभी नक्स वाम, पल्स या चायना; साथ में फेफड़ों के पर्दे में प्रदाह के साथ न्यूमोनिया। यदि एकोन और सल्फ प्रथम अवस्था में कोई लाभ न दें तो ब्रायो के प्रयोग से अच्छा फल मिलेगा, किन्तु मर्क और टार्ट एमेट सबसे अधिक गुणकारी औषधें हैं। शिराच्छेदन के बाद भारी दुर्बलता के लिए अवस्था के अनुसार मैं एकोन, चायना, रस, कार्बोवेज और आर्स देता हूँ; न्यूमोनिया में टायफायड के उपसर्ग दिखाई पड़ें और वह भी पीब बनने की स्थिति में तो रस तथा फास, आर्स और कार्बोवेज; बहुत अधिक पसीने के बाद चमड़े पर दाने निकलें तो आर्स।

५—दुर्बलताजनित न्यूमोनिया (Asthemic Pneumonia)—इस प्रकार के न्यूमोनिया के साथ कभी टायफायड न्यूमोनिया को मिश्रित नहीं करना चाहिए। जिन लोगों को बार-बार न्यूमोनिया रोग हुआ है और शिरा टूटने से जो बहुत ही कमजोर हो गये हैं, उन्हीं में इस प्रकार का न्यूमोनिया होता है। इसके लक्षण हैं—छोटी कमजोर नाड़ी और फेफड़ों में सुई चुभने के-से दर्द के अतिरिक्त वहाँ भारीपन और घबराहट का अनुभव, साथ में छोटी खाँसी और खूनभरी लार का बहुत अधिक परिमाण में निकलना। ऐसी अवस्था में मर्क ही मुख्य औषध है या यदि इससे लाभ न हो तो चायना, इपि या वेरेट्र एल्ब अथवा यदि ऐसे न्यूमोनिया के कारण सड़न शुरू हो जाय तो कार्बोवेज या आर्स। यदि छाती के अन्दर बहुत ही अधिक ऐंठनवाला प्रदाह हो, साथ में न्यूमोनिया रहे तो बेल या इपि सहायता देगा और यदि फेफड़ों में पक्षाघात होने की शंका हो तो वेरेट्र एल्ब या आर्स।

६—गुप्त न्यूमोनिया (Pneumonia Occulta)—प्रायः वृद्धों में इस प्रकार का न्यूमोनिया होता है और उसके बाद फेफड़ों में पक्षाघात दिखायी पड़ता है या साँस रुँधनेवाली सर्दी तथा कभी-कभी असहनीय

श्वासनली की सर्दी होती है, साथ में अल्प ठण्ढक या गर्मी का वोध, ऐसी स्थिति में डॉ॰ स्कर्ट ने जो हार्ट मेन्स थेरापिउटिक्स ग्रन्थ से साराश उद्धृत किया है, उस पर हमें निर्भर नहीं रहना चाहिए। ऐसे रोगी के लिए केवल आर्न ब्रायो या सेनेगा यथार्थ अमोघ औषधें नहीं हैं। किन्तु सल्फ और कार्वोवेज तथा सबसे ऊपर टार्ट-एमेट की आवश्यकता है। यह अन्तिम औषध शीघ्र रोगी को निरामय करने में समर्थ है। एक ८० वर्ष के वृद्ध रोगी के लिए इसी औषध की व्यवस्था दी गई थी, किन्तु वह निष्फल गयी। अन्य रोगियों में मैंने देखा है कि सल्फ ही यथार्थ में आरोग्यकारक औषध है, उसके वाद अन्य उपसर्गों को आराम करने के लिए कार्वोवेज, फास या लैके आवश्यक हैं।

७—टायफायड न्यूमोनिया (Typhoid Pneumonia)—इस प्रकार का न्यूमोनिया बहुत धीरे धीरे बढ़ता है, साथ में साधारण अवसाद और आसन्न रोग का अनुभव, कभी-कभी टायफायड का रूप धारण कर लेता है, जैसे कि प्रलाप, वेहोशी, उदासीनता, अचेतपन आदि। इन उपसर्गों को दूर करने के लिए प्रायः रस और हायोस की आवश्यकता होती है; यदि रोगी का पाखाना पेशाब अपने-आप होने लगे तो आर्न सर्वोत्तम औषध है; यदि दुर्बलता क्रमशः बढ़ती रहे तो आर्स या वेरेट्र एल्व। आज तक टायफायड न्यूमोनिया के लिए मेरे हाथ में इपिकाक से कोई फल नहीं हुआ, केवल एक रोगी में जब अन्य किसी औषध से लाभ न हुआ तो मुझे सल्फ से विशेष सहायता मिली और एक दूसरे रोगी में फास से। यदि जीभ काली दिखाई पड़े और रस या आर्स से कोई फल न हो तो कार्वोवेज से कभी-कभी उत्तम फल मिलता है।

८—फेफड़ो से रक्तस्राव (Pulmonary Haemorrhage)—रक्तोत्कास, खून थूकने और फेफड़ों से रक्तस्राव होने में भेद जान लेना आवश्यक है। प्रथम अवस्था में जहाँ खूनभरा कफ या केवल खून निकलता है, किन्तु परिमाण में अल्प और जहाँ फेफड़ों के क्षयरोग की शंका नहीं होती, वल्कि रक्त का साधारण प्रवाह दिखाई पड़ता है, वह भी छाती के

अन्दर तो एकोन ३० की गोलियाँ एक चम्मच जल में घोलकर सुबह-शाम लेने से उपशम होता है और कभी-कभी समूचा रोग ही दूर हो जाता है, यदि एकोन से लाभ न हो तो फेरम, चायना या इपि (सिक्विल भी—हेम्पल।) और पुराने रोगों में यदि ऊपरलिखित औषधियाँ सहायता न दें तो आर्स, आर्न या सल्फ। यदि यथार्थ में ही रक्तस्राव होने लगे तो मैं तुरन्त इपि देता हूँ, किन्तु यदि इससे तुरन्त लाभ न हो तो चायना, फेरम, ब्रायो, यहाँ तक कि एकोन, आर्न और आर्स, वह भी अवस्था के अनुसार निर्देशित होने पर। शराबियों के लिए मैं नक्स, आर्स, ओपि या हायोस का व्यवहार करता हूँ, यदि रक्तार्श दब गया हो तो नक्स वाम, सल्फ, कार्बोवेज, लाइको और फास, जब ऋतु में गड़बड़ी हो या एकदम रुक जाय तो पल्स, काक्कस, इपि; वेल, फास, वेरेट्र एल्ब, यक्ष्मा रोगग्रस्त व्यक्तियों के लिए फास, आर्न, एकोन, सिपि, आंत्रिक आघात के बाद आर्न, इपि, रूटा; शिराच्छेदन के अनन्तर चायना, फेरम, इपि, यदि सुरसुराहट वाली खाँसी के साथ खून निकले तो आर्न, वेल, नक्स वाम, यदि खखारना साथ रहे तो एकोन, इपि, नक्स वाम, सल्फ, आर्स, सूखी खाँसी के लिए चायना, हायोस, फेरम, आर्न, आर्स, भयंकर सूखी खाँसी के लिए कार्बोवेज, चायना, ड्रोस, शरीर को झकझोर देनेवाली खाँसी के लिए चायना, इपि, नक्स वाम, यदि खून बिना खाँसी के वमन की तरह निकले तो इपि, आर्न, फास, चायना, आर्स और फेरम, यदि आक्रमण अधिक मात्रा में रात को हो तो फेरम, पल्स, रस, सिके, हायोस, विश्राम के समय वृद्धि रस, डल्का, परिश्रम करने से खाँसी बढ़े तो फेरम, ब्रायो, चायना, वेल, बातचीत करने के बाद फास, फेरम, खासकर सुबह, फास, आर्स, चायना, नक्स वाम, यदि खून उज्ज्वल लाल रंग का हो तो डल्का, रस, एकोन, आर्न, वेल, फेरम, इपि, चायना, आर्स, यदि खून काला या कुछ काला हो तो पल्स, आर्न, सिके, यदि वह चिकना, चिपचिपा या गाढ़ा हो ओपि, रस, आर्न, यदि गले में भारी सूखापन हो फास, चायना, सल्फ, छाती की ओर खून का प्रवाह हो तो एकोन, आर्न, वेल, फास, ओपि, छाती

पर दबाव और श्वासकष्ट फास, ओपि, फेरम; छाती में स्पन्दन कार्बोवेज, आर्न, आर्स, छाती में दबाव का बोध सल्फ; वक्षस्थिल के नीचे दर्द सल्फ, छाती के निचले भाग में परम, रस, मिलो; दिल की धड़कन में एको., आर्स, फास, आयो, आर्न, सल्फ; कन्धास्थियों के बीच में दर्द आर्न, फेरम, चायना, सिर में रक्त सञ्चय बेल, आर्न; चेहरे पर पीलापन में फेरम, कार्बोविज, आर्स, चायना, चेहरे पर गर्मी और आँखों की झलक बेल, एकोन, ओपि, नक्स वाम, चमड़े और हाथ-पैरों में ठण्डक चायना, कार्बो-वेज, आर्स; दुर्बलता, मूर्च्छा आर्न, आर्स देता है। यक्ष्मा रोगाक्रान्त मनुष्यों के रक्तस्राव में यदि वह बार बार हो और क्रमशः वेग बढ़ता रहे, अन्त में सभी चिकित्साओं के होते हुए भी मृत्यु निकट आ जाय तो ऐसे क्षेत्रों में अति उपयोगी उपशामक औषधियाँ हैं फेरम, इपि, कार्वोवेज, फास और कभी-कभी आर्स। यदि एकोन, इपि और चायना रक्तस्राव को रोकने में असमर्थ रहें तो क्रियोज, लीडम से मुझे विशेष लाभ मिला है।

६—फेफड़ों में यक्ष्मा रोग (Pulmonary Phthisis)—ऐसे भी लोग हैं जो यक्ष्मा रोग के निदान सम्बन्धी चिह्नों को नहीं पहचानते। फलस्वरूप वह मृत्युकारक हो जाता है, यहाँ तक कि जिन रोगियों में पीव बन गयी हो और फफड़ों में छेद हो गये हों वे भी सुयोग्य चिकित्सा होने पर आरोग्य हो सकते हैं। कुछ लोग समझते हैं कि यक्ष्मारोग कभी आराम नहीं हो सकता। यदि आराम हो भी जाय तो वे उसे यक्ष्मा रोग नहीं मानते। यदि फेफड़े का यक्ष्मारोग अन्तिम अवस्था में पहुँचे और वहाँ प्रदाह उत्पन्न हो तथा घाव इतना बढ़ गया हो और रक्तोत्सरण बहुत बढ़ गया हो और फेफड़े प्रायः नष्ट हो गये हों, ऐसी अवस्था में उस रोग को आराम करना निस्सन्देह कठिन है। यहाँ तक कि होमियोपैथ चिकित्सक भी ऐसी अवस्था को नहीं सुधार सकते, क्योंकि उस समय वह रोगी चिकित्सा से बाहर हो चुका होता है। यदि यक्ष्मा रोग का केवल आरम्भ मात्र हो, मन्द ज्वर रहे और सूखी खाँसी और उस खाँसी के साथ पीब की तरह कफ निकले, साँस की गति के साथ यक्ष्मा की गाँठों के होने का

सन्देह हो तो मैं जोर देकर कह सकता हूँ कि ऐसी अवस्था में जब कि इस रोग का पहला दर्जा पूर्ण रूप से आरम्भ हो गया हो तो भी मुझे सफलता मिली है। इसकी दूसरी अवस्था में भी जब कि यक्ष्मा की गाँठें कोमल हो चुकी हों और बलगम के साथ खून मिला हो तो भी चिकित्सा में मैं सफल हुआ हूँ। तीसरी अवस्था में जब कि फेफड़ों में पीब बन गयी हो और तन्तु तरल हो गये हों तो भी मैं चिकित्सा से उन उपसर्गों को उपशमित कर सका हूँ तथा वैसे रोगी को दो वर्षों तक जीवित रख सका हूँ। किन्तु इस तीसरी अवस्था में रोगी को आराम करना सम्भव नहीं है। कठिन और भयंकर उपसर्ग ७ वें, १४ वें, २१ वें, २८ वें, ३५ वें, ४२ वें, ४६ वें, ५६ वें, ६३ वें आदि सालों में प्रकट होते हैं और उससे कठिन उपसर्ग १२ वें, २८वें और १४ वें साल में प्रकट होते हैं और सबसे अधिक ६३ वें साल में। यक्ष्मा रोग की कठिन परिस्थिति को आराम करना ऊपर लिखित सालों में सहज है, किन्तु २१ वें और २२वें साल के उपसर्ग बहुत ही भयकर होते हैं और उसी तरह १४ या १५ वर्षों के बालकों में यक्ष्मा रोग होने पर आराम करना भी बहुत मुश्किल काम है। सबसे कठिन परिस्थिति ६३-वें साल में होती है, उससे कम उम्र के लोगों में वैसा रोग होने पर आराम होने की सम्भावना रहती है। यक्ष्मा रोग की प्रारम्भिक अवस्था में जब स्कन्धास्थियों में दर्द होता है या कण्ठास्थि के स्थान में दर्द हो और बार-बार वह लौट आये, खाँसी सूखी और कभी-कभी तर, जो रात को सोते समय बढ़ती है या तड़के बिछौना छोड़ते समय तथा कदाचित् खून मिला हुआ थूक निकलता है तो निम्नलिखित औषधियों से मुझे बहुत ही उत्तम सफलता मिली है—पल्स, ब्रायो, नक्स वाम, सल्फ, कैल्के, लाइको, फास। आज तक मैं इन्हीं औषधियों से सफल चिकित्सा करता आ रहा हूँ। स्त्रियों में पल्स से मुझे अधिक सफलता मिली है, खासकर यदि वे हरित्पाण्डु रोग से ग्रसित हों, श्वेतप्रदर और अल्प ऋतु के कारण कष्ट पाती हों, बलगम बहुत अल्प निकलता हो और कभी उसमें खून मिला हो, या बेल से यदि खाँसी ऐंठन वाली हो और पल्स से आगे चलकर कोई लाभ

न हो। युवकों के लिए यदि खाँसी तर हो तो मैं सबसे पहले ब्रायो देता हूँ और यदि खाँसी ऐंठन वाली हो तो कार्बोवेज। यदि खाँसी एकदम सूखी हो तो मैं स्त्रियों को ब्रायो और नक्स वाम और पुरुषों को अवस्थाओं के अनुसार। उनके लिए अन्य औषधें भी लाभदायक प्रमाणित हुई हैं, जैसे एकोन, चायना, इपि, हिप, स्पांजि, ड्रोस। अध्याय २०, अनुच्छेद २, ५-७ में लिखित निर्देशों के अनुसार; इसी नियम से औषध देकर मैंने अनेक ऐसे युवकों को इस कठिन रोग से बचा लिया है, जिन्हें अन्य पद्धति के चिकित्सकों ने असाध्य कहकर छोड़ दिया था। हाँ, मेरी चिकित्सा के बाद भी कभी-कभी उन्हें सर्दी-खाँसी हो जाया करती थी। यदि ऐसी अवस्था हुई तो मैं सल्फर, कैल्के और लाइको का सेवन कराकर उन्हें आराम कर देता हूँ। किन्तु औषध की मात्राएँ लम्बी अवधि के बाद ही सेवन करने की व्यवस्था देता हूँ। कभी-कभी खाँसी के लक्षणों के अनुसार हिपर, स्पांजि या ड्रोसेरा से भी लाभ हुआ है। (अध्याय २०, अनुच्छेद २, ५-७ देखिए) यदि किसी रोगी में यक्ष्मा रोग के निश्चित उपसर्ग दिखाई पड़ें, ज्वर रहे, खाँसी के साथ खून भरा कफ निकले, वहाँ भी मैं इस क्रम से सफल चिकित्सा करता हूँ। स्त्रियों के लिए पल्स या चायना से चिकित्सा करना अच्छा है तथा पुरुषों के लिए एसिड फास और हिपर से। इसके अतिरिक्त कार्बोवेज, स्पांजि, ब्रायो या ड्रोस से भी लाभ होता है। इसके बाद भी यदि कोई लक्षण बाकी रह जाय तो उसे दूर करने के लिए लाइको, कैल्के या सल्फ उपयोगी हैं। यदि इस अवस्था में पीबभरा कफ निकले और पल्स, एसिड फास और चायना रोगी को आराम न दे सकें तो मैं तुरन्त कैल्केरिया की व्यवस्था देता हूँ, यदि वह भी यथेष्ट न हो तो लाइको और साइलि या केलि कार्ब तथा आगे चलकर एसिड नाइट से चिकित्सा करता हूँ। रोगी की अवस्था और आरोग्य की प्रगति के अनुसार औषधियों के क्रम म परिवर्तन हो सकता है। यदि फेफड़ों में जलन अधिक हो तो एकोन, ब्रायो, बेल, स्पांजि, ड्रास और नाइट्रि अधिक लाभदायक होंगेयाद को कफ़ ी। नाह हो, उसमें खून मिला हो, उससे दुर्गन्ध

निकले या खाँसी सूखी रहे या उसमें ऐंठन हो तो अध्याय २१, अनुच्छेद २, ५ के अनुसार चिकित्सा होनी चाहिए; खासकर ब्रायो, हिपर, ड्रोस, कैल्के, वेल, नक्स वाम, लाइको, केलि-कार्ब, लैके, फेरम, चायना, स्पाजि, कार्बो वेज, सल्फ, साइलि और फास में से अवस्थाओं के अनुसार औषध चुनी जाती है। यदि बलगम के साथ खून निकले तो भी उन्हीं औषधों में से उपयोगी औषध चुनकर प्रयोग करना उचित है, खासकर अनुच्छेद ८ के अनुसार। यदि खाये-पीये पदार्थों का वमन हो तो कैल्के, फेरम, केलि-कार्ब, साइलि। यदि पतले दस्त होने लगें तो पल्स, लाइको, सल्फ या फेरम फास। यदि प्रदर रोग का स्राव होता रहे तो पल्स, लाइको, चायना, फेरम, सल्फ, कैल्के, सीपि आदि। यदि पैर अधिक फूल गये हों तो सल्फ, फेरम, केलि-कार्ब, चायना। यदि रात को नींद न आवे तो सल्फ, वेल, कैल्के फास और लाइको। थोड़ी ठढक के असर से सर्दी होने लगे तो पल्स, सल्फ, फास, लाइको, कैल्के। यदि रात को और तड़के क्लातिजनक पसीना निकले तो सल्फ, स्टैन, फास, लाइको, कार्बो वेज, इल्का, चायना, कैल्के। कुछ चिकित्सा-ग्रन्थ के लेखकों यथा चिकित्सकों ने फेफड़ों के यक्ष्मा के लिए लीडम, ब्रायो, संगुइ, मर्क, केलि हाइड्रो, प्लम्वम, सेम्ब्यूकस, सोरि, हायोस और क्रियोजोट की व्यवस्था दी है और इनकी बहुत प्रशसा भी की है। किन्तु मैं दीर्घ काल की चिकित्सा के अनुभव से उनका समर्थन नहीं कर सकता। जहाँ जहाँ मैंने पूरक औषध के रूप में इनमें से किसी औषध का व्यवहार किया है, वहीं-वहीं चिकित्सा में सफलता नहीं मिली। उन औषधों का यक्ष्मारोग पर कोई असर मुझे नजर न आया।

१०—शीघ्र बढ़ने वाला यक्ष्मा रोग (Phthisis Florida, granulata, Galoping Consumption) इस प्रकार का क्षयरोग प्रायः हरित्पाण्डु रोग वाली युवती लड़कियों में होते दिखाई पड़ता है। क्या उसके विपरीत मोटी-ताजी गुलाबी रग वाली लडकियों में भी या सौरी के बाद बच्चे को अधिक दूध पिलाने पर भी, बहुत अधिक खून निकल जाने पर भी या अपने से शरीर नाश करने वालों में भी वैसा रोग होता है।

इस प्रकार के रोग का आक्रमण होते ही रोगी को मरणासन्न हो जाना पड़ता है। इसमें फेफड़ों के सूक्ष्म अंशों में सूजन पैदा हो जाती है, बाद में वे नरम हो जाते हैं और कुछ दिनों के अनन्तर उनमें बड़े-बड़े दाने निकल आते हैं और उनमें भयङ्कर प्रदाह पैदा होता है। दानों के कुछ बड़े होने पर छाती के अन्दर रक्त जमा हो जाता है, फलस्वरूप फेफड़े तरल हो जाते हैं। इसी कारण यह रोग बिजली की गति से बढ़ता है। एकदम स्वस्थ व्यक्तियों को भी यह रोग एकाएक आक्रमण करके काबू में कर लेता है। ऐसे प्रारम्भिक रोगी को मैंने आराम किया है। इस रोग का आरम्भ होते ही पता लग जाने पर होमियोपैथी की रीति से चिकित्सा होने पर उसे आराम करना कठिन बात नहीं है। पहले सूखी खाँसी से इस रोग की सूचना होती है, उसके बाद छाती में तेज दर्द, स्कन्धास्थियों में दबाव, गालों पर लाल दाग, नवयुवतियों में अधिक रजःस्राव होना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। ऐसी लड़कियों को मैं शुरू में एकोन, बेल या कैल्के देता हूँ। दूसरी ओर जिन लोगों के शरीर में रक्त अल्प है, जिनका शरीर कृश हो गया है, उन्हें प्रधानतया पल्स, चायना, एसिड फास और लाइको दिया जाता है। विशेष रूप से इस प्रकार के रोगियों को लाइको से उपकार होता है, किन्तु खाँसी के साथ जो बलगम निकलता है वह मैला और खारा हो। इस रोग की चिकित्सा में ड्रोसेरा, मर्क, सल्फ और कैल्के से मुझे विशेष लाभ हुआ है। किन्तु आर्निका, ब्रायो, कास्टि, डिजि, लारो, मैग या स्पाज से विशेष लाभ नहीं होता।

११—श्लेष्माचूर्ण यक्ष्मारोग (Phthisis Mucous et Pituitosa)—अधिक उम्र वाले व्यक्तियों की साँसनली की श्लैष्मिक झिल्लियाँ क्षयग्रस्त हो जाती हैं और इस अवस्था में यक्ष्मारोग धीरे-धीरे बढ़कर उन्हें मृत्यु के गाल में ढकेल देता है। युवकों में यदि श्लेष्मा प्रधान यक्ष्मारोग हो जाय तब वे जब-तब छोटे-छोटे कफ के गोले थूकते हैं। कुछ दिनों के बाद वह कफ गाढ़ा हो जाता है और सड़ जाता है। इस ढंग का एक भी रोगी मुझे नहीं नजर आया, जिसमें ऐसा कफ न आता हो। यदि उसके

साथ बुखार रहे तो उसके फेफड़ों में अति शीघ्र छेद बन जाते हैं और निरन्तर फेफड़ों का क्षय होता रहता है। जहाँ अधिक उमर वाले व्यक्तियों की खाँसी के साथ कुछ पीब वाला कफ निकलता हो तब वहाँ कठिनता हो जाती है। क्योंकि ऐसी अवस्था में रक्त की अल्पता के कारण फेफड़े बहुत कमजोर हो जाते हैं, उसके साथ सर्दी अधिक रहने से उनमें भयंकर प्रदाह भी होने लगता है। यदि श्वासनलियों से इस प्रकार की पीब निकलने लगे और उसके साथ बुखार भी हो तो ऐसे रोगी को फास, चायना, पल्स और डल्का का सेवन कराने से विशेष उपकार हो सकता है। किन्तु हालत ऐसी होने पर अधिकांश क्षेत्रों में मृत्यु आ जाती है। इस प्रकार की चिकित्सा से इतना लाभ अवश्य होता है कि रोगी की आयु कुछ दिनों तक बढ़ जाती है। यदि बलगम चिपचिपा और गाढ़ा न हो जाय, शरीर भी सबल रहे, ज्वर न आया हो, सर्दी का लक्षण दिखायी पड़े तो वैसा रोगी अच्छा हो जायगा। ऐसे क्षेत्रों में स्टेनम की अपेक्षा सल्फर अधिक गुणकारी है। २० से ५० वर्ष तक की उमर वाले व्यक्तियों की श्वासनली से पीब भरा कफ निकले तो सल्फर ही अमोघ औषध है। ऐसे क्षेत्रों में मुझे लाइको, फास, चायना और डल्का से विशेष लाभ हुआ है।

३—हृदय के रोग
(Diseases of the Heart)

१—प्रदाह या जलन—हृदय की यथार्थ जलन के लिए एकोन ३० के घोल से यथेष्ट लाभ होता है। यदि रोग का मूल कारण ज्ञात न हो तो यह एक ही औषध उस रोग को दूर कर देगी। यदि अन्य कुछ उपसर्ग बाकी रह जायँ तो ब्रायो, पल्स या बेल देने से उनका भी सफाया हो जाता है। यदि हृदयावरक झिल्लियों में जल भर जाय और आर्स से उपकार न हो तो ग्लोन, एपि, केलि कार्ब, काल्चि, लाइको आदि से उपकार होगा। डिजिटेलिस से केवल अस्थायी उपशम मात्र होता है, किन्तु ब्रोमियम या आयोडिन से स्थायी उपकार होता है। प्रदाह उत्पन्न होने के पहले यदि हृदय में रक्त

जम हो जाय तो एकोन ही सबसे पहली औषध है। यदि उससे विशेष लाभ न हो तो बेल, फास या आरम देने से उपकार होगा। जहाँ चर्मरोग या पैर का पसीना दब जाने के अनन्तर हृदय में प्रदाह हो वहाँ सल्फ और आर्स अवश्य देना चाहिए।

२—हृदयावरक-झिल्ली-प्रदाह (Endocarditis Rheumatism of the heart)—यदि हृदय के परिवेष्टक झिल्लयों में वात के कारण जलन हो तो एकोन ही सबसे उत्तम औषध है। किन्तु याद रखना चाहिए कि मामूली जलन के लिए ही इसकी उपकारिता अधिक है, अधिक जलन के लिए नहीं। इस अवस्था के लिए बेल, ब्रायो, पल्स, स्पाइजि अधिक लाभदायक हैं। वातजनित जलन होने लगे तथा मुख और नाक से अधिक खून गिरे तो एकोन, बेल या ब्रायो के सेवन से धड़कन घट जायगी। किन्तु यदि वैसी हालत में भी नाक से खून का गिरना बन्द न हो तो फास की ३० शक्ति की २ गोलियाँ जीभ पर डाल देने से उपकार होगा। इससे रक्त बहना बन्द हो जायगा। बाकी उपसर्गों को दूर करने के लिए आर्स की एक मात्रा देने से लाभ होगा। यदि किसी युवती लड़की में वात की शिकायत हो तो इसी औषध से उपकार होगा। एक लड़की को हर दूसरे साल इस रोग का दौरा होता था। तीसरे दौरे के समय उसका हृदय भी आक्रान्त हुआ। ऐसी हालत में एकोन, ब्रायो, बेल, वावयू, फास, लैके और स्पाइजि से विशेष उपकार नहीं हुआ। तब विशेष विचार करके मैंने उसे काल्चिकम दिया और उससे तुरन्त लाभ हुआ। और उसके बाद वाले बचे-खुचे उपसर्गों को बेल और लैके ने दूर कर दिया। यह रोग बहुत पुराना हो गया हो तो आरम, कैल्के, रस और आर्स विशेष लाभदायक प्रमाणित होंगे।

३—दिल की धड़कन (Palpitation of the heart)—यदि दिल की धड़कन खून के अधिक प्रवाह से हो तो एकोन दिया जाय, किन्तु यदि किसी रोगी को उससे विशेष लाभ न हो तो बेल, नक्स वाम, आरम, चायना, आर्स या सल्फ सभी कष्टों को दूर कर देंगे, यदि हस्तमैथुन

करने के कारण शरीर कमजोर हो जाय, रक्त का क्षय होने लगे तो चायना और फेरम सहायक प्रमाणित होंगे। स्नायविक या मृगी रोगाक्रांत व्यक्तियों के दिल की धड़कन में काक्कस, पल्स, इग्ने या फास से उपकार होगा। दिल की धड़कन पुरानी हो जाय तो सल्फ, आर्स, आरम या चायना से अधिक नेट्र म्यूर, फास, कैल्के, पेट्रोल और नाइट एसि अधिक लाभ-प्रद प्रमाणित होंगे। यदि अधिक चढ़ाई चढ़ने के कारण दिल में धड़कन होने लगे तो सल्फ और नाएट-एसि से लाभ होगा। यहाँ तक कि कभी-कभी थूजा से भी उपकार होगा, और यदि रात के समय हो तो आर्स, पल्स या फास, यदि खाने के बाद धड़कन होने लगे तो विशेष रूप से कार्बोवेज, फास और लाइको, यदि इसके साथ भारी घबराहट रहे तो एकोन, आर्स, वेरेट्र एल्ब, स्पाइजि, आरम और पल्स, यदि कमजोरी के कारण मूर्च्छा आ जाय तो आर्स, वेरेट्र एल्ब, इग्ने; भारी श्वास-कष्ट होने लगे तो एकोन, वेल, नक्स वाम, फास और स्पाइजि से लाभ होगा।

४—हृदय की शूल-वेदना (Neuralgia of the Heart)—ऊपरलिखित अनुच्छेद १ और संख्या २ में हृदयावरक-झिल्ली-प्रदाह देखिए।

५—हृदय की विवृद्धि (Hypertrophy of the Heart)—इस प्रकार की विश्रृङ्खला में मुझे कैल्मिया से विशेष लाभ प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त लाइको, आर्स, स्पाइजि, कैल्के, पल्स, वेरेट्र एल्ब, केलि-हाइड्र, ग्रेफा, बिस्मथ, एकोन या एस्फा से मुझे कोई लाभ नहीं हुआ। मेरे हाथ से इस प्रकार की हृदय-वृद्धि के कारण शोथ रोग होने पर लाइको से लाभ हुआ है।

६—हृदय की धमनी मे अर्बुद (Aneurism of the Heart)—यदि ऐसा रोग बहुत अधिक बढ़ न गया हो तो आर्स तथा कार्बोवेज अन्य औषधों की अपेक्षा अधिक लाभदायक हैं, किसी-किसी रोगी में इससे उत्तम फल मिला है।

७—हृदय कपाट के रोग—डॉ० हेरिंग ने इस रोग के लिए स्पाजिया के विषय में लेख लिखा था। उससे भी पहले एक अमेरिका के चिकित्सक ने भी इस विषय का सुझाव दिया था। डॉ० वेल्स के लिखे उपसर्गों में इस औषध को देकर मुझे कई बार सफलता मिली है। इसका विशेष लक्षण है—साँस रुक जाने के डर से रात को एकाएक नींद से जग पड़ना। मेरे एक रोगी में हृदय-कपाट के कष्ट के साथ हृदय का शूल भी था। उस पर इस औषध का प्रयोग करने से मुझे शीघ्र उपकार मिला। जो दर्द बाकी रह गया था, उसे आर्स ने दूर कर दिया। यदि हृदय-कपाट कुछ मोटा हो जाय तो स्पाइजि और कैल्मिया से लाभ होगा। हृदय के किसी अन्य भाग में स्थूलता आ जाय तो स्पाइजि से विशेष उपकार होगा। (डॉ० हेम्पल के अनुसार हृदय रोग में केक्टस ग्रैण्डफ्लोरस का भी स्मरण रखना आवश्यक है।)

८—नील पाण्डुरोग—खासकर नवजात शिशुओं के शरीर में यदि नीले दाग पड़ जायँ तो डिजिटेलिस ही उपयोगी औषध है; सल्फ और कैल्के भी अच्छी दवाएँ हैं।

आयोडिन और डिजिटेलिस आदि औषधों के बारे में हृदय-रोग के लिए जो सिफारिश की गयी है, उनसे मुझे कोई लाभ नहीं हुआ। मैंने प्रत्यक्ष देखा है कि इन औषधों की बहुत बड़ी मात्रा से रोग कुछ प्रशमित हो जाता है। ऐसी हालत में हृदय की विवृद्धि होना चिन्ता का विषय है। जहाँ-जहाँ मैंने होमियोपैथ डाक्टरों को इन दोनों औषधियों की बड़ी मात्राओं का व्यवहार करते देखा, मैंने भविष्यवाणी की थी कि इससे कुछ भी फल न होगा।

अध्याय—२२

गरदन, पीठ और पीठ का निचला भाग

(Nape of the Neck, Back and small of the Back)

१—मेरुदण्ड-प्रदाह (Myelitis)—रीढ़ में जलने वाले रोगी प्रायः अल्प ही दिखाई पड़ते हैं। मेरे चिकित्सा-व्यवसाय के समय केवल इस रोग से आक्रान्त दो ही रोगी दिखाई पड़े। पहली रोगिणी एक नौकरानी थी। अधिक ठण्ढक के दिन में ऋतुकाल में उसे एक बार सर्दी लग गयी थी। अवस्था का विचार कर मैंने डल्का दिया। तुरन्त उसका अच्छा फल मिला। दूसरा रोगी एक देहाती आदमी था। तेज गर्मी के समय उसके शरीर से पसीना निकलने लगा और उसी समय वारिश होने लगी और वह खूब भींग गया। दूसरे दिन उसे ज्वर आ गया, पैर सुन्न हो गये, बिछौने से उठना भी मुश्किल था। जब मैं बुलाया गया तो देखा उसकी रीढ़ कुछ नरम हो गयी है। फलस्वरूप वहाँ की झिल्लियों में सूजन आ गयी। ऐसी रीढ़ की जलन वात रोग के कारण भी होती है। मैंने उपयोगी औषध देकर उसे आराम किया था।

२—मेरुदण्ड की उत्तेजना और ग्रीवा-स्तम्भ (Spinal Irritations Stiffness of the nape of the neck)—कभी-कभी गरदन कड़ी हो जाती है, साथ-साथ कटि-स्नायुशूल तथा पीठ के निचले भाग में दर्द और रीढ में जलन की अवस्था होती है। इन दोनों प्रकार के दर्दो को पृथक् समझना कठिन है, क्योंकि रक्तार्श तथा मासिक धर्म के दब जाने के कारण ऐसी शिकायतें होती हैं। ग्रीवा-स्तम्भ के समय चमड़े के भीतर चींटियों के रेंगने का-सा अनुभव नहीं होता, केवल यथार्थ मेरुदण्ड-प्रदाह में ही वैसा अनुभव मिलता है। मेरुदण्ड की उत्तेजना बढ़ जाने से भी

गरदन कड़ी हो जाती है। उस हालत में एकोन, ब्रायो, वेल, केलि कार्ब और लाइको उपकारी औषधियाँ हैं। यदि गरदन के भीतर ऐंठन की तरह कष्ट होने लगे तो कास्टि, कॅल्के और आर्सेनिक से लाभ होगा।

३—कटि-स्नायुशूल (Lumbago)—कमर में शूलदर्द होने लगे तो पल्स से अधिक रस उपकारी औषध है। इस प्रकार के जितने रोगी मेरे पास आये हैं मैंने रस का सेवन कराकर सभी को ३–४ दिनों में आराम कर दिया। कदाचित् २–३ रोगियों को उसके बाद पल्स देना पड़ा था। एक नवयुवक के कटि-स्नायुशूल के लिए एलोपैथ डाक्टर ने एक मास तक मार्फिया का इन्जेक्शन दिया था। उससे शूलदर्द घटने के बजाय पैरों में भी फैल गया। मेरे पास आने पर मैंने उसे रस टाक्स दिया और तुरन्त उपकार हुआ। उसके बाद मुझे उसके रोग पर विचार करने का समय मिल गया। उसके बाद मैंने उसे वेल, नक्स वाम और प्लम्बम दिया। जिससे दर्द घट गया, किन्तु कुछ दिनों के बाद उसके उदर में दर्द होने लगा। मैंने उसे पुनः रस ३० दिया, जिससे उसके सभी कष्ट दूर हो गये (डॉ० हेम्पल के अनुसार ऐसी परिस्थिति में एकोनाइट बाहर से लगाने और पिलाने से भी कटि-स्नायुशूल आराम हो जाता है)।

४—पीठ के निचले भाग मे दर्द और पृष्ठवेदन (Pains in the Small of the back, backache)—ऐसी अवस्था में होमियोपैथी चिकित्सा से विशेष लाभ होता है। इस रोग के अनेक कारण हैं, जैसे कि उस स्थान में अधिक खून जमा होना, रक्तार्श दब जाना, स्त्रियों का मासिक-ऋतु बन्द होना, कमर में वात, रीढ़ की उत्तेजना या उसका नरम हो जाना आदि। कटि-स्नायुशूल के साथ जलन, दबाव, चीड़-फाड़ की तरह का दर्द, टक मारने की तरह जलन आदि जब तक रीढ़ के भीतर रोग प्रविष्ट न हुए हों और हाथ-पैरों से भी सुरसुराहट का अनुभव नहीं होता हो, तब तक मैं रोग के निदान तथा आनुषंगिक उपसर्गों के ऊपर ध्यान देता हूँ। अधिक रक्तसंचार होने और मूल कारण वातरोग का अनुमान होने पर मैं

रस, कास्टि, नक्स वाम, कार्वो वेज, आर्स, वेराइ कार्व, केलि कार्व और लैके से उपकार पाता हूँ। यदि कटि-स्नायुशूल के रोगी में रक्तार्श हो तो नक्स वाम, सल्फ, कार्वो वेज, आर्स, वेल, कैप्सि, कैमो, एसिड नाइट उपयोगी सिद्ध होंगे। यदि जरायु का भ्रंश या उसमें से रक्तस्राव अथवा उसके अन्य विकार के कारण यह रोग हो तो वेल, सीपि, प्लेटि, सल्फ, थूजा उपकारी हैं।

५—कशेरुकी मज्जा या क्षय रोग (Tapes Dorsualis)—शरीर के तरल धातु के अधिक क्षय से रीढ के भीतर का गूदा प्रदाहित हो जाता है तथा उसका क्षय होने लगता है। ऐसी अवस्था में फास, केलि हाइड्रो, सिकेलि, एसिड फास, नक्स मास, नक्स वाम, एल्युमिना और कैल्के विशेष उपयोगी औषधियाँ हैं। यदि चर्वी आने के साथ कशेरुकी मज्जा का क्षय हो, विशेषतः पैरों में हो तो वहाँ किसी प्रकार की दवा काम नहीं देती। पैर के तलवों में सुरसुराहट का होना मेरुदण्ड के प्रारम्भिक क्षय तथा मेरुदण्ड प्रदाह का लक्षण है। रीढ के वास्तविक रोग जैसे—हाथ-पैरों की सुरसुराहट, पैर के तलवों में स्पर्श ज्ञान का लोप और पेट के आस-पास कोई रस्सी बँधने की अनुभूति आदि अनेक रूप हैं। इन लक्षणों को देख कर कभी-कभी चिकित्सक भी भ्रम में पड जाते हैं। कशेरुकी मज्जा का क्षय रोग रीढ के निचले अंश से शुरू होकर मन्थर गति से बढ़ता है। इसमें सर्वप्रथम पैर की उँगलियाँ सुन्न हो जाती हैं, उसके बाद ऊपर की ओर इसका आक्रमण होता है। कुछेक सप्ताहों या महीनों में ही समूचा शरीर आक्रान्त नहीं हो जाता। इस रोग की निश्चित पहचान है-कटि की शुष्कता, विशेषतया पुट्ठे का सूखना, बाद में पेड़ू और त्रिकास्थि सूख जाती है। पुराने मेरुदण्ड-प्रदाह या मेरुदण्ड के क्षयरोग में ऐसा लक्षण कभी नहीं दिखाई पढ़ता। मेरुदण्ड के वात-विकारों में भी इस प्रकार का लक्षण नहीं पाया जाता। ऐसा लक्षण वास्तव में हस्तमैथुन के कारण कशेरुकी क्षयरोग में पाया जाता है और इसके साथ ही मेरुदण्ड में सुरसुराहट, हाथ-पैरों की शिथिलता और स्पर्शज्ञान की लुप्तता भी रहती है। इस प्रकार के लक्षणों

को दूर करने के लिए नक्स वाम, सल्फ, कैल्के और फास बहुत ही उपयोगी हैं। पूरक औषधों के रूप मे नेट्रम कार्ब और एसिड फास भी हितकर हैं। इन औषधों से सभी निकृष्ट लक्षण तथा पैरों का लकवा भी दूर हो जाता है। यदि पैर एकदम सुन्न हो गये हों तो उस रोगी की अवस्था बहुत ही खतरनाक समझनी चाहिए। यदि इस प्रकार का लकवा कई वर्षों से हो तो उसमें एल्युम मेटा से अच्छा फल मिलता है।

६—मेरुदण्ड की कोमलता —निदान की दृष्टि से इस विकार के लक्षण बिलकुल पृथक् हैं। जब हाथ पैरों में भी लकवा का असर हो जाय तो कैल्के और फास बहुत उपयोगी प्रमाणित होते हैं।

—o—

अध्याय—२३

हाथ-पैरो के अनोखे रोग

(Peculiar Phenemena in the Extremities)

१—अगुलवेडा (Panaritia)—अगुलवेड़ा दूर करने के लिए डॉ० शिलिंग ने हिगिया अध्याय २१, पृष्ठ स० ४४६ और डॉ० रिकर्ट ने अपनी चिकित्सा-विधि भाग ३, पृष्ठ ५६० पर लाइकोपोडियम और रसटाक्स का उल्लेख किया है, परन्तु वह मुझे भ्रमात्मक जान पड़ता है। शायद वह अगुलवेड़ा न होकर छाला होगा। पेरिस नगर में साधारण छाले (Pemphigus) और हाथ-पैरों के जलनयुक्त तथा खुजली वाले छाले (Pompholix) प्रायः एक विशिष्ट ऋतु में महामारी के रूप में फैलते हैं। मैंने एक रोगी में देखा था, उसके बाएँ हाथ की तर्जनी की हड्डी की पहली जोड़ पर छाला निकल आया, जो रातभर में ही बहुत बड़ा हो गया। उसमें अत्यधिक जलन थी। रोगी किसी खास कारण से बाहर चला गया। उसने लौट आकर मुझे दिखाने की बात सोची थी। जब वह बाहर से १५ दिनों बाद वापस लौटा तो उसके हाथ की हालत बहुत खराब थी। उसका रङ्ग लाल और सूजन बहुत अधिक थी। उस पर अनेक छाले उत्पन्न हो गये और उन छालों में लाल-पीले रङ्ग का पीब भर गया था। छालों के चमड़े का रङ्ग सीसा धातु जैसा काला और नीलक के साथ-साथ लाल था। उस रोगी को लाइकोपोडियम ने तुरन्त लाभ पहुँचाया। छालों वाला स्थान दीर्घकाल तक लाल और नीला-लाल बना रहा। एक अन्य रोगी की भी ऐसी ही हालत हुई थी। उसकी भी अगुली की जोड़ पर बड़ा सा छाला निकल आया। छाला के बहुत बढ़ जाने पर उसमें सड़न आ गयी, उसका रङ्ग काला-नीला हो गया। यथार्थ में मैं यह कहना चाहता हूँ कि

मुझे अंगुल वेड़े में रसटाक्स या लाइकोपोडियम से कोई लाभ नहीं दिखाई पड़ा। वास्तव में ऐसे रोगियों की चिकित्सा में मुझे साइलीशिया से अत्यन्त लाभ दिखाई पड़ा जब कि उनमें पीब का बहाव भी शुरू हो गया था। यदि पीब न आ रहा हो, केवल उसकी अवस्था ही शुरू हुई हो तो सल्फर की एक मात्रा से ही सारे उपद्रव दूर हो जाते हैं। यदि साइलिशिया के प्रयोग के बाद भी पीब का प्रवाह जारी रहे तो उन स्थलों में हिपर का प्रयोग लाभदायक सिद्ध होगा। इसके सेवन से समूचा पीब बहकर निकल जायगा। यदि पीब का प्रवाह बहुत दिनों तक बना रहे तो साइलिशिया ही देना उचित है। यदि सड़ाव (Gangrene) की सम्भावना दिखाई दे तो लैकेसिस या आर्सेनिक का प्रयोग बहुत लाभकारी होता है। मुझे रसटाक्स या लाइकोपोडियम के समान ब्रायोनिया भी निरर्थक ही जान पड़ा है। डाक्टर क्रेसलर ने इसके लिए ग्रैफाइटिस तथा डॉ० गालन ने कास्टिकम की बड़ी प्रशंसा की है। परन्तु उपर्युक्त औषधियों की भाँति मैंने इन औषधियों का भी कोई प्रभाव नहीं देखा। मुझे इस रोग में सल्फर, साइलिशिया और हिपर से तुरन्त लाभ होते दिखाई दिया है। इसलिए मैं इन औषधों के अतिरिक्त किसी अन्य औषध का प्रयोग करके आजमाइश नहीं करता हूँ।

२—कूल्हे की हड्डी का वातशूल (Ischius Coxalgia)—यदि इस प्रकार का कष्ट युवकों में हो तो यह कूल्हे से लेकर पाँव तक जाता है और इसे आमवात की वेदना समझा जाता है। इसके लिए मर्क, पल्स और रस-टाक्स सर्वश्रेष्ठ औषधियाँ हैं। यदि ऐसा दर्द स्नायविक हो और निचले नितम्ब की हड्डी से शुरू होकर बाहर की तरफ नीचे को चले तो वहाँ कोलोसिन्थ की सबसे छोटी मात्रा देने से दर्द निश्चय ही दूर हो जायगा। इसे बड़ी मात्रा में प्रयोग करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। यदि कूल्हे का जोड़ प्रदाहित हो, जैसा कि प्रायः बालकों की हालत में जोड़ उखड़ जाने के कारण हुआ करता है तो वहाँ मर्क, रस, कैल्के आदि प्रधान औषधियाँ हैं। जब मर्क और कैल्कै के सेवन करते रहने पर भी सूजन में

घाव हो जाय या जोड़ों में नासूर (Coxarthrocace) पड़ जाय तो सल्फ, कास्टि, फास, कालोसिन्थ और साइलि बहुत ही उपकारक औषधियाँ हैं। इन औषधियों का व्यवहार लम्बी अवधि के पश्चात् होना अत्यन्त आवश्यक है।

३—घुटनो के रोग (Affections of the Knee)—आमवात, गठियावात, जोड़ों की सूजन या अन्य किसी प्रकार की सूजन में सबसे अधिक कष्टकारक घुटने का गठिया होता है। इसकी चिकित्सा करने में चिकित्सक लोग भी परेशान हो जाते हैं। यदि इस प्रकार की सूजन किसी बाहरी चोट के कारण उत्पन्न हुई हो और घुटने की चौड़ी हड्डी से रस निकला हो तथा आर्निका के सेवन से भी कोई लाभ न हुआ हो तो यह चोट प्रायः बहुत समय तक काबू में नहीं आती। कण्ठमाला प्रकृति के लोगों के घुटनों के गठियावात के लिए सल्फ, आयोडीन और साइलि से बढ़कर कोई अन्य औषध उपकारी नहीं है। मर्क, सल्फ और कैल्के से भी तुरन्त लाभ होता है, जब कि उन्हें लम्बे समय तक काम करने का मौका दिया जाय। यदि घुटने पर सूजन के कारण घाव हो गया है तब भी इन औषधियों से विशेष सहायता मिलती है। परन्तु पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए फास, साइलि की भी आवश्यकता पड़ती है। यदि घुटने पर सफेद रङ्ग की सूजन हो तो सल्फर का प्रयोग आवश्यक है। साइलीशिया के बाद इसी का नम्बर है, तो भी जब रोग की प्रारम्भिक अवस्था हो तो मर्क और पल्स से शीघ्र लाभ होता है। घुटने के आमवात के लिए एकोन, ब्रायो, मर्क या पल्स अत्यन्त लाभप्रद हैं। यदि घाव हो गया हो तो ब्रायो, मर्क या हिप तुरन्त लाभ पहुँचाते हैं। यदि ब्रायोनिया से काम न चले तो साइलीशिया या लैकेसिस उपयोगी हैं। जब पीब का प्रवाह दीर्घकाल तक स्थायी रहे तो साइलीशिया बहुत उपकारी है। सूजाक दब जाने के कारण घुटने की सूजन (Guonitis gonorrhoea) सबसे अधिक कष्टकारक होती है। ऐसी स्थिति में घुटने पर असाधारण सूजन होती है तथा भीषण दर्द होता है। इसके लिए एकोन

या व्रायो से काम नहीं चल सकता। ऐसी अवस्था में पल्सेटिला विशेष उपकारी सिद्ध होगा। इससे भी अधिक उपयोगी औषध मर्क है, जब कि रोगी ने सूजाक के समय में इसका सेवन न किया हो। यदि घुटने के जोड़ में पानी के साथ सूजन हो गयी हो तो ऐसी स्थिति प्रायः अत्यन्त शोचनीय होती है। एक रोगी ने इस रोग की अनेक होमियोपैथ चिकित्सकों से चिकित्सा करायी। उसे बड़ी मात्रा में आयोडिन दिया गया और आयोडाइड आव पोटाशियम का लेप भी लगवाया गया। परन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। मैंने उसे सल्फर ३० शक्ति की २ गोलियों की एक मात्रा दी और उसने आश्चर्यजनक काम कर दिखाया। उसकी सूजन ५-६ दिन के बाद ही कम होने लगी। ४ सप्ताहों तक मैंने उसे दूसरी मात्रा नहीं दी और पहली मात्रा ही काम करती रही। इसके बाद घुटना अपनी पूर्वावस्था में आ गया। अब वह जमीन पर पैर रखकर चलने लगा। यदि सल्फर के बाद आयोडीन से लाभ नहीं होता (इनकी ऊँची शक्ति से ही लाभ होता है) तो मैं साइलि का प्रयोग कर पुनः सल्फर का व्यवहार करता हूँ।



अध्याय—२४

हाथ-पैरो के दर्द, वातरोग तथा गठिया

(Pains in the Limbs Rheumatism Arthritis)

१—हाथ-पैरो का स्नायुशूल (Neuralgia of the Extremities)—इस स्नायुशूल का आक्रमण केवल कूल्हे के जोड़ और उसकी नाड़ियों में ही नहीं, बल्कि पिण्डलियों, भुजाओं तथा पैर के तलवों में भी होता है। इसका शूलदर्द अत्यन्त कष्टकारक होता है। इसके लिए आर्सेनिक, कैमो, नक्स वाम, पल्स, रस और कालो अत्यन्त लाभप्रद औषधियाँ हैं। कभी कभी सल्फ और साइलि के प्रयोग से भी लाभ होता है। मैं जाँघों, नितम्बों और पिण्डलियों के स्नायुशूल में पल्सेटिला के सफल न होने पर कोलोसिन्थ ३० शक्ति की २ गोलियों की एक मात्रा देता हूँ। यदि शूलदर्द अधिक पुराना न हो तो यह लाभजनक होता है। पुराने दर्दों में यह बहुत धीरे-धीरे काम करता है, उसके लिए कैल्के, सल्फ और लाइको बहुत उपकारी सिद्ध होते हैं। मुझे ऐसे पुराने रोग के विशिष्ट लक्षणोंवाले (जैसा कि आगे अनुच्छेद न० ४–५ में उल्लिखित है) रोगियों के लिए बेल, फेरम, आर्स, चायना और नक्स वाम भी समान रूप से उपयोगी मिले हैं। कन्धों की हड्डियों के जोड़ तथा कन्धे से कोहनी तक के स्नायविक शूल के लिए बेल, थूजा, रस, कैल्के, लाइको और वेरेट्र एल्ब आदि औषधियाँ बहुत ही गुणकारी हैं। इस प्रकार के दर्दों के लिए औषधि का चुनाव करते समय मैं दर्द की अनुभूतियों पर अधिक ध्यान नहीं देता (स० ४ देखिए), बल्कि वैसी स्थितियों पर विशेष ध्यान रखता हूँ (स० ५ देखिए) जिनके कारण वे घटते-बढ़ते रहते हैं। आनुषंगिक उपद्रवों पर भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। जहाँ दर्द के प्रकार ही मुख्य हों, वहाँ भी उसी पर ध्यान देना आवश्यक है।

२—वातरोग (Rheumatism)—ज्वर के साथ तरुण आमवात के लिए एकोनाइट प्रधान औषध है। इस स्थान में भी मैं इसका घोल ही देता हूँ और १–१ चम्मच पानी २–२ या ३–३ घण्टे बाद बराबर पिलाता रहता हूँ। इससे यदि लाभ न हो और सूजन गरम तथा लाल हो तो अक्सर ब्रायोनिया से उपकार होता है। कुछ अवस्थाओं में एकोनाइट ही लाभप्रद सिद्ध होता है। विशेष लक्षणों के रहने पर बेल, कास्टि या रस भी लाभ-जनक होते हैं। यदि पीले या गुलाबी रंग की सूजन दिखायी पड़े तो—पल्स, नक्स, आर्निका, कैमो, चायना, बेल और ब्रायो बहुत ही हितकर हैं। यदि सभी स्थान के जोड़ों में दर्द रहे तो पल्सेटिला ३० पानी में घोल-कर देना चाहिए। जब सूजन का रंग पीला तथा जोड़ों के साथ-साथ छाती और पीठ की पेशियों में दर्द हो तब नक्स वाम उपयोगी है। एक रोगिणी के हाथों, पैरों, भुजाओं, छाती और पीठ के सभी जोड़ों में दर्द होता था। कुचले जाने की तरह उसमें भयंकर शूल भी होता था। मैंने उसके लिए नक्स वाम की व्यवस्था दी। दर्द बढ़ने की आशंका से मैंने ३० शक्ति की २ गोलियों का घोल एक चम्मच लेकर एक प्याले पानी में मिला दिया और उसमें से एक चम्मच पानी फिर तीसरे प्याले में डाल दिया। अब इस तीसरे प्याले में से १–१ चम्मच पानी ३–३ घण्टे के अन्तर से पिलाया। यह दवा रात्रि में १० बजे दी गयी थी। दूसरे दिन जब मैं सुबह उस रोगिणी को देखने के लिए गया तो आश्चर्यजनक लाभ दिखायी पड़ा। पहली खुराक पीते ही उसे नींद आ गयी और वह रातभर आराम से सोती रही थी। उस रोगिणी को १८ दिनों के बाद ऐसी नींद आई थी क्योंकि उसके दर्द और सूजन दोनों ही घट गये और ३ दिन में ही सारे लक्षण गायब हो गये। उसे बराबर इसी तीसरे प्याले का पानी दिया जाता रहा। मैंने इतनी अल्प मात्रा से कई बार लाभ होते देखा है। प्रदाहयुक्त आमवात में काल्चि, आर्स, वेरेट्र एल्ब, चायना, मर्क और कैमो भी अत्यन्त लाभकारक हैं। जोड़ों के पुराने दर्द में, जब कि ज्वर की अवस्था न हो, ब्रायो,

रस, पल्स, नक्स वाम, कालिच, आर्न, आर्स, वेरेट्र एल्ब, सल्फ, लाइको, फास और थूजा भी विशेष उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

३—गठिया रोग (Arthritic affections)—ज्वर के साथ होनेवाले तरुण गठिया रोग के लिए मैं आमवात की-सी चिकित्सा करता हूँ। जो-जो औषधियाँ आमवात में गुणकारी हैं, वे ही औषधियाँ गठियावात में भी। पुराने गठियावात में जब ज्वर न रहे तब कास्टि, कैल्के, लाइको, सल्फ, थूजा और एण्टिम क्रूड अत्यन्त लाभकारी हैं। यदि गठियावात में जोड़ों पर गाँठें भी निकल आवें तो कैल्के, लाइको और कास्टि के समान हितकारी अन्य औषधियाँ नहीं हैं। (डॉ० हैम्पल ने एसिड बेंजोइक की भी सिफारिश की है।) यदि इन गाँठों में दर्द विशेष रूप से हो, रंग लाल हो तथा प्रदाहयुक्त भी हो तो एकोनाइट या आर्निका के प्रयोग से तुरन्त लाभ होते देखा गया है।

४—दर्द की प्रकृति के अनुसार विशेष निर्देशक लक्षण (Special indications according to the nature of Pains)—गठियावात और आमवात के दर्दों में जब जलन अधिक हो रही हो—आर्स, कास्टि, मर्क, बेल, ब्रायो, रस। छेदने की तरह का दर्द—कैल्के, मर्क, पल्स। मन्द-मन्द दर्द—नक्स, ब्रायो, आर्न, बेल, चायना, कैल्के। स्पर्शज्ञान का अभाव और सुरसुराहट—नक्स, रस, चायना, लाइको, आर्न, पल्स, सल्फ। पीड़ित अङ्ग मानो निर्जीव-सा है—ब्रायो, कैमो, नक्स, रस, पल्स, लाइको, थूजा, चायना, सल्फ। टपकन के साथ होने वाला दर्द—एकोन, बेल, मर्क, कैमो, फेरम, पल्स, रस। चीरने-फाड़ने, कतराने, खिंचने और चुभने का दर्द—जब कि आक्रांत अंग में झटके और मरोड़ भी हो—पल्स, कालो, रस, बेल, चायना, कालिच, कैल्के, नक्स वाम। काटने के साथ दर्द—आर्न, बेल, कालो, फास, कैल्के, रस, लाइको। भाला भोंकने या डंक मारने की तरह का दर्द—एकोन, ब्रायो, लाइको, कालो, मर्क, रस, थूजा, कैल्के। मोच आने की तरह—आर्न, रस, ब्रायो,

कैल्के, कास्टि, पल्स, सल्फ। सनाब के साथ—ब्रायो, रस, लाइको, कास्टि, फास, सल्फ। स्थान परिवर्तन करने वाला दर्द—पल्स, रस, ब्रायो, काल्चि, सल्फ, आर्न, चायना। कुचल जाने का सा बोध—आर्न, वेरेट्र एल्व, चायना, एकोन, ब्रायो, कैल्के, रस, नक्स वाम। सिकुड़ने की तरह—वेल, चायना, नक्स वाम, कैल्के, रस, पल्स, सल्फ।

५—बढने की स्थिति के अनुसार निर्देशक लक्षण (Indications according to the aggravating Circumstances)—सीलदार और ठण्ढे मौसम में—रस, वेरेट्र एल्व, काल्चि। पानी में भींग जाने के बाद—रस, पल्स, डल्का, सल्फ। हर बार ऋतु-परिवर्तन पर—आर्स, कैल्के, रस, पल्स, कार्बो वेज, डल्का लैके, मर्क, वेरेट्र एल्व, पल्स। खुली हवा में—नक्स वाम, ब्रायो, कैल्के, रस, कास्टि, सल्फ, वेरेट्र एल्व। किसी कारणवश थोड़ी ठढ लगते ही—डल्का, फास, रस, पल्स, कैमो, मर्क, नक्स वाम, सल्फर। गर्मी से—ब्रायो, फास, पल्स, थूजा। बिछौने की गर्मी से—मर्क, आर्स, कैमो, वेल, रस, सल्फ, कार्बो वेज। पीड़ित अग को हिलाने-डुलाने से—ब्रायो, पल्स, आर्स, थूजा। साधारण हिलने डोलने तथा किसी प्रकार की गति से—ब्रायो, आर्न, काल्चि वेल, आर्स, कैमो, सल्फ, कार्बोवेज, नक्स वाम। आराम करने से—रस, पल्स, डल्का, फेरम, सल्फ, आर्स। लेटी हालत में—आर्स, वेल, कैमो, चायना, फेरम, रस, पल्स,। बैठ जाने से—पल्स, फेरम, आर्स। बैठने का हर एक स्थान बहुत कड़ा मालूम होने पर—आर्न। स्पर्श सहन न होना—चायना, ब्रायो, एकोन, वेल, कैमो, सल्फ, लाइको, कालो, पल्स। खास कर शाम के समय—पल्स, वेल, रस, काल्चि, कालो। खास कर रात में—मर्क, आर्स, कैमो, रस, फेरम, चायना, ब्रायो, कैल्के, लाइको, काल्चि, डल्का, पल्स, थूजा। आधी रात के बाद—थूजा, मर्क, आर्स, सल्फ,। सुबह २-३ बजे—आर्स, थूजा।

६—घटने की स्थितियो के अनुसार निर्देशक लक्षण--(Indications according to the amles-rating Circumstances)—

साधारण गर्मी से आराम मिलना—आर्स, रस, कास्टि, कालो, लाइको, मर्क, सल्फ। सर्दी से घटने पर—पल्स, थूजा,। बिछौने की गर्मी से—डल्का, रस, थूजा, कैल्के, वेरेट्र एल्ब। पसीना आने पर—आर्स, रस, चायना, थूजा। गति-विधि से—रस, डल्का, थूजा, कालो, फेरम, आर्न, मर्क, पल्स, सल्फ, कैल्के। आराम करने से—ब्रायो, काल्चि, नक्स वाम, फास। पीड़ित अगों को दबाने से—वेल, पल्स, रस।

७—आक्रान्त अगों के विकार के अनुसार (According to the affected Parts)—गाँठों में वात का दर्द हो तो उसके लिए नीचे लिखी औषधियाँ उपयोगी हैं—एकोन, पल्स, मर्क, काल्चि, ब्रायो, सल्फ, (डॉ० हैम्पल के अनुसार छोटे-छोटे जोड़ों के लिए कालोफाइलम); धड़, छाती और पीठ की बड़ी-बड़ी पेशियों पर वात का आक्रमण होने पर सबसे उत्तम औषध है—नक्स वाम। और भी आर्न, मर्क, रस, आर्स, गरदन के पीछे वाले वात के दर्द के लिए सबसे अच्छी दवाएँ हैं—बेल, ब्रायो, केलि कार्ब, लाइको, मर्क, आर्स, कास्टि, पल्स, कधों के दर्द के लिए सबसे उत्तम है वेल या रस या कभी-कभी कैल्के, कास्टि, लाइको, थूजा, मर्क, पल्स, ब्रायो, यदि हाथों और पैर की उगलियों पर खास आक्रमण हुआ हो तो कैल्के, कास्टि, लाइको, आर्स, ब्रायो; यदि पुट्ठों के जोड़ में खासतौर पर दर्द हो तो उसके लिए कालो, मर्क, रस, कैल्के, आर्स, वेल, लाइको, सल्फ, कार्बोवेज, नक्स वाम, पल्स, यदि घुटनों में वात का दर्द हो तो कास्टि, लाइको, चायना, ब्रायो, कैल्के, सल्फ, रफ, कास्टि; यदि पैर की लम्बी हड्डियों के जोड में तथा पैर की उगलियों में खासतौर पर वात का दर्द हो तो चायना, एकोन, लाइको, कास्टि, नक्स वाम, ब्रायो, सल्फ, कैल्के।

८—अगो की अवस्था के अनुसार (According to the Condition of the Parts)—यदि कोई अग प्रदाहित और स्फीत हो तो एकोन, ब्रायो, पल्स, वेल, आर्स, हिप, लैके, एण्टि-क्रूड, यदि वह अंग लाल और चिकना हो तो एकोन, वेल, ब्रायो, रस, आर्न, काल्चि,

आर्स; यदि सूजन, फीकी-फीकी लाल या गुलावी रंग की हो तो ब्रायो, नक्स वाम, मर्क, पल्स, आर्न, वेल, यदि गठिया की गाँठें हों तो कैल्के, लाइको, कास्टि; (एसिड वेंजोइक—हैम्पल)।

९—रोग के स्थान वदलते रहने के अनुसार (According to metastatic Changes)—जब वात या गठिया के कारण दिल पर आक्रमण हो तो हमारी सबसे विश्वासयोग्य औषधियाँ हैं—एकोन, ब्रायो, लैके, फास, आर्स, कालिच, रस या आरम (केक्टस, ग्लैंडि-फ्लोरस—हैम्पल)। यदि इस रोग का आक्रमण सिर में हो तो सीपि, स्पाइजि, ब्रायो, नक्स वाम, यदि छाती के ऊपर हो तो ब्रायो, एकोन फास, मर्क, सल्फ, यदि पाकाशय या आँतों पर हो तो एण्टि-क्रूड, वैल, सल्फ, कालो, पल्स, नक्स वाम। इस प्रकार के रोगों के आक्रमण पर मैं अपने साथियों को वाहरी प्रयोग से निवृत्त करना चाहता हूँ। मैंने प्रत्यक्ष देखा है कि जो लोग वात के दर्द के लिए वाहर से मलहम आदि लगाते हैं उनका वह दर्द तुरन्त दूसरे स्थान में पहुँच जाता है। मैंने एक बूढे आदमी की चिकित्सा दो बार की थी, जिसके शरीर के जोड़ों में गठिया था और चिकित्सकों ने वाहरी प्रयोग करके उसे कब्र के कगार पर पहुँचा दिया था। पहिले तो मैंने देखा कि उसमें न्यूमोनिया हो गया है और उसके वाद आन्त्र शोथ हो गया है, उसकी चिकित्सा करते हुए मैं परेशान हो गया। भयकर 'आँख-आना' रोग के लिए मैंने एकोन, एण्टि-क्रूड, वेल या कालो को वहुत ही उपकारी पाया है, उसी तरह मूत्रथैली के रोग में एकोन, पल्स, कालो, लाइको और नक्स वाम वहुत ही उत्तम औषधियाँ हैं। एक दूसरे रोगी में आन्त्र-शूल था। मैंने केवल थूजा का सेवन कराकर उसे आराम किया था।

—०—

अध्याय—२५

साधारण ऐंठन और पक्षाघात की अवस्था

(General Spasm and Paralytic Conditions)

१—हाथ-पैरो की ऐंठन

(Spasm of the Extremities)

१—ताण्डव रोग (Chorea, St. Vitusdance)—कुछ स्वयं-सिद्ध समालोचकों ने लिख मारा है कि कम्प-वात के लिए कास्टिकम उत्तम औषध है। मैं समझता हूँ कि उन लोगों के पास कभी ऐसा रोगी आया ही नहीं होगा और आया भी होगा तो साधारण रीति से उन लोगों ने कास्टिकम की बड़ी मात्रा देकर उसके रोग को बढ़ा दिया होगा। मैं भी कास्टिकम का व्यवहार करता हूँ, जहाँ हाथ पैरों में ऐंठन थी और दिमाग पर उस रोग का कोई भी असर नहीं था। ऐसी स्थिति में कास्टिकम ही मुझे उत्तम औषध प्रतीत हुई, वह भी जब हाथ पैरों का कम्पन भय के कारण हुआ हो। किन्तु जहाँ चमड़े के उद्भेद दब जाने से वैसा कम्पन होने लगे और इग्नेशिया उसे आराम न कर सके। उन लोगों का यह भी कहना है कि अंग के किसी स्थान की पेशी यदि अपने-आप धड़कने लगे तो वह कुछ समय के बाद अपने-आप शान्त हो जायगा। मेरे विचार से इस प्रकार के अनैच्छिक कम्पन के लिए कास्ट ही उत्तम औषध है कभी-कभी मैं इग्नेशिया देकर भी इसमें सफल हुआ हूँ और किसी-किसी रोगी के लिए कास्टिकम उपकारी सिद्ध हुआ है।

यदि मृगीरोग के कारण पेशी कम्पन हो या भय के कारण वैसा हो तो कूप्रम या स्ट्रेमोनियम से मैं उसे आराम कर सका हूँ। जब रोगी

हर तरह के निरर्थक इशारा करने लगे, छिप जाना चाहे या पेट के बल खिसकने लगे तो कूप्रम ही विशेष रूप से उपयोगी है। जहाँ रोगी भ्रम में प्रतीत हो वहाँ स्ट्रेमो अच्छा फल दिखाता है। यदि ऐसी औषधियाँ निष्फल हों तो मैं सल्फर और फ्लैके देता हूँ। इस तरह की चिकित्सा से मुझे कई बार आश्चर्यकारक फल मिला है। लड़कियों में इस प्रकार का पेशी कम्पन हो तो बेलेडोना और लड़कों के लिए नक्स वाम अच्छी दवाएँ हैं। यदि रोगी लगातार हँसता रहे तो क्रोकस और पेट में कृमि हो तो सिना। किन्तु मुझे एगारि, हायोस, काक्यू, सिकेलि, नेट्र म्यूर और सीपिया के सम्बन्ध में कोई अनुभव नहीं है। किसी-किसी रोगी में लाइको से यथेष्ट लाभ हुआ है ऐसा रोगी एक १२ वर्ष का बालक था और उसके पेट में से लम्बे-लम्बे केंचुए मल के साथ निकला करते थे।

२—प्रसूता के आक्षेप (Eclampsia)—गर्भिणी के प्रसव के अत्यधिक कष्ट के समय तथा प्रसव के बाद वाली ऐंठन के लिए मैं सदा ही बेलेडोना देता हूँ। किन्तु अन्य लक्षण रहने पर दूसरी औषधियों की भी आवश्यकता होती है। यदि ऐसी प्रसूति के प्रसव के समय अधिक मात्रा में खून जाता हो तो प्लेटिना या हायोस देने से वह रुक जायगा। यदि प्रसव के समय ही ऐंठन होने लगे और वेदना में तेजी न आये तो सिकेलि से उपकार होता है। जब नाभिस्थान में भयकर दर्द हो तो कैमो। यदि भय के कारण ऐंठन होने लगे तो इग्ने। नवजात शिशुओं के शरीर में ऐंठन दिखायी पडे तो कैम्फर टिंचर उँगली में लगाकर उसकी नाक पर रगड़ने से ऐंठन बन्द हो जाती है। कोई विशेष लक्षण दिखाई न पड़े और केवल तेज दर्द रहे तो इग्ने से लाभ होगा। बच्चा रोये या कराहे तो कैमो या इपि। बार-बार कै करे तो कार्फिया। सिर की ओर रक्त का अधिक प्रवाह हो तो बेल या ओपि। यदि रोगी बिल्कुल बेहोश पड़ा हो तो हायोस। यदि उससे लाभ न हो तो बेल। नवजात शिशुओं और प्रसूता स्त्रियों को नाक से उपयोगी औषध सुँघाने से यथेष्ट लाभ होगा। उपयोगी औषध से उपकार होने पर फिर भी उस रोग का

दौरा हो सकता है, किन्तु वह बहुत ही अल्प होगा (डॉ० हैम्पल ने लिखा है कि ऐसे आक्षेपों के लिए जेल्स अत्यन्त उपकारी औषध है, किन्तु वेरेट्र विरि और आपि केवल उपशामक हैं)।

३—मृगी के आक्षेप (Historical Spasms)—मृगी के आक्षेप के लिए इग्नेशिया सबसे उत्तम औषध है। अधिकतया स्त्रियाँ ही ऐसे रोग से आक्रान्त होती हैं। उनको बेहोशी के समय नाक के सामने स्प्रिट आव कैम्फर मालिश करने से लाभ होता है। मेरे पास एक मृगी की रोगिणी आयी थी। मुझे बताया गया है कि वह मृगीरोग से आक्रान्त है और पुरानी प्रथा के चिकित्सकों ने ऐसा ही लिखकर दिया था। मैंने देखा कि उसमें अपस्मार का लक्षण अधिक है। इस कारण केवल इग्नेशिया से मैंने उसकी चिकित्सा की और फलस्वरूप सालभर तक उसे बेहोशी नहीं आयी। मैंने उसके घर वालों से कह दिया था कि जभी अचेतपन का दौरा होने की शंका हो तो तुरन्त मुझे बुला लिया जाय। वह बड़े धनिक घर की स्त्री थी और ६ महीनों तक वह पेरिस नगर में ही रखी गयी, घरवालों को शंका थी कि जभी उस रोग का दौरा हो तभी मुझे बुला ले सकें। यथार्थ में मैंने उसके कई दौरे देखे हैं, मैंने अपस्मार की मूर्च्छा भी पायी अर्थात् इसमें जँभाई, अँगड़ाई, डकार, अफरा, मिचली, कै, मुँह में झाग, साँस में घड़घड़ाहट, दाँतों से जीभ काट लेना, मुँह बिगाड़ना और गले में ऐसा अनुभव मानो कोई गोला नीचे से ऊपर उठ रहा है। ऐसे लक्षणों को देखकर मैंने साइलाशिया दिया। इससे विशेष उपकार हुआ। ६ महीनों तक फिर कभी वैसे अचेतपन का दौरा नहीं हुआ। सुरक्षा के लिए मैंने हायोस, बेल, कूप्रम और कास्टिकम दिए। कुछ दिनों तक मैंने उसे काक्यु, कैमो और सिकेलि भी दिये थे। मेरे इलाज से वह रोगिणी बिलकुल अच्छी होकर अपने देश चली गयी।

४—मृगी (Epilepsy)—मृगी के लिए डॉ० रिकार्ट ने बेल और हायोस की प्रशंसा की है। मेरे विचार से वह मृगी ही थी। मैंने उसके पुरुष

को भी मृगी रोगाक्रान्त देखा। मेरे हाथ से बेल, हायोस के द्वारा उसे लाभ हुआ। एक रोगी भय खाकर मूर्च्छित हो गया था। इग्नेशिया से जब कोई लाभ न हुआ तो मैंने हायास देकर अपूर्व सफलता पायी थी। मेरा नियम यह था कि यदि लक्षणों की अपेक्षा अन्य कोई औषध उपयोगी प्रतीत न हो तो मैं इग्ने से इलाज शुरू करता हूँ, चाहे आक्रमण किसी भी कारण से हुआ हो। यदि उससे लाभ न हो तो मैं कूप्रम, कास्टि, कल्के, लाइको और सल्फर देता हूँ। अनेक क्षेत्रों में मैं मूर्च्छा के रोगियों को सल्फर, कास्टि और कुप्रम देकर उन्हें आराम कर सका हूँ। पहले तो लैके और साइलि से किसी-कसी स्थान में अच्छा फल मिला है, किन्तु कहीं कहीं लाइको से उससे अधिक फल मिला है। ऐसे भी रोगी मेरे पास आये जिनके शरीर में खून ज्यादा था और सिर में रक्त जमा था। उन्हें मैंने बेल, सल्फ और कैल्के से आराम किया है। मृगी के रोगी को देखते ही कोई औषध चुन लेना सम्भव नहीं है। डाक्टर रिकार्ट ने अपने ग्रन्थ में अन्य अनेक लेखकों का मत उद्धृत किया है, किन्तु वे परीक्षित नहीं हैं। उन्होंने उन लक्षणों के बारे में जिन औषधियों की व्यवस्था दी है, उन्हें भी मैंने उपयोगी नहीं पाया है। उन्होंने गण्डमाला वाले रोगियों के लिए लैके, लाइको, सल्फ, साइलि और बेल को उत्तम बताया है, किन्तु उनमें कल्केरिया का नाम नहीं है। और यथार्थ में इसी से मुझे अधिक सुफल मिला है। सदा से मेरा यही नियम है कि जिस लक्षण में जो औषध उपकारी है उसे प्रत्यक्ष देखकर मैं अपने ग्रन्थ में लिख देता हूँ। मैं लोगों के कहने से अपना सिद्धात निश्चित नहीं करता। इस कारण मैं इस पुस्तक में उन्हीं औषधियों का नाम लिखता हूँ जिनका मैंने प्रत्यक्ष फल पाया है। मृगी के लिए वे हैं (इग्ने या बेल), कैल्के, सल्फ, लाइको, कास्टि, साइलि या कुप्रम। यदि कहीं यह दिखाई पड़े कि खुजली आदि की अधिकता से मूर्च्छा आ गई है तो मैं आर्स, कास्टि और कुप्रम देता हूँ। यदि रोगी भयभीत होकर मूर्च्छित हो गया हो तो इग्ने, हायोस और कास्टि। सिर में जल छिड़कने या जल पिलाने से मूर्च्छा घटे तो कास्टि और यदि जल पिलाने से बढे तो कैल्के। रात्रिकालीन

मृगी के लिए मेरे विचार से कॅल्के, साइलि और कास्टि। यदि सुबह मूर्च्छा आवे तो कॅल्के या लाइको। यदि स्त्रियों के ऋतु के समय मृगी का दौरा हो, उस समय अंगूठा न मुड़े, आँखें चमकीली, पुतलियाँ घूमती हुई दिखाई दें, कभी-कभी रोगिणी एक ओर टकटकी लगाये देखती रहे, कराहे, आहें भरे, बोलती रहे या घरवालों को पुकारती रहे तो ऊपरलिखित औषधियाँ विचार से सेवन करायी जायँ। इससे अच्छी नींद आयेगी।

५—निःस्पन्द वायु, संन्यास रोग (Catalepsy, Trance)—वायुनलियों की विकृति होने से इस प्रकार की मृगी का आक्रमण होता है। प्रायः बालकों तथा नवयुवकों में ही ऐसा रोग दिखाई पड़ता है। साधारण लक्षण यह है कि हाथ-पैर मोम की तरह कोमल हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में बेल और वेरेट्र एल्ब उपयोगी औषधियाँ हैं। मैंने ऐसे रोगियों में एकोन, फास, कैमो, हायोस और स्ट्रैमो को अधिक उपयोगी पाया है। फास और एकोन कुछ नवयुवतियों के लिए उपकारी सिद्ध हुए हैं, जिनमें नींद में चलने-फिरने का लक्षण दिखाई पड़ा था।

६ धनुष्टंकार, जबड़े सट जाना (Tetanic Spasm. Lock Jaw)—जहाँ रोगी के समूचे शरीर पर ऐंठन दिखाई पड़े, वहाँ नक्स वाम, कास्टि, इग्ने, बेल, साइक्यू और कॅम्फर उपयोगी औषधियाँ हैं। शरीर में ज्यादा चोट लगने के कारण ऐंठन होने लगे तो आर्निका उत्तम है। यदि उससे लाभ न हो तो इग्ने। किसी किसी रोगी में मर्क, बेल और एकोन सफल सिद्ध हुए हैं। जहाँ दाँत सट जायँ वहाँ ऊपरलिखित औषधियों के साथ-साथ लाइको भी उपकारी है।

७—उँगलियों की ऐंठन (Cramps of the Fingers)—ऐसी स्थिति में स्टैनम, सिकेलि और साइलि प्रधान औषधियाँ हैं।

८—पिण्डलियों की ऐंठन (Cra ps of the Calues)—पैरों की पिण्डलियों में रात्रि के समय ऐंठन हो तो कैमो, कूप्रम, वेरेट्र एल्ब, काली और सल्फर उपकारी औषधियाँ हैं (डॉक्टर हैम्पल के मतानुसार एकोन भी लाभदायक है)।

९—ऐंठन को उत्तेजित करनेवाले कारणों के अनुसार औषध-निर्वाचन के लिए विशेष निर्देशक लक्षण (Special Indications for the selection of remedies according to the Causes which excite the spasms)—क्रोध के कारण आक्षेप हो तो इग्ने, बेल, काक्यू और एकोन। भयभीत होने पर ऐंठन होने लगे तो इग्ने, कास्टि, कूप्रम, हायोस, प्लेटि, कैमो, ओपि, सल्फ और सिकेलि। तीव्र मनोवेग के कारण हो तो एकोन, बेल, काफि, हायोस, इग्ने, नक्स वाम, और पल्स; खासकर सन्ध्या समय हो तो कैल्के, स्ट्रेमो, सल्फ, और कास्टि। यदि खास तौर पर सुबह हो तो नक्स वाम, कैल्के, प्लेटि। रात को होने पर कूप्रम, साइली, सिकेलि, ओपि, हायोस, साइक्यू, कास्टि, कैल्के और सल्फ। अमावस्या के समीप हो तो कास्टि, सल्फ और साइलि। पूर्णिमा के समीप होने पर कैल्के। जरा-सा स्पर्श लगते ही ऐंठन हो तो बेल, काक्यू, स्ट्रेमो। पानी पीने से बढ़े तो कैल्के, रस। यदि पानी पीने से दौरा बन्द हो जाय तो कास्टि। नहाने से बढ़े तो सल्फ। निद्रा के समय शरीर ऐंठ जाय तो साइलि और कैल कार्ब।

१०—आनुषंगिक लक्षणों के अनुसार (According to the accompanying Symptoms)—यदि ऐंठन के साथ अत्यन्त घबराहट रहे तो कूप्रम, बेल, वेरेट्र एल्ब; यदि खासतौर पर शूलदर्द रहे तो कैमो, मर्क, सल्फ, इपि, यदि होश गायब हो जाय या गहरी नींद हो तो हायोस, बेल, स्ट्रेमो, ओपि, यदि मिचली और कै रहे तो इपि, कूप्रम, नक्स वाम, चेहरा पीला हो तो इपि, कैल्के, साइलि, वेरेट्र एल्ब, आर्स, साइक्यू, सल्फ, चेहरे पर गर्मी की झलक नक्स वाम, बेल, स्ट्रेमो, कूप्रम, अपने आप पेशाब निकले कास्टि, कूप्रम, लैके या हायोस या ऐंठन के बाद खाँसी आवे कूप्रम, सिना, कैमो, वेरेट्र एल्ब, दिल की धड़कन आर्स, एकोन, सल्फ, ग्लान, ऐंठन के पहले या बाद में सिरदर्द, बेल, कास्टि, कैल्के, कैमो, हाथ-पैरों के भीतर चींटी के रेंगने का अनुभव, बेल, इग्ने, सिके, कास्टि, हाथ-पैरों में कमजोरी साइलि, बेल, सल्फ, कभी ऐंठन के

साथ हँसी. क्रोकस, कूप्रम, इग्ने, कास्टि, वेल; ऐंठन के बाद पक्षाघात, कास्टि, लैके, काक्कस, रस, मुँह में झाग कैल्के, कास्टि, साइलि, वेल, कूप्रम, इग्ने, लैके, हायोस; ऐंठन के बाद मूर्च्छा इग्ने, कैमो, एकोन, कूप्रम, कार्बो-वेज, वेरेट्र एल्व; ऐंठन के पहले या बाद में पीठ के दर्द में कैल्के, लाइको, मास्क, मर्क, गहरी नींद ओपि, हायोस, वेल कैम्फ, कैमो, लैके, ऐंठन के बाद पसीना—साइलि, वेल, सिके; ऐंठन के पहले या बाद में सिर में चक्कर नक्स वाम, वेल, लैके, कैल्के, साइलि, ओपि, आर्स; ऐंठन के बाद हाथ-पैर सुन्न नक्स वाम, वेल, ओपि, सिके, सल्फ, रस, साथ में मानसिक विक्षेप पर कूप्रम, स्ट्रेमो, वेल, क्रोक, हायोस, मृगी रोगाक्रान्त स्त्रियों के क्षेत्र में रुलाई के साथ इग्ने, मास्क, कूप्रम, वेल, कास्टि, क्रोध के साथ स्ट्रेमो, हायोस, वेल, क्रोक।

११—खासकर आक्रन्त अंगो के अनुसार (According to the Parts more Particularly affected)—सिर में ऐंठन, खासकर—लाइको, कास्टि, कूप्रम, वेल, कैम्फ, साइक्यू, चेहरे की पेशियों में ऐंठन, वेल, कैमो, ग्रेफा, ओपि, सिके, स्ट्रेमो; भुजाओं में ऐंठन वाली गति खासकर कूप्रम, काक्कस, साइलि, मर्क, स्ट्रेमो, हाथों और हाथ की उँगलियों में ऐंठन—कूप्रम, कैमो, इग्ने, सिके, केवल पैरों में ऐंठन कूप्रम, इग्ने, इपि, सिके, हायोस, केवल पैरों और पैर की उँगलियों के ऐंठन में कास्टि, कूप्रम, लाइको, मर्क, साइलि, सिके।

२—पक्षाघात की अवस्था
(Paralytic Conditions)

१—रक्तप्रवाह मे अर्ध पक्षाघात की अवस्था, गहरी नींद, प्रतीयमान मृत्यु (Semi Paralysis of the Circulation, syncope, apparent death)—साधारण नियम यह है कि गहरी नींद की अवस्था रोगी को इपिकाक सुँघाने से सुधर जाती, है, खासकर जहाँ उसका कारण अज्ञात है। यदि मृगी रोग वाली स्त्रियों में ऐसा अक्रमण हो तो उत्तम

औषधियाँ हैं — इग्ने, कैमो, काक्कस, मास्क, एकोन या काफिया। यदि गर्मी की ऋतु के अधिक ताप से या गरम कमरे में रहने पर बेहोशी हो तो कार्बो-वेज से आराम होगा। वह भी यदि इपि और एण्टिम-क्रूड असफल हो जायँ तब। यदि उसके पहले सिर में चक्कर रहे तो नक्स वाम, वेल, एकोन, और कभी-कभी आर्स; यदि मिचली के साथ हो तो इपि और कभी कैमो, काक्कस, वेरेट्र एल्ब। यदि मन के तीव्र आवेग के कारण, जैसे कि भय आदि से गहरी नींद आवे तो ओपि, काफि, एकोन, इग्ने, कैमो, शरीर के तरल धातु के क्षय से या रक्त बह जाने से दुर्बलता हो तो चायना, कार्बो वेज, वेरेट्र एल्ब, दर्द का भयकर दौरा होने के बाद — कैमो, एकोन, वेरेट्र एल्ब, अत्यन्त मानसिक परिश्रम करने के बाद केवल नक्स वाम ही नहीं वल्कि बेल और कैल्के। प्रतीयमान मृत्यु या श्वासावरोध के सम्बन्ध में मुझे अनुभव है कि यदि दीर्घस्थायी मृगीजनित गहरी नींद हो तो ऊपरलिखित औषधियाँ सफल प्रमाणित होंगी। मैं यहाँ कार्बोलिक गैस के कारण श्वासावरोध का एक उदाहरण देता हूँ। १२ वर्ष का एक बालक एक कमरे में खेल रहा था। उसी के जगले के बाहर लकड़ी के कोयले का चूल्हा जल रहा था। उसका धुआँ सूँघने से वह बालक बेहोश हो गया। वहाँ पहुँचकर मैंने देखा कि वह एकदम जड़-सा पड़ा है। मैंने तरल सिरके से बच्चे को नहला दिया। फलस्वरूप जीवनीशक्ति और साँस की गति और नाड़ी के चलने का अनुभव प्रतीत होने लगा। उसके बाद हर ५–१ मिनटों पर ओपियम की छठी शक्ति सुँघाने लगा। १५ मिनटों के बाद उसके शरीर में ऐंठन होने लगी जिसे मैंने वेल देकर आराम कर दिया।

२—एक हाथ या एक पैर तथा दोनो मे पूर्ण पक्षाघात (Complete Paralysis of one or more of the extremities) — साधारण या वेदनापूर्ण पक्षाघात के लिए अत्यन्त आवश्यक औषध है— कास्टि, चाहे दाहिने या बायें पार्श्व में हो या हाथों अथवा पैरों में आक्रमण हुआ हो। मैं जानता हूँ कि कास्टि पक्षाघात के लिए यथेष्ट नहीं है, बहुत दिनों से पक्षाघातग्रस्त रोगी की मैंने कास्टि से चिकित्सा की, किन्तु उससे

विशेष फल नहीं मिला। मेरुदण्ड की मज्जा के क्षय हो जाने के कारण पक्षाघात के लिए सल्फ और कल्के के बाद कास्टि की उपयोगिता है। कास्टि के अतिरिक्त शराबियों के पक्षाघात में मैंने नक्स वाम, आर्स और सल्फ से विशेष लाभ पाया है, शरीर के दानों या घावों के दब जाने के बाद कास्टि, आर्स, सल्फ, लैके, लाइको, बहुत अधिक शारीरिक परिश्रम करने के बाद रस, आर्स, कास्टि; सीसकविष के बाद एलुम, कास्टि; भींग जाने के बाद, रस, सल्फ, कल्के, कास्टि; ऐंठन के बाद कास्टि, कप्रम, सिके, आर्स, सल्फ, बेल, नक्स वाम; वातरोग के आक्रमण के बाद, कास्टि, फेरम, चायना, आर्स, वेराट्र, रस, रूटा, मृगी के बाद, बेल, काक्कस, नक्स वाम, कास्टि, आर्न; खून, शुक्र आदि तरल धातु के क्षय से कमजोरी होने पर कास्टि, सल्फ फेरम, काक्कस, नक्स वाम, चायना; एक पार्श्व में पक्षाघात, चाहे दाहिने या बाएँ पार्श्व में हो कास्टि, काक्कस, रस, नक्स वाम, ग्रैफा; पैरों के पक्षाघात के लिए, खास तौर पर कास्टि, काक्कस, नक्स वाम, सल्फ, कल्के, फास, रस, सिके, पैर के पत्तों के पक्षाघात के लिए, खासकर आर्स, फास, ओलियेन, भुजाओं के लिए कास्टि, कल्के, काक्कस, नक्स वाम, रस, फेरम, सोपि, चायना; हाथों के खासकर कास्टि, आर्स, सल्फ, साइलि, रस, सिके; चेहरे की पेशियों के कास्टि कूप्रम, ग्रैफा, ओपि, नक्स वाम, बेल, जीभ या शब्द उच्चारण करने के अंगों के लिए कास्टि, बेल, ग्रैफा, डल्का, आर्स, लैके, हायोस; निगलने की पेशियों के कास्टि, कूप्रम, साइलि, आर्स, बेल, लैके, सरलान्त्र के, हायोस; मूत्रथैली के आर्स, डल्का (डॉ० हेम्पल के मतानुसार पक्षाघात के आक्रमण से यदि अंग में सूनापन, सूजन और चींटियों के रेंगने का अनुभव हो तो एकान को नहीं भूलना चाहिए)।

—o—

अध्याय— २६

धातुदोष, गण्डमाला, ग्रन्थिरोग, अस्थिरोग और शोथ

(General Dyscrasias, Scrofulosis, Glandular affections, Diseases of the Bones and Dropsies)

१—गण्डमाला (Scrofulosis)—इस बात से प्रायः सभी लोग सहमत हैं कि इस रोग के प्रारम्भिक लक्षण अर्थात् ग्रथियों की सूजन, पपड़ीदार फुन्सियाँ, फुन्सियों के दाने, नाड़ी व्रण और अनेक प्रकार के अस्थि-विकार प्रायः वयस्क होते समय ही पाये जाते हैं। परन्तु इस रोग को यहीं तक सीमित न रखकर उसकी सफल चिकित्सा भी होनी चाहिए। मेरे सिद्धान्त के अनुसार अधिक आयु में गण्डमाला की यही गाँठें यक्ष्मा की गाँठों के रूप मे परिणत हो जाती हैं। इस प्रकार की गाँठें, फेफड़े, दिमाग, यकृत, अँतड़ियों तथा अन्य अगों में भी बन जाती हैं। इनके बनने में काफी समय लगते हैं। ये गाँठें प्रायः पुरानी फुन्सियों, खुजली के दानों, अर्श के मस्सों आदि के मांसाकुरों के द्वारा निर्मित होती हैं। डॉ० हैनिमैन ने "पुराने रोगों" नामक पुस्तक में सोरा (Psora) विष के नाम से जिस दोष का वर्णन किया है, आगे चलकर वही गाँठों के रूप में बदल जाता है। जब कोई पुराना रोगी अपने रोग की चिकित्सा कराने के लिए आवे तो रोग का इतिहास जानने के लिए आपको उससे पूछना चाहिए कि क्या उसे कभी खाज-खुजली हुई थी? क्या बाल्यावस्था में उसका सिर गंजा था या उसकी ग्रन्थियाँ फूली हुई थीं? उनकी चिकित्सा किस रूप में हुई थी? यदि शुरू में उसकी उचित औषध के द्वारा चिकित्सा न की गयी हो तो जब भी किसी विभिन्न औषध के लक्षण मिलें तभी उसका व्यवहार कराने से उसके उस उपद्रव का शमन होगा। ऐसी ही अवस्था कण्ठमाला विष

की चिकित्सा में भी होती है। गण्डमाला विष को दूर करने के लिए सल्फर सर्वोत्तम औषध है, परन्तु हर एक पुराने रोग की चिकित्सा का आरम्भ सल्फर से करना महान अज्ञता है और होमियोपैथी सिद्धान्त के सर्वथा प्रतिकूल है। सल्फर के अतिरिक्त कैल्के, लाइको, साइलि, फास आदि भी विशेष उपयोगी हैं और कुछ हद तक आर्स, बेल, नक्स, बेराइटा-कार्ब, एल्यू, कास्टि और डल्का भी प्रशंसनीय हैं। उपर्युक्त सभी औषधियाँ गण्डमाला और उसके अनेक उपद्रवों के लिए विशेषतः बचपन में अत्यन्त लाभप्रद हैं। मुझे अनेक बार ऐसे बच्चों की चिकित्सा करने में सफलता मिली है, जिन्हें गण्डमाला पैतृक रोग के रूप में था और उनमें गण्डमाला के सभी उपसर्ग मौजूद थे। उन बच्चों को प्रायः सल्फ और कैल्के का ही व्यवहार कराया गया। कुछ स्थानों में साइलो और लाइको भी दिया गया। स्थायी आरोग्य के लिए जहाँ यथार्थ औषध की आवश्यकता है, वहाँ उसका चायना भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। पहले सल्फर देकर फिर ३–४ दिनों तक किसी दूसरी औषध को देना और उसके बाद फिर सल्फर देना उचित तरीका नहीं है, क्योंकि इस प्रकार के प्रयोग से औषध को अपना प्रभाव उत्पन्न करने के लिए पूरा अवसर नहीं मिलता। सल्फर और अन्य सोरा विषनाशक औषधियों, जैसे कैल्के, लाइको, कास्टि और साइलि आदि को अपना काम करने के लिए ,रा समय मिलना चाहिए। इन्हें काम करने के लिए कई सप्ताहों का समय मिलना आवश्यक है। और इस बीच में किसी दूसरी औषधि का प्रयोग नहीं होना चाहिए। गण्डमाला पुराना रोग होने के कारण बहुत धीमी गति से बढ़ता है। इसलिए इसके शमन के लिए जो भी दवा दी जाय, उसे अपने काम के लिए पूरा समय मिलना चाहिए। स्मरण रहे कि इस बीच में कोई दूसरी बीमारी बच्चे में होने से उसके लिए दवा न देनी पड़ जाय। यदि चिकित्सा काल में कोई नया उपद्रव खड़ा ही हो जाय तो घबराकर तुरन्त कोई औषधि नहीं देना चाहिए। ऐसा सम्भव है कि नया उपसर्ग औषध सेवन के कारण ही हो और वह स्वयं ही दब जाय। मैं यहाँ एक उदाहरण देकर अपना मनोभाव

स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। होमियोपैथी के एक अनुभवी व्यक्ति के दो माह के बच्चे को गर्मी लग गयी। उसने अपने बच्चे को कई प्रकार की दवाएँ दीं। जिनमें इल्का, कैमो, रियूम, ब्रायो, एण्टिम-क्रूड, आर्स, सिके और कैल्के का नाम मुख्य रूप से उल्लेखनीय है। अन्त में वह व्यक्ति बच्चे को लेकर मेरे पास आया। मैंने सल्फर की ३० शक्ति की २ गोलियाँ दीं। बालक को पतले दस्त हो रहे थे। वे उसी दिन से बन्द हो गये। ५ दिनों के बाद उसके शरीर में कुछ शक्ति आने लगी। बालक का शरीर सूखकर केवल ठठरी मात्र रह गया था। वह अब फिर से हरा-भरा होने लगा। ८ वें दिन बालक को पुनः दस्त का आक्रमण हुआ। उसके पिता ने उसे बिना सोचे-विचारे रियूम दे दिया, क्योंकि दस्त से खट्टी गन्ध निकल रही थी। जब रियूम से कोई लाभ न हुआ तो और दूसरी दवाएँ दी गयीं। इसी प्रकार ८ दिनों तक क्रम चलता रहा। वह बच्चा अब पुनः सूखने लगा। मुझे फिर बुलाया गया। मैंने इस बार भी सल्फर ३० की २ गोलियाँ बच्चे को दीं। उसके पतले दस्त धीरे-धीरे कम होने लगे। इसके ५ वें दिन उसे कब्जियत हो गयी और वह दो दिनों तक बनी रही। तीसरे दिन खट्टी गन्धवाला पुनः पतला-दस्त हुआ। मैंने बच्चे के पिता से कह दिया कि किसी प्रकार की औषधि अपने-आप न देवें। मैंने उसे खाली चीनी की पुड़िया देकर समझा दिया कि यह पतला सल्फर का है। २ दिनों के बाद वे दस्त बन्द हो गये और पेखाना अपनी स्वाभाविक स्थिति में आ गया। बालक फिर से तन्दुरुस्त होने लगा, क्योंकि इस बार सल्फर की क्रिया में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ी। यदि हम धैर्यपूर्वक औषध के प्रभाव की प्रतीक्षा करते रहें और यह जान लें कि औषध परिवर्तन का उपयुक्त समय क्या है तो हम एक छोटे बच्चे को भी सल्फ, कैल्के, साइलि, लाइको आदि लम्बी अवधि से देकर स्वस्थ बना सकते हैं। रोग चाहे सिर में पानी आने, ब्रह्मरन्ध्र न जुड़ने, हड्डियों के विकृत या वक्र होने या पैशिक दुर्बलता का हो अथवा किसी भी प्रकार का हो, हम उसे अच्छा कर सकते हैं। इसी तरीके से हम बच्चे के कण्ठमाला-

जनित सभी उपद्रवों, जैसे—ग्रंथि प्रदाह, हड्डियों का टेढ़ापन, पपड़ीदार फुन्सियों का निकलना तथा गज आदि सभी रोगों को दूर कर सकते हैं। इस प्रकार के उपद्रव यदि बालकों में पाये जाते हैं तो मैं सर्वप्रथम सल्फर का ही प्रयोग करता हूँ और प्रायः ५ सप्ताहों तक किसी औषध को नहीं देता हूँ। इसके बाद मैं कैल्केरिया देकर ८-१० सप्ताहों तक कोई दूसरी दवा नहीं देता, अगर कोई विशेष आवश्यकता न पड़े। हड्डियों के विकार में जब कैल्केरिया से लाभ न हुआ हो तो मैं साइलि या लाइको का व्यवहार करता हूँ। यदि इस अल्प अवस्था में ग्रंथियों की सूजन, गीली फुन्सियाँ, पपड़ीदार फुन्सियाँ, मध्यान्त्र ग्रन्थियों में सूजन आदि हो और कैल्केरिया के सेवन से कोई फल न मिला हो तो मैं आर्स या लाइको देता हूँ। मैं इन औषधियों के ३० वें क्रम की २ गोलियाँ इसी तरह जीभ पर डाल देता हूँ। जिन लोगों को इस अल्प मात्रा पर विश्वास न हो वे सप्ताह में इस प्रकार की २-३ मात्राएँ और भी दे सकते हैं। यदि इससे ८-१० दिनों में यथेष्ट सुधार हो जाय तो और मात्रायें नहीं देनी चाहिए। मात्रायें बढ़ाने से प्रगति में रुकावट हो जायगी। यदि धैर्यपूर्वक काम करें तो आपको मालूम होगा कि बार-बार मात्राओं का प्रयोग न करके केवल एक ही मात्रा के फल की प्रतीक्षा करना उत्तम है। इस प्रकार के ढंग से शीघ्र ही रोग निर्मूल हो जाते हैं और औषध-जनित कोई उपद्रव भी नहीं प्रकट होता। यदि इन औषधों से लाभ न हो तो दूसरी नयी औषधियों की खोज करनी चाहिये। ऐसी स्थिति में आर्सनिकम के बाद बेराइटा कार्ब या हिपर का प्रयोग करना अच्छा है, किन्तु कैल्केरिया के बाद तुरन्त ही इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए। यदि आगे चलकर ग्रंथियों में सूजन आ गयी हो तो—सल्फ, कैल्के, लाइको, साइलि, आर्स, आरम, बेराइटा कार्ब, डल्का, हिप और कार्बो वेज। आँख आना रोग में—सल्फ, कैल्के, लाइको, साइलि, हिप, आर्स। कान बहने पर उपर्युक्त औषधों के अतिरिक्त बेराइटा कार्ब, बेल, ग्रैफा और हिप। नाक और होठों की सूजन के लिए—आरम और बेल। यकृत प्लीहा की विवृद्धि में—आर्स। पुराना अतिसार—फास, आर्स।

मन्दाग्नि—क्रियोजोट, वेराट्रा। बच्चों को देर में चलना सीखने पर—सल्फ, कैल्के, साइलि, नेट्रम कार्बो। पुरानी खाँसी—सल्फ, कैल्के, लाइको, आर्स, हिप, डोल, फास। दाँत कठिनाई से निकलने पर—सल्फ, कैल्के, आर्स। शोथ—सल्फ कैल्के, आर्स, वेराट्रा कार्बो। हड्डियों के टेढ़ेपन में—सल्फ, कैल्के, साइलि, लाइको, आर्म, एसिड फ्लोर और फास। मैंने ओलियम जेक एसेली का कभी व्यवहार ही नहीं किया। मुझे कभी इसके प्रति विश्वास ही नहीं हुआ कि यह अन्य कण्ठमाला नाशक औषधियों के समान लाभप्रद है। मैं यहाँ इस बात को भी बता देना चाहता हूँ कि ग्रंथियों की सूजन में मर्क का अत्यधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए। पूरक औषधियों के रूप में कभी-कभी इसके प्रयोग से रोग का शमन होता है, किन्तु कण्ठमाला या उसके उपद्रवों को दूर करने के लिए यह कोई प्रभाव नहीं दिखला सकता। यदि इसका अधिक व्यवहार किया जाय तो उससे हानि होती है और रोग की कठिनता बढ़ जाती है (गण्ड-मालाजनित अभिष्यन्द, कर्ण-स्राव, नाक और होंठ के विकार तथा फुन्सियों आदि के लिए सम्बन्धित अध्यायों और इस अध्याय के अनुच्छेद न० ३, ४ और ५ में ग्रन्थिरोग तथा अस्थिरोग देखिए)।

२—यक्ष्मारोग (Tuberculosis)—मैं अपने अनुभव के द्वारा निश्चित रूप से यह कह सकता हूँ कि मटियाली या पीली गाँठों वाला टी० बी० भी गण्डमाला का एक ही भेद (Metaschematisinus) है। टी० बी० का सन्देह होने पर मैं इस बात पर अवश्य ही ध्यान देता हूँ। प्रायः मैंने ऐसा ही देखा है कि यदि कण्ठमाला का कोई दोष नहीं है तो फेफड़ों या किसी अन्य अंग का टी० बी०, रजोधर्म या प्रसूत के विकारों, ठण्डा जल पीने, खाज-खुजली या चेचक आदि के कारण नहीं होता। यह प्रायः पुरानी खुजली या दाद के दब जाने से ही उत्पन्न होता है। यथार्थ में बात यह है कि टी० बी० की ये गाँठें शरीर के किसी भी भाग में फैल सकती हैं, जैसे—दिमाग, यकृत, रीढ़ और फेफड़ों में। दूसरी कठिनाई यह है कि इनका निदान निश्चयात्मक रूप से नहीं होता। जब भी कोई रोगी

मेरे पास आकर मुझे बताता है कि मेरे सिर में पुराना दर्द है, यह दर्द कभी-कभी होता रहता है, और दर्द अल्प स्थान में ही सीमित रहता है, वहाँ दबाव भी मालूम पड़ता है और साथ ही सिर में चक्कर भी आता है—तो मैं सन्देह के कारण उस रोगी की चिकित्सा बहुत ही सावधानी-पूर्वक करता हूँ। इसी तरह यदि रीढ़ के थोड़-से स्थान में दर्द हो, दर्द कभी-कभी बहुत तेज हो जाय, जलन के साथ और भाला भोंकने सा दर्द हो, जिगर में एक ही जगह दर्द हो, जिगर में कभी-कभी भाला भोंकने-सा भयकर शूल हो, वह ऊपर की ओर चढ़ता हुआ जान पड़े, पेट खराब रहे तो भी मैं बहुत सावधानी रखता हूँ। ऐसी सभी अवस्थाओं मे मैं कण्ठ-माला के समान ही चिकित्सा करता हूँ। (देखिए न० १) अर्थात् किसी विशेष औषध के लक्षण न हों तो सल्फर ही देता हूँ और उसे ४–५ सप्ताहों तक काम करने का मौका देता हूँ। इसके बाद मैं कैल्केरिया देकर उसे ८–१० सप्ताहों तक काम करने के लिए छोड़ देता हूँ। यदि इससे खासकर मस्तिष्क प्रभावित दिखाई पड़े तो फास, मेरुदण्ड प्रभावित होने पर कास्टि, बेराइटा या फास और यदि यकृत विकृत हो तो लाइको या साइलि। अनेक बार मैंने ऐसा देखा है कि निदान गलत निकल जाने पर अकेला कैल्के ही सभी भयकर उपसर्गों को दूर कर देता है। फेफड़ों की टी० बी० के लिए भी यह बात ठीक है। यदि लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ें तो मैं सर्वप्रथम कैल्के और बाद में फास देता हूँ। इसके अपर्याप्त रहने पर पहले मैं हिपर और फिर स्पंजिया का व्यवहार करता हूँ। इस प्रकार का क्रम केवल टी० बी० की प्रथम श्रेणी के लिए ही है। बाद की श्रेणियों और उसके कारण उत्पन्न उपद्रवों के शमनार्थ उससे सम्बन्धित अध्यायों का अध्ययन करना चाहिए। मुझे कुछ रोगियों के लिए बेराइटा कार्ब, लैके और एल्युमिना बहुत ही लाभकारी जान पड़े और यकृत विकार के लिए मैग्नेशिया कार्ब और लाइकोपोडियम।

३—ग्रंथियों के रोग (Glandular Affections)—अधिकर इस प्रकार का उपद्रव कण्ठमाला के विष का परिणाम ही होता है। इसके अति-

रिक्त अन्य कारणों से भी ऐसा उपद्रव हो सकता है। इसके लिए कभी-कभी तात्कालिक और कभी कभी रोगशामक औषधों की आवश्यकता पड़ती है। यदि कण्ठमाला के रोगियों की गरदन, वक्षण या बगल की गाँठें फूल जायँ तो वे प्राय, सल्फ कैल्के, लाइको और साइलि से दूर हो जाते हैं। यदि ये काम न करें तो डल्का, हिप, वेल और मर्क देना चाहिए। मर्क पूरक और शामक के रूप में बहुत अच्छा काम करता है, खासकर जब कि ग्रथियाँ बहुत ही प्रदाहित हों और उनके फटने की सम्भावना हो। यदि पीब निकल रहा हो हिप या साइलि। पुराने रोगों में हिप के बाद वेल और उसके बाद सल्फर देने से विशेष लाभ होता है। प्रायः सल्फर के बाद कल्केरिया सेवन से भी आश्चर्यकारक फल मिलता है। यदि ग्रन्थियाँ बहुत कड़ी हों तो बेराइट कार्ब और कार्बो एनिमेलिस का प्रयोग करें, जब कि सल्फ, कैल्के, वेल, हिप से सफलता न मिली हो। गाँठ शरीर के किसी भाग में हैं इसे देखने की आवश्यकता नहीं।

४—गण्डमाला (Goitre)—इस रोग के लिए तरह-तरह की जो औषधियाँ व्यवहृत होती हैं, उन औषधियों के विशेष लक्षण मैं अब तक समझ न पाया। मुझे कास्टि, नेट्रम कार्ब, आयोड, स्पांज, कैल्के, ब्रमियम और लाइको से विशेष उपकार मिला है। किन्तु इस औषध का क्या परिणाम है उसका मैं निर्णय नहीं कर सका। एक औषध से एक रोगी अच्छा हो गया तो वही औषध दूसरे के लिए निरथक सिद्ध हुई। साधारणतया मैं इस रोग की चिकित्सा स्पांजिया से शुरू करता हूँ। उसके बाद जब दूसरी औषध नहीं प्रतीत होती तब सल्फ और बाद मे आयोड देता हूँ। यदि इन दोनों से विशेष लाभ न हो तो मैं प्रायः नेट्र कार्ब और फिर ब्राम देता हूँ। यदि आवश्यक हो तो बाद में मैं ब्राम, कैल्के, लाइको, कास्टि देता हूँ। यदि इन औषधियों से विशेष फल न हुआ तो मै फिर से स्पांजिया देता हूँ और उसके बाद हिप तथा आयोड। उसके बाद सल्फ और ब्राम। जहाँ क्रमशः औषधों की आवश्यकता पड़ती है, वहाँ मै ब्रोम, आयोड और

स्पाजि एक के वाद दूसरी को देता हूँ। यदि इनसे भी लाभ न हो तो कैल्के, लाइको या कास्टि के द्वारा अनेक रोगियों में मुझे सफलता मिली है। गण्डमाला रोग की चिकित्सा के लिए मैं अपने साथवाले चिकित्सकों और मित्रों से राय लेकर सफल हुआ हूँ। जव रोगी अधीर हो पड़ते हैं तो मैं वार-वार सल्फ देकर उन्हें शान्त करता हूँ। कुछ चिकित्सक चन्द्रमा के क्षय के साथ-साथ औषध सेवन कराकर लाभ पाते हैं, किन्तु मैं अपने अनुभव के अनुसार चिकित्सा करके विशेष उपकार पाता हूँ (डाक्टर हैम्पल के मतानुसार गण्डमाला के ऊपर आयोडाइन आव मर्करी के मलहम की मालिश करने से कुछ लाभ होता है, किन्तु उसका परिणाम वहुत ही अल्प होना चाहिए, जव अन्य औषधियाँ काम न दें तो इसी प्रकार की मालिश से लाभ होता है।

५—अस्थियों के रोग—गण्डमाला विषवाले व्यक्तियों में जव गला फूल जाता है तो मैं सल्फ से चिकित्सा आरम्भ करता हूँ। उसके वाद क्रमशः कैल्के, लाइको और साइलि देता हूँ, वह भी लम्वी अवधि के वाद। साइलिशिया अस्थि रोगों के लिए हमारी एक अनमोल दवा है। किन्तु यदि इससे पहले सल्फ, कैल्के, या यहाँ तक कि लाइको का सेवन कराया गया हो। यदि रोग की प्रकृति के अनुसार (नीचे देखिए) फास, फास-एसि और स्टेफि का निर्देश हो तो उनसे वहुत ही उत्तम फल मिलता है। उपदंश के कारण अस्थि-रोग हो तो निम्नलिखित औषधियों से मेरे हाथ के रोगियों को विशेष उपकार मिलता है—मर्क, आरम, फास, फास-एसि, केलि आयोड और फ्लोर एसि और पारे के दुरुपयोग से अस्थि रोग हुआ हो तो आरम, एसाफि, फ्लोर-एसि, मेज, फास-एसि और स्टेफि, अस्थियों में प्रदाह होने पर मेज, फास, मर्क, कैल्के, फास-एसि, सल्फ, साइलि, स्टेफि, अस्थियों में सूजन होने पर साइलि, कैल्के, सल्फ, एसा, आरम, लाइको, मर्क, फ्लोर-एसि, स्टेफि, अस्थियों में टेढ़ापन हो तो सल्फ, कैल्के, लाइको, साइलि, दो उपयोगी औषधियों के वीच में सेवन कराने योग्य औषधियाँ हैं—वेल, पल्स, एस, अस्थि क्षय के लिए साइलि,

२१

कैल्के, सल्फ; अस्थियों में सड़न पैदा हो गयी हो तो साइलि, सल्फ, कैल्के, नाइट-एसि, आरम, फ्लोर-एसि, एसाफि। इसके साथ में यह भी कहना चाहता हूँ कि अस्थि रोग पुराना हो जाय तो प्रथम सप्ताह में उपसर्गी औषध की दो गोलियाँ जीभ पर डाल देता हूँ, वह भी ३० शक्ति की। घोल बनाकर औषध मैं शुरू में नहीं देता। एक सप्ताह और बीतने पर मैं घोल का औषध देता हूँ।

६—शोथ (Dropsies)—यद्यपि अस्थियों या ग्रन्थियों से शोथरोग का कोई साक्षात् सम्बन्ध नहीं हो तो भी गण्डमाला या यक्ष्मा की अन्तिम अवस्था में हाथ-पैरों के भीतर सूजन होते दिखाई पड़ती है। यद्यपि उस प्रकार के रोगों के वर्णन के लिए एक समूचा अध्याय देना चाहिए था, किन्तु शोथ रोग के लिए मैं यहाँ पूर्ण चिकित्सा का विवरण देता हूँ। डॉ० हैनिमैन ने मुझसे अपनी सम्मति प्रकट की थी। उनकी भाषा में रोग का नाम नहीं दिया जाता, केवल लक्षणों को देखकर औषध की व्यवस्था दी जाती है। उनका कथन है कि 'सम-चिकित्सा' के नियम से चिकित्सा करने वाले भी रोगों के नामों का उल्लेख न करने के कारण मेरा विरोध करते हैं। किन्तु मैं कहता हूँ कि उन भद्र पुरुषों का नाम लेकर क्या करेंगे। शरीर के विभिन्न अगों में जल भर जाने से जो शोथ दिखाई पड़ता है उसका विभिन्न नाम उच्चारण करने से कोई फल नहीं होता, बल्कि उस शोथ का कारण समझकर औषध देने से ही वह रोग आराम हो सकता है। यह रोग बिना भीतरी विकार के बाहर प्रकट नहीं होता। क्या इन्फ्लुएन्जा, काली खाँसी, लालबुखार, विसर्प या पसलियों के दर्द की तरह कहीं स्वतन्त्र रूप से शोथ होते दिखाई पड़ा है? यथार्थ में शोथ किसी भीतर रोग का बाहरी विकास मात्र है। जो मेरी चर्चा करते हैं, वे इन रोगों का भेद नहीं समझ सकते। यदि समझते तो जान-बूझकर मेरा विरोध नहीं करते। १८३४ ई० में डॉ० हैनिमैन जिस सत्य को समझ गये थे, उसे उनके आलोचक आजतक समझ नहीं सके। विचार के लिए मान भी लिया जाय कि शोथ एक पृथक् उपसर्ग

है, वह दो प्रकार का है—नया और पुराना। मस्तिष्क, अण्डकोष, गर्भाशय, हाथ-पैर आदि विभिन्न अगों में शोथ रोग होता है। खुजली के दानों के दव जाने से, शरीर के जीवनदायक तरल धातु के क्षय से वहुत कमजोरी और बुखार के वाद भी शोथ आता है। जव हृदय, यकृत, फेफड़ों और उदर के विकारों से छाती के भीतर पानी आ जाय तो वह जलोदर कहलाता है। मस्तिष्क और अण्डकोषों में जल भर जाने के विषय में मैं पहले ही वता चुका हूँ। अव यहाँ मैं केवल शोथ की चिकित्सा का विवरण देता हूँ। यदि शोथ नया हो, खासकर किसी चोट के कारण पैदा हुआ हो तो उसे सहज में आराम किया जा सकता है, परन्तु पुराना शोथ प्रायः असाध्य है। यदि हृदय के रोग, यकृत्, गर्भाशय, डिम्वकोष आदि के विकार से रोग पुराना हो गया हो और फूले हुए अगों में से १–२ वार जल निकाल डाला गया हो और उसके वाद वह फिर फूल उठा हो तो वह असाध्य ही माना जाता है। ऐसी स्थिति में उसका उपशम भी सम्भव नहीं है। मुझे २–४ रोगियों में हृदय की विवृद्धि होने के कारण पैरों में शोथ पैदा होने पर उसे दूर करने में सफलता मिली है। उन रोगियों मे शोथ पेट तक आ चुका था और ४, ८ या १८ महीनों से शोथ था और उनमें किसी-किसी के पैरों में २–३ वार शोथ आ चुका था। लाइको से कोई लाभ नहीं हुआ। आर्स और डिजि भी निष्फल हो गये। अन्त में रोगी मर गया। यदि आर्स के वाद लाइको देने से कुछ लाभ न हो तो मैं उस रोगी को असाध्य कहकर छोड़ देता हूँ। नये शोथ में मुझे हेलोन, डल्का, चायना, एपिस, आर्स, काल्चि, लाइको और सल्फर से विशेष उपकार मिला है। (डॉ० हैम्पल के अनुसार एकोन और एपो भी)। यदि एकाएक ठण्ड लगने से शोथ पैदा हो जाय तो डल्का, आर्स, एपिस। (डॉ० हैम्पल के मतानुसार एकोन और एपो भी)। चमड़े के अद्भेदों के दव जाने से शोथ हो तो एलम, एपिस, आर्स, सल्फर। अधिक दिनों तक ज्वर भोगने के वाद आर्स, फेरम, सल्फर। शरीर से वहुत अधिक खून वहने के वाद चायना, सल्फर, फेरम। मासिकधर्म में गड़वड़ी होने के वाद एपिस,

लाइको। श्वासकर हृदय रोग के कारण उत्पन्न शोथ पुराना हो गया हो तो आर्स, लाइको, कार्बो-वेज। यकृत के विकार के कारण शोथ हो तो लाइको, चायना, फेरम, आर्स, मर्क। वृक्क-प्रदाह के अनन्तर शोथ हो तो आर्स, लाइको, कालिच। (डॉ० हेम्पल के मतानुसार केन्थरिस और कोचीनोल भी)। समूचे अंगों में शोथ दिखाई पड़े तो हेलोन, आर्स, एपिस, लाइको, सल्फ, डल्का। छाती के अन्दर पानी जमा हो गया हो तो आर्स, कार्बो-वेज, कालिच, लाइको, केलि-कार्ब, एपिस। जलोदर के लिए सल्फर, आर्स, पिस, चायना, आयो। हृदय के आवरणों में जल भर जाने से प्रधानतया आर्स, लाइको, केलि-कार्ब। गर्भाशय में शोथ हो तो सल्फर, एपिस। डिम्बकोष के शोथ के लिए आयो, एपिस।

अध्याय—२७

ज्वर के कारण चमड़े पर के दाने
(Febrile Exanthemata)

१—लालबुखार
(Scarlet Fever)

साधारण मन्तव्य (General Remarks)—आजकल साधारण लालबुखार दिखाई पड़ता है। मैंने ऐसे रोगी की चिकित्सा करके देखा है कि २-४ दिनों के भीतर ज्वर के बढने से चमडे पर दाने निकल आये और दसवें दिन रोगी अपने काम-काज के लिए घर से बाहर चला गया। ऐसे स्थलों में चिकित्सक नहीं समझ सकता कि ऐसा कैसे सम्भव हुआ। खुली हवा में घूमने-फिरने से भी उस रोगी को कोई कष्ट नहीं होता, किन्तु यदि उसके शरीर में गण्डमाला विष पहुँच गया हो तो वहाँ यह रोग बहुत भयकर हो जाता है। ऐसी स्थिति में मतिष्क के भीतर विकार उत्पन्न होता है। यहाँ तक कि सड़न भी होने लगती है। बच्चों में ऐसा रोग हो तो उनके मस्तिष्क में जल भर जाता है। कुछ अधिक दिनों तक ऐसा रोग रहे तो सभी अगों में शोथ, क्रूप खाँसी, डिफथीरिया या कर्णमूल-प्रदाह आदि कठिन परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है और कहीं कहीं उन अगों में पीव भी हो जाती है। शुरू मे यह बहुत ही साधारण प्रतीत होता है और चमडे पर दाने एकाएक निकल आते हैं। किसी-किसी रोग में ऐसा भी दिखायी पड़ता है कि बहुत सावधान रहने पर भी रोग के आरम्भ में या दाने निकलते समय रोग भयकर हो जाता है। दोनों के न निकलने तक चिकित्सक को सावधानी बरतनी चाहिए। होमियोपैथी रीति से चिकित्सा करने पर भी ऐसी-ऐसी विकट परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं। जो बच्चे रोग भोगते हुए बहुत कमजोर हो

गये हैं, उनके शरीर में एक ही साथ वहुत से उपसर्ग प्रकट होते हैं। ऐसी स्थिति में लालबुखार उनके रोग को भयकर उग्र वना देता है। चिकित्सा की सुविधा के लिए मैं इसके तीन भेद करता हूँ—(१) साधारण लालबुखार, (२) पुराना लालबुखार और (३) अनेक उपसर्ग।

१—साधारण लालबुखार (Simple Scarlatina)—जहाँ लालबुखार महामारी के रूप मे फैल जाय, वहाँ स्वस्थ व्यक्तियों मे भी उसके पूर्वरूप दिखाई पड़ते हैं। जैसे कि मुँह के भीतर लाली, वमन और सिरदर्द हो तो वेल उपयोगी औषध नही है। यदि ऐसी अवस्था मे इस औषध का व्यवहार किया जाय तो दानों के निकलने मे रुकावट आ जाती है। फलस्वरूप रोगी की मृत्यु की आशका होती है। एक वार मैंने एक वालक की चिकित्सा की थी, दूसरी वार जाने पर दिखाई पडा कि वह मुर्दे के समान विछौने मे पड़ा है, उसका चेहरा पीला था और उसकी अवस्था मूर्च्छा की तरह थी। व्रायोनिया के सेवन कराने से दाने निकल आये, किन्तु आजकल लालबुखार मे इसी तरह के लक्षण अधिक दिखाई पड़ते हैं, खासकर जहाँ सिरदर्द, रक्ताधिक्य और मस्तिष्क-विकार मौजूद हों। यदि मस्तिष्क में पक्षाघात होने की शका हो तो सल्फ और जिकम से उपकार होगा। मै डॉ० हेरिग के कथन की परीक्षा कर चुका हूँ। यदि चमड़े का रग झींगा मछली की तरह लाल प्रतीत हो तो सल्फर देना आवश्यक है। जहाँ रोग प्राथमिक अवस्था मे हो और चमड़े पर लाली न दिखाई पड़े वहाँ मैंने इसी औषध का व्यवहार किया है। इसके वाद कभी-कभी कैल्केरिया दिया गया। फलस्वरूप रोग की वृद्धि घट गयी और दाने सहज मे निकल आये। इससे कोई नया उपद्रव उत्पन्न नहीं हुआ और रोग का प्रकोप धीरे-धीरे घटता गया। यकि दाने निकलकर दव गये हों तो व्रायो उन्हे फिर से वाहर निकाल लायेगा। एपिस और कूप्रम से रोग का मस्तिष्क की ओर जाना रुक जाता है। यदि छाती पर अधिक प्रभाव पड़ा हो तो इपि और कैल्के से लाभ होगा। यदि दाने अल्प निकले हों, टायफायड का लक्षण दिखाई पड़े तो आर्स ही अति उपयोगी औषध है। रस भी लाभदायक है। जहाँ

दोनों का रग कुछ नीला-सा दिखाई पडे तो **वेरेट्र एल्ब** दिया जाय, वह भी नाडी की गति से धीमी हो जाने पर। इसी अवस्था के लिए **एमो कार्ब** भी फायदेमन्द है। यदि दर्द अधिक हो और गरदन के आस-पास सूजन अधिक दिखाई पड़े तो **कैल्के**। यदि छाती के अन्दर रोग का अधिक आक्रमण हो और फेफड़ों मे पक्षाघात होने की शका हो तो **कैल्के-फास** या **कार्बो-वेज**। यदि मस्तिष्क का विकार प्रधान लक्षण हो तो **सल्फर, जिकम, कूप्रम** और **वेल** उपकारी औषधे हैं।

२—लालबुखार के उपसर्ग (Complications of Scarlatina)—प्राय· देखा जाता है कि लालबुखार के साथ कुछ लाली लिए हुए दाने निकल आते है। ऐसी स्थिति मे ज्वर को घटाने के लिए **एकोन** देना चाहिए। उसके बाद यदि **रस** दिया जाय तो सभी उपसर्ग गायब हो जाते हैं। यदि इससे लाभ न हो तो **सल्फ** या **कैल्के** अच्छी हैं। ऐसी परिस्थिति मे कभी-कभी शीतला के दाने भी दिखाई पड़ते हैं। एक बार मुझे एसी एक १६ वर्ष की लडकी की चिकित्सा करनी पडी। शुरू मे उसे बहुत ही अधिक ठण्ढक मालूम हुई, जैसे कि शीतला रोग में। किन्तु दाने नहीं निकले और ऊपर से लालबुखार हो गया। **ब्रायोनिया** के सेवन से रातभर में दाने निकल आये। जहाँ ऐसा दिखाई पडे कि शीतला और लालबुखार दोनों के दाने निकल आये वहाँ **ब्रायो** दिया जाने लगा। फलस्वरूप रोग बहुत हल्का हो गया। दूसरे दिन उसके शरीर में बड़े-बड़े चकत्ते निकल आये। लालबुखार होने से शीतला दब नही जाती। लगभग २ वर्षों के अनन्तर उस लडकी की दो बहनों को शीतला हो गयी। उनकी भी मुझे इसी तरह चिकित्सा करनी पड़ी।

यदि दिमाग मे पानी आ जाने की शका हो तो **सल्फर** ही सर्वोत्तम औषध है। ऐसी स्थिति मे **वेल** से उपकार नहीं होता। कभी-कभी **जिकम** से कुछ लाभ होता है। ऐसे रोगी के जीवन की रक्षा **आर्स, कार्बो वेज** और **एमो कार्ब** से होती है। क्रूप खाँसी और गलझिल्ली-प्रदाह लालबुखार के समय कभी नहीं आते। कदाचित् एक सप्ताह के बाद आते है।

३—लालबुखार के परिणाम (Sequela of Scarlatina)—प्रायः लालबुखार के बाद कर्णमूल-प्रदाह होता है और उसमें पीव भी आ जाती है। डॉ० हेरिंग के सुझाव इस विषय में बहुत उपयोगी प्रमाणित हुए हैं। यदि शुरू में ही सूजन दिखायी दे तो उसके लिए रस टाक्स बहुत ही उत्तम औषधि है। डॉ० हेरिंग ने भी इसकी प्रशंसा की है। यदि उससे लाभ न हो तो आर्सेनिक या कैल्केरिया का प्रयोग करना उत्तम है। उक्त दो दवाओं से सूजन निश्चय ही घट जाती है। यदि किसी होमियोपैथ चिकित्सक ने रोग बिगाड़ दिया हो तो अक्सर गाँठ में ही पीव पैदा हो जाती है। यदि ऐसी स्थिति में आर्सेनिक से काम न चले तो रोगी की प्राणरक्षा के निमित्त कैल्केरिया का व्यवहार बहुत ही आवश्यक है। यह स्मरण रहे कि रोग आधी रात के बाद ३ बजे से सुबह ६ बजे तक नहीं बढ़ना चाहिए। मेरे एक ऐसे ही रोगी को कैल्केरिया से कोई लाभ नहीं हुआ तब केलि कार्ब ने उसके सभी कष्टों को दूर कर दिया। यदि कैल्केरिया और केलि-कार्ब से सुधार होने के बावजूद भी रोगी में पीव और सूजन रह जाय तो लाइकोपोडियम देना बहुत ही आवश्यक है। मेरे सभी रोगियों को लाइको-पोडियम के सेवन से पूर्ण लाभ हुआ है। गरदन और जबड़े की ग्रन्थियों की सूजन के लिए कैल्केरिया ही यथेष्ट है। इतने पर भी यदि कुछ सूजन बाकी रह जाय तो लाइकोपोडियम या बैराइटा-कार्ब से अवश्य लाभ होगा। यदि लालबुखार के बाद सूजन हो जाय तो आर्सेनिक या एपिस सर्वोत्तम औषधें हैं। कभी-कभी ऐसी अवस्था में हेलोनियस, ब्रायो, कालिच, लाइको, सल्फ और कैल्के (डॉ० हैम्पल के मतानुसार एपोसाईं-कैनाब भी) लाभदायक हैं।

२—छोटी माता

(Measles)

१—साधारण गति (Simple Course)—लालबुखार के समान ही छोटी माता या खसरा है। इनके रूप साधारण और भयानक दोनों ही

होते हैं। कभी-कभी तो एक ही सप्ताह में बच्चा नीरोग हो जाता है। इस प्रकार का केस भी देखने में आया है, जहाँ सर्दी-जुकाम के प्रारम्भिक लक्षण उत्पन्न ही नहीं होते। साधारणतः उल्टी या दस्त होते हैं। जब छोटी माता का प्रकोप महामारी के रूप मे हो और साथ-साथ प्रारम्भिक लक्षण भी मौजूद रहे तो पल्सेटिला से सभी कष्टों का नाश हो जाता है। ऋतुमती स्त्रियों मे इस दवा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। एक बार एक रजस्वला स्त्री को पल्सेटिला दे दिया था। फलस्वरूप उसका ऋतुस्राव रुक गया, दाने भी दब गये और मस्तिष्क मे भयानक लक्षण उत्पन्न हो गये। **ब्रायोनिया** देने से उसके दाने निकल आये और ऋतुस्राव भी होने लगा। यदि ज्वर रहे तो **एकोनाइट** देना उचित है। इसके सेवन से ज्वर, खाँसी और घबराहट दूर हो जाती है और अन्य किसी दवा की आवश्यकता नहीं पड़ती। **एकोनाइट** के लगातार प्रयोग करते रहने से दाने निकल आते हैं और कोई परेशानी नहीं होती। यदि **एकोनाइट** से दाने न निकले और ज्वर का वेग पूर्ववत् बना रहे तो सबसे पहले **ब्रायोनिया** का व्यवहार करना चाहिए। यदि इससे सफलता न मिले और रोगी के हाथ-पैर ठण्ढे हो जायँ, रोगी बहुत दुर्बल हो जाय, नाडी की गति बहुत धीमी और रुक-रुककर हो तो **वेरेट्रम-एल्ब** से बहुत उपकार होता है। इसके अतिरिक्त कभी-कभी **आर्सेनिक, कार्बोविज** और **फास्फोरस** भी लाभप्रद सिद्ध हुए हैं। **कैम्फर** भी बहुत लाभजनक है। डॉ० हेरिंग ने इसकी जो प्रशंसा की है वह प्रायः बिलकुल ठीक ही है। ऐसी अवस्था मे बच्चे की जीभ पर इसकी ३० शक्ति की २ गोलियाँ डाल दी जायँ। इसके टिंचर का प्रयोग भी हितकर होता है, परन्तु कभी-कभी उसका परिणाम भीषण होता है तथा रोगी की मृत्यु तक हो जाती है। कुछ लोगों ने दाने निकलने के लिए यूफ्रे, मर्क और पल्स की बडी सिफारिश की है, परन्तु मैं इसे प्रामाणिक नहीं मानता। मेरा अपना मत है कि ये औषधियाँ इस रोग के कुछ लक्षणों को निश्चय लाभ पहुँचाती हैं, परन्तु दाने उभाड़ने के लिए अन्य औषधियों की तरह प्रभावशाली नहीं हैं। यदि दाने न निकल रहे हों और वमन प्रारम्भ हो गया हो

तो एण्टिम क्रूड से बहुत ही अच्छा फल मिलता है। यदि रोगी में श्वास-कृच्छ्रता हो तो उसे इपिकाक का सेवन कराया जाय। यदि दाने बहुत अधिक संख्या में निकल रहे हों और एकोनाइट से ज्वर न घटा हो। (ऐसा लक्षण बहुत कम ही दिखायी पड़ता है और प्रायः कण्ठमाला के रोगियों में ही होता है) तो सल्फर सर्वोत्तम औषध है। इसके सेवन से सभी उपद्रवों का शमन हो जाता है। यदि ज्वर घटाने के लिए एकोनाइट और सल्फर दिया गया हो तो सहायक औषधियों के रूप में निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करना चाहिए :—

क्यूप्रम—जब सर्दी-जुकाम का जोर हो और आँखों में जलन हो रही हो।

ब्रायोनिया—श्वास-नलिका-प्रदाह के लिए प्रायः एकोनाइट और सल्फर प्रयोग करने के बाद ऐसा प्रदाह यदा-कदा ही होता है, क्योंकि इन दवाओं से खाँसी दूर हो जाती है, घबराहट और अश्रु-प्रवाह भी नहीं रहता। किसी-किसी कष्टदायक लक्षण के लिए काफि, फास, बेल, मर्क और यूफ्रे भी लाभकारी हैं। इन औषधियों की आवश्यकता उस समय पड़ती है जब ज्वर न रहे। आनुषंगिक उपद्रवों के लिए अनुच्छेद नं० २ देखिए।

२—चेचक के उपसर्ग (Complications of Measles)—इस प्रकार के उपद्रव अक्सर ज्वर की अवस्था में अथवा दानों के दब जाने पर ही होते हैं। कभी-कभी ज्वर होने या उतर जाने पर भी दाने बाहर नहीं निकलते। जब तक ज्वर न हो, दबे हुए दाने पुनः उत्पन्न न हो जायँ और इनके लिए अनुच्छेद नं० १ की औषधियाँ व्यवहृत न हुई हों—इन आनुषंगिक उपद्रवों पर विशेष ध्यान नहीं देना चाहिए। ज्वर रहने और दानों के दबे रहने के समय आनुषंगिक उपद्रवों के लिए किसी औषध की आवश्यकता नहीं पड़ती।

मस्तिष्क-विकारों के लिए—बेल, आर्स, क्यूप्रम। जुकाम के साथ या आँखों में जलन के बिना ही—पल्स, युफ्रे, सल्फ, आर्स, मर्क। कर्णमूल-

प्रदाह के लिए—आर्न, डल्का, आर्स। मुँह आना या गलक्षत में—सल्फ, मर्क, आर्स। डिफ्थीरिया (गलझिल्ली-प्रदाह) में एपिल, वेल, आर्स, फास। गलक्षत और जुकाम मे—कार्वो, ड्रोस, पल्स। आन्त्र-शूल और अतिसार—कैमो, फास, सल्फ, वेरेट्र एल्ब। वमन मे—एण्टि-क्रूड, इपि, पल्स। दम घुटने पर—इपिकाक। सूखी खाँसी मे—काफि, कैमो। काली खाँसी की तरह की खाँसी मे—ड्रोस, चायना। क्रूप खाँसी—एकोन, हिप, आर्स। ब्रोंकाइटिस आदि छाती के प्रदाहात्मक लक्षण—फास, ब्रायो, एकोन। आक्षेपिक लक्षण—वेल, काफि। बाद में अनिद्रा—काफि, वेल, सल्फ। कमजोरी, प्रलाप, गर्मी और सर्दी का पारी-पारी से आना—वेरेट्र एल्ब, कार्वो वेज। शरीर पर काले दाग या बिना दाग टायफायड के लक्षण रस, आर्स, फास, सल्फ कार्वो वेज।

२—चेचक के दुष्परिणाम—छोटी माता के बाद प्रायः कुछ ऐसे कष्टदायक और भयकर उपसर्ग आते हैं जो मूल रोग से भी बढकर होते हैं। परन्तु अक्सर होमियोपैथी चिकित्सा करते रहने पर ये उपद्रव नहीं आते। यदि कदाचित् आते हैं तो बहुत हल्के रूप में। ये उपद्रव तभी आते हैं जब रोगी को हवा लग जाय, समय से पहले रोगी खुली हवा मे चला जाय या उसके अन्दर उस उपद्रव के लिए पहले से ही अनुकूल कारण हों। इनमें सबसे घातक और भीषण उपद्रव हैं—तरुण न्यूमोनिया, जो आगे चलकर भयकर क्षयरोग या छाती के शोथ के रूप में परिणत हो जाता है। यदि शुरू में ही ऐसे रोगी को ब्रायोनिया दे दिया जाय तो उसके सारे उपद्रव जाते रहेंगे। इसके लिए फास, सल्फ, कैल्के और पल्स भी उपयोगी हैं। केवल सूखी खाँसी के लिए काफिया या कैमोमिला बहुत लाभकारी है। पुराने स्वरभग के लिए प्रायः कार्वो वेज, ड्रोस, डल्का या सल्फ उपकारी है। पुरानी ढीली खाँसी के लिए प्रायः पल्स, सल्फ और डल्का। आक्षेपिक खाँसी के लिए विशेषतया वेल, कार्वो वेज, सिना और हाइयो। न्यूमोनिया के समान ही घातक उपद्रव है—आन्त्र-शोथ। इसमें प्रायः आँतों मे घाव हो जाने से यक्ष्मारोग हो जाता है। यदि बुखार पुराना हो जाय

तो रोगी अच्छा नहीं किया जा सकता। इस श्रेणी के ३ बच्चे मेरे पास आये और १०–१५ दिनों के अन्दर ही काल-कवलित हो गये। यदि रोग बहुत अधिक न बढ़ा हो तो **फास, सल्फ, आर्स, रस** या **वेरेट्र एल्ब** अपने-अपने लक्षणों के अनुसार उपकारी हैं। अतिसार में **पल्स** या **सल्फ, मर्क** और **चायना**। आँखों मे चमक होना—**एकोन, पल्स, वेल, फास, सल्फ**। कर्ण-स्राव के लिए—साधारणतया **पल्स, कार्बो वेज, सल्फ, मर्क, लाइको, एसिड-नाइट्रि, मिनियेन्थिस** और **काल्चि** उपकारी औषधियाँ हैं।

३—बैंगनी दाने और चेचक

(Purple-rash and Rubiola)

१—**बैंगनी दाने**—यह भी एक प्रकार का खसरा ही है और प्रायः छूत के कारण होता है। यह बहुधा बेल्जियम और हालैण्ड प्रदेश में होता है। इस रोग में चमड़े का रग बैंगनी-सा हो जाता है और उस पर मदिरा के रङ्ग के छोटे-छोटे खील निकलते हैं। यदि बुखार तेज हो तो **एकोनाइट** और कम रहने पर **सल्फर** देना चाहिए। **एकोनाइट** से प्रायः ज्वर और स्नायविक बेचैनी दूर हो जाती है। इसलिए **काफि**या की कभी जरूरत ही नहीं पड़ती। **एकोनाइट** और **काफि** का प्रयोग बिना सोचे-विचारे करना रोग को कठिन बना देना है। जब **एकोनाइट** से लाभ न हो तो २४ घण्टे तक **सल्फर** का प्रयोग करके पुनः **एकोनाइट** सेवन कराना चाहिए। इसके बाद **सल्फर** का पुनः प्रयोग करने से समस्त उपद्रव दूर हो जाते हैं। एलोपैथिक चिकित्सा से इस रोग मे दिमाग पर कुप्रभाव पड़ता है। ऐसी हालत में **कैल्केरिया** से अच्छा फल मिलता है। यदि रोग का असर दिल पर हो तो **आर्सेनिक** से बहुत लाभ होता है। जिन रोगियों को शुरू से ही **एकोनाइट** या **सल्फर** दिया जाता है उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता।

२—**लाल चकत्ते** (Roseolae)—यह भी शीतला रोग का ही एक प्रकार होता है और इसके लिए किसी दवा की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसमे यदि बुखार तेज रहे तो **एकोनाइट** देने से काम चल जाता है।

पहले एकोनाइट देकर बाद में सल्फर दे देने से सभी कष्ट जाते रहते हैं। यदि सर्दी-जुकाम शेष रहे तो पल्स और गले की खराबी में बेल का सेवन कराना चाहिए।

४—शीतला
(Small pox Variola)

१—साधारण पर्यवेक्षण (General Observation)—जब चेचक के लिए टीका नहीं तैयार हुआ था, तब यह रोग अत्यन्त तीव्रता और भयंकरता के साथ हुआ करता था। अब इस रोग का प्रकोप महामारी के रूप में न होकर किसी-किसी व्यक्ति में ही होता है। खासकर इसका प्रकोप निर्धन वर्ग में अधिकता से होता है। जिन बच्चों को टीका नहीं लगाये गये थे अथवा जिन युवकों को टीका लगाये गये थे उनमें भी प्रायः शीतला का आक्रमण होता है। टीका लगाने के बावजूद भी एक दम्पती में एक ही साथ शीतला का आक्रमण होते मैंने देखा था। यदि शुरू से ही इसके लिए होमियोपैथी चिकित्सा की जाय तो रोग की तीव्रता बहुत कुछ घट जाती है और रोगी को किसी प्रकार की परेशानी भी नहीं होती। कोई-कोई रोगी तो १५ दिनों के भीतर ही स्वस्थ हो जाता है। रोग की तीव्रता होने से समय भी अधिक लगता है। रोग का गले पर प्रभाव होना इस रोग का बहुत ही अशुभ लक्षण है। इससे कितने रोगियों की गला घुटने के कारण मृत्यु हो जाती है। यदि गले के भीतर चेचक के दाने अधिक संख्या में निकले हों तो भी रोगी की मृत्यु निश्चित होती है। एक स्त्री की लड़की ऐसी ही अवस्था को प्राप्त होकर एलोपैथी चिकित्सा कराते समय ही मर गयी थी। उसे भी कुछ दिनों के बाद गले में नये-नये दाने निकल आये थे। उसने तुरन्त ही नया टीका लगवा लिया। फलस्वरूप उसमें नये दानों का निकलना बन्द हो गया और पहले के निकले हुए दाने भी सूख गये। वेरियोलिन का भी शायद ऐसा ही प्रभाव पड़ता है। किन्तु कभी-कभी ऐसा भी देखा जाता है कि इससे कोई लाभ नहीं होता।

२—साधारण शीतला की चिकित्सा—चेचक और टायफायड की जब प्राथमिक अवस्था हो तब उन दोनों में भेद करना बहुत कठिन होता है। केवल मुझे ही नहीं, बल्कि एलोपैथ चिकित्सकों को भी कई बार ऐसा धोखा हो चुका है। जब तक स्पष्ट रूप से दाने निकल न आवें तब तक चेचक और टायफायड का निर्णय करना बहुत कठिन है। अस्पताल में काम करते समय मेरा यह सिद्धान्त था कि रोगी में चेचक की सम्भावना होते ही मैं उसे **रसटाक्स** देता था और दाने उभरते ही **सल्फर**। जब तक दाने स्पष्ट रूप से निकल नहीं आते थे तब तक ऐसा ही करता था। इससे प्रायः रोग की उग्रता और अवधि कम हो जाया करती थी, जब से **वेरियोलिन** का आविष्कार हुआ है, तब से मैं **रसटाक्स** के बदले शुरू से ही इसी का उपयोग करता हूँ। यह अन्य औषधियों की अपेक्षा रोग की तीव्रता और अवधि घटाने में सर्वोत्तम है। जब **वेरियोलिन** सेवन कराने के बावजूद भी रोग की तीव्रता नहीं घटती और रोग पुराने स्तर पर ही बना रहता है तब मैं पुनः **सल्फर** का ही प्रयोग करता हूँ। **वेरियोलिन** प्रयोग के बाद **सल्फर** का विशेष प्रभाव पड़ता है। जब दाने पूरी तरह से निकल कर पीब से भर गये हों तब भी मैं **वेरियोलिन** से ही शुरुआत करता हूँ। यदि इसके देने पर भी रोगी को कोई लाभ नहीं होता तो मैं फिर से **सल्फर** देता हूँ। **थूजा** और **मर्क** की अपेक्षा इसके सेवन से घावों के दाग बहुत अधिक मिट जाते हैं।

३—उपसर्ग—**वेरियोलिन** सेवन कराते रहने से चेचक के समय या बाद में कोई उपसर्ग नही प्रकट होते। यदि किसी प्रकार के उपद्रव दिखाई भी पड़े तो इसके लगातार सेवन करते रहने से वे अपने आप दूर हो जाते हैं। यदि इससे लाभ न हो तो निम्न प्रकार की औषधियों का सेवन कराना लाभप्रद होगा :—सिरदर्द, साथ में वमन या मिचली रहे अथवा न रहे—बेल, ब्रायो, रस। चेहरे के दर्द में—सल्फ, मर्क, आर्स। पीब आने के समय दस्त होने पर—मर्क, सल्फ, आर्स। जब

दानों की रंगत नीली या काली-सी हो और साथ में सड़न की अवस्था रहे—**आर्स, टार्ट एमे, चायना, कार्बोविज, एसिड-फास, सल्फ**। माता के वे दाने जिनसे रस बहता हो—**टार्ट एमेट** या **आर्स**। जब दानों में पीव जल्दी न आवे—**सल्फ, मर्क, आर्स**। दानों में खून आने पर, खासकर ऐसी स्त्रियों में जिन्हें ऋतु-विकार भी हो—**आर्स, फास, लैक**।

५—शीतला के दाने और छोटी चेचक

(Varioloid and Varicella)

१—शीतला जैसे दाने (Variloid)—माता के इस प्रकार में भी **वेरियोलिन** अत्यधिक उपकारी दवा है, इसी के समान **सल्फर** मुख्य औषधियों में से एक है। दाने निकलने के समय या उससे पहले जब सिरदर्द का वेग हो और साथ में वमन तथा मिचली भी रहे तो **बेल, ब्रायो** या **रस-टाक्स** सर्वश्रेष्ठ औषधियाँ हैं।

२—छोटी चेचक (Varicella)—यदि दाने बहुत अधिक संख्या में निकले तो **टार्ट एमेट, पल्स** या **सल्फ** देना उत्तम है।

६—संक्रामकता-रहित दानों वाले ज्वर

(Non Cotagious Eruptive Fevers)

१—लाल दाने—यह रोग भी बहुधा महामारी की तरह ही फैलता है। इसके साथ प्राय श्वासकृच्छ्रता, उदरशूल और मिचली रहती है। ऐसी अवस्था में **इपिकाक** का प्रयोग सर्वोत्तम है। जब ज्वर न रहे और दानें निकल आवें तो **एकोनाइट** का सेवन करना उचित है। इससे ज्वर नहीं रहता और दाने भी निकल आते हैं। यदि ऐसा न हो तो फिर **सल्फर** का प्रयोग करना चाहिए।

शीत-पित्त (Urticaria) इसके लिए **डल्का, एपिस** और **रस** अमोघ औषधियाँ हैं। यदि उपद्रव ठण्ढक के कारण हो और शरीर पर के

चकत्ते गर्मी से अधिक उभरते हों तो डल्का देना चाहिए। यदि पानी मे भीग जाने के कारण उपद्रव उत्पन्न हुआ हो और ठण्ढी हवा में घट जाय तो रस या पल्स से लाभ होता है। मन्दाग्नि के बाद, विशेषतः पल्स। केंकड़ा खाने के बाद यूरिटिका यूरेन्स। फालसा खाने के बाद—ब्रायोनिया, पुराना शीत-पित्त—कैल्के आर्स। जब दबे हुए शीत-पित्त को आर्स या कैल्के उभार न सके वा जब इन दोनों दवाओं से उपद्रव ठीक न हो सके तो—एपिस।

३—विसर्प (Erysipelas)—विसर्प चाहे शरीर के किसी भाग पर क्यों न हो, उसमे चिकनाहट हो और साथ-साथ ज्वर रहे तो बेल, एपिस और रस। कुछ रोगियों में सभी दवाओं के असफल हो जाने पर ग्रैफाइटिस से लाभ हुआ है। छालेदार विसर्प मे रस टाक्स मुख्य औषध है। यदि यह उपकारी सिद्ध न हो तो एपिस। ऐसी अवस्था मे ग्रैफाइटिस और लैकेसिस भी लाभप्रद औषधियाँ हैं। जब सूजन मे सडन आ जाय या उसमे पानी आने की सम्भावना हो तो लैकेसिस विशेष रूप से उपयोगी है। चेहरे और शीर्षस्थान के विसर्प मे बेल, रस, एपिस (चेहरे के सम्बन्ध मे अध्याय ७ पढ़िये)। जोड़ों के विसर्प मे—ब्रायो, सल्फ, रस। नवजात शिशुओं के विसर्प मे—बेल, रस, सल्फ। एकाएक विसर्प के दब जाने पर—ब्रायो, कूप्रम, आर्स। मस्तिष्क सम्बन्धी लक्षण, बहुत कमजोरी और मूर्च्छा में भी इससे उपकार होता है।

४—गोल दाद (Zona Zoster)—इसके लिए ग्रैफा, रस, मर्क और पल्स बहुत ही उत्तम हैं। नये चिकित्सकों के लिए आर्स भी प्रधान औषधियों में से है। पिछले १५ वर्षों मे मैंने ऐसा एक बार भी नही देखा कि इस दवा से दाने और दर्द ५–७ दिनों मे दूर न हो गये हों। मर्क, पल्स, ग्रैफा और रस से भी २५ दिनों मे के अन्दर ही दाने दूर हो जाते हैं। यदि दाने निकलने के २३ वें दिन भी इन दवाओं का सेवन कराया जाय तो शेष २–३ दिन में ही यह औषधि अपना पुराना प्रभाव दिखायेगी।

ऐसी स्थिति में रोग निर्मूल करने के लिए अन्य औषधियों की भी आवश्यकता पड़ेगी। ये दाने खासकर २५ दिनों के बाद बाहर नहीं रहते और इसके बाद स्वयं ही दब जाते हैं। रोग से छुटकारा हो जाने पर भी यदि स्नायविक दर्द हो तो रस, ग्रैफा, पल्स, और मर्क का व्यवहार करना हितकारी है। (मुझे गरदन, पीठ, कमर, कलाई, बाजुओं और जाँघों की गोल दाद दूर करने में—जब कि छालों में जलन भी मौजूद थी—खासकर एकोनाइट से सफलता मिली थी। इसके अतिरिक्त कभी-कभी आर्सेनिक का प्रयोग भी किया गया था)।

५—शीताद और उस रोग मे रक्तस्राव (एक प्रकार का चर्मरोग, जिसमें चमड़े के नीचे से बलगम-सा गाढा स्राव होता रहता है—Phosis, Purpura haemorrhagica)—इस रोग मे दानों के साथ कभी ज्वर नहीं होता। यदि साथ में आमवात रहे तो अल्प ज्वर रहता है, परन्तु शीताद रोग मे बुखार कभी नहीं होता। जो आमवात के पुराने रोगी होते हैं, उन्हीं लोगों में शीताद के साथ ज्वर रहता है। इस रोग में चमड़े पर मैले भूरे रंग के गोलाकार दाग पड़ जाते हैं और उनसे भूसी छूटती रहती है। शरीर के किसी अंग से न तो खून ही गिरता है और न तो खूनभरे छाले मुँह मे ही पड़ते हैं। इस रोग की चिकित्सा करना बहुत ही कठिन है, क्योंकि जरा भी ऋतु परिवर्तन होते ही स्राव शुरू हो जाता है। इसके लिए रस, ब्रायो, आर्न और चायना उपयोगी औषधियाँ हैं। शीताद के बड़े-बड़े और चौड़े चकत्तों के लिए ब्रायो, रस, फास, एसिड-फास, सल्फ और आर्स विशेष रूप से लाभप्रद हैं। मैं यहाँ एक उदाहरण के साथ यह बता देना आवश्यक समझता हूँ कि आर्सेनिकम की कितनी उपयोगिता है। मेरे पास शीताद रोग का एक बार ऐसा भयंकर रोगी आया कि मैंने पहले वैसा कभी नहीं देखा था। वह रोगिणी युवती स्त्री थी। वह शीताद से ग्रस्त होकर ६ सप्ताहों से कष्ट भोग रही थी। वह सप्ताह में मुश्किल से ३-४ दिन ही पथ्य ले सकती थी। वह अतिरज से पीड़ित होने के कारण बहुत दुबली-पतली हो गयी थी। उसके लिए चारपाई से उठना-बैठना भी दूभर

हो गया था। मैंने उसे चायना ३० शक्ति की २ गोलियाँ थोड़े-से जल में घोलकर पीने को दी और आधे-आधे घण्टे के अन्तर से १-१ चम्मच पानी पिलाता रहा। दूसरे दिन सुबह तक अत्यधिक रक्तस्राव का होना रुक गया। नाक और मुँह से खून का निकलना भी बन्द हो गया। अभी तक उसके चमड़े पर दाने नहीं निकले थे। इस बार मैंने उसे पहले की ही तरह फास-फोरस ३० की २ गोलियाँ जल में घोलकर दी और शाम तक १-१ घण्टे बाद १-१ चम्मच पानी पिलाते रहने की व्यवस्था देकर चला गया। दिन में मुझे खबर मिली कि रक्तस्राव की मात्रा फिर से बढ़ गयी है और लगातार बेहोशी का दौरा हो रहा है। उस समय मैं घर पर नहीं था। शाम को बाहर से आने पर सूचना मिली। रोगिणी को देखने से स्थिति बहुत ही निराशा की दिखायी पड़ी। रक्त का प्रवाह गर्भाशय, नाक और मुँह से हो रहा था। गले और समूचे शरीर पर रुपये के आकार के दाग और छाले निकल आये थे। इन छालों से केवल खून ही गिर रहा था। इतना होते हुए भी रोगिणी होश में थी। देखने में वह मृतक जैसी प्रतीत हो रही थी। उसके चेहरे पर मुर्दे-सा पीलापन छाया था और आँखों की चमक भी गायब थी। पूरा शरीर बरफ-सा ठण्ढा हो गया था। वह बिल्कुल मरणासन्न अवस्था में पड़ी थी। मुझे उसके जीवन की कोई आशा नहीं दिखायी पड़ रही थी, किन्तु मैंने आर्सेनिकम ३० की २ गोलियाँ उसकी जीभ पर डाल दी। इसके साथ ही साथ २ गोलियों का घोल बनाकर भी पीने के लिए दिया और १-१ घण्टे बाद उसमें से १-१ चम्मच पानी पिलाते रहने का आदेश देकर मैं वापस लौट आया। आते समय मैंने उसके घरवालों से कह दिया था कि विशेष आवश्यकता पर रात में भी मुझे बुलाकर दिखा दिया जाय। परन्तु उस रात कोई बुलाने के लिए नहीं आया। अगले दिन मुझे लिखित सूचना प्राप्त हुई कि अब मेरी वहाँ जाने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि एक एलोपैथ चिकित्सक बुला लिया गया है। इसके बाद मुझे कोई समाचार न मिला और मैंने निश्चय कर लिया कि वह मर गई होगी। लगभग २ महीने बाद एक दिन एक नवदम्पती मेरे पास आये।

साथ के युवक ने मुझसे पूछा—क्या आपको स्मरण है कि कुछ महीनों पूर्व रक्तस्राव से पीड़ित एक युवती की आपने चिकित्सा की थी? मैंने उसके उत्तर में कहा—हाँ, स्मरण है। उसने कहा—किसी और चिकित्सक को नहीं बुलाया गया था। आप जो दवा बनाकर दे आये थे, उसी का सेवन किया गया और वह रोगिणी युवती अभी तक जीवित है। नवयुवती ने कहा—"उसने आपकी दवा ही पी थी। दूसरे डाक्टरों की दवा फेंक दी गयी थी। आपकी दवा से वह बच गयी और इस समय वह आपके सामने मौजूद होकर आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रही है।" मुझे इस बात पर बिलकुल विश्वास न हुआ। अधिक ध्यान से देखने पर मैं उस रोगिणी को पहचान गया। उसकी आवाज मुझे परिचित-सी जान पड़ी। उसने इस प्रसंग में मुझे बताया कि उसके एक रिश्तेदार किसी एलोपैथ को बुला लाये थे और उस चिकित्सक ने मुझे देखकर कहा था कि यह रोगिणी आज रात में ही मर जायगी। तब भी वह डाक्टर जाते समय दवा का नुस्खा लिखकर देता गया। एक आदमी लिखी हुई दवा लेने के लिए गया और जब तक वह दवा लेकर लौटा तब तक **आर्सेनिकम** की उन दो गोलियों ने अपना काम पूरा कर लिया था। उसके फलस्वरूप रक्तस्राव के परिमाण में अत्यधिक कमी हो गयी। इस कारण घर के लोगों ने आपकी दवा का क्रम लगातार जारी रखा। इसके बाद आगे की और दवा दुकान से मँगा ली गयी। ८ दिनों तक औषध सेवन के बाद रोगिणी बिलकुल रोगमुक्त हो गयी। सही ढंग से औषध का चुनाव होने के कारण ही ऐसा आश्चर्यजनक फल देखने में आता है।

———

अध्याय—२८

त्वचा के पुराने उद्भेद

(Chronic Cutanious Eruptions)

१—तर या गीले दाने

(Moist Eruptions)

१—एक्जिमा (Eczema)—चर्मरोग विशेषज्ञों ने कई प्रकार का एक्जिमा रोग माना है और वे सभी महत्वपूर्ण होते हैं। इसका एक भेद ऐसा होता है, जिसमे पीले रङ्ग की चौड़ी-चौड़ी फुन्सियाँ निकलती हैं, उनमे खुजली होती है और उन पर पपड़ी जम जाती है। इसका एक भेद लाल एक्जिमा के नाम से जाना जाता है। यह शरीर के बड़े भागों पर अधिकता से फैल जाता है। इसमे अत्यन्त खुजली होती है और सालों तक उसका क्रम लगातार चलता रहता है। खुजली वाले दानों पर पतली-सी पपड़ी पड़ जाती है और उस स्थान में दर्द होता है। जो एक्जिमा गर्मी की ऋतु में होते हैं, वे प्रायः गर्मी घटते ही अपने-आप मिट जाया करते हैं। साधारणतया एक्जिमा रोग बहुत ही कष्टसाध्य माना गया है, खासकर ऐसा एक्जिमा जो गुदा, अण्डकोप, पेढ़ू, हाथ-पैर, कमर या गरदन पर होता हो। इस रोग की चिकित्सा में मुझे डल्का, रस, मेजे, ग्रैफा, कैल्के और सल्फ बहुत ही उपयोगी जान पड़े हैं। खारिश और जलन की तीव्रता में कभी-कभी आर्सेनिकम से भी लाभ हुआ है। मलद्वार, अण्डकोष और जननेन्द्रिय पर के लाल एक्जिमा के लिए डल्का, मेजे, सल्फ, पेट्रो, सीपि, ग्रैफा, लाइको, कार्बो वेज और केलि-कार्ब भी लाभप्रद सिद्ध हुए हैं। हाथों और हाथ की उँगलियों के एक्जिमा में बहुत अधिक खारिश होने पर मर्क, कार्बो वेज, सीपि और सल्फ बहुत ही

लाभदायक हैं। कानों के एक्जिमा के लिए ग्रैफा, मर्क, लैक। नाक तथा होंठों के लिए—एल्युमिना, ग्रैफा, केलि-कार्व, सीपि और फास।

२—खारिश, खुजली (Itch, Scabies)—अनेक चिकित्सकों की ऐसी धारणा है कि वाह्य उपचार के बिना ही केवल औषध खिलाकर खाज-खुजली की चिकित्सा की जा सकती है। हो सकता है कि खुजली वाले दानों तथा खुजली के सम्बन्ध में यह सम्भव हो। जो रोग अन्दर से उत्पन्न होते हैं, उनकी चिकित्सा भी अन्दर से दवा खिलाकर की जानी चाहिए। किन्तु इनके कीटाणुओं को अन्दर की दवा से नष्ट नहीं किया जा सकता। जो लोग कीटाणुजनित खुजली को अन्दर की दवा से ठीक करने का दावा करते हैं, वे केवल भ्रमवश ही ऐसा कहते हैं। खारिश या तो ऐसी खुजली होगी जिसे देखने से उपर्युक्त खारिश का ही भ्रम होता है और नहीं तो रोगी के द्वारा कोई वाहरी उपचार किया गया होगा। कीटाणु के कारण उत्पन्न होने वाली खुजली कीटाणुओं के नष्ट न होने तक अच्छी नहीं हो सकती। मैंने एक ऐसे व्यक्ति को देखा है जिसे कीटाणुजनित खुजली थी। वह व्यक्ति देहात का रहने वाला था और एक होमियोपैथ होने के नाते वाहरी उपचार करने के विपक्ष में था। वह ६ महीने तक अपनी चिकित्सा स्वयं ही करता रहा। उसने लक्षणों के आधार पर मर्क, सल्फ, कास्टि, सीपि आदि दवाओं का सेवन किया। परन्तु खुजली वरावर वढ़ती ही गयी और अन्त में सारा शरीर तरह-तरह के दानों से भर गया। उन दानों पर भूरे रंग की पपड़ी पड़ गयी। मटर के आकार की फुन्सियाँ भी थीं। नितम्ब, पीठ और जाँघों पर गहरे लाल रंग के फोड़े भी निकल आये। जब मैंने उस व्यक्ति को देखा तो उसके कुछ फोड़े वन रहे थे, कुछेक वहुत कड़े हो गये थे, उनमें रात भर भीषण खुजली होती थी, जिसके कारण रात मे सो सकना उसके लिए वहुत कठिन था। कलाइयों, उँगलियों, घुटनों, कुहनियों के जोड़ों, पैरों तथा पेट और लिंग पर खुजली के असंख्य दाने निकल आये थे। कीटाणुओं का केन्द्र जान लेना कुछ कठिन काम नहीं था। मैंने उसे साहस देकर वताया कि वह

खारिशवाले दानों पर सुबह-शाम लवेण्डर का तेल लगाया करे। उसके ऐसा करने से ४ दिनों में खुजली बहुत कम हो गयी और ८ दिनों मे वह खुजली बिल्कुल जाती रही। अभी भी उसके शरीर पर तरह-तरह के दाने, चकत्ते, दरारे और फुन्सी-फोडे मौजूद थे, फिर भी वह पहले से अब बहुत सुखी था। अब वह रातभर आराम की नींद सोने लगा। अब मैंने उन कीटाणुओं के उपद्रव तथा विषनाश के लिए उसे सल्फ ३० शक्ति की २ गोलियाँ दी। इसके सेवन से उसे बहुत लाभ हुआ। इससे शरीर के सूक्ष्म दाने मिट गये, परन्तु पपड़ीवाले दाने और फोड़े अब भी उसी तरह मौजूद थे। अब उसे १५ दिनों मे मर्क की २–३ मात्राएँ दी गयीं। फल-स्वरूप पपड़ियाँ मुलायम हो गई जिससे उसकी उँगलियाँ हिलने-डुलने लगीं। इतना होने पर भी उसके वडे-वडे दानों और फोड़ा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इस वार मैंने उसे सीपिया ३० की एक मात्रा खिलायी। तीसरे दिन उसकी कुछ फुन्सियाँ सूखती हुई दिखायी पडीं। पपड़ियों में भी कुछ परिवर्तन हुआ। ३ सप्ताह के भीतर ही सभी दाने, खुरण्ड, पपड़ियाँ और फोड़े आदि ठीक हो गये। किन्तु हाथों और उँगलियों पर अभी भी कुछ फोड़े और दरारें ठीक होने को वाकी रह गयीं। नये दानों का निकलना वन्द हो गया। रहे-सहे उपसर्गों के लिए उसे कैल्केरिया का सेवन कराया गया। २ महीने वाद उसके शरीर के चमड़े पूर्णतया साफ हो गये थे, मानो उन पर कभी कुछ हुआ ही नहीं था। खुजली के इन कीटों को नष्ट करने के लिए भूरे रग के साबुन, डाइल्यूट, सल्फ्यूरिक एसिड, गन्धक के मलहम, टिंचर स्टैफिसेग्रिया और शुद्ध सुरासार के प्रयोग की भी प्रशसा की गई है, परन्तु शुद्ध लवेण्डर तेल के समान गुणकारी औषधि दूसरी नहीं है। जव भी कभी खुजली का रोगी मेरे पास आता है तो सर्वप्रथम उसे अँगूठे के समान मोटी और गोल कूची फलालेन के कपड़े की तैयारी करने का परामर्श देता हूँ। उस कूची का एक सिरा धागे से बाँधकर खुजली वाले स्थान को वरावर तर किया करे। दिन मे ४-५ वार ५-५ मिनट तक इस कूची से तेल लगावें। पीड़ित अग का चमड़ा वहुत अधिक मोटा और

कड़ा होने पर ८ दिनों मे, नहीं तो ४–५ दिनों में ही खुजली के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। जहाँ मैं रोगी को इस प्रकार के प्रयोग का आदेश देता हूँ वहाँ उसे यह भी बता देता हूँ कि खुरण्ड वाले स्थान पर तेल न लगावें। जब सभी कीटाणु नष्ट हो जाते हैं तब मैं सल्फर का सेवन उस समय तक कराता हूँ जब तक कि सभी दाने सूख न जायँ और उस पर खुरण्ड न आ जाये। यदि सल्फर असफल रहे तो मैं लक्षणों के अनुसार सीपि, कार्बो-वेज, हिप, सल्फ या कैल्के देता हूँ। यदि खुजली के दाने फुन्सियों की तरह के हों या उन दानों से पीब आता हो तो मर्क, सल्फ, कास्टि या सीपि का व्यवहार करता हूँ। डॉ॰ रिकर्ट की चिकित्सा के चतुर्थ भाग के पृष्ठ २१४ पर डॉ॰ फिलिट्स ने सीपिया द्वारा जिस रोगी को अच्छा करने की बात लिखी है, वह यथार्थ में फुन्सियों वाली खुजली थी या और कुछ यह बात मैं निश्चयता से नहीं कह सकता, क्योंकि खाल तभी उधड़ती है जब घाव हो गया हो। खुजली का घाव बन जाने पर फिर उस जगह की खाल नहीं छूटती। मैंने भी अनेक बार ऐसा देखा है कि सीपिया से हाथों, हाथ की उँगलियों और कोहनी-जोड़ों की खुजली दूर हो जाती है। किन्तु इस रिपोर्ट से यह ज्ञात नहीं होता कि वहाँ सीपिया की खुजली के छाले निकले थे या नहीं। सम्भव है डॉ॰ फिलिट्स के रोगी को कोई सामान्य चर्मरोग रहा हो। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि इन रिपोर्टों से यह समझ में नहीं आता कि वहाँ किसी विशेष प्रकार की खुजली के छाले मौजूद थे अथवा नहीं, क्योंकि इसके बिना रोगनिदान होना सम्भव नहीं है। ऊपरलिखित केस में सीपिया देने का कारण यह था कि वहाँ केवल खाज के दाने ही नहीं थे, बल्कि वे खुजली के दानों से मिलते-जुलते थे। ऐसे दाने प्राय: सीपिया से ही दूर हो जाते हैं। डॉ॰ फिलिट्स के रोगी में जो एकाध दाने उसकी पीठ, पेट और गरदन पर पाये गये थे, वे खाज के दाने न होकर सक्रमणहीन खाज के दाने थे। (आगे देखिए अनुच्छेद नं० ८ सक्रमणहीन खाज।) यदि तरह-तरह की खाज के दानों से मिलते-जुलते हों तो उसके लिए सीपिया अवश्य ही लाभ पहुँचाता है। यदि

खुजली बहुत पुरानी न हो तथा वह बाजुओं के अगले सिरे पर हो तो खाज के कीटाणु नष्ट हो जाने के बाद वह प्रायः स्वतः ही मिट जाया करती है। इसी प्रकार जूँ के कारण उत्पन्न होने वाली खुजली भी उनके नष्ट हो जाने पर स्वयं दूर हो जाती है। लवेण्डर तेल से जब इनके कीटाणु नष्ट हो जायँ तब सल्फ, कैल्के और उसके बाद सीपि का प्रयोग लम्बी अवधि तक करना चाहिए।

३—पपड़ी वाली तथा स्थान बदलने वाली ददद (Crusta Serpiginosa)—इस प्रकार की दाद चेहरे के अतिरिक्त शरीर के अन्य भागों पर भी उत्पन्न होती है। मैं अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि ऐसी दाद केवल बच्चों में ही पायी जाती है। यह प्रायः कान के अगले भाग से शुरू होती है और धीरे-धीरे समूचे चेहरे पर फैल जाती है। कभी-कभी यह ऊपर की ओर बढ़ती है और बढ़ते हुए खोपड़ी तक पहुँच जाया करती है। मुझे अब तक जिन रोगियों की चिकित्सा करने का मौका मिला उन्हें सल्फ, रस, आर्स और कभी-कभी कैल्के तथा डल्का से अवश्य ही लाभ हुआ है।

४—यौवन कील, मुहाँसा (Acne), सादे, फैलने वाले मुहाँसों (Acne disseminata)—यह प्रायः नवयुवकों के ललाट, गाल और कन्धों पर होते हैं। इनके लिए बेल, कार्बो वेज और सल्फ बहुत ही उपकारी दिखाई पड़े हैं। कड़े कीलों (Indurated acne) के लिए साधारणतया कार्बो वेज, लीडम और सल्फ। महीन कीलों और मुहाँसों (Miliary acne) के लिए जो प्रायः युवतियों के चेहरे पर निकलती हैं—सल्फ, कैल्के, नाइट्रिक-एसिड। कई सिरों वाली कील (Acne Punctata) के लिए सल्फ, नाइट्रिक एसिड। कीटाकार मुहाँसों (Acne Vereniforenis) के लिए सल्फ, सैलेनियम, ग्रैफा और नाइट्रिक एसिड।

५—लाल मुहाँसा (Acne Rosacea)—इस रोग के लिए बहुत से लेखकों ने रस, रूटा और वेरेट्र एल्ब की बहुत सिफारिश की है, किन्तु

मैंने इससे कोई लाभ होते नहीं देखा। मुझे आर्स, क्रियोजोट और कैल्के बहुत गुणकारी दिखाई पड़े। मुझे इस प्रकार के रोगी को किसी एक ही दवा से नीरोग करने में सफलता नहीं मिली। इनमें से कई औषधियों का प्रयोग करना पड़ा था। मुझे वेरेट्र एल्ब, रस, रूटा, साइक्यूटा तथा कार्बो एनिमेलिस विशेष लाभप्रद दिखाई पड़े।

६—ठुड्डी मे दाद जैसे दाने (Mentagra)—इन दानों के लिए मेजेरियम और उससे भी उत्तम कैल्के है। मुझे अनेक रोगियों को केवल कैल्केरिया के द्वारा ही स्वस्थ बनाने में सफलता मिली है। मैं इसके लिए ३० शक्ति की २ गोलियाँ ही केवल व्यवहृत करता हूँ और जब तक उनका प्रभाव रहता है, तब तक मैं दूसरी मात्रा नहीं देता। यदि मेरी इस राय पर किसी को सन्देह हो तो वह डॉ० नोक और ट्रिंक के परामर्श के अनुसार ३ क्रम की प्रति दिन २-३ मात्राएँ देकर उनका परिणाम देख ले। ऐसा करने से यथार्थता का बोध हो जायगा और उसे मेरी पद्धति ही सर्वश्रेष्ठ और लाभदायक प्रतीत होगी।

७—चमड़े पर फुंसियाँ (Impetigo)—इस प्रकार की खुरण्डदार फुन्सियाँ तर हों या पीब वाली, दूर-दूर पर निकलें या घने रूप में, दानेदार हों या पपड़ीदार, चाहे किसी भी स्थान पर क्यों न निकलें—इनके लिए मुख्य औषध सल्फ और कैल्के हैं। इसी तरह लाइको, मेजेरियम, सीपि और कुछ केसों के लिए आर्स, रस और मर्क भी लाभकारी प्रमाणित हुई हैं, किन्तु ये विश्वसनीय नहीं हैं। यदि इन औषधियों का प्रयोग पूरक या सहायक रूप में किया जायगा तो एक बार रोग दब जायगा और फिर से भयंकर रूप में प्रकट होगा।

८—जलन वाली फुंसियाँ (Ecthyma)—डॉ० हार्टमैन ने कल्किका (उपदंश रोग की तीसरी अवस्था में निकलने वाले चर्मोद्भेद—Rypia) के साथ इन दानों को मिला डाला है। वे इन दानों तथा लिंगमुण्ड आवरण के दानों (Pralputial herpes) में भी स्पष्ट

अन्तर नहीं बता पाये हैं। वास्तव में ये संक्रमणहीन दाने चमड़े के त्वग कोषों के प्रदाह हैं। ऐसे दाने मटर के आकार में प्रायः फोड़ों के रूप में दिखाई पड़ते हैं। इसकी आकृति गोलाकार होती है और प्रायः दूर-दूर पर निकलते हैं। शुरू के दाने फोड़ों से मिलते-जुलते होते हैं, उनका रंग लाल होता है तथा वे कड़े होते हैं। इनके उभारदार सिरों पर प्रायः जल्दी ही पीव पैदा हो जाती है। पीव आने के कारण ये पकने वाले फोड़ों की तरह हो जाते हैं। जलनकारक वस्तु में बार-बार हाथ पड़े तो ये दाने हाथों पर भी निकल आते हैं। ऐसी अवस्था में इनमें पीव हो जाती है, किन्तु फिर भी इनसे पीव का प्रवाह नहीं होता। इन्हें देखने से खारिश के दानों का भ्रम होता है। सच्ची खाज और इन संक्रमणहीन दानों में निदान के अनुसार निम्नलिखित भेद पाये जाते हैं.—(१) ये संक्रमणहीन दाने कभी आपस में सटकर नहीं निकलते, जब कि खाज के दाने प्रायः पास-पास निकलते हैं। (२) जब इन दानों में पीव पैदा हो जाती है तो ये दाने प्रायः १-२ सप्ताहों में स्वतः सूखकर मिट जाते हैं। अन्यत्र नये दानों का निकलना जारी रहता है, जब कि खाज के दाने लगातार कई-कई महीनों तक एक ही रूप में बने रहते हैं। यदि उनकी चिकित्सा न की जाय तो ये कड़े हो जाते और कभी मिटते नहीं हैं। (३) यदि ये संक्रमण-हीन दाने सटकर निकले अथवा हाथ के अँगूठे या उसके पास वाली उँग-लियों के बीच में या हाथ के किसी खुले भाग में निकलें तो उनमें बहुत जलन होती है, क्योंकि इन अंगों में बराबर संचालन होता रहता है। यदि दानों में पीव पैदा हो जाय तो वे ८-१० दिनों में ही सूख जाते और उन पर पपड़ी पड़ जाती है। उसकी पपड़ी छूटकर नयी खाल निकल आती है, जैसा कि लालबुखार के दानों में होता है। किन्तु असली खाज में ऐसा नहीं होता। (४) इन दानों में कभी खुजली नहीं होती। किन्तु दानों के सूखने के समय खुजली होती है। दाद के दानों की तरह जलन भी होती है।

सबसे प्रत्यक्ष और स्पष्ट पहचान यह है कि असली खारिश चाहे कितना भी पुराना हो और इस सिलसिले में निकलनेवाले अन्य दाने भी चाहे किसी

रूप के क्यों न हों, शुरू में निकले हुए दाने न तो मिटते ही हैं और न तो अपना रूप ही बदलते हैं। इसलिए हाथों या उँगलियों पर चाहे जैसे भी दाने निकलें और उनमें खुजली न रहे तो उन दानों को संक्रमणहीन समझना चाहिए। वे दाने वास्तविक खुजली के नहीं होते। इस प्रकार के दाने शरीर के अन्य भागों पर भी निकल सकते हैं। किसी तीक्ष्ण वस्तु में यदि बार-बार हाथ न पड़ते हों तो ये दाने प्रायः पैरों पर निकलते हैं। ये दाने दूर-दूर पर, विरल रूप में गहरे होते हैं। इनका आक्रमण प्रायः हाथ-पैर, पेट, गर्दन और स्तन आदि अंगों पर होता है। मैंने अपने १८ वर्षों के अनुभव में इन दानों के लिए सल्फ, कास्टि और सीपि को बहुत लाभप्रद पाया है। यदि उनमें जलन अधिक हो रही हो तो आर्स। किन्तु मर्क, थूजा, लाइको, साइलि, टार्टर-एम और रस लाभदायक सिद्ध नहीं होते। यह बात ठीक है कि मर्क दानों को सुखाता है, किन्तु निकलनेवाले नये दानों को नहीं रोक सकता। प्रायः ऐसा देखा गया है कि ये नये दाने पुराने दानों से अधिक कष्टसाध्य होते हैं।

९—आतशक के दाने (Rypia)—डॉ० हैनिमैन ने इन दानों को सड़नयुक्त और तेजी से फैलनेवाले छाले के नाम से कहा है। इसमें संक्रमण-हीन दानों की तरह फुन्सियाँ न निकल कर 'छाले' निकलते हैं। इनकी तह मैले लाल रङ्ग की होती है। ये छाले प्रायः छोटी कौड़ी के समान होते हैं। इन छालों में पैदा होनेवाला पीब ही तुरन्त गाढा हो जाता है और खुरण्ड के रूप में बन जाता है। यदि खुरण्ड समय से पूर्व ही फूट जायँ तो घाव बहुत देर से भरते हैं। हैनिमैन ने इन छालों का विश्लेषण करते हुए इन्हें सड़ावदार फैलनेवाले छाले कहा है। उनका अभिप्राय केवल साधारण छालों से था, क्योंकि उन्होंने इनके लिए सीपि, आर्स, ग्रैफा और पेट्रो देने की सिफारिश की है। साइलिशिया इन सबों में श्रेष्ठ है। ये छाले सदैव उपदंश विष के कारण निकलते हैं।

१०—पैरों पर महीन दाने (Phompholix and Pemphigus)—ये दोनों उपदंशजनित छालों के समान ही होते हैं। पहले-

पहले किसी स्थान में जलन होती है और फिर घण्टाभर में ही वहाँ छाले निकल आते हैं। प्रदाहित स्थान के अनुसार ऊपरी भाग कम या अधिक चौड़ा होता है। इन छालों का आकार मटर के बराबर होता है और ये पीब से भरे होते हैं। यदि इस प्रकार के छाले धड़, पीठ, पेट या छाती पर हों तो उनमें पीब की अधिकता रहती है। यदि छाला एक ही हो तो उसे पिम्पिका और अधिक छाले होने पर जहरबाद कहा जाता है। इन छालों को आग के छालों से मिलता-जुलता देखकर मैंने **कास्टिकम, आर्स** और **कैन्थरिस** का प्रयोग कराया, जिससे मुझे बहुत ही सफलता मिली, वह भी खास तौर से **कास्टिकम** के द्वारा। **लाइको** और **रस** भी बहुत गुणकारी हैं। अब मैं केवल इन्हीं दो औषधियों का प्रयोग करता हूँ।

११—दाद (Herps), **विसर्पिका** (Tetters), बुल्बुले की तरह छालोंवाली दाद (Herps Phlyctaenoides) के लिए **रस, सल्फ, आर्स, स्टेफि, सीपि** और **ग्रैफा**। गोल दानोंवाली दाद (Herps Circinnatus) के लिए **सीपि, सल्फ**। होठों की दाद (Herps Labialis) के लिए—**बेल, आर्स, रस, ग्रैफा, सल्फ, कैल्के, हिप** और **साइलि**। लिंगमुण्ड-चर्म की दाद (Herps praeputialis) और रोग के बाहरी भाग की दाद (Herps Pudendorum) के लिए—**सीपि, सल्फ** और **नाइट्रिक एसिड** बहुत लाभदायक हैं (**डल्कामारा** और **पेट्रोलियम** उपयोगी नहीं हैं), दाद चाहे लिंगमुण्ड चर्म के ऊपर हो या बाहर, भग के अन्दर हो या बाहर। **मर्क** प्रायः उपद्रवकारक है, शमनकारक नहीं। चन्दिया की दाद (Herps tonsurans) के लिए—**फास, ग्रैफा**।

२—पुराने सूखे उद्भेद

(Dry Chronic Eruptions)

१—चमड़े पर धब्बे (Maculoe Spots)—यकृत विकार के फलस्वरूप होनेवाले दागों के लिए—**सल्फ, लाइको, एग्निस क्रूड, फास, सीपि, कार्बो वेज** और **रस**। पेट पर के लाल दाग—**फास, नाइट्रिक एसिड**।

२—रूसी (Pityriasis)—अर्थात् चमड़े पर से भूसी छूटना-ब्रायो, सल्फ, कैल्के, आर्स, ग्रैफा, डल्का, केलि-कार्ब ।

३—अपरस (Psoriasis)—यह चाहे शरीर के किसी स्थान में हो—फास, लाइको, सल्फ, रस, नाइट्रिक एसिड, कैल्के, पेट्रो और सीपिया विशेष उपयोगी हैं। हथेली के अपरस के लिए—फास, सीपि, लाइको, पेट्रो।

४—पुराना खारिश (Prurigo)—इसके लिए एकोनाइट और सल्फर विशेष उपयोगी औषधियाँ हैं। इनके अतिरिक्त मर्क, कार्बो वेज और बेराइटा कार्ब भी उपकारी हैं। मलद्वार की खुजली के लिए—सल्फ, सीपि, नाइट्रिक एसिड, मर्क, थूजा। अण्डकोष की खुजली—सल्फ, पेट्रो, नाइट्रिक एसिड, डल्का। भग के बाहरी भाग की खुजली के लिए—सल्फ, सीपि, साइलि, कार्बो वेज, कोनि, नेट्रम-म्यूर।

५—लाल फुन्सियाँ (Lichen)—अर्थात् स्तनवृत्ताकार फुन्सियाँ—एकोन, बेल, ब्रायो। भयंकर लाल फुन्सियों के लिए—सल्फ कैल्के, ग्रैफा, आर्स, रस।

६—लाल-पीले दाने (Strophulus)—अर्थात् बच्चों के मसूढ़ों पर दाने निकलना—इसके लिए किसी चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ती। यह दाने अपने आप ठीक हो जाते हैं। यदि जरूरत मालूम पड़े तो सल्फर देना उचित है।

३—बच्चों का गंज और पपड़ीदार दाद
(Special Kinds of Scald-Head and Herpes)

१—मधुचक्र जैसा खानों वाला पपड़ीदार दाद (Favus)—अर्थात् एक प्रकार का कृमि जनित चर्म रोग, जिसमे घाव होता और उस पर पपड़ी पड़ जाती है। इस रोग को अन्दर से दवा सेवन कराकर ठीक करने के विपक्ष में चाहे जो कुछ भी कहा गया हो—मुझे इस तरह अनेक बार सफलता मिली है और केवल औषधि खिलाकर ही रोगमुक्त किया है,

चाहे वह रोग सिर पर रहा हो या बाजुओं पर। इस रोग में सल्फ, कैल्के, रस, और आर्स विशेष उपकारी हैं।

२—सिर की तर दाद (Moist Tinea)—इसके लिए सल्फ, कैल्के, रस, आर्स, वेराइटा, लाइको, सीपि, एमोनिया कार्व और साइलि बहुत ही लाभप्रद हैं।

३—सिर का एक्जिमा (Eczematous Tinea) इस तरह की केशयुक्त मस्तक-त्वचा की दाद के लिए मर्क, विशेषतः डल्का और मेजे भी बहुत उपयोगी हैं।

४—सिर से रूसी झड़ना (Pityriasis Capitis)—सल्फ, कैल्के, केलि कार्व, आर्स और एल्युमिना।

५—खाज, खुजली—फास, लाइको, सल्फ, कैल्के, नाइट्रिक एसिड।

६—बच्चों की खोपड़ी और चेहरे पर पपड़ीदार दाद (Crusta Lactea)—सिर के चमड़े मे पीव पैदा हो जाता है और उसके ऊपर बहुत मोटा खुरण्ड जम जाता है। इसके लिए सल्फ, कैल्के, रस और आर्स विशेष उपयोगी हैं।

७—स्थान बदलने वाली दाद—	संख्या १ में २ देखिए।
८—ठुड्ढी मे दाद जैसे दाने—	,, १ में ६ देखिए।
९—मुहाँसा—	,, १ में ५ देखिए।
१०—दाद, विसर्पिका	१ मे ११ देखिए।
११—योनि के बाहरी भाग मे दाद—	,, ,, ,,
१२—आतशक के दाने—	,, ,, ६ देखिए।
१३—गोल दाद—	,, ,, ,,
१४—चेहरे पर भूरी दाद—	,, २ में १ देखिए।
१५—पुराना खारिश, मलद्वार मे खुजली—	,, २ में ४ देखिए।
१६—योनि के बाहरी भाग मे खुजली—	,, ,, ,,

———

अध्याय—२६

फोड़े, पृष्ठव्रण और घाव

(Boils, Carbuncles, Abscess & Ulcers)

१—व्रण (Abscesses)—यदि फोडे पर प्रदाहयुक्त लाली हो और उसे दूर करने की गुञ्जाइश दिखाई पड़े तो ब्रायोनिया उत्तम है। यदि प्रदाह सूर्य की किरणों के समान फैल रहा हो और उसका रूप विसर्पिका-सा हो गया हो तो बेलाडोना का प्रयोग करना चाहिए। जो सूजन कष्टकारक न होकर साधारण रूप में हो तो सबसे पहले साइलीशिया का सेवन कराना चाहिए। पीव शुरू हो जाने पर भी सूजन को हिपर और कास्टिकम कभी-कभी दूर कर देते हैं। यदि सूजन कम न हो और पीव भी न निकले तो २४ घंटों के अन्दर ही मर्क उसे पका डालता है। इसके लिए ३० क्रम की २ गोलियाँ देना ही पर्याप्त है। यदि फोड़ा बहने लगे तो उसे साइलीशिया जल्दी ही बहा देगा। पुराने नासूरों और फोड़ों के विषय में भी ठीक यही बात लागू है। यहाँ भी साइलीशिया ही मुख्य औषध है। इसके अतिरिक्त सल्फ, कैल्के, फास, लाइको, लैके, फास-एसि भी लाभकारी हैं। मैं इन औषधियों का व्यवहार पूरक रूप में ही करता हूँ, किन्तु साइलीशिया का प्रधान रूप से। एक रोगी को ३ वर्षों का पुराना नासूर था। मैंने उसे प्रथम सप्ताह में साइलीशिया ३० शक्ति की (२ गोलियों की एक मात्रा) २-३ मात्राएँ दीं। इनका प्रभाव ६ सप्ताहों तक बना रहा। दोबारा साइलीशिया देने पर उसका कोई असर नहीं हुआ। इसके बाद सल्फर दिया गया। थोड़ा सुधार करके यह भी आगे न बढ़ सका। अब उसे बार-बार साइलीशिया ही दिया गया, परन्तु तब भी उसने पहले की तरह काम न किया। बाद में कैल्के, लाइको और फास दिये गये। किन्तु घाव इससे भी बन्द न हुआ। अबकी बार पुनः साइलीशिया दिया गया। इस बार उसने ३ सप्ताहों में

घाव को वन्द कर दिया। यदि इस प्रकार के नासूरों में सड़ावट भी आ जाय तो भी **साइलीशिया** ही उपयोगी है। यदि घाव फटने से पूर्व ही उसमें सड़न आ जाय अर्थात् फोड़े का रंग नीला के साथ लाल हो जाय तो **लैकेसिस** विशेष उपकारी है। इस प्रकार का परिवर्तन घाव फटने के वाद अर्थात् पीव निकलने के समय होने पर **आर्सेनिक** देना हितकारी है। ऐसी अवस्था में **आर्सेनिक** ३० शक्ति की २ गोलियों का घोल बनाकर १-१ चम्मच पानी ३-३ घण्टे के अन्तर से देना चाहिए। यदि मांस तन्तुओं की अत्यधिक कड़ाई के कारण सूजन हुई हो तो उपर्युक्त रीति से **ब्रायोनिया** का घोल तैयार करके देना उत्तम है। पीव उत्पन्न हो जाने पर **साइलिशिया** ही सर्वश्रेष्ठ औषध है। यदि इससे पूर्णतया काम न हो तो पूरक औषधियों के रूप में **कार्वोविज** और **लाइकोपोडियम** का व्यवहार करना चाहिए।

२—बेवाई (Chilblains)—यदि अल्प ठण्ढक के कारण ही वेवाई फटने लगे तो तुरन्त ही **फास्फोरस** ३० शक्ति की दो गोलियाँ देने से उपकार होता है। यदि वेवाई का रङ्ग नीला-सा या नीला-लाल हो तो—**बेल, सल्फ, पल्स, केलि कार्व**। यदि उज्ज्वल लाल हो तो **नक्स वाम, साइक्लेमेन**। यदि वेवाई में दर्द बहुत तेज हो—**बेल, पल्स, पेट्रो, आर्स, कैमो, नाइट्रिक-एसिड, सल्फ**। यदि प्रदाहयुक्त हो—**कैमो, आर्स, सल्फ, पल्स**। यदि सड़न की अवस्था हो—**बेल, आर्स, लैके, साइलि**। यदि घाव हो गये हों—**कैमो, आर्स, सल्फ, कार्वोविज, पेट्रो**। यदि पीड़ित अङ्ग विल्कुल सुन्न हो गया हो तो उस अङ्ग को **कैन्थरिस** ३ क्रम के घोल में भिगोकर तर रखना चाहिए। इसके वाद वाले दर्द के लिए **आर्स, कार्वोवेज** उपकारी हैं। यदि सड़न की अधिकता हो—**लैके, आर्स, साइलि**। यदि पैर की उँगलियाँ सुन्न हो जायँ तो **सिकेलि** बहुत ही लाभदायक है।

३—फोड़ा और पृष्ठव्रण—साधारण फोड़ों के लिए **आर्निका** का घोल १–१ चम्मच २–२ घण्टे के अन्तर से पिलाना लाभकारी है। यदि उस फोड़े में पीव पैदा हो जाय तो **सल्फर** का व्यवहार करना चाहिए। यह उसे वहा कर घाव को सुखा देगा। जव आपस में कई फोडे मिलकर एक ही रूप में

हो जायँ तो **नक्स वाम** ही सर्वोपरि औषध है। यदि उसमें पीव बन जाय तो **हिपर** के प्रयोग से फोड़ा फूटकर बह जायगा। पीव निकलने के बाद भी यदि घाव न सूखे तो **साइलिशिया** देना उत्तम है। यदि फोडे का बार-बार फटने का क्रम जारी रहे तो **लाइकोपोडियम** बहुत गुणकारी होता है। कभी-कभी **नक्स वाम** का प्रयोग भी सफल हो जाता है।

पृष्ठव्रण सदैव फोड़े के रूप मे ही दिखाई पड़ता है। इसकी चिकित्सा सड़ावट आने पर कठिन ही होती है। सडन खासतौर से हमेशा नही हुआ करती। पृष्ठव्रण के अच्छी तरह पक जाने के बाद उसमे से पीव का प्रवाह होने लगता है, किन्तु सूजन पहले जैसे ही कडी बनी रहती है। ऐसी बात साधाण फोड़ों मे नहीं पाई जाती, चाहे वह कितना ही भयकर क्यों न हो। ऐसा परिवर्तन प्राय २-३ सप्ताहों होता है और इस बीच में सूजन बढती जाती है। इसके कारण रोगी को कष्ट के कारण नींद तक नहीं आती। इसमें मुझे **साइलि, आर्न** और **नक्स वाम**—ये तीनों ही व्यर्थ जान पड़े मेरी समझ में २—३ सप्ताहों तक सूजन बराबर बढती रहती है और कोई दवा सफल नहीं होती। **बेलाडाना** के प्रयोग से कितनी ही बार सूजन और दर्द कम हो गये। मैं बहुत छान-बीन करने पर भी किसी ऐसी दवा का चुनाव न कर सका जो पीव पैदा कर सके। बहुत दिनों के बाद मुझे **ब्रायोनिया** का स्मरण हुआ। इसके प्रयोग से प्रायः ५-६ दिनों मे ही पीव उत्पन्न हो जाता है। ऐसे दो रोगियों के केस में मेरे जाने से वह सारी सूजन घट गयी। यदि **ब्रायोनिया** के प्रयोग से घाव का मुँह खुल जाय, उसमे से पीव निकलने लगे और इसके आगे उसका कोई प्रभाव दिखाई न पड़े तो **रस टाक्स** देता हूँ। इसके व्यवहार से ८—१० दिनों में ही फोड़ा दूर हो जाता है। यदि कोई रोगी एलोपैथी चिकित्सा करा लेने के बाद मेरे पास आवे और उसके घावों से दुर्गन्धित पीव निकल रहा हो तो ऐसी दशा में मे उसे **साइलिशिया** देता हूँ और वह बिलकुल सफल रहता है। जब घाव में सड़न पैदा हो जाय और **साइलिशिया** के सेवन से कोई लाभ न हो तो लके या **आर्स** का व्यवहार लाभप्रद होगा।

४—विष-व्रण या घातक पीब वाला फोडा (Anthrax, Pustula Maligna)—इस तरह का नाम भ्रमकारक है। सभी देशों में इसके नाम अलग-अलग हैं। जर्मनी मे ऐन्थ्रैक्स का अर्थ होता है—तिल्ली की सड़ावट, फ्रास मे अर्थ है—भयानक फोड़ा। तिल्ली की सड़ावट प्रकट करने के लिए वे उसे सक्रामक फोड़ा कहते हैं। मैंने इसी को एन्थ्रैक्स माना है। पृष्ठव्रण से मेरा तात्पर्य है – भयकर फोड़ा या विष-व्रण अर्थात् सक्रमण-हीन सडन वाला फोडा।

वास्तव मे विष-व्रण के ४ भेद हैं, जैसे—(१) सादा व्रण, सक्रमण-हीन फोड़ा, भयानक फोड़ा, सादा पृष्ठव्रण और (२) सड़ाव वाली फुन्सियाँ जिन्हें कभी-कभी सड़ाव वाला फोड़ा भी कहा जाता है। सक्रामक सड़ावदार फुन्सियों से। इसके लिए **आर्सेनिक** मुख्य औषध है, चाहे फोड़ा सक्रामक हो अथवा न हो, चाहे वह तिल्ली के सड़ने के कारण हो या अन्य किसी कारण से। मैं **ऐन्थ्रैक्सीन** की अपेक्षा इसी को विशेष उपयोगी समझता हूँ। एक बार मुझे दो किसानों को चिकित्सा करनी पड़ी। उनकी गाय तिल्ली की सड़ावट के कारण मर गयी थी। उसकी खाल उतारते समय उन दोनों किसानों को उसके विष का प्रभाव हो गया। उनमे से एक को तो **ऐन्थ्रैक्सीनम** और दूसरे को **आर्सेनिकम** दिया गया। पहले वाले के घाव केवल २४ घण्टे में ही ठीक हो गये, लेकिन दूसरे के ३६ घण्टों में। समय के अन्तर का शायद दोनों रोगियों का शारीरिक गठन, सहिष्णुता और औषध का प्रभाव भेद ही था। हर प्रकार की सड़न के लिए, खासकर जब पीड़ित स्थान काला पड़ गया हो तो **आर्सेनिक** बहुत लाभकारी है। यदि यह सफलीभूत न हो तो बीच-बीच में **चायना** देना चाहिए और प्रयोग के बाद उसे २४ घण्टे से ४८ घण्टे तक का समय मिलना चाहिये। फोड़े को **आर्सेनिक** बिल्कुल ठीक कर देता है। बूढ़े व्यक्तियों की सड़न पाँव से शुरू होने पर **सिकेलि** की अपेक्षा **आर्सेनिक** देना कहीं अधिक लाभप्रद है। ऐसी स्थिति मे मैंने **सिकेलि** से लाभ होते नहीं देखा। एक बूढ़े व्यक्ति

की सड़ावट को आर्सेनिक ने ३ बार ठीक कर लिया। जब साधारण सूजन एकाएक नीली-सी या नीली-लाली हो जाय तो वहाँ आर्सेनिक न देकर लैके, रस और माइलि से बहुत उपकार होगा। मैंने सिर्फ एक बार साइलिशिया की उपयोगिता देखी है। उस रोगी का इलाज मैंने और डॉ० बोनिघासन ने मिलकर की थी। उसके पुट्ठे के जोड़ों में सालों का पुराना नासूर था। उस नासूर मे मुँह थे—जघास्थि के जोड में और १ अण्डकोष में। वह रोगी चारपाई पर पड़े-पड़े सूख गया था और उसे जीर्णज्वर हो गया था। वह कृत्रिम साधनो के बल पर ही जिन्दा था। हमारी चिकित्सा ने उसे मौत के पजे से छुड़ा लिया। एक दिन रोगी के घाव से बदबू निकलने पर मैंने उसे ध्यान से देखा और उसमें सड़न की अवस्था पायी। आर्सेनिक ३० शक्ति का पानी मे घोल तैयार करके उसे दिया गया। ८ दिनों में ही रोगी की स्थिति में बहुत सुधार हुआ। उसकी सड़ावट रुक गयी और गलित भाग के मास-तन्तु उतर गये। इसके ३ दिन बाद ही रोगी की मौत हो गयी, क्योंकि ३६ घण्टों तक उसकी नाड़ी की गति का ही पता न चल सका।

५—साधारण क्षत—यदि घाव मे साधारण पीब, सूजन में प्रदाह, नासूर आदि हो और वह बहुत दिनों का पुराना न हो तो प्रायः साइलिशिया का प्रयोग ही पर्याप्त होता है। लैके और हिप भी समान रूप से गुणकारी होते हैं। ऐसी परिस्थितियों मे फोड़ा चाहे धड़, गरदन, बाजू, पैर या हाथ-पैर की उँगलियों पर ही क्यों न हो, मैं उसके लिए सदैव उपदंश नाशक औषधियों का ही प्रयोग करता हूँ और शुरू में सल्फर देता हूँ। २–३ मात्राएँ देने के बाद फिर कोई दवा न देकर दी हुई दवा की ४–५ सप्ताहों तक प्रतिक्रिया देखता हूँ। इसके अनन्तर मैं स्थिति के अनुसार कैल्के, साइलि और आर्स देता हूँ। इस प्रकार थोड़े ही दिनों में व्रण या घाव बन्द हो जाता है। ऐसी स्थिति मे होने वाली सल्फर की क्रिया को मे नहीं बता सकता। मैंने अनुभव करने के बाद यही निश्चय किया है कि सल्फर न दिये जाने से घाव देर में ठीक होता है। सल्फर देने

के बाद दूसरी दवाएँ भी अच्छा काम करती हैं। दाद वाले घावों के आस-पास जब फुन्सियाँ और दाने भी हों तो मैं लैक, सल्फ, एसिड फास, आर्स, ग्रैफा और कार्बो वेज देता हूँ। जोड़ों की सूजन के घावों के लिए—सल्फ, कैल्के, लाइको ब्रायो, रस। स्कर्वी (शीताद) के घावों के लिए—कार्बो वेज, सल्फ, आर्स, मर्क, लैके, साइलि। अत्यन्त पारद व्यवहार से होने वाले घावों के लिए—हिप, आरम, लैके, साइलि, केलि हाइड्रा। नाड़ियों की उलझन के घावों के लिए—सल्फ, पल्स, लैक, आर्स, साइलि, कैल्के। सड़ने वाले घावों के लिए—सल्फ, नाइट एसि, कास्टि, कार्बो वेज, आर्स लाइको, साइलि। भगन्दर के घाव के लिए—सबसे पहले साइलि, फिर कैल्के, लाइको, फास, सल्फ, कार्बो वेज, कास्टि। मस्से के आस-पास फटने वाले घावों के लिए—आर्स, कास्टि, एण्टिम क्रूड। प्रदा-हित घावों के लिए—सल्फ, लैके, साइलि, लाइकोपोडियम। सूजन वाले घाव—सल्फ, साइलि, रस, लाइको, सापि। छिछले घाव—सल्फ, आर्स, लाइको, कार्बो वेज, एसिड फास। भीतर की ओर जाने वाला गहरा घाव—साइलि, सल्फ, आर्स, कैल्के, रस टाक्स, लैके। ऊँचे किनारों वाला घाव—सल्फ कैल्के, साइलि, लैके, रस, आर्स। कड़े किनारों वाला घाव—सल्फ, कैल्के, साइलि, आर्स, लाइको। घाव में नीली लाली आयी हो तो—सल्फ, लैके, साइलि, कार्बो-वेज। किनारे खुरदरे—एसिड फास, साइलि। घाव का निचला भाग गन्दा—सल्फ, कैल्के, लाइको, साइलि, आर्स। सड़ावट के कारण घाव काला-सा हो जाने पर—आर्स, लैके, साइलि, लाइको। बदबू वाला घाव—कार्बो वेज, लैके, आर्स, सल्फ, लाइको, साइलि। मामूली स्पर्श से भी खून बहने लगता है—आर्स, लैके, सल्फ, फास, कार्बो वेज, लाइको, साइलि, हिपर। जिन घावों में मांस ऊँचा हो जाता है—साइलि, पेट्रा, सल्फ, ग्रैफा, आर्स। पानी की तरह पतला पीब निकले तो—साइलि, सल्फ, आर्स, कार्बो वेज, लैके, लाइको। पीब गाढ़ी और पीली हो तो—सल्फ, कैल्के, साइलि, हिपर। जलाने वाला

घाव—आर्स, कार्बो वेज, सल्फ, साइलि, रस। घाव के आस-पास बहुत खुजलाहट—सल्फ, आर्स, हिपर, लाइको, ग्रैफा, कार्बो वेज लैके, रस। डक मारने की तरह सिरदर्द—आर्स, सल्फ, साइलि, पल्स, पेट्रो, लाइको। घाव में दपदपाहट-सा दर्द सल्फ, आर्स, कैल्के, लाइको। पैरों मे और पैर के पत्ते में फोड़े—सल्फ, आर्स, कैल्के, लैके, ग्रैफा, लाइको, साइलि, कार्बो वेज। हाथों और पैरों की उँगलियों में घाव—सीपि, साइलि, कास्टि, सल्फ।

६—कर्कट का घाव—(Carcinomatous Cutaneous Ulcers)—चमड़े पर के कर्कट का घाव अन्य सभी कर्कटों से कठिन है, चाहे वह होठों, गालों, नाक या शरीर के किसी अन्य अग पर हो। इसके लिए आर्स सबसे श्रेष्ठ औषध है, तिस पर भी साइलि, कोनि, लैके, सल्फ फास, कास्टि, कैल्के, लाइको और सीपि भी उत्तम हैं। होठों के सड़े घाव को यदि इन औषधियों ने आराम कर दिया तो मैं अन्त में आर्स और साइलि देता हूँ। साधारणतया कोनि, कास्टि, लैके, फास, लाइको भी उत्तम फल देते हैं। किन्तु अन्तिम कार्य आर्स पूर्ण कर देता है। कैल्के और लाइको के बाद आर्स और लाइको के बाद साइलि तथा साइलि और आर्स के बाद सीपि उत्तम फल देते हैं।

७—त्वचा की जलन और अव्यवस्थता (Soreness and Unhealthiness of the skin)—चमड़े मे खुजलाहट मालूम हो तो बच्चों के लिए औषध का विचूर्ण मलना अच्छा है। उसमे भी लाइको अधिक उपकारी है। इसका भीतरी सेवन विशेष लाभप्रद नहीं है। नये रोगियों के लिए कैमो, इग्ने, रस और मर्क तथा पुराने रोगियों के लिए सल्फ, कैल्के, साइलि और कार्बो वेज उपकारी हैं। खोपड़ी में जलन हो तो कैल्के, लाइको, साइलि, किन्तु बालकों और युवकों के लिए भी इससे उपकार होता है। कान के पीछे जलन हो तो कैल्के, ग्रैफा लाइको, आलिएन, पेट्रो, लैके और मर्क उत्तम औषधियाँ हैं। घाव कनीनिका में हो तो एण्टि-

कूड, सल्फ, साइलि। जलन नाक पर हो तो एल्यूमिना, ग्रेफा, केलि-कार्ब, मैग-म्यूर, एसिड नाइट। होंठ और मुंह के कोने पर हो तो—फास, सीपि, साइलि। जलन नाभि स्थान मे—सल्फ, साइलि। नितम्ब म—कार्बो-वेज, कास्टि, ग्रैफा, सल्फ। जननेन्द्रिय के इर्द-गिर्द—कार्बो वेज, लाइको, ग्रैफा, नक्स वाम सीपि, सल्फ। लिंगमुण्ड पर—साइलि। अण्डकोष मे सल्फ, पेट्रो, कार्बो वेज। योनि के बाहरी भाग मे—कार्बो वेज, सल्फ। स्तन की ढेपुनी मे—कैमो, ग्रैफा, सीपि, साइलि, कैल्के, कास्टि। बगल में—कार्बो-वेज, आर्स, साइलि। पैर की उँगलियो के बीच मे—ग्रैफा, सल्फ, हिपर, साइलि। यदि इस प्रकार की जलन का मूल सहित नाश करना हो तो सल्फ, कैल्के, कार्बो-वेज, ग्रैफा और पेट्रो का लम्बी अवधि तक सेवन करावें।

८—त्वचा पर दरारें फटना (Rhagades)—जिन लोगो को जल में खडे रहकर काम करना पड़ता है उनके चमड़े मे दरारें पड़ जाती है। उनके लिए कैल्के या रस सबसे उत्तम औषधियाँ हैं। तेज ठण्ड के कारण चमड़ा फट जाय तो पेट्रो, सल्फ। मल द्वार की दरारों के लिए सल्फ, रस, ग्रैफा। होठों और मुख के कोनों की दरारों के लिए इग्ने, सल्फ, मर्क। नाक के अग्र भाग में दरार पड़ जाय तो—साइलि, मर्क। लिंगाग्र चर्म मे—साइलि, सीपि, मर्क। दरारों से खून बहने लगे तो—सल्फ, मर्क, पेट्रो, साइलि। दरारों मे स्राव बन जाय तो साइलि, मर्क, कैमो।

९—कुकुरमुत्ता जैसी गिल्टियाँ (Fungoid tumours)—इस प्रकार के तीन रोगियों की चिकित्सा मैंने अब तक की है। वे तीनो ही ५ से १० वर्षो तक के बच्चे थे। तीनों का रोग पैतृक था। ऐसी गिल्टी एक के ललाट पर थी, दूसरे की कनपटी पर और तीसरे की पलकों पर। तीनो को ही फास ३० की दो गोलियों को पानी में घोलकर १-१ चम्मच सुबह और शाम पिलाया गया जिससे वे २-३ सप्ताहों मे अच्छे हो गये।

१०—वसार्बुद, मासार्बुद (Sarcoma), रसार्बुद (Steatomatous tumours)—कुछ रोगियों की खोपड़ी और चेहरे पर रसभरे छाले को मैंने सल्फर कैल्के, नाइट-एसि देकर आराम किया था, किन्तु अन्य रोगियों को इनसे कोई लाभ न हुआ। क्यों आराम न हुआ, इसका मैं निर्णय नहीं कर सका। वसार्बुद के विषय में मेरा अनुभव है कि वह असाध्य रोग है।

११—कर्कट जैसा फोड़ा (Cancroids)—अपने चिकित्सा-व्यवसाय मे मैंने ऐसा फोड़ा एक बार ही देखा है। यह फोड़ा एक अमरूद जैसा बड़ा होता है। एक रोगी को ऐसा फोड़ा देखकर मैंने उसे कर्कट रोग समझा। यथार्थ मे वह त्वचा का शोथ था। एक फ्रांसीसी लेखक ही मेरा वह रोगी था। उसकी दाहिनी आँख की पलक पर एक लाल सूजन दिखाई पड़ी। सल्फ, कैल्के और साइलि पारी-पारी से सेवन कराने पर कुछ लाभ हुआ। वह शादी करने के लिए लन्दन जाने की इच्छा रखता था। उसके उस रोग के आराम होने में कुछ अधिक समय लगा। मैंने उसे चीर-फाड़ कराने को लिखा। एक नवयुवक चिकित्सक ने उसे समझा-बुझाकर उसकी उस सूजन को चीर दिया। फलस्वरूप २४ घण्टों के बाद वहाँ भयंकर विसर्प बन गया और जलन के मारे वह रोगी ३ दिनों के बाद मर गया। कुछ दिनों के बाद मुझे इस दुर्घटना की बात मालूम हुई।

———

अध्याय—३०

त्वचा के विभिन्न अंशों, बालों और नाखूनों के रोग

(Affectious of Varions Parts of the Skin, of the Hair and Nails)

१—जन्मजात चिह्न (Naevi Materni)—तिल (Moles) रक्तवहा नाड़ियों की उलझन के कारण होने वाले धमनी अर्बुद (Aneurysm by anastomosis)—इनके कुछेक भेद अत्यन्त हानिकारक होते हैं और कुछ बिल्कुल सादा होते हैं। चमडे पर रङ्गदार दाग का बन जाना ही तिल कहा जाता है। धमनी अर्बुद प्रायः आरक्त होता है। कभी-कभी यों ही मस्सा बन जाता है, सूजन आ जाती है या नाड़ियों के उलझन से फोडा बन जाता है। तिल आदि के लिए किसी चिकित्सा की आवश्यकता नहीं है, किन्तु सूजन होने पर और नाड़ियों पर फोडा बन जाने पर उनकी चिकित्सा करनी चाहिए। इसके लिए प्रायः सल्फ, कैल्के, फास और सिटाक्स उपयोगी हैं। कभी-कभी लम्बी अवधि तक कार्बो वेज, साइलि और प्लेटिना भी व्यवहृत करना चाहिए।

२—मस्से, वसार्बुद और नुकीली मास वृद्धि—मस्से वहुत ही विचित्र होते हैं। यदि वे एक ही स्थान में कई एक हों तो उन्हें आसानी से और यदि एक ही हो तो उसे कठिनाई से दूर किया जा सकता है। मुझे इसकी चिकित्सा में डल्का, कैल्के, कास्टि, थूजा और सीपिया से विशेष उपकार होते दिखाई पड़ा है। कभी-कभी रस, लाइको और सल्फ भी लाभप्रद सिद्ध होते हैं। मस्सा बनने के स्थान पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। हाथों और उँगलियों के मस्सों के लिए विशेषतया कैल्के, सीपि, रस, डल्का और थूजा वहुत उपयोगी हैं। चेहरे के मस्सों के लिए कास्टि और कैल्के। नाखूनों के आस-पास होने वाले मस्सों के लिए—यदि उनमे मास

की अधिकता हो तो ये प्रायः कास्टिकम से दूर हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त रसटाक्स और डलकामारा भी लाभदायक हैं। कीलदार मस्सों के लिए कैल्के, सीपि, एण्टिम क्रूड और थूजा। गोलाकार मस्सों के लिए—लाइको या कास्टि। हाथ या उँगलियों की पीठ पर के मस्सों के लिए—नेट्रम कार्ब, डल्का। उँगलियों के बराबर में निकलने वालों मस्सों के लिए—सीपि, थूजा और कैल्के। एक स्त्री की गरदन पर अनेक गोलाकार मस्से हो गये थे। उसे लाइकोपोडियम से आश्चर्यकारक फल मिला। १४ दिनों में ही उसकी गरदन मस्सों से रहित हो गयी, जब कि वहाँ सालों से मस्से निकले थे। चेहरे पर के मस्सों के लिए खासकर कैल्के और कास्टिकम विशेष लाभकारी हैं। ठुड्डी के मस्सों के लिए लाइको, गरदन और बाजुओं के मस्से के लिए कैल्के और नाक के मस्सो के लिए थूजा का प्रयोग मुझे लाभकारी नहीं दिखाई पड़ा। डॉ० रिकर्ट ने इन्हीं औषधों की सिफारिश की है। मुख्य बात निर्भर है मस्से की बनावट पर। अर्थात् ये मस्से मांस वाले हैं, कीलकार हैं अथवा गोलाकार। युवती स्त्रियों के मस्सों के लिए थूजा का ही सदैव व्यवहार करना उचित है।

३—घट्ठे (Coins)—यदि रोगी पैरों में ढीला-ढाला जूता पहने और घट्ठों को आर्निका के लोशन से बराबर तर करता रहे तो घट्ठे ठीक हो जाते हैं। जब एण्टिम क्रूड के प्रयोग से कोई लाभ न हो तो रोगी को कैल्के, सीपि और सल्फ का धैर्यपूर्वक सेवन करना चाहिए। कैल्केरिया के बाद प्रायः लाइको और नाइट एसि लाभकारी है। लाइको के बाद कभी-कभी साइलि से अच्छा फल मिलता है। यदि घट्ठों में दर्द अधिक हो तो कैल्के और एसिड नाइट्रि से लाभ होता है। यदि दर्द डंक मारने सा हो तो ब्रायो, लाइको, साइलि या सल्फ का व्यवहार करे। दर्द जब ऋतु-परिवर्तन पर होता हो तो साइलि या रस। खासकर दर्द बादलों की गर्जन पर होने से ब्रायोनियम का ही सेवन उपकारी है।

४—शिरास्फीति (Varicos) इसके लिए मुख्य रूप से पल्स, कार्बो वेज और सल्फ उपकारी औषधें हैं। (हैम्पल के मतानुसार हैमा-

मेलिस भी)। ऐसे व्यक्तियों को ढीली पोशाक पहननी चाहिए। यदि वहाँ घाव हो गया हो तो पल्स, साइलि और सल्फ। इनके अतिरिक्त लैक, आर्स और कैल्के भी उपयोगी हैं।

५—बालों के रोग - पलकों के गिरने के लिए - केलि कार्ब और ग्रैफा तथा मूछों के लिए ग्रैफा, नेट-म्यूर और कैल्के लाभप्रद है।

६ – नाखून के रोग—यदि नखों का बढाव मास मे धँसकर हो तो हेरिंग का कथन है कि नाखून बीच मे से काट दिये जायँ। बाद म उन्हे सिरों से न काटा जाय और हर बार काटने के समय केवल उसका अग्र भाग ही काटा जाय, जिससे बीच का भाग भी बढ़ता रहे। किन्तु यदि नाखून मास मे बहुत गहराई तक घुसकर बढ़ रहे हों तो उन्हे उचित यन्त्रों की सहायता से निकालकर घाव पर आर्निका की पट्टी बाँध देनी चाहिए। यदि आर्निका से काम न हो तो सल्फ या साइलि का प्रयोग करे। जो भी दवा की जाय, उसकी ३० शक्ति की २ गोली को जल मे घोलकर उसमे गाज तर करके बाँध देवे। नरम नाखून के लिए ग्रैफा और सल्फ। यदि नाखून टूटते हों तो—साइलि, यदि भुरभुरे हों—एल्युमिना, साइलि। खराब रङ्ग या पीला रङ्ग—सीपि, साइलि, सल्फ, ग्रैफा, नाइट एसि। नख-प्रदाह के लिए— रस, सल्फ, कैल्के और लाइको।

———

अध्याय—३१

बाहरी आघात

(External Injuries)

१. कुचलने का आघात

(Dry Injury)

१—गिरने, चोट या धक्का लगने के कारण कुचल जाना (Concussions by a fall, blow or shock)—इस प्रकार के कुचल जाने के कष्ट के लिए आर्न ही सबसे उत्तम औषध है। होमियोपैथी का चिकित्सा-व्यवसाय करने वाले हर एक व्यक्ति को यह अच्छी तरह ज्ञात है। ऐसे कुचल जाने की चोट से खून नहीं निकलता। मस्तिष्क और रीढ पर कड़ी चोट लग जाय और मैं बुलाया जाऊँ तो तुरन्त आर्न ३० की २ गोलियों को जल में घोलकर ४८ घण्टों तक हर तीसरे घण्टे १-१ चम्मच पिलाने की व्यवस्था देता हूँ। यदि कोई चिकित्सक निकट न मिले और आर्न का सेवन कराया जाय तो अच्छा फल मिल सकता है, किन्तु ऐसे भी कुछ क्षेत्र हैं जहाँ मस्तिष्क में भारी आघात लग गया हो, वहाँ साइक्यूटा, बेल, ब्रायो और फास से लाभ होगा। यदि रीढ में कड़ी चोट लगी हो तो रस और कैल्के, दूसरी अवस्था के लिए ब्रायो की आवश्यकता हो सकती है, खासकर जहाँ सीढी से उतरते समय पैर फिसल जाय। यदि उस प्रकार के कुचल जाने के कारण सिरदर्द होता रहे तो बेल की तरह आर्न और ब्रायो से सहायता मिलेगी। यदि छाती में कुचल जाने का कष्ट हो और वहाँ डँसने का-सा दर्द साँस लेते समय होता रहे तो ब्रायो, उसी तरह अन्य क्षेत्रों में यदि आर्न यथेष्ट न सफल प्रमाणित हो तो ब्रायो, यदि पाकाशय में कुचल जाने के कारण कष्ट हो तो भी ब्रायो उत्तम औषध है। यदि कोई मनुष्य

किसी कुर्सी पर बैठने के लिए नितम्बों को नीचा करे और दूसरा व्यक्ति उस कुर्सी को खींच ले तो वह मनुष्य एकाएक गिर पड़ेगा। फलस्वरूप उसके कूल्हे में बड़ी चोट आ जायेगी और पैरों में पक्षाघात भी हो सकता है। ऐसी स्थिति में रसटाक्स की १ मात्रा से वह मनुष्य अच्छा हो जायगा।

२—धड़ में मोच और ऐंठन (Sprains and Twisting of the Trunk)—होमियोपैथिक पद्धति के चिकित्सक जानते हैं कि ऐसे क्षेत्रों में रस परम सहायक है किन्तु यदि जरा-सा हिलने पर भी पीठ में डँसने का-सा दर्द मालूम हो तो ब्रायो। यदि ऐसा अनुभव मालूम हो कि आँतों में कोई गीली चीज पड़ी हुई है और उसके दर्द हो रहा हो तो नक्स वाम, यदि बेचैनी, घबड़ाहट और मिचली होने लगे और आन्त्रवृद्धि की शंका हो तो वेरेट् एल्ब। चोट लगने के बाद जो उपसर्ग उत्पन्न होते हैं, खासकर सिरदर्द तो कैल्के, साइलि, नेट्र कार्ब और फास एसि से उपकार होगा, पृष्ठवेदना और पीठ के निचले भाग में दर्द के लिए सल्फ, सीपि, ब्रायो, कैल्के, नक्स वाम। मल-त्याग के समय बार-बार काँखना पड़े तो कैल्के, साइलि, सीपि, नेट्र कार्ब।

३—मोच और जोड़ का उखड़ना (Sprains, dislocations)—यदि किसी जोड़ की हड्डी उखड़ जाय तो दर्द को घटाने के लिए आर्निका के जल का सेंक लगाते रहना चाहिए। इससे सूजन घट जायगी और दर्द भी घटेगा। हड्डी ठीक स्थान पर बिठा देने के बाद उत्तम औषध है रस ३०। जब तक दर्द पूर्णतया शान्त न हो जाय, तब तक इसके घोल का १—१ चम्मच दिन में ३ बार पिलाते रहना चाहिए। यदि जोड़ में केवल मोच आ गयी हो तो रस का भीतरी सेवन उत्तम है। उसके बाद ब्रायो दिया जा सकता है, यदि उस अंग को चलाने की शक्ति आ जाय और उस समय भी डँसने का-सा दर्द होता रहे। कलाई में मोच आने पर ऐम कार्ब दिया जा सकता है और आँख की पलकों के जोड़ों के लिए रूटा, जोड़ों में बाद में भी यदि चिरमिराहट का शब्द होता रहे तो वही औषध है। यदि मोच आने के स्थान में सूजन हो और वह स्थान कुछ लाल दिखाई

पड़े तो आर्न का सेवन करने से वह समाप्त हो जायगी। और उस औषध का सूजन अच्छी न होने तक सेवन करते रहना चाहिए। यदि जोड़ को हिलाने में कष्ट बचा रहे तो रस टाक्स दिया जा सकता है।

४—रगड़ (Contusions) यदि किसी कड़ी चीज से शरीर के किसी अंग में रगड़ लग जाय तो आर्न के भीतरी सेवन और बाहरी प्रयोग से लाभ होता है। बाहरी प्रयोग १२ से २४ घण्टों तक ही करना उचित है, इससे अधिक समय तक नहीं। स्टेप के आर्किन पत्र में डॉ० सीडेल ने लिखा है कि आर्न का बाहरी प्रयोग लम्बे समय तक करना हानिकारक है। किसी-किसी क्षेत्र में मैंने देखा है कि आर्न का बाहरी प्रयोग बन्द न करने तक उन्नति रुकी रहती है और उसे बन्द करके उसका भीतरी सेवन कराने से फिर उन्नति होने लगती है। यदि रगड़ लगने से विसर्प हो जाय तो आर्न का खुलकर व्यवहार करना चाहिए। खासकर उसकी छोटी गोलियाँ ही प्रयोग में लायी जायँ। विसर्प के लिए रस ही उत्तम औषध है। आर्न का प्रयोग घोल के रूप में ही करना उचित है। १ छटाँक जल में १० बूँद छोड़कर अर्क बना लेना होता है। यदि रगड़ से हड्डी में मोच लग गयी हो किन्तु हड्डी टूट न गयी हो और आर्न से हड्डी का दर्द न घटे तो रूटा ३० ही उत्तम औषध है, वह भी भीतरी सेवन के लिए और बाहरी सेवन के लिए आर्न का अर्क। ऐसी चिकित्सा होने पर भी यदि हड्डी के भीतर दर्द रहे तो सिम्फाइटम आफिसिनेल ३० का भीतरी सेवन करना चाहिए। यदि रगड़ लगने के बाद वहाँ सड़न पैदा हो तो लैकेसिस ही सर्वश्रेष्ठ औषध है, जब तक उस अंश में लाल रंग रहे, किन्तु यदि वहाँ का रंग काला हो तो चायना या आर्स। होंठ, स्तन आदि ग्रन्थि वाले अंशों में रगड़ लगने से यदि आर्न के सेवन के बाद भी वहाँ कड़ापन रहे तो कोन ३० ही अपरिहार्य औषध है जिसकी २ या ३ मात्राएँ मैं प्रथम सप्ताह में देता हूँ फिर औषध न देकर मैं उसके फल की प्रतीक्षा करता हूँ।

५—अस्थिभग, हड्डी का टूटना (Fractures)—सिम्फाइटम आफिसिनेल हड्डी टूटने के दर्द को घटा देता है और हड्डियों के जोड़ने का रस पैदा करता है, जिससे वे जुड़ जाती है। एक बड़े घर के १८ वर्ष के लड़के के कन्धे के जोड़ मे हड्डी टूट गयी थी। पेरिस के मेडिकल स्कूल से सम्बन्धित और शस्त्र-चिकित्सा के व्यक्तिगत शिक्षक तथा नामी शस्त्र-चिकित्सक ने उन टूटी हड्डियों को जोड़ दिया था। उस चिकित्सक के पिता ने जब पूछा कि ऐसे क्षेत्रों मे होमियोपैथिक चिकित्सा के बारे में तुम्हारी क्या राय है तो इस पर पुत्र ने कहा कि मै केवल शस्त्रोपचार के अश का ही सम्पादन करता हूं। चिकित्सा के विषय मे मेरा कोई अभिमत नही है। सिम्फाइटम के घोल मे भिगो कर उस टूटे स्थान मे पट्टी बाँध देने के पूर्व उसी की ३० शक्ति की २ गोलियों का घोल बना कर उस रोगी को पिला दिया गया था। उसी घोल के १–१ चम्मच प्रथम ३ दिनों तक दिन में २ बार और बाद मे सुबह और शाम १–१ चम्मच सेवन कराया गया था। चिकित्सक कह गये थे कि १४ दिन बाद मैं पुन आ जाऊँगा, तब तक सिम्फाइटम का भीतरी सेवन चलता रहे। जब वह लौट आये तब पट्टी खोलकर उस स्थान की जाँच करते हुए आश्चर्यचकित होकर चिल्ला उठे—"यदि मैं टूटने के पहले उस स्थान की जाँच करता तो आज विश्वास ही नहीं करता कि यहाँ की हड्डी कभी टूटी थी। मैंने टूटी हड्डियों का इतना शीघ्र जुड़ना कभी नहीं देखा था। यदि मैं इस समय दूसरी पट्टी बाँध दूँ तो वह केवल सुरक्षा के लिए ही होगी। मैं सिम्फाइटम की १ शीशी देता हूँ। अभी भी इसका सेवन करते चलो। अन्य क्षेत्रों में भी मैंने इसी औषध का व्यवहार किया है। उसी दिन से मैं होमियोपैथ चिकित्सक बन गया और एलोपैथिक औषध का प्रयोग न करके मैं केवल शस्त्र-चिकित्सा ही करता हूँ।" वह डाक्टर अभी भी शस्त्र-चिकित्सा ही करते जा रहे हैं। एक मेडिकल कालेज मे वह शस्त्र-चिकित्सा के अध्यापक भी हैं। रोगियों की शस्त्र-चिकित्सा के अनन्तर वह होमियोपैथिक औषधियों का ही सेवन कराते हैं किन्तु अपने सहयोगियों को वह

इस बात को नहीं बताते, बल्कि गुप्त रूप से वह होमियोपैथिक चिकित्सकों को सहायता देते हैं। उनसे उत्तम सलाह मिलने पर लोग खुश होते हैं।

२—खून बहाने वाले आघात
(Bloody Injuries)

१—रगड के घाव (Contused wounds)—कुचल जाने जैसे घावों के लिए, जहाँ केवल चमडा ही कट गया हो, आर्न का ही व्यवहार भीतर और बाहर से करना उचित है, जैसा कि सख्या १ और ४ मे बताया गया है। यदि मास का टुकड़ा निकल गया हो तो कलेंडुला मदद देगा। मैं अपने अनुभव से बता सकता हूँ कि वैसी स्थिति मे आर्न की अपेक्षा कैलेंडुला अधिक उपयोगी है, किन्तु इसका बाहरी प्रयोग बहुत समय तक नहीं करना चाहिए। जहाँ बन्दूक की गोली से एक अग विदीर्ण हो गया हो, वहाँ भी कैलेंडुला अत्यावश्यक है। १८४६ ई० के विद्रोह के समय मैंने अपने साथी कासेरियो के साथ वैसे बहुत से ऐसे रोगियों की चिकित्सा की थी। बन्दूक की गोली से घायल कुछ रोगियों की चिकित्सा केवल आर्न से की गयी थी। उनमें कुछ लोग रक्त के विषाक्त होने से मर गये थे। वे हाथ-पैर कट जाने की अपेक्षा मरना ही पसन्द करते थे। डॉ० थोरन का एक लेख स्टेप के नये आर्किव पत्र (खण्ड ३ सख्या १) में पढ़ कर हम लोग कैलेंडुला का ही व्यवहार कर रहे हैं। इसका फल बहुत ही अपूर्व हुआ। एक नवयुवक का समूचा हाथ एकदम नष्ट हो गया था। अब यह अपना हाथ कटवाना नहीं चाहता था। निरन्तर कैलेंडुला का सेवन कराने से उसके हाथ की हड्डी के टुकड़े जुड़ गये और पीब भी नहीं बनी। उसका हाथ अच्छा हो गया, घाव मे लाल दाने भी नहीं हुए, किन्तु हाथ कुछ विकृत हो गया तो भी समूचा हाथ बच गया, और रोगी का जीवन नष्ट होने से बचा। इस प्रकार के सभी रोगियों के लिए कैलेंडुला अनिवार्य है जिससे पीब नहीं बनती और अन्य सभी औषधियों की अपेक्षा यह उत्तम प्रमाणित हुआ है।

२—त्वचा उधड़ना (Excoriations)—ऐसी अवस्था में डॉ० सिडेल ने स्टॅफ के आर्कव पत्र खण्ड १२ संख्या १ में सल्फ एसि के गुणों की प्रशंसा करके एक लेख छपवाया था। वह मुझे बहुत अच्छा जँचा। घोटे की सवारी करने या अन्य कारण से चोट खाकर चमड़ा छिल जाय तो सल्फ्यूरिक एसिड की एक बूँद एक छटाँक जल में घोलकर उस घाव में लगाते रहने से लाभ होता है, लगाने के पहले उसे एक शीशी में भर कर खूब हिला लेना चाहिए। उस घाव पर कालोडियन का भी लेप लगाना अच्छा है। शय्याक्षत में भी सल्फ्यूरिक एसिड का घोल लगाने से लाभ होता है। यदि घाव सड़ रहा हो तो चायना या आर्स उपयोगी होगा। (डॉ० हेम्पल के मतानुसार टेनेट आव लीलीड का मलहम शय्या-क्षत में लगाने के लिए उत्तम औषध है।)

३—छुरा भोंकने तथा चमड़ा कटने के घाव (Stab and cut-wounds)—सुई, कील आदि चुभने से ही नहीं बल्कि तलवार या कटार से चमड़ा कट जाने पर भी हाइपरिकम परफोलियेटम प्रसिद्ध औषध है, किन्तु रगड़ या मामूली कटे घाव के लिए आर्न और कैलेंडुला से इसका दर्जा नीचे पड़ता है। कटे घाव के लिए स्टॅफिसेग्रिया यथार्थ में ही प्रयोग योग्य है और वह भी यदि तेज धार वाले अस्त्र से कटा हो। जैसे कि चाकू, छुरा आदि तथा वह भी मांस में धँस जाने के घाव के लिए। यदि जल्दी चीर-फाड़ किया गया हो तो यह लाभदायक है। जिस प्रकार के चीरफाड़ करने में अधिक समय लगा हो या घाव के भीतर उँगली डालने की आवश्यकता हुई हो और वह घाव भी कुछ अधिक चौड़ा हो तो वहाँ आर्न या कैलडुला अधिक उपयोगी है। यदि हड्डी के टुकड़े गहराई तक मांस में धँस गये हों और उन्हें निकालना कठिन हो तो हिपर सल्फर की १ मात्रा के सेवन से रातभर में वहाँ पीब पैदा हो जायगी, फलस्वरूप हड्डी के टुकड़े पीब के साथ निकल जायेंगे।

४—विषैले घाव (Poisoned wounds)—मुझे आज तक पागल कुत्ते के या जहरीले साँप के कटे रोगियों की चिकित्सा करने का मौका

नहीं मिला था। एक किसान ने एक बार मुझे आकर बताया कि उसके रसोईघर के भीतर सूखी लकड़ियों के गट्ठर के नीचे छिपे हुए एक विषैले साँप ने काट लिया है। पहले तो वह नहीं जान सका कि वह साँप है फिर जब वह बाहर निकल कर भागा तब वह चिल्ला उठा। वह अपनी कटी उँगली को आग के पास रख कर तपाने लगा, क्योंकि वह जानता था कि डॉ० हेरिंग का यही अभिमत है। वह शिकारी था, इसलिए उनकी एक पुस्तक वह सदा साथ रखता था। वह अपने समूचे शरीर में बेचैनी का अनुभव करने लगा और उससे भी अधिक कष्ट का अनुभव उसे कटे स्थान से हृदय की ओर होने लगा। वह अपनी उँगली को जितना ही अधिक आग से तपाने लगा उतना ही उसकी अस्वस्थि का अनुभव घटने लगा, सूजन भी घट गई और उसे ऐसा अनुभव हुआ कि उस कटे स्थान में और कोई कष्ट नहीं है। इस उपाय के बाद उसने लैकेसिस की १ मात्रा का सेवन किया और फिर किसी प्रकार का कष्ट नहीं रह गया। यदि घोड़े के सड़े घाव के स्पर्श से साईस के हाथ में घाव हो जाय तो आर्स ही महौषधि है। इसी तरह मुर्दे की चीरफाड़ करने से डॉ० के हाथ में घाव हो जाय तो यही औषध उपकारी है। मधुमक्खियों और कीड़े-मकोड़ों के डँसने से घाव होने पर एपिस ३० और कभी-कभी मर्क या लैक सफल सिद्ध होगा। बचे-खुचे उपसर्गों को दूर करने के लिए टेरिबिन्थ ३० दिया जा सकता है। मच्छड़ के विष को दूर करने के लिए आर्निका के घोल से उस स्थान को धो डालना अच्छा है। (डॉ० हेम्पल का कहना है कि मच्छड़ों और मधुमक्खियों के कटे घाव के लिए नौसादर के जल का प्रयोग बहुत अच्छा है।)

३—दुर्घटना से उत्पन्न घाव
(Accidents accompanying Wounds)

१—रक्तस्राव (Haemorrhages)—यदि चोट के कारण रक्त बहने वाली नाड़ी से खून बहने लगे तो वहाँ दबाने से रक्तस्राव रुक जायगा। अल्प रक्तस्राव उस स्थान पर आर्निका के घोल से भिगो कर पट्टी बाँध

देने पर रुक जायगा। आर्निका स्वयं ही रक्तस्रावरोधक औषध है। ऐसे भी रोगी दिखाई पड़े हैं जिनकी उँगली में सूई चुभ जाने पर लगातार खून बहने लगता है। आर्निका के अर्क में भिगो कर पट्टी बाँध देने से भी रक्तस्राव बन्द न हो तो फास और आर्न के सेवन से वह रुक जायगा। (डॉ० हेम्पल का मत है कि मकड़ी का जाला और स्पांज (समुद्र सोख) के वारीक टुकड़े घाव पर बाँध देने से रक्तस्राव रुक जाता है। आघात से रोगी दुर्बल हो जाय या मूर्च्छित हो और चायना से लाभ न हो तो डपि या वेरेट्र एल्ब लाभदायक हैं।

२— आघात-प्राप्त स्थानों में जलन (Inflammation of the injured parts)—यदि घाव की चिकित्सा अच्छी तरह न हुई हो, जलन होती रहे या आर्निका का विना जल मिलाये प्रयोग किया गया हो तो विसर्प और उपसर्ग पहले से भी खराब हो जाते हैं। गरमी के मौसम में चीरफाड़ करने या गहरी चोट लगने से भी विसर्प हो जाता है। इसी कारण शल्य-चिकित्सक गरमी की ऋतु में शल्य-चिकित्सा नहीं करते, किन्तु यदि होमियोपैथिक चिकित्सा उचित रीति से की जाय तो घाव में जलन या विसर्प नहीं होने पाता। आर्निका का प्रयोग समझ-बूझकर करने से वैसा कष्ट नहीं होने पाता, किन्तु कहीं-कहीं दिखाई पड़ता है कि बहुत सावधान रहने पर भी रोगी का घाव विसर्प में परिणत हो जाता है। रस ३० के सेवन से वह नहीं आने पाता।

३—घाव की जलन से बुखार (Wound fever)—होमियोपैथ चिकित्सक के हाथ में ऐंठन बुखार नहीं होने पाता, यदि कदाचित् हो भी जाय तो आर्निका से उसका उपशम हो जायगा। ऐसी अवस्था में एकोन और कॉफिया भी लाभदायक हैं।

४—आघात से धनुष्टकार (Tranmatic Tetanus)—इसी प्रकार के एक रोगी की चिकित्सा मैंने अपने सहयोगी डॉ० फ्रासेरियो के साथ की थी। गत जून मास की भयकर गरमी के समय के दर्गों में उसे

भयंकर चोट लग गयी थी। मैंने उसे अंगास्टुरा ३० की ३ गोलियों को पानी में घोलकर आधे घण्टे के अन्तर पर १-१ चम्मच पिलाने की व्यवस्था दी। इससे धनुष्टंकार की ऐंठन दूर हो गयी।

५—विषाक्त रस (Pyaemia)—मेरे पास एक ऐसा रोगी आया जिसके चमड़े पर पीव भरी फुन्सियाँ थीं और जिसके खून में पीव मिल गया था। रक्तप्रवाह के साथ वह विष सारे शरीर में फैल गया था। रसटाक्स या आर्सेनिक का सेवन कराने से पीव का विष नहीं रुका। मैंने डाक्टर फावेरियो के साथ सलाह करके ऐसे रोगियों का पीव-विष दूर करने के लिए पल्सेटिला का ही व्यवहार करने का निश्चय किया। आगे इस प्रकार के रोगी के भीतर पल्सेटिला से ही उपकार होता गया। प्रथम दिन जाड़ा लगते समय रोगी को यह दवा दी गयी थी जिससे रोग का वेग घट गया और दूसरे दिन रोगी अच्छा हो गया। उसके बाद पल्सेटिला का सेवन कराने से रात को ठढक का अनुभव भी नहीं हुआ, इससे पीव का निःस्राव रुक गया, किन्तु दूसरे दिन दिखाई पड़ा कि उसे टायफायड ज्वर आ गया, इसमें कोई औषध सफल नहीं हुई और रोगी तीसरे दिन मर गया। जब मुझे डाक्टर थोरेर के प्रस्ताव से कैलेंडुला के गुणों का पता लगा तो आगे मैं सभी घायल रोगियों की चिकित्सा इसी औषध से करने लगा, फल अच्छा ही मिला और किसी के घाव में पीव नहीं बनी।

६—घाव सूखना नहीं चाहता (Wounds Indisposed to Cicatrize)—अनेक औषधियों और उपचारों के होते हुए भी यदि घाव सूखना न चाहे, बल्कि बढ़ता ही चले या उससे पीव बहने लगे तो मैं साधारणतया पहले सल्फर की १ मात्रा देता हूँ जिससे मुझे पूरी सफलता मिलती है, खासकर यदि पीव आराम होने लायक रहे; यदि सल्फ से लाभ न हो तो कभी-कभी कैल्के से उपकार होता है। यदि पीव का रंग खराब हो और साधातिक अवस्था हो जाय तो मैं साइलि देता हूँ, यदि उससे लाभ न हो तो मैं सल्फ और कैल्के देता हूँ। यदि उसके बाद घाव एकदम सूख न जाय तो मैं

साइलि की मात्रा फिर से देता हूँ जिसमें बचे-खुचे उपसर्ग भी जाते रहें, या यदि साइलि भी असफल हो जाय तो हीपर सलफर निश्चित रूप में सुफल ला देगा।

४—आग से जला

(Burns)

आग से कोई अंग जल गया हो तो नवीन चिकित्सक एकारक औषध खोज नहीं पाते, वह कान्थिकम या कैथर में किसको चुनें इसका निश्चय नहीं कर पाते। वह यह नहीं समझ सकते कि साबुन का प्रयोग करना अच्छा है या रूई का, अर्टिका युरेन्स का अर्क अच्छा है या चूने का पानी हमारे चिकित्सा-ग्रथों में इन सभी को आग से जले घाव के लिए उपकारी माना गया है। आर्निका की उपकारिता अल्प है, ऐसी अवस्था में सुरासार अच्छा काम करता है। साधारणतया मेरी चिकित्सा की पद्धति इस प्रकार है। यदि आग से जला हुआ अंग किसी बर्तन में रखने लायक हो तो मैं उस अंग को तुरन्त गरम सुरासार में डुबोये रखता हूँ और दर्द के न घटने तक उसी तरह रखने का प्रबन्ध करता हूँ। यदि सुरासार से उन अंग को निकालने पर फिर से दर्द बढ जाय तो मैं उस अंग को पुनः गरम सुरासार में रख देता हूँ। इससे दर्द घट जाता है। इस प्रकार का क्रम १५ या २० मिनटों में पूरा होना चाहिए, किन्तु जलने के साथ ही साथ मेरे पास रोगी आ जाय तो मैं इस प्रकार का उपचार कर सकता हूँ। यदि जला हुआ अंग बर्तन के भीतर रखा न जा सके तो साबुन की पुलटिस बाँध देता हूँ। उसको गरमी सहने योग्य होनी चाहिए। एक बालक का समूचा मुखमण्डल आतिशबाजी से जल गया था। सन्ध्या से सुबह तक उसके चेहरे पर साबुन की गरम पुलटिस बार-बार बाँध दी गयी, इसी से वह बालक अच्छा हो गया। जले का घाव गहरा होने पर भी साबुन की पुलटिस से उपकार होता है। पीब बनने पर भी इससे वह बह जाती है। यदि जलने से फफोले पैदा हो गये हों तो मैं डॉ० बुर्जलर की सिफारिश के अनुसार कैथर ३ की कुछ बूँदों को सुरासार में डालकर उन

फफोलों पर लगाता हूँ और उसकी ३० शक्ति का भीतरी सेवन भी कराता हूँ। यदि इससे लाभ न हो तो उन फफोलों पर भी सान की पुलटिस लगाने का प्रबन्ध करता हूँ।

आग का जला घाव यदि पुराना हो जाय तो कास्टिकम ३० का भीतरी सेवन कराता हूँ। जीभ के जल जाने के क्षेत्र में भी कास्टि ३० सर्वोत्तम औषध है। रासायनिक प्रयोगशालाओं में मैंने देखा है कि खड़िया मिट्टी के विचूर्ण को पानी में घोल कर लगाने से जला घाव अच्छा हो जाता है। सिरके में नौसादर घोलकर कलई चूना मिलाकर जले घाव पर लगाने से आराम होता है। उबलते हुए तेल या घी से कोई अंग जल गया तो कैन्थर ३ की कुछ बूँदों को सुरासार में मिला कर बाहरी प्रयोग करने से लाभ होता है। खौलते हुए जल से कोई अंग जल जाय तो साबुन की पुलटिस उपकारी है। अर्टिका युरेन्स से कुछ लाभ होता है या नहीं, मैं नहीं जानता। यदि लोहे के तपे हुए छड़ से कोई अंग जल जाय तो आर्स ३० की २ गोलियाँ जीभ पर रखकर निगल लेने से यथेष्ठ लाभ होता है। कास्टिकम ३० का व्यवहार भी अच्छा है (डॉ० हेम्पल कहते हैं कि खौलते हुए जल से कोई अंग जल जाय तो सफेद मलहम लगा देने से लाभ होता है। छालों को बेल का काँटा आदि किसी नुकीली वस्तु से फोड़ देना अच्छा है। यदि सूई, चाकू या कैंची का इस्तेमाल करना हो तो उन्हें खौलते पानी में उबाल लेना चाहिए। उनकी नोकों को सुरासार से धो लेना भी अच्छा है। उन फफोलों पर सड़नरोधक दवा मिली हुई रूई लगा दी जाय। यदि रोगी को बुखार आ जाय तो एकोनाइट का सेवन करना चाहिए। यदि रोगी बेचैन हो पड़े तो १ छटाँक जल में १ ग्रेन मारफाइन डाल कर १ चम्मच पिलाना उचित है, इससे रोगी आराम से सो जायगा, यदि २ चम्मच एक साथ पिलाया जाय तो रोगी गहरी नींद सो जायगा। बहुत ही सहज उपायों से मैंने आग के जले घावों को अच्छा किया है)।

अध्याय—३२

औषध-प्रयोग से निद्रा

(Hypnotic Phinomena, Sleep)

१—अनिद्रा (Sleeplessness)—यदि किसी रोग के कारण अनिद्रा आती हो तो मूल रोग दूर करने वाली औषध से वह आराम हो जायगी। न्यूमोनिया या सन्निपात ज्वर आदि किसी कठिन रोग से बहुत दिनों तक भोगते रहने के बाद अनिद्रा आये तो उन रोगों के लिए व्यवस्थित औषधियों से ही वह दूर होगी। एलोपैथी पद्धति के अनुकरण में कॉफी आदि नशीली चीजों का सेवन कराना अनुचित है। यदि रोगी बहुत दिनों तक पुराने रोग से कष्ट पाता हो और रात को उसे नींद न आये तो मुख्य औषध के अतिरिक्त नींद लाने वाली औषध देने से उसे हानि होगी और मुख्य औषध का प्रभाव भी नष्ट हो जायगा अथवा उस मुख्य औषध का जो आरोग्यकारक काम आरम्भ हुआ है उसमें विघ्न पड़ जायगा। यदि कोई चिकित्सक मूर्खतावश ऐसा काम करे तो अपने रोगी को निरामय करने की आशा उसे छोड़ देनी पड़ेगी। मेरे पास अक्सर ऐसे रोगी आते हैं जिनका पुराना रोग है और अनिद्रा भी है तो मैं पहले निद्रा लाने वाली औषधियाँ न खोज कर मूल रोग दूर करने के लिए आवश्यक लक्षणयुक्त औषधियों का सेवन कराता हूँ। निम्नलिखित औषधियों से मेरा उद्देश्य पूरा होता है—बेल, सल्फ, लैंके, कैल्के, नक्स वाम, पल्स, रस, साइलि, हायो, चायना, आर्स, फास, सीपिया।

यदि रोगी रात को लेटने के बाद बहुत देर तक न सो सके तो मैं प्रधानतया चायना, आर्स, कैल्के, कार्बो वेज, ग्रैफा, लैके, नक्स वॉम, सल्फर, फास, सीपि और साइलि का इस्तेमाल करता हूँ। यदि रोगी दिन के समय गहरी नींद सोये तो बेल, कैल्के, चायना, लैके, हीप, सल्फ,

पल्स, फास, कार्बो वेज, ग्रैफा, कास्ट; यदि स्वाभाविक उत्तेजना से निद्रा में बाधा पड़ जाय तो कैल्के, चायना, लाइको, लैके, नक्स वाम, सीपि, प्लेटि, साइलि, सल्फ, यदि मन में अपने-आप अनेक प्रकार की चिन्ताओं के कारण नींद न आये तो कैल्के, चायना, लैके, नक्स वॉम, सल्फ, प्लेटि, पल्स, सिपि। इन औषधियों में जो-जो मेरे हाथ के रोगियों के लिए सफल सिद्ध हुई हैं उनमें से एक को मैं रोगी की अवस्था के अनुसार चुन लेता हूँ जो मूलरोग के साथ-साथ अनिद्रा को भी दूर कर देती है। यदि इससे अनिद्रा एकदम दूर न हो तो उसी के साथ वाली दूसरी औषध का प्रयोग करता हूँ। अधिकांश रोगियों में उस औषध से रोग के उपसर्ग दूर होने के साथ-साथ अनिद्रा भी दूर हो जाती है। फलस्वरूप वह गहरी नींद सोता है। पहली रात को ही उसे आराम की नींद आती है। इस कारण मैं अपने रोगियों को पहले ही बता देता हूँ कि इस औषध से अच्छी नींद आयेगी, किन्तु तीव्र ज्वर, भयकर खाँसी, तेज दर्द आदि किसी तरुण रोग के कारण अस्थायी अनिद्रा आती हो तो उसके लिए मैं औषधियों की चर्चा नहीं करता हूँ, बल्कि जहाँ बहुत दिनों तक रोग-भोग के बाद अनिद्रा स्थायी हो जाती है और जहाँ रोगी के रात को बिछौने में सोने पर भी बहुत देर तक नींद न आवे उन्हीं के लिए मेरी ऊपरलिखित औषधियाँ उपयोगी हैं। ऐसी अवस्था पुराने रोगों के कारण आती है या रोग आराम होते समय किसी तरुण रोग के कारण आती है। कहीं-कहीं स्वस्थ व्यक्तियों को भी चिन्ता के कारण अनिद्रा होती है। इस प्रकार की अवस्थाओं के लिए कॉफिया ही उत्तम औषध है। यदि रोगी मानसिक श्रम के कारण अनिद्रा से कष्ट पाता हो तो बेल, ओपि, कैमो, कैल्के, साइलि; यदि रोगी के सामने गणित के अंक दिखाई पड़ें तो सल्फ, फास, एसि; हर्ष, भय आदि के तीव्र मनोवेग के बाद अनिद्रा हो तो एकोन, कॉफि; भारी हानि, किसी की मृत्यु आदि भारी अवसादजनक घटनाओं के बाद अनिद्रा हो तो इग्ने, सल्फ, नेट्र म्यूर, अत्यन्त अधिक मानसिक परिश्रम करने के बाद वाली

अनिद्रा के लिए नक्स वॉम, लैके; यदि रक्त बहने वाली नाड़ियों की उत्तेजना से निद्रा में बाधा पड़ जाय तो एकोन, नक्स वॉम, साइलि, काफि, ब्रायो से लाभ होगा।

२—बेचैनी की नींद, भयानक स्वप्न, छाती पर दबाव का बोध (Restless sleep; nightmare; heavy dreams)—ऊपर मैंने अनिद्रा रोग के बारे में जो कुछ कहा है वह भयानक स्वप्न तथा बार-बार निद्रा भग होने की अवस्थाओं के लिए भी उपयोगी है। यदि वैसी अनिद्रा किसी पुराने रोग के साथ हो तो दोनों के लिए एक ही औषध का चुनाव होना चाहिए। केवल भयङ्कर स्वप्न होने के कारण बार-बार निद्रा भग होने की स्थिति के लिए औषध ढूँढ़ना अनावश्यक है। कुछ रोगी ऐसे भी आते हैं जिनमें अनिद्रा ही मुख्य लक्षण है। ऊपर से देखने में वे बिल्कुल अच्छे प्रतीत होते हैं। इस प्रकार का रोगी यदि शराबी हो या विलास का जीवन बिताता हो तो उसके लिए नक्स वाम अत्यन्त उपयोगी औषध है। यदि शरीर में अधिक गरमी का अनुभव हो, दिल की धड़कन होती रहे या रक्तप्रवाह तीव्र हो तो एकोन। यदि बार-बार भयानक स्वप्न हों तो सल्फर या साइलि, कभी-कभी हिपर, नेट्र कार्ब और एसिड फास, यदि रात को अधिक भोजन करने से ऐसा स्वप्न हो कि छाती पर भारी बोझ लदा है तो ब्रायो या पल्स, भयानक और चिन्ताजनक तथा घबड़ा देने वाले स्वप्न के कारण बार-बार नींद टूट जाय तो चायना, साइलि, एकोन, सल्फ कैल्के, लाइको, फास; यदि चोर का स्वप्न हो तो आर्स, साइलि, लैके, मर्क; भूत-प्रेत के स्वप्न दिखाई पड़ें और नींद खुल जाय तो सल्फ, कार्बो वेज, आर्स, पल्स, ड्रोस, साइलि। कंकाल आदि भयंकर दृश्य दिखाई पड़ने से नींद खुल जाय तो चायना, नक्स वाम, कैल्के, लाइको, साइलि, ग्रैफा, सल्फ, एकोन, पल्स, नींद के भीतर स्वप्न मे मुर्दे दिखाई पड़ें तो साइलि, आर्स, केलि कार्ब, फास, थूजा। अनेक प्रकार के अनोखे दृश्य दिखायी पड़े और नींद टूट जाय तो सल्फ, साइलि, कैल्के, कार्बो वेज, ग्रैफा, नेट्र म्यूर, केलि कार्ब और लाइको का प्रयोग करता हूँ।

२—ऊंघाई, गहरी नींद (Sowuolence, sopor)—यदि दिन में भी ऊँघाई आती रहे, चाहे वह मृगी के रोगियों, बूढ़ों या बच्चों में हो तो उस पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। अधिकाश क्षेत्रों में केवल इसी लक्षण पर औषध का निर्वाचन होना चाहिए। ऐसी परिस्थिति प्रायः मृगी रोग के पहले रहती है। ऐसी अवस्था में रोगी बहुत देर तक गहरी नींद में सोता रहता है, कभी-कभी होश भी गायब हो जाता है, हाथ-पैरों में ऐंठन होने लगती है, नाड़ी की गति बहुत धीमी हो जाती है—ये सभी लक्षण बुरे हैं। ऐसी अवस्था में ओपियम ही बहुत ही अधिक लाभकारी औषध है। यदि रोगी का चेहरा लाल हो, खर्राटे की साँस भरे, साथ में मुँह खुला रहे, आँखें इकटक और चेहरा विकृत तथा नाड़ी की गति बहुत धीमी हो जाय तो भी वही औषध उत्तम है। यदि चेहरा पीला या लाल दिखाई पड़े, नाड़ी की गति तीव्र हो, रोगी का चेहरा जगने पर भयकर दिखाई दे तो बेल। यदि हर तीसरे रोज लगातार ऊँघाई आती रहे तो लैके। बच्चों की ऊँघाई के लिए कैमो। खासकर जहाँ हाथ-पैरों में ऐंठन, ज्वर, एक गाल लाल, दूसरा पीला, ऐंठन के साथ दस्त होते रहें और कैमो इन लक्षणों को आराम न कर सके तो टार्ट एमेट या पलस, अत्यन्त उपयोगी औषधियाँ हैं। यदि दिन के समय बहुत अधिक ऊँघाई आती रहे तो सल्फ, बेल, कैल्के, एण्टि क्रूड, ब्रायो, लैके, पलस, साइलि, नक्स वाम, बेराइटा कार्ब अति उत्तम औषधियाँ हैं।

अध्याय—३३

सविराम ज्वर

(Intermittent Fever)

१—साधारण मन्तव्य (General Remark)—होमियोपैथी के नवशिक्षित इस चिकित्सा-पद्धति के चिकित्सकों ने सविराम ज्वर की चिकित्सा के बारे में जो कुछ लिखा है उसे जान लेने पर भी प्रायः अनभिज्ञ ही रह जाते हैं। उन्हें केवल इतना ही ज्ञान हो जाता है कि सविराम ज्वर किसी एक ही औषध से आराम किया जा सकता है, किन्तु वह यह नहीं जान पाता कि किस औषध से वह ज्वर आराम होगा, क्योंकि विशेष लक्षण किसी में प्रदर्शित नहीं हुआ है और जो साधारण उपसर्ग निर्देशित हैं, वे अन्य औषधियों में भी मिलते हैं। कठिनता यह उपस्थित होती है कि किसी खास रोगी के हर एक लक्षण खास औषध के अन्दर आते हैं किन्तु उसका निर्णय नहीं होता। फलस्वरूप ठीक औषध खोजने में नवचिकित्सकों को प्रायः धोखा खाना पड़ता है। बेलजियम के नामी होमियोपैथ डॉक्टर वान वोनिंगहोसन ने अपने ग्रन्थ में अनेक उपयोगी लक्षण बताये। चिकित्सा के मार्ग-दर्शन के लिए वहाँ जो कुछ कहा गया है, उन्हें नवीन चिकित्सकों को जान लेना आवश्यक है, इससे वे अपने हाथ में आये हुए रोगी के लक्षणों का मिलान कर चिकित्सा आरम्भ कर सकें। ज्वर-रोगी के शरीर में ताप, शीत, पसीना, प्यास आदि लक्षण निर्देशक और महत्त्वपूर्ण हैं। कुछ खास औषधियों में भी वे ही लक्षण मिलते हैं। इस प्रकार औषधियों के लक्षणों को समझने के लिए मैं यहाँ कुछ उपाय बताता हूँ।

२—ज्वरनाशक औषधियों की प्रथम श्रेणी
(First Series of Category of the Fever-Remedies)

इपिकाक—यदि ज्वर की चिकित्सा के लिए अन्य औषध निश्चित रूप से निर्देशित न हो तो मैं अत्यन्त आवश्यक समझ कर इपिकाक से चिकित्सा शुरू करता हूँ। मैं इसकी ३० शक्ति की ३ गोलियाँ एक चम्मच जल में गलाकर प्रयोग करता हूँ और इसी तरह ३-३ घण्टे पर इसी औषध को ठण्ढक उतर जाने के बाद प्रयोग करता हूँ। इसी प्रकार मैंने सिर्फ इस औषध का सेवन कराकर अनेक रोगियों का ज्वर आराम किया है। इस उपाय से औषधियों और रोगियों के अनेक अन्य लक्षणों पर ध्यान देने के कष्ट से बच गया। दुर्भाग्य से यदि इस अत्यन्त गुणकारी औषध इपिकाक से उपकार न मिला तो ज्वर के लक्षणों के अनुसार मुझे आर्स, आर्न, नक्स वाम, पल्स, एण्टि क्रूड या इग्ने से सहायता लेनी पड़ी। अनेक क्षेत्रों में इसकी एक-एक औषध ने जादू का-सा काम किया है। जो रोगी अधिक परिमाण में क्वीनीन खा चुका है और भीतरी शीत के कारण ज्वर नहीं घट रहा है तथा गरमी के प्रयोग से शीत बढ़ जाती है, उसके साथ छाती के अन्दर दम घुटने या दबाव डालने का-सा अनुभव होता है तथा मिचली और कै दो बार के आक्रमणों के बीच के समय होती रहती है तो इपिकाक ही उपयोगी औषध है।

नक्स वॉमिका—ज्वर रोग में इपिकाक के बाद इसी की बारी आती है, वह भी यदि दौरा होने के साथ-साथ हाथ-पैरों में मानो पक्षाघात हो गया है और ठण्डक तथा गरमी पारी-पारी से आती रहती है, जब एक भीतर से हो तो दूसरी बाहर से, साथ में रोगी शरीर का आवरण खोलने में डरता है और उसके साथ मिचली तथा सिर में चक्कर आवे, उँगलियाँ एकदम सुन्न और ठण्ढक के समय नाखून नीले हो जायँ तो नक्स वॉमिका ही यथार्थ औषध है।

आर्सेनिकम—यदि नक्स वाम की तरह शीत और गरमी मिश्रित रहे या पारी-पारी से हो, साथ में भारी दुर्वलता, मिचली, पाकाशय में दर्द, हृदय में व्याकुलता, छाती में ऐंठन, साँस में रुकावट, साथ में समूचे शरीर में दर्द, मुख में कड़ुआ स्वाद, सिरदर्द तथा ठण्ठक के साथ ये शिकायतें थोड़ी देर पहले या उसके साथ-साथ प्रकट हों तो आर्सेनिकम ही उपयोगी औषध है।

पल्सेटिला—यदि शाम को या रात्रि के समय ठण्ढक, गरमी और प्यास बहुत अधिक हो और उसके साथ पाकाशय की शिकायतें, मुख में कड़ुआ स्वाद, कफ का वमन, पित्त, अम्ल, लगातार ठण्ढक, यहाँ तक कि दो दौरों के बीच में ही तथा बिना प्यास के कफवाला पतला दस्त होने लगे तो पल्स ही सर्वोत्तम औषध है।

चायना—यदि रोगी का चेहरा कवल रोग की तरह हो, गरमी और ठण्ढक पारी-पारी से होने लगे या लम्बी अवधि के बाद वे आवें, ज्वर के उतरने के वाद भारी दुर्वलता मालूम हो और आक्रमण के पहले अनेक प्रकार के उपसर्ग दिखाई पड़े जैसे कि राक्षसी भूख, मिचली, सिरदर्द, घवड़ाहट और दिल की धड़कन, रात को वेचैनी की नींद तथा सुवह विश्रृङ्खल विचार के साथ जग पड़ना लक्षण हो तो चायना ही ठीक औषध है।

नेट्रम म्यूर—यदि ठण्ढक वहुत देर तक रहे, साथ में तेज सिरदर्द जो गरमी के समय वहुत कष्ट दे, रोगी अचेत हो जाय और दृष्टि धुँधली हो, साथ-साथ वार-वार पित्त और कफ की कै हो तो नेट्रम म्यूर ही यथार्थ औषध है।

वेरेट्रम एल्वम—ज्वर के लिए यदि उसके साथ वाहरी ठंढक रहे या ठंढक घण्टों तक रहे, साथ में चक्कर, नाराजगी, चेहरा घँसा हुआ, मिचली, वमन और उदरामय या असाध्य कोष्ठवद्धता रहे तो वेरेट्रम एल्वम ही लाभदायक औषध है।

३—ज्वरनाशक औषधियों की द्वितीय श्रेणी
(Second Series of Fever-Remedies)

आर्निका—यदि ठढक साधारणतया तड़के या दोपहर से पहले शुरू हो और उसके पहले हाथ-पैरों और अस्थियों में दर्दनाक खिंचाव रहे, बिछौना बहुत कड़ा मालूम होने से रोगी एक स्थिति में नहीं रह सकता और लगातार स्थान बदलता रहता है, खासकर पाकाशय के भीतर ठण्ढक और ठण्ढापन रहे या हाथ ठढे और सिर में भारी गरमी, उदास भाव, अपने विचारों को एकत्रित नहीं कर सकता, मुख से दुर्गन्ध निकलती है, खट्टा दुर्गन्वित पीला स्राव आदि रहे तो आर्निका ही प्रधान औषध है।

एण्टिमोनियम क्रूडम—जहाँ पल्स उपयोगी है किन्तु उससे यथेष्ट सुफल न मिले, पाकाशय में शिकायतें, डकार, मिचली, कै, मुख में कड़ुवा स्वाद, कब्जियत या उदरामय, प्यास का अभाव और गरमी के अनुभव के समय पसीना हो तो यही उत्तम औषध है।

ब्रायोनिया—जब उसी तरह की पाकाशय की शिकायतें प्रधान हों, कब्जियत या उदरामय एन्टिम की तरह दिखाई पड़े, केवल उसके साथ अधिक प्यास रहे, विशेष रूप से यदि ठण्ढक के साथ प्लीहा में सूई चुभने का-सा दर्द हो, गालों में लाली की झलक और फेफड़ों के पर्दे में चुभन के द्वारा गरमी रहे, कँपाने वाली ठण्ढक की अपेक्षा रेंगने वाली ठण्ढक अधिक हो, तेज सिरदर्द हो, साथ में गरमी की हालत में प्रलाप और बुद्धिभ्रम हो जाय या ठण्ढक के समय हाथ-पैरों में भयकर फाड़ने वाला दर्द हो तो ब्रायोनिया ही सबसे उत्तम औषध है।

सिना—खासकर यदि रोगी अपनी नाक को बहुत देर तक रगड़ता रहे (या पेट में कृमि के उपसर्ग मौजूद हों) साथ में राक्षसी भूख, ज्वर के समय पहले या बाद में वमन हो, चेहरे में पीलापन, साफ जीभ और उसके साथ कै और दस्त रहे तो सिना ही उपयोगी औषध है।

इग्नेशिया—यदि ज्वर के साथ आनुषंगिक लक्षण रहें, बाहरी गरमी के प्रयोग से ठण्ढक जाय, रोगी अल्प बातचीत करे, बेताबर रहे, मामूली कारण से चौंक उठे, गरमी केवल बाहर से अनुभूत हो और ठण्ढक के साथ प्यास रहे, किन्तु गरमी के अनुभव के समय प्यास न रहे तो इग्नेशिया ही उत्तम औषध है।

बेलाडोना—रोगी पाकाशय के गढे में बहुत तेज ठण्ढक का अनुभव करे, चाहे ठण्ढक या गरमी बहुत हो भयंकर हो या ज्वर के साथ भयंकर सिरदर्द और सिर में चक्कर रहे, प्रलाप और अचेतपन तथा मुख के कोनों या होठों पर दाने निकल आवें तो यही लाभकारी औषध है।

एकोनाइटम—यदि ठण्ढक और गरमी बहुत तेज हो, गरमी विशेष रूप से चेहरे पर अनुभूत हो, साथ में गालों पर गरमी और लाली की झलक, हृदय में कष्ट, खासकर युवक रक्ताधिक्य वाले रोगियों में और भी सिर के भीतर भयंकर दबाने वाला दर्द रहे और गर्दन के पिछले भाग में भी वैसा दर्द हो तो यही मुख्य औषध है।

हीपर सल्फ्यूरिस—यदि ज्वर के पहले या उसके साथ शीतपित्त या खाँसी, सर्दी, श्वासकष्ट और निद्रा के समय गरमी रहे।

कैल्केरिया—खासकर मोटे पेट वाले रोगियों के लिए, साथ में भीतरी गरमी और ठण्ढक, उसके साथ सिर में चक्कर और भारीपन, हाथ-पैरों में फाड़ने वाला दर्द, पीठ के निचले भाग में दर्द, कब्जियत और पतले दस्त बारी-बारी से।

रस टाक्स—यदि ज्वर के साथ शीतपित्त, शूल, उदरामय, भारी घबड़ाहट, दिल की धड़कन, कुछ अंगों में ठण्ढक और अन्य अगों में गरमी रहे।

४—ज्वर-नाशक औषधियों की तृतीय श्रेणी
(Third Series of Fever-Remedies)

कार्बो वेज—यदि दौरे के साथ दाँतों और हाथ-पैरो में फाड़ने जैसा दर्द हो, साथ में कनपटियों के भीतर दपदपाहट रहे तथा दौरे के समय

सिर में चक्कर, साथ में सिरदर्द और गालों में लाली की झलक दिखाई पड़े और दो बार के दौरे के भीतर उदर फूल जाय।

कैमोमिला—खासकर बच्चों तथा उमरदार आदमियों के रोग में यदि आक्रमण के साथ पाकाशय में शिकायतें, जीभ पर लेप, मिचली, पित्त की कै, उदरामय, पाकाशय के गढे में दबाव,चिड़चिड़ा और अशान्त स्वभाव, पसीना होते समय अल्प ठण्ढक और अल्प प्यास रहे।

कैप्सिकम—खासकर हट्टे-कट्टे, मोटे-ताजे व्यक्तियों में भयकर जलन और गरमी के अनुभव के साथ विभिन्न श्लेश्मिक झिल्लियों में दुःखदायी प्रदाह, पतले दस्त कफ और जलन वाले, प्लीहा में दर्दनाक सूजन और केवल ठण्ढक के समय प्यास किन्तु गरमी के समय नहीं।

सल्फर—यदि चमड़े पर के पुराने दानों के दब जाने के बाद ज्वर हो, साथ में रात्रि के समय गरमी, सुबह पसीना और दिल की धड़कन रहे।

फेरम—यदि ज्वर के साथ सिर की ओर प्रबल रक्त का प्रवाह चले, साथ है शिरा प्रसारण, आँखों के चारों ओर और नीचे सूजन, पाकाशय में दबाव और भरापन, न पचे हुए खाद्य का वमन, कमजोरी, दिल की धड़कन तेज बुखार, पैर के पत्तों में सूजन रहे, विशेषतया क्वीनीन के दुरुपयोग से।

कॉफिया—यदि ज्वर के साथ मानसिक उत्तेजना रहे, साथ में पसीना होते समय प्यास, उदरामय, किसी प्रकार का आवेश सहन नहीं होता।

हायोसायमस -यदि रक्ताधिक्य के कारण ठण्ढक के लिए बेल और ओपियम यथेष्ट न हों या रात्रि की सूखी खाँसी से नींद में बाधा पड़ जाय।

ओपियम—यदि ज्वर के साथ गहरी निद्रालुता रहे, साथ में खर्राटे की साँस, उसके साथ मुँह फूला और हाथ-पैरों में मरोड़ रहे।

सैबाडिला—खासकर यदि ज्वर के साथ केवल ठण्ढक रहे, साथ में राक्षसी भूख और कभी खाद्य पर घृणा पारी-पारी से रहे।

काक्यूलस—यदि दौरे के साथ रीढ में जलन, हृदयशूल तथा अन्य ऐंठन वाले आक्रमण; खासकर मृगी रोगाक्रांत स्त्रियों में, उसके साथ असाध्य कोष्ठबद्धता।

सैम्ब्यूकस—यदि प्रचुर पसीना हो और वह एक बार के दौरे के बाद दूसरी बार के दौरे तक लगातार चलता रहे।

५—विशेष निर्देशक लक्षण

(Special Indications)

१—ज्वर के उपसर्गों के अनुसार निर्देशक लक्षण (Indications in accordance with the Fever symptoms)—यदि ठण्ढक बहुत अधिक हो तो मैं वेरेट्र एल्ब, सेबाड, चायना, पल्स, इपि को उत्तम औषध समझता हूँ, किन्तु यदि ठढक का एकदम अभाव हो तो एकोन, ब्रायो, आर्स, कैमो, कैप्स; यदि ठण्ढक और गरमी पारी-पारी से हो तो आर्स, चायना, नक्स वाम, कैल्के, यदि दोनों एक साथ मौजूद रहें तो एकोन, आर्स, नक्स वाम, पल्स, कैमो, इग्ने, बाहर ठण्ढक और भीतर गर्मी कैल्के, वेरेट्र एल्ब, पल्स, चायना, आर्न, भीतर ठण्ढक बाहर गरमी इग्ने, नक्स वाम, एकोन, बेल, आर्स; यदि गरमी सबसे अधिक हो तो बेल, एकोन, ब्रायो; यदि वह एकदम गायब हो आर्स, वेरेट्र एल्ब, सेबाड; यदि उसके साथ पसीना रहे, एण्डि क्रूड, यदि पसीना केवल गरमी के बहुत समय बाद निकले आर्स, यदि पसीना एकदम न रहे आर्स, सिना, इपि; साथ में प्रचुर पसीना सैम्ब्यु, वेरेट्र एल्ब, पल्स, ब्रायो, रस, कार्बो वेज, यदि पसीना और ठण्ढक एक ही समय रहे, सल्फ, लाइको, पल्स, सैबाड, यदि बिना गरमी के ठण्ढक के तुरन्त बाद पसीना निकले रस, लाइको, वेरेट्र एल्ब, ब्रायो, कैप्स, सैबाड, यदि पसीने से

खट्टी गन्ध निकले आर्न, आर्स, रस, कार्बो वेज, वेरेट्र एल्ब, लाइको, यदि पसीना ठण्ढा हो तो वेरेट्र एल्ब, चायना, आर्स, इपि, यदि चिपचिपा हो तो कैमो, आर्स, वेरेट्र एल्ब; पुनः यदि गरमी या ठण्ढक के पहले कई रोग रहें आर्स, चायना, इपि, नेट्र म्यूर, रस, यदि ठण्ढक वमन के साथ हो सिना, इपि; पृष्ठ-वेदना के साथ चायना, हाथ-पैरों में दर्द के साथ आर्स, आर्न। हाथ में किसी-किसी अंश में कुछ नीलापन आर्स, नक्स वाम, यदि ठण्ढक पाकाशय के गढ़े से शुरू हो आर्न, वे॰ र; पीठ से चायना, रस, यदि ठण्ढक बाहरी गरमी से बढ़े इपि; यदि बाहरी गरमी से घटे, इग्ने; यदि रोगी उघाड़ा होते ही ठण्ढक का बोध करे और पसीना हो नक्स वाम, यदि आक्रमण बहुत संक्षिप्त हो इपि, सैवाइ पल्स, सिना।

२—कारणों और मौजूदा हालतों के अनुसार निर्देशक लक्षण (Indications according to the causes and existing Circumstances)—क्विनीन के दुरुपयोग से उत्पन्न अल्प विराम ज्वर इपि, आर्स, फेरम, नेट्र म्यूर, पल्स, कार्बो वेज, वेरेट्र एल्ब आर्न, दलदलदार स्थानों में चायना, आर्स, इपि, स्तन जमा होने से ठण्ढक के लिए वेल, हायोस, आपि, वेरेट्र पल्ब, (जेल्स और क्विनाइन भी—हैम्पल)। वसन्त ऋतु के अल्प विराम ज्वर के लिए लैके, पल्स, सबाइ; बच्चों के लिए कैमो, एकान, इपि, हट्टे कट्टे कफ प्रकृति वाले बच्चों के लिए केल्स, कैल्के, नेट्र म्यूर, रक्तपूर्ण हट्टे-कट्टे मनुष्यों के लिए एकान, नक्स वाम, दुर्बल रक्तहीन, हरित्पांडु रोग वालों को फेरम, चायना, पल्स, शोथ की अवस्था के साथ फेरम, चायना, आर्स; गण्डमाला वाले रोग कल्के, वेल, नेट्र म्यूर, सल्फ; पेट में कृमि के साथ सिना, मर्क, शाकावेग के बाद कैमो, ब्रायो, यदि खाने पीने के दोष से रोग का पुनराक्रमण हो तो पल्स, इपि, एण्ट क्रूड, नक्स वाम, यदि शाम को और दोपहर के बाद कष्ट बढ़े तो पल्स, यदि गति के आनुषंगिक रोग वृद्धि प्राप्त हों तो आर्स, ब्रायो।

३—आनुषंगिक लक्षणों के अनुसार निर्देशन (Indications according to the accessory symptoms)—यदि सभी ज्ञानेन्द्रियाँ स्पर्शकातर हों तो काफि, नक्स वाम, एकोन; शान्त और मौन इग्ने; चिड़चिड़ा ब्रायो, नक्स वाम; प्रलाप बकने वाला बेल, बेहोश बेल, हायोस, ओपि, वेरेट्र एल्ब; गहरी नींद ओपि, वेरेट्र एल्ब। सिर की ओर खून का प्रवाह – बेल, फेरम, आर्न, ओपि; भयकर सिरदर्द बेल, हायोस, आर्न, नेट्र म्यूर, नक्स वाम, पल्स। कँवल रोग वाला चेहरा—चायना, नक्स वाम, वेरेट्र एल्ब, आर्स, नेट्र म्यूर, फेरम, पल्स, आर्न; फूला हुआ चेहरा फेरम, सिना, इपि, आर्स। पीला चेहरा—सिना, इपि, फेरम, पल्स, नेट्र म्यूर। पाकाशय की शिकायतें (मिचली, कै आदि), एण्टि क्रूड, इपि, सिना, नक्स वाम, वेरेट्र एल्ब, नेट्र म्यूर, फेरम। यदि जीभ साफ हो—इपि, सिना। राक्षसी भूख—चायना, सिना। पित्त के उपसर्ग—कैमो, नक्स वाम, पल्स; प्यास लगातार नेट्र म्यूर, वेरेट्र एल्ब। ठण्डक के पहले प्यास आर्न, चायना, पल्स, नक्स वाम; ठण्डक के अनुभव के समय, कैल्के, कैप्स, नेट्र म्यूर, आर्स, ब्रायो, कार्बो वेज, कैमो, सिना, इग्ने, आर्न, नक्स वाम, रस, वेरेट्र एल्ब; गरमी के अनुभव के समय—आर्स, एकोन, इपि, ब्रायो, सल्फ। गरमी के बाद—चायना, नक्स वाम, पल्स। पसीना होते समय कैमो, आर्स, चायना, नेट्र म्यूर; पसीने के बाद—लाइको, नक्स वाम, सेबाइ। प्यास का अभाव हर समय—पल्स, इपि, एण्टि क्रूड। गरमी के पूर्व—इग्ने, चायना, कैप्स, कार्बो वेज, आर्स। पाकाशय के गढ़े में तथा पाकाशय के भीतर दर्द—नक्स वाम, कैमो, कार्बो वेज, रस, काक्कस, यकृत की शिकायत, सूजन, कड़ापन आदि—आर्स, चायना, फेरम, नक्स वाम; प्लीहा में वृद्धि—आर्स, चायना, फेरम, कैप्स, कैमो, नक्स वाम, कार्बो वेज, आर्न, कैल्के, वेरेट्र एल्ब, बेल, प्लीहा के भीतर सूई चुभने का-सा दर्द आर्न, ब्रायो कार्बो वेज; कब्जियत—नक्स वाम, वेरेट्र एल्ब, ब्रायो, कैल्के, लाइको, नेट्र-

म्यूर; उदरामय—आर्स, वेरेट्र एल्ब, इपि, रस, कैमो, कैप्स, चायना, पल्स; खाँसी—हायोस, पल्स, ब्रायो, एकोन, नक्स वाम; स्वरभंग—कार्बो वेज; छाती पर दबाव—आर्स, इपि, पल्स; दिल की धड़कन—सल्फ, मर्क, । फेफड़ों के पर्दे में सूई चुभने का-सा दर्द—एकोन, ब्रायो; सिरदर्द—पीठ के निचले भाग में दर्द—नक्स वाम, कैल्के, हाथ-पैरों में दर्द—आर्स, आर्न, चायना, लाइको, नेट्र म्यूर, रस, वेरेट्र एल्ब। अवसाद और कमजोरी—आर्स, वेरेट्र एल्ब, चायना, इपि, फेरम, शोथ की अवस्था—फेरम, आर्स, चायना, ऐंठन वाले उपसर्ग—इग्ने, कावकस, हाथ-पैरों में लँगड़ापन—नक्स वाम, वेरेट्र एल्ब, मूर्च्छा—वेरेट्र एल्ब, इपि, होठों पर फुन्सियाँ -आर्स, वेल, हीपर, नेट्र म्यूर, वेरेट्र एल्ब, शीतपित्त—रस, आर्स, हिपर।

अध्याय—३४

सन्निपात और टायफायड ज्वर

(Typhus, Typhoid Fevers)

१—निदान सम्बन्धी मन्तव्य

(Diagnostic Remarks)

१—टायफायड ज्वर का साधारण प्रकृति (General nature of Typhoid Fevers)—यद्यपि सर्वप्रथम डॉ० अन्द्रल ने इस प्रकार के ज्वरा को पहिचानने के लिए अनेक नामों से श्रेणी-विभाग किया है, जैसे कि फ्रेविस नार्वोसो वर्सेटिरिस, टाइफोसा, सेरिब्रेलिस, एब्डोमिनैलिस, प्युट्रिडा, हासपिटल फीवर आदि। किन्तु आधुनिक चिकित्सा-शास्त्रियों ने उन विभिन्न ज्वरों का नाम टाइफस (सन्निपात) रखा है, तथापि मैंने पेरिस नगरी में ३० वर्षों तक चिकित्सा करके देखा है कि जब सन्निपात ज्वर शुरू होता है तो मस्तिष्क में अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं। उदर में भी उपसर्ग प्रकट होने लगते हैं और अन्त में सरलान्त्र के भीतर जलन होती है। इस प्रकार के लक्षणों को देखकर रोग का पूर्ण चित्र निर्णीत होता है। अत्यन्त कठिन अवस्था में ऊपरलिखित तीनों लक्षण एक साथ प्रकट होते दिखाई पड़ते हैं। महामारा के समय ऐसा ही देखा जाता है, किन्तु उसमें किसी रोगी के भीतर एक या दो लक्षण और अन्य रोगी के भीतर तीनों लक्षण दिखाई पड़ते हैं—जैसे कि कालरा रोग में एक रोगी के हाथ-पैरों में खिंचाव होता है। किसी के शरीर में आक्सिजन की कमी होने से शरीर नीला पड़ जाता है। अन्य किसी रोगी में कै, दस्त ही प्रधान लक्षण रहते हैं। यदि वैसे रोगी की चिकित्सा प्रारम्भ से अच्छी तरह न हो तो सारे लक्षण एक-एक करके प्रकट होते हैं। सन्निपात ज्वर में भी ऐसी ही परि-

स्थिति होती है। इसमें शुरू में मस्तिष्क के भीतर उत्तेजना होती है। यदि तुरन्त औषध का प्रयोग किया जाय तो वह घट जाती है। जहाँ मस्तिष्क-सम्बन्धी उपसर्ग प्रबल होते हैं, वहाँ उस अवस्था को सन्निपात ज्वर कहते हैं। इस रोग के व्यापक रूप से फैल जाने पर कभी कभी खास-खास रोगियों में मस्तिष्क के उपसर्गों के साथ अन्य लक्षण नहीं दिखाई पड़ते और मामूली चिकित्सा से २-३ सप्ताहों के अन्दर रोगी अच्छा हो जाता है। यदि आरम्भ से होमियोपैथिक औषधों के द्वारा चिकित्सा हो तो कुछ दिनों के भीतर ही वह रोग शान्त हो जाता है। इसे कोई पृथक् रोग नहीं समझना चाहिए, क्योंकि मस्तिष्क के विकार से ही शरीर में ताप बढ जाता है किन्तु यदि इसके उलटे रोग मस्तिष्क से शुरू होकर मेरुदण्ड में फैल जाय तो वह थोड़े दिनों में आँतों को प्रभावित कर डालता है फलस्वरूप वह आन्त्रज्वर के रूप में परिणत हो जाता है। उस हालत में मस्तिष्क के उपसर्ग नहीं घटते। रोगी अपना कष्ट व्यक्त करता है, किन्तु उसमें बोलने की शक्ति नहीं रहती। जब आँतों में रोग फैल जाय तो उसे आराम करना कठिन हो जाता है, किन्तु जब यह रोग महामारी के रूप में भयकर हो जाता है तभी वह आँतों पर प्रभाव डालता है। कठिन अवस्था में मल-मूत्र में भी सड़ावट आ जाती है और चेहरे पर नीले रग के छाले बनते हैं, चमड़े पर गिल्टियाँ दिखाई पड़ने लगती हैं। मल से सड़े मुर्दे की-सी बदबू निकलती है। नया चिकित्सक इस अवस्था को देखकर समझता है कि सड़न वाला ज्वर हुआ है, किन्तु यह सन्निपात के अतिरिक्त अन्य कोई रोग नहीं है तो इसी प्रकार इस रोग के लक्षणों को अच्छी तरह समझकर उपयोगी औषध देने से रोगी की रोग वृद्धि रुक जाती है। यदि आँतों के बदले यह रोग फेफड़ों पर आक्रमण करे तो उसे फेफड़ों का सन्निपात कहते हैं। साधारण न्यूमोनिया से यह भिन्न रोग है किन्तु जान लेना चाहिए कि न्यूमोनिया वाले सन्निपात में भी मस्तिष्क आक्रान्त होता है और वहाँ अनेक प्रकार के कष्ट होते रहते हैं। यह रोग केवल मस्तिष्क और फेफड़ों तक ही सीमित रहता है। मैंने अपने चिकित्सा व्यवसाय में ऐसे अनेक रोगी देखे हैं जिनमें सन्निपात ज्वर के

समय मस्तिष्क के भीतर उत्तेजना के साथ आँतों में भी सन्निपात के लक्षण दिखाई पड़े। कुछ लोग इसे श्लेष्मिक ज्वर कहते हैं। आरम्भ में हल्का रहने पर भी बाद में यह आन्त्र ज्वर का रूप ग्रहण कर लेता है। इस रोग के लक्षणों के विषय में विचार करने पर मालूम होता है कि यदि एकाएक दुर्वलता आ जाय, अन्य कष्टों की अपेक्षा वही अधिक प्रतीत हो और रोगी हर समय विछौने में पड़ा रहे, दुर्वलता के अतिरिक्त अन्य कोई शिकायत न हो, इन्द्रियाँ शिथिल हो जायँ, नाड़ी उछलने वाली और तेज हो, कदाचित् वह गति मृदु भी होती है, छाती के भीतर और आँतों में जलन रहे, छोटी आँत में गड़गड़ाहट का शब्द सुनाई पड़े, प्लीहा भी कुछ वर्धित हो तो उसे टायफायड समझ लेना उचित है। इस रोग के शुरू में छोटी आँत की गाँठों के भीतर सूजन नहीं होती, किन्तु कुछ फ्रांसीसी निदान शास्त्रियों तथा कुछ जर्मन चिकित्सकों के मतानुसार सन्निपात ज्वर में असली रूप में गाँठों के भीतर सूजन आ आती है। मैं इसे मानने के लिए तैयार नहीं हूँ। यदि किसी चिकित्सक ने शिरा काटने का परामर्श दिया हो अथवा अनजाने होमियोपैथ ने विना विचारे एकोन और ब्रायोनिया से चिकित्सा शुरू की हो तो रोगी विपत्ति में पड़ जायगा। फलस्वरूप आँतों में सूजन आ जायगी और रोगी मरणासन्न हो जायगा।

२—रोग की असाधारण गतिविधि (General course of the disease)—टायफायड ज्वर की तरह अन्य कोई रोग ऐसे भयंकर वेग से नहीं बढ़ता। सुबह और शाम के बीच में यह रोग बहुत ही कठिन अवस्था में परिणत हो जाता है, किन्तु ऐसी अवस्था अल्पकाल स्थायी हो सकती है। वे अवस्थायें इस प्रकार हैं—(१) प्रारम्भिक अवस्था, (२) मस्तिष्क में प्रदाह तथा मस्तिष्क के लक्षणों की प्रधानता, (३) शरीर की कमजोरी और उदर के आसन्न रोग, (४) पूर्ण वर्धित अवस्था तथा कठिन परिवर्तन का प्रथम विकास। यदि ज्वर साधारण ढग से चलता हो तो चारों अवस्थायें, एक-एक सप्ताह तक रहती हैं। बाहरी विशेष लक्षणों से प्राथमिक अवस्था पहचानी जाती है। रोगी को पहले ही कमजोरी और थकावट का अनुभव होता है।

उसमें किसी काम के करने का उत्साह नहीं रहता और रोग की अवस्था हल्की होने पर भी उसे मृत्यु का डर होता है। भूख नहीं रहती, पेट पर मामूली दबाव से भी कष्ट होता है। कदाचित् कमर में भी दर्द होता है। हाथ-पैरों में ऐंठन होती है, सिर में चक्कर भी आता है। पेरिस के समान ठढे स्थान में पतले दस्त भी होते हैं। सिरदर्द के साथ नाड़ी तेज हो जाती है। यदि अन्य लक्षणों के साथ ऊपरलिखित तीन अन्तिम अवस्थाएँ दिखाई पड़ें तो मैं वहाँ सन्निपात ज्वर का निश्चय कर लेता हूँ। प्रत्यक्ष देखा गया है कि सन्निपात ज्वर शुरू होते ही नाड़ी की तेजी को छोड़ कर अन्तिम तीनों उपसर्ग प्रकट हो जाते हैं और रोग-भोग के ८ वें दिन ज्वर बहुत अधिक हो जाता है। ताप का ह्रास होने पर २४ या ४८ घण्टों तक रोगी को कुछ आराम मिलता है। ठढक के साथ यह ज्वर आरम्भ होता है या पीठ की तरफ से ठढक धीरे-धीरे बढ़ती है और रोगी का शरीर काँपने लगता है। कुछ समय के बाद गरमी चढ़ती है, साथ-साथ जलन भी। उसके बाद कमजोरी के कारण रोगी बिछौने पर लेट जाता है। उसे प्यास भी अधिक लगती है। नाड़ी भरी और उछलने वाली, यहाँ तक कि उसकी गति १ मिनट में १२० बार होती है। पेशाब का परिमाण घट जाता है, किन्तु जितना निकलता है उसका रंग लाल और भूरा है। यह ज्वर सन्ध्या समय बहुत बढ़ जाता है, उस समय रोगी के सिर में दर्द और दबाव का कष्ट होने लगता है, सिर में चक्कर भी आता है। रोगी को मानसिक परिश्रम करने की इच्छा नहीं होती। ज्वर की तेजी से मूर्च्छा भी आ जाती है, कानों में भनभनाहट का शब्द होता है, ज्वर के साथ साथ खाँसी आती है और कुछ बलगम भी निकलता है। छाती के अन्दर वेदना मालूम होती है, उसके साथ श्वासकष्ट भी। किसी-किसी में गले की कौड़ियों और फेफड़ों में सूजन आ जाती है। कभी तो उसके शरीर पर छोटी छोटी सफेद फुन्सियाँ निकल आती हैं। उदर के चमड़े पर कुछ काली-काली रेखायें दिखाई पड़ती हैं। दानों के निकलने के साथ-साथ नाक से खून गिरता है, कर्णमूल ग्रन्थियों में सूजन आ जाती है। छठें या सातवें दिन रोगी कुछ आराम पाता है,

सातवें दिन से चौदहवें दिन रोगी को कुछ आराम मिलता है, किन्तु आठवें दिन रात को ज्वर कुछ बढ़ जाता है। फलस्वरूप चमड़ा सूखा और कड़ा हो जाता है। गरमी अधिक मालूम होती है। इस कारण रोगी को अनुभव होता है कि मानो उसके शरीर पर जहरीले कीड़े डक मार रहे हैं या कोई दाँतों से काट रहा है। उदर पर काली रेखायें पहले न उभड़ी हों तो इस अवस्था में वे अवश्य ही निकल आती हैं, ऐसी अवस्था में जीभ सूख जाती है। फिर कभी उस पर भूरे रंग का कफ जमा हो जाता है। दाँतों और नाक में भी कफ जमा होता है, उदर में तनाव होता है, सड़े मुर्दे की तरह दुर्गन्ध वाला मल निकलता है, इस अवस्था में आँतों के उपसर्ग बढ़ जाते हैं। आँतों में अधिकतर जलन होने के कारण प्रलाप होने लगता है, ऐसी अवस्था में रोगी बेहोश सा पड़ा रहता है। ये लक्षण १४ वें दिन तक बढ़ते रहते हैं, कदाचित् दसवें या ग्यारहवें दिन कुछ हानिकारक उपसर्ग दिखाई पड़ते हैं और कुछ समय के बाद वे भयंकर हो जाते हैं। सन्निपात ज्वर बहुत बढ़ जाने पर १३ वें या १४ वें दिन सबसे अधिक खतरनाक अवस्था होती है। यदि रोगी इस अवस्था में भी जीवित रहे तो रोग की चौथी अवस्था होती है। आँतों में भी आक्रमण होता है। यही रोग की चरम अवस्था है, यदि इस समय भी रोगी जीवित रहे तो इसी समय आकस्मिक सन्यास रोग से हृदय की गति रुक जाने से वह मर जाता है। यदि वैसी अवस्था में भी रोगी जीवित रह गया तो रोग उग्र रूप धारण कर लेता है। वह बेहोश-सा पड़ा रहता है। पेशाब और पाखाना अपने-आप निकलते रहते हैं। वह हवा में कुछ पकड़ने के लिए टटोलता रहता है। पेशियों में ऐंठन होने लगता है, शरीर में भी वैसी अवस्था होती है। प्रायः देखा गया है कि सन्निपात ज्वर की उत्कट अवस्था होने से रोगी २१ वें या २८ वें दिन मर जाता है। कभी-कभी दिखाई पड़ा कि २१ वें दिन ज्वर पुनः बढ़ गया है। यदि उत्तम चिकित्सा न हो या खाने-पीने की बदपरहेजी के कारण ज्वर आने लगता है उस समय प्रायः रोगी प्रलाप बकता है और दस्त भी आता है, नहीं तो ३५ वें से २५ वें दिन तक भी वह अवस्था नहीं आती। पथ्य

और चिकित्सा में गलती न होने पर भी २१ वें और २८ वें दिन विपत्ति होने की सम्भावना है, क्योंकि इस समय पतला दस्त होने लगे तो रोगी को बचाना कठिन है। इस प्रकार सन्निपात ज्वर के आरम्भ होने के दिन से ज्वर चौथे सप्ताह तक चलता रहता है और यदि अन्य उपसर्ग प्रकट हों तो ५ या ६ सप्ताहों तक भी रोगी जीवित रह सकता है। यदि १३ वें या १४ वें दिन तक लक्षणों के सुधार की सम्भावना न हो तो रोगी २१ वें या २८ वें दिन तक जीवित रहे और यदि उसे इस समय किननीन की बड़ी मात्रायें दी गयी हों या शिरा फाट कर खून निकाल लिया गया हो तो ईश्वर भी उसे नहीं बचा सकते। ऐसी अन्तिम अवस्था में जो-जो रोगी मेरे पास आये, उनके प्राणों की रक्षा मैं नहीं कर सका।

३—सन्निपात ज्वर के उपसर्ग (Complications of Typhus)—सन्निपात ज्वर होते समय स्वाभाविक उपसर्गों के अतिरिक्त अन्य अनेक प्रकार के उपसर्ग भी दिखाई पड़ते हैं जिनका मूल रोग से कोई सम्बन्ध नहीं प्रतीत होता जैसे कि नक्सीर, सिर में चक्कर, मूर्च्छा आदि, जो ज्वर आने के साथ ही साथ बड़े वेग से प्रकट होते हैं, जिन्हें कुछ चिकित्सक बहुत ही बुरा समझते हैं, किन्तु मैं इन उपसर्गों को देखकर कभी नहीं घबड़ाता। इस रोग की प्राथमिक अवस्था बीत जाने पर ज्वर बहुत अधिक मात्रा में बढ़ जाता है। गरमी के बाद शीतलावस्था आ जाती है, रोगी बेहोश हो जाता है और मल-मूत्र अपने-आप निकल आते हैं। इन लक्षणों को मैं बहुत ही अशुद्ध चिह्न समझता हूँ। १८५३ ई० में जब यह रोग महामारी के रूप में फैला था तब मेरे पास तीन रोगी चिकित्सा के लिए आये। शुरू में आर्निका देने से आश्चर्यकारक फल मिला। रोगी होश में आये, अपने-आप मल-मूत्र निकलना रुक गया। उसके बाद प्रलाप होने लगा और अनेक प्रकार के दुःखदायी लक्षण प्रकट हुए, किसी भी औषध से उन्हें रोका नहीं जा सका। रोग के १४ वें दिन वे तीनों मर गये। फेफड़ों और यकृत की पादाहिक अवस्था में मैं डरता नहीं हूँ, जो शुरू में ही प्रकट होती है। मलद्वार से रक्त बहना शुरू हो गया, अन्य उपसर्ग प्रतिकूल मालूम

हुए। फिर एकाएक रोगी अत्यन्त अवसन्न हो गया। शीघ्र ही पसीना होने लगा। चमड़े पर बैंगनी ंग की छोटी छोटी फुन्सियाँ निकल आयीं, इन लक्षणों को मैंने अनुकूल समझा। दूसरी ओर लाल-लाल दाने चमड़े पर निकल आये, विस ँका-सा प्रदाह भी होने लगा। मुझे ये सबसे खराब लक्षण मालूम हुए। दानों के निकल आने के बाद कर्णमूल प्रदाह होने लगा, सड़े घाव भी जहाँ-तहाँ दिखाई पडे। बहुत ही कठिन परिस्थिति उत्पन्न हुई। स्वाभाविक रूप से मल निकलने के बाद ही पतले दस्त शुरू हुए। इसे भी मैं बुरा लक्षण समझता हूँ जिससे आँतों के गुच्छों में घाव हो जाता है, अन्य सभी लक्षणों से इस लक्षण को मैं बहुत ही बुरा समझता हूँ। दूसरी ओर यदि मल कीचड़-सा हो और निकल जाने से आराम मिले और वह मलत्याग की कठिन अवस्था में हो तो मैं उसे बहुत अंशों में मानसिक रोग कहता हूँ। इस अवस्था के पहले पतले दस्त की अपेक्षा कब्जियत अच्छी है। कब्जियत वाले सभी रोगी मेरे हाथ से बच गये हैं, कदाचित् एक-दो बार दिन में मलत्याग होने पर भी रोगियों की रक्षा हुई है, किन्तु यदि मल में सड़े मुर्दे की गन्ध आवे तो उसे बचाना कठिन है। साधारणतया अनुकूल लक्षण इस प्रकार हैं—रोग आरम्भ होने के चौथे, नवें, ग्यारहवें या सोलहवें दिन लगातार दानों का निकल आना। इन दिनों की गिनती ज्वर के शुरू से समझनी चाहिए। सुबह ज्वर नहीं रहता, जीभ गीली, नाक से सर्दी का निकलना। दूसरी ओर सन्निपात ज्वर की वर्धित अवस्था में भी दाने नहीं निकलते या पेट पर काली रेखायें भी नहीं दिखाई पड़तीं। चेहरा पीला या नीला-सा, नाक या मलद्वार से अधिक रक्तस्राव, साथ में मुख के अन्दर घाव, सूखी और भूरी जीभ, मसूड़े से भूरे रंग का रस निकलता है और नाक के भीतर सूखी पपड़ियाँ, यहाँ तक कि चमड़े पर काले नीले दाग, हवा में पकड़ना, पेशी कम्प, नाक और कानों में नीला रङ्ग। इस प्रकार की अवस्थाओं में रोगी की चिकित्सा करके सफल होना बड़े बड़े चिकित्सकों के लिए भी कठिन काम है। किन्तु मैं भूरी और सूखी जीभ, नाक में तथा होठों पर सूखी पपड़ियाँ देखकर नही घबड़ाता, यदि रोगी

के शरीर का बल घट न गया हो और अन्य कोई खराब लक्षण भी न हो तो चिकित्सा द्वारा उसे आराम करना मेरे लिए मुश्किल नहीं है। गत वर्ष ऐसा ही एक रोगी मेरे पास आया था। जर्मनी से वह पेरिस में एक नुमाइश देखने आया था। वह एक नवयुवक था। सर्दी लगने से उसे एकाएक सन्निपात ज्वर हो गया। शुरू से ही वह मेरी चिकित्सा के अन्दर था। ज्वर का भयंकर आक्रमण होते हुए भी उसके अन्य लक्षण अच्छे थे। ज्वर अधिक होने पर भी वह प्रलाप नहीं बकता था, नाड़ी की गति १२० से घट कर ८० हो गयी। १५ दिनों के बाद एक दिन सुबह उस रोगी का बाप मोटर में सवार होकर मेरे घर आया और तुरन्त चलकर रोगी को देखने के लिए प्रार्थना करने लगा। उसने बताया कि गत दिन रोगी की अवस्था अच्छी थी, किन्तु आज उसकी बोली बन्द थी। मैंने जाकर देखा कि मेरा रोगी अचेत पड़ा हुआ है। उसकी जीभ लकड़ी की तरह कड़ी और सूखी प्रतीत हुई, उसका रङ्ग भी भूरा था। दाँतों और मसूड़ों के ऊपर मैल जमा थी और नाक के भीतर सूखी पपड़ियाँ थीं। मैंने अवस्थाओं का विचार कर उसी समय रस टाक्स ३० शक्ति की २ गोलियों का घोल बना कर कह दिया कि १-१ घण्टे के अन्तर पर उसे पिलाया जाय। उसी दिन शाम को जब मैं उसे देखने गया तो कफ नरम हो चुका था। रोगी धीरे-धीरे बोल रहा था। क्योंकि उसकी चेतना लौट आयी थी। इसी औषध से ३ दिनों के अन्दर सारे लक्षण समाप्त हो गये।

सन्निपात ज्वर की चिकित्सा करते हुए मेरे सामने अनेक कठिन अवस्थायें तथा उपसर्ग उपस्थित हुए कि उनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। विचारने की बात है कि रोगी का कौन उपसर्ग किस समय भयङ्कर हो जायगा, इसे देखते रहना और उसी के अनुसार उपयोगी औषध देते रहना, इससे एक-एक उपसर्ग घट जाने पर रोगी अच्छा हो जायगा। शाम को रोगी की हालत बहुत अच्छी थी, रात भर में वह भयंकर हो गयी, सुबह उपसर्गों को देखकर डाक्टर आश्चर्यचकित हो गया। रोग बहुत ही चतुर

होते हैं और भीतर ही भीतर चोर-चाल से चलते हैं। यदि सन्निपात के रोगी की चिकित्सा हमारी होमिओपैथी के अनुसार शुरू से हो तो उसकी हालत बिगड़ने नहीं पाती। अवस्था कुछ बिगड़ जाने पर भी ऐसे रोगी हमारे हाथ में आते हैं इसी कारण हमारी चिकित्सा से भी रोगी के आराम होने में कुछ अधिक समय लगता है। यदि अनुभवी चिकित्सक के हाथ में रहें तो अधिकांश को बचा लिया जा सकता है। पथ्य भी समुचित रहना चाहिए।

२—सन्निपात ज्वर की चिकित्सा

(Treatment of the Typhus)

१—साधारण मन्तव्य (General Remark)—डॉ० रिकर्ट ने अपने 'अनुभूत चिकित्सा' नामक ग्रन्थ के ६७६ पृष्ठ पर इस ज्वर के सम्बन्ध में कुछ अनुभवी चिकित्सकों के मतों का उल्लेख किया है। वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। उस पुस्तक में डॉ० बोक आदि कुछ लोगों के ऐसे-ऐसे अभिमत लिखे गये हैं जिन पर मैं विश्वास नहीं कर सकता और न आगे के नवीन चिकित्सकों के लिए सिफारिश ही कर सकता हूँ। विभिन्न औषधियों के बारी-बारी से सेवन करने की व्यवस्था देना अनुचित है। यदि उनसे रोगी को आराम न मिला तो यह समझना कठिन होगा कि कौन औषध असफल हो गयी है। फलस्वरूप अनुभवरहित चिकित्सक दोनों औषधियों का
असफल हो गयी है। फलस्वरूप अनुभवरहित चिकित्सक दोनों औषधियों का
परित्याग कर देगा, किन्तु ऐसा सम्भव है कि उसमें से कोई एक औषध रोगी को आराम करने में सफल हो सकती। मैंने ऊपर जिस जर्मन युवक का उदाहरण दिया है यदि उसके लिए मैंने रस ३० का प्रयोग अन्य औषधों के साथ पारी-पारी से किया होता तो वह कभी आराम न होता। डॉ० हैनिमैन ने सन्निपात ज्वर के लिए रस और ब्रायो बारी-बारी से देने का उपदेश दिया है। डॉ० बनिंग होसेन ने भी उन्हीं के अनुसार एकाधिक औषधियों का प्रयोग करने की बात लिखी है, किन्तु दोनों के मतों में अनेक भेद हैं। डॉ० हैनिमैन का आशय यह नहीं था कि दोनों औषधियों

को एक ही समय बारी बारी से दिया जाय। यथार्थ में डॉ० हैनिमैन का उद्देश्य यह था कि ब्रायो देते रह कर कुछ दिनों तक उसका फल देखते रहना चाहिए। यदि उससे कुछ उपकार हो, किन्तु दो-एक उपसर्ग घटना नहीं चाहते तो उनको सुधारने के लिए रस का व्यवहार किया जाना चाहिए। उन्हीं के अनुसार मैंने भी अनेक रोगियों पर बारी-बारी से उन दोनों औषधियों का प्रयोग किया है। एक औषध देकर १२ घण्टे या कभी-कभी २४ घण्टे देखकर दूसरी औषध की चिन्ता करन चाहिए। ऊपरलिखित जर्मन युवक को रस ने १२ घण्टे के अन्दर आराम न दिया हो तो मैं उसके लिए आर्सेनिक की व्यवस्था देता। यदि वह भी सफल न होता और रोगी प्रलाप बकता तो उसके लिए उपयोगी औषध रस देता। इसी नियम से मैं भी लम्बी अवधि के बाद बारी-बारी से एकाधिक औषधों की व्यवस्था देता हूँ। बचे-खुचे उपसर्गों के लिए मैं प्रायः डॉ० गोलन द्वारा निर्देशित पद्धति के अनुसार काम करता हूँ। जब मैं देखता कि प्राथमिक प्रदाहजनक उपसर्ग घट चुके हैं, किन्तु मूल रोग ज्यों का त्यों बना रहा तथा मेरी पहली औषध काम नहीं देती तो १२ घण्टे बीत जाने पर ही दूसरी औषध देता हूँ। ऊपरलिखित वृद्ध चिकित्सक ने सोरा विष को दूर करने के लिए औषधयों के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है उसे मैं मानता हूँ। मेरे हाथ में सन्निपात ज्वर के अनेक रोगी आये हैं (किसी-किसी में अति कठिन उसपर्ग भी थे। आन्त्रिक ज्वर की भयकर अवस्था में भी मैं ब्रायो, रस, नक्स वाम, बेल, लाइको, कार्बो वेज, फास आस, कैल्के, नाइट एसि और सल्फर के सिवा अन्य किसी औषध का प्रयोग नहीं करता। बिना समझे-बूझे ऐसी अवस्था में क्रोकस या रूटा न देकर लक्षणों के अनुसार चुनी हुई औषध का प्रयोग करना अच्छा है। मेरे एक युवक सहयोगी ने सन्निपात ज्वर के अपने अनेक रोगियों पर प्रयोग करके कुछ फल न पाकर इन औषधियों को छोड़ दिया। डॉ० पी० सा० मेअर ने औषध सेवन के साथ-साथ रोगी के लिए खुला हवा की भी सिफारिश की है। मैं भी उसी नियम से काम करता हूँ। ज्यों ही रोगी बिछौना छोड़ कर उठने

पर मैं ब्रायो देकर उन्हें दूर कर देता हूँ। यदि खट्टी डकारें निकलें तो मैं नक्स वाम देता हूँ। पतले दस्त रहने पर रस देकर उसका सुधार करता हूँ। यदि रस से वह न रुके बल्कि उसके साथ खट्टी डकारें निकलें तो मैं पल्स या फास देता हूँ। अक्सर ३० वीं शक्ति की २ गोलियाँ जीभ पर डाल देने की व्यवस्था देता हूँ जहाँ २४ घण्टों के भीतर पतले दस्त या सिरदर्द न रुक जायँ वहाँ मैं दूसरी दवा देता हूँ (बैप्टीशिया ऐसी अवस्था में उपयोगी औषध है—हेम्पल)।

३—ज्वर की प्रथमावस्था तथा मस्तिष्क-प्रदाह की चिकित्सा (Treatment of the first stage of the fever and the cerebral irritation)—इन दोनों अवस्थाओं को मैं एक ही रोग के लक्षण समझता हूँ। जब तक ज्वर अल्प रहे या आगे चलकर वह आन्त्रिक ज्वर में परिणत हो जाय तो मैं पहले मस्तिष्क-सम्बन्धी उपसर्गों पर ध्यान देता हूँ। प्रथमावस्था में मामूली प्रदाह रहता है। एकोनाइट देने से यहाँ विशेष लाभ नहीं होता, बल्कि मस्तिष्क में प्रदाह रहने पर इससे हानि हो सकती है। मेरे विचार से इस अवस्था के लिए ब्रायो मुख्य औषध है और एकोन के सामने इसी की उपकारिता अधिक है चाहे मस्तिष्क का प्रदाह-लक्षण रहे या न रहे। खासकर यदि प्रदाह के लक्षण रहे जैसे कि सूखी खाँसी, फेफड़ों या उनकी झिल्लियों में सूई चुभने का-सा दर्द आदि। डॉ० हैनिमैन के कथनानुसार जहाँ चीरने फाड़ने या भाला भोंकने जैसा दर्द हो या दपदपाने वाला दर्द हो वहाँ ब्रायोनिया की १ मात्रा यथेष्ट होगी। यह मस्तिष्क प्रदाह को भी दूर कर देगा, चाहे प्रलाप रहे या न रहे। यदि रोगी प्रलाप बकता हो, आँखें खुली रहें तथा बन्द कर लेने पर अनेक भयानक शकलें दिखायी पड़ें, प्रलाप तेज हो तथा रोगी बिछौना छोड़कर भागना चाहे तो बेलाडोना ही लाभकारी औषध होगी, और यदि उससे सफलता न मिले तो हायोस या स्ट्रैमो देने की आवश्यकता हो सकती है। यदि प्रलाप अल्प हो तो ब्रायो से काम होगा। जब रोगी हर समय अपने काम-काज की बातें करता हो, मुख फूला रह जाय, ऊँघाई और खर्राटे की साँस रहे,

तेज प्रलाप हो, नीचे वाला जबड़ा लटक जाय तो ओपि या लैके अवश्य देना चाहिये। यदि मूर्च्छा से रोगी बेहोश हो जाय तो ायोस उत्तम है। यदि मूर्च्छा के साथ अपने आप मल मूत्र निकले तो आर्स उपयोगी दवा है। ऐसी अवस्था में एकाएक जीवनीशक्ति घट जाय, रोगी घबड़ाने लगे, उदासीन हो जाय, अचेत पड़ा रहे और चेहरे पर नीली लाल रंग दिखाई पड़े और नाड़ी बहुत दुर्बल हो तो वेरेट्र एल्व सहायक होगा। यह अन्तिम औषध भयजनक उपसर्गों को दूर कर देगी। और यदि रोग पूर्णता को प्राप्त न हुआ हो तथा उदर में सन्निपात ज्वर बैठ गया हो तो भी ब्रायोनिया की १ मात्रा देनी चाहिए, जिससे शरीर पर जो दानें निकलें होंगे वे गायब हो जायेंगे, किन्तु ख्याल रहे कि उदरामय न हुआ हो। यदि उदरामय शुरू हो जाता है और हाथ पैरों में विश्राम के समय भी फाड़ने वाला दर्द मालूम हो तो इस अवस्था में ब्रायो के बदले रस देना चाहिए। किन्तु उसके बाद फिर ब्रायो की आवश्यकता हो सकती है। यदि इस रोग की सर्दी और फेफड़े की गड़बड़ियों को ब्रायो आराम न कर सकें तो फास लाभदायक औषध प्रमाणित होगी। इसी अवस्था में मैं हर औषध की ३० शक्ति की ३ गोलियाँ जल में घाल कर देता हूँ और २ या ३ घण्टे के अन्तर पर १–१ चम्मच पिलाने की व्यवस्था देता हूँ।

—सन्निपात ज्वर के उदर-सम्बन्धी रोग और जीवनी-शक्ति के ह्रास की अवस्था की चिकित्सा (Treatment of the stage of vital depression and of the abdominal affection)—सन्निपात ज्वर की दूसरी या तीसरी अवस्था चलते रहने पर अर्थात् प्रारम्भिक तथा पूर्णता प्राप्त उदर सम्बन्धी सन्निपात ज्वर के लिए मुख्य औषधियाँ हैं— रस, आर्स, बैल्के, लाइको, नाइट एसि, फास और कार्बो वेज। यदि कब्जियत मौजूद रहे, किन्तु आँतों में घाव शुरू न हो और चमड़े पर दाने निकल आये हों और प्रदाह की अवस्था हो तो ब्रायो से वह रोग आराम हो जायगा। मेरे चिकित्सा व्यवसाय में ब्रायो द्वारा अनेक उत्तम फल मिले हैं। यदि दाने निकलने में विलम्ब हो और १४ वें दिन ज्वर

बहुत बढ़ जाय, मस्तिष्क में प्रदाह हो, साथ में ऐंठन, प्रलाप, भयानक स्वप्न या भारी कष्ट रहे तो डॉ० गुलन के साथ मैं कैल्केरिया की ही प्रशंसा करूँगा, चाहे उदरामय रहे या न रहे। यदि रोगी बड़बड़ाते हुए प्रलाप बकता रहे, हाथ से हवा में कुछ पकड़ने की चेष्टा करे और आँतें खुल जायँ (ऐसे लक्षणों में कैल्केरिया के बाद), चमड़े पर के दाने अधिक मात्रा में निकल आयें तो लाइको रोगी के कष्टों को घटा देगा। यदि उदरामय शुरू न हुआ हो और दाने निकल आये हों तो मैं ब्रायोनिया से किसी दूसरी औषध को अच्छा नहीं समझता और इसी औषध को मैं आराम होने तक चलाता हूँ। यदि पतले दस्त होने लगें, उनका रंग पीला हो, या वह पानी-सा या चिकना हो, जीभ पर पतला लेप रहे और वह पीला लेप दिखाई पड़े, रोगी बहुत कमजोर हो जाय और वह अचेत की तरह पड़ा रहे तो फास एसि ही मुख्य औषध है। और यदि जीभ पर गाढ़ा सफेद लेप रहे और मल में हरा-सा कफ रहे तो नाइट एसि ही सफल औषध प्रमाणित होगी। जीभ एकदम सूखी, उदरामय दर्दरहित और प्रचुर, उसमें खून की धारियाँ मांस के धोवन-सी हों तो फास ही औषध है। यदि जीभ भूरी मालूम हो जैसे कि लकड़ी है और मल पानी-सा या पीला या भूरा खून भरा हो और उससे सड़े मुर्दे की-सी गन्ध निकलती हो तो रस, यदि मल काला—भूरा और अपने-आप निकले तो आर्स या कार्बो-वेज, यदि पतला मल कॉफी की तलछट की तरह हो तो फास। यदि आँतों के घाव के उपसर्गों के साथ मलद्वार से खून गिरे और नाइट एसि के द्वारा इन्हें रोका न जा सके तो आर्स, म्यूर एसि या फास की व्यवस्था देनी चाहिए। अन्य अंगों से रक्तस्राव होने पर फास, आर्स या कार्बो वेज, यदि सारी शक्ति नष्ट हो गयी हो और रोगी बिछौने में ही हर समय पड़ा रहे और पक्षाघात होने की शंका हो तो म्यूर एसि सहायता देगा, यदि रस और आर्स से कोई फल न हो। ऐसी अवस्था में कार्बो वेज की परीक्षा की जानी चाहिए, म्यूर एसि और कार्बो वेज ये दो औषधियाँ कभी-कभी मरणासन्न रोगियों को भी बचा सकती हैं। इन सभी क्षेत्रों में मैं औषध का घोल हर

घण्टे या तीसरे घण्टे एक-एक चम्मच पिलाने की व्यवस्था देता हूँ, इसी उपाय से यदि लक्षणों के अनुसार औषध दे सकूँ तो सफलता धीरे या द्रुत दोनों प्रकार की ही मिलती है।

५ - न्यूमोनिया-युक्त सन्निपात ज्वर तथा यकृत के रोग (Pneumotyphus and liver diseases)—सन्निपात ज्वर के न्यूमोनिया के लिए पहले ही औषध लिखी गयी है—ब्रायो और रस। यदि न्यूमोनिया के उपसर्ग बहुत अधिक बढ़ जायँ तो अन्य उपसर्ग दब जाते हैं। वैसी स्थिति में यदि ब्रायो या रस सफल न हो तो फास सहायता देगा, खासकर यदि रोगी शरीर को झकझोर देने वाली भयंकर खाँसी से अत्यन्त पीड़ित हो जो या तो सूखी हो अथवा उसके साथ गाढ़े, पीले, चिमड़े कफ का निस्सरण रहे। यदि छाती के अन्दर कफ की घड़घड़ाहट मालूम हो और रोगी बेहोश पड़ा रहे या भयकर प्रलाप बके तो हायोस लाभ पहुँचायेगा। यदि कफ की घड़घड़ाहट रहते समय फेफड़ों में शोथ होने की शंका हो तो टार्ट एमेट, कार्बो वेज या फास देना चाहिए। यदि यकृत-प्रदाह सन्निपात ज्वर के भीतर वृद्धि प्राप्त हो और ब्रायो, लैके या लाइको निष्फल हो जायँ तो कभी-कभी मर्क सहायता देगा।

६—मलनिस्सरण की सकटजनक अवस्था (Stage of critical evacuations)—यदि रोगी के मल निकालने की अवस्था कठिन हो जाय और उसकी हालत बिगड़ने लगे तो ऊपरलिखित औषधियाँ सेवन करानी चाहिए। विभिन्न प्रकार के उपसर्गों में जो औषध उपयोगी होगी उनमें रस, आर्स, कार्बो वेज और म्यूर एसि प्रधान हैं। यदि इन औषधियों से मलनिस्सरण की कठिनाई दूर हो जाय, थोड़ा ज्वर रहे और रोगी आरोग्य का अनुभव न करे, क्षुधा न बढ़े तो मेरे विचार से कार्कस ही इस अवस्था का सुधार कर सकता है। यदि शरीर में बल न रहे तो उस कमजोरी के लिए वेरेट्र एल्ब देना चाहिए।

३—सन्निपात ज्वर में आवश्यक औषधियों के सम्बन्ध में विचार
(Remarks concerning the Remedies) generally used in Typhus)

१—सन्निपात-विरोधी आवश्यक औषधियाँ (Essential anti-typhus remedies)—ये हैं ब्रायो, रस, फास एसि, आर्स और फास।

रोग की प्रथम या द्वितीय अवस्था में ब्रायोनिया का ही निर्देश होता है, जब तक कि मस्तिष्क-प्रदाह, गल प्रदाह, सर्दी के उपसर्ग, हाथ-पैरों में दर्द आदि के साथ आँतों में घाव होना शुरू न हो तथा जब तक उपसर्ग प्रवल न हों तब तक वेल, हायोस या ओपि (सख्या २, ४ देखिए)। ये औषधियाँ अन्य औषधियों के साथ आवश्यकता होने से बीच-बीच में दी जा सकती हैं। यदि प्रादाहिक अवस्था में जीभ तर या सूखी रहे तो ब्रायो ही प्रधान औषध है, चाहे रोगी अल्प प्रलाप बके या प्रलाप न रहे, यदि आँख, कान, होंठ, जीभ, फेफड़े या यकृत और चमड़ा आदि की शक्ति घट जाय और उदरामय मौजूद है या नहीं उस पर विचार न करके (और भी ऊपरलिखित २, ४ में जिन औषधों का विवरण दिया गया है,) उन्हें छोड़ कर साधारण स्थिति में ब्रायो ही लाभदायक है।

फास्फोरिक एसिडम—यह सन्निपात ज्वर में बहुत ही आवश्यक औषध है, किन्तु उदर में सन्निपात ज्वर की अवस्था विकट होने पर यह काम नहीं देगा। जहाँ उदर की तरल वस्तुओं में सड़न पैदा हो गयी है वहाँ फास एसि की अपेक्षा रस टाक्स बहुत अधिक लाभप्रद है और वह उपसर्गों से लड़ने में समर्थ है। यदि शुरू में पीला, पानी-सा पतला या चिकना मल निकलना शुरू हो तो यह अत्यन्त आवश्यक है, चाहे उदर के उपसर्ग बढ ही क्यों न जायँ, रोगी अत्यन्त दुर्वल हो जाय, होश न रहे, बाहरी प्रभाव से कुछ न बोले, उदर तना हुआ हो, रोगी पाकाशय के अनेक रोगों से अत्यन्त क्लेशित हो और मल अपने-आप निकल जाता हो।

रस टाक्सिकोडेनड्रन—आँखों के रोग शुरू होने पर और उसके पूर्णता प्राप्त होने से यह औषध खासतौर पर उपयोगी है, चाहे प्रादाहिक अवस्था क्यों न हो तथा पतले दस्त होना शुरू हो गया हो या ब्रायो हाथ-पैरों के फाड़ने वाले दर्द के लिए यथेष्ट न हो और चलते समय की अपेक्षा विश्राम के समय दर्द बढ़े तो ब्रायो उपयोगी नहीं है। यदि उदर सम्बन्धी सन्निपात ज्वर के खराब लक्षण दिखाई पड़ने लगें और फास एसि से मदद न मिले तो रस टाक्स ही एकमात्र औषध है जिससे सहायता मिलती है, चाहे जीभ भूनी हुई, सूखी, लकड़ी की तरह और सन्निपात ज्वर का प्रलाप क्यों न हो या रक्तपूर्ण और सड़े मुर्दे की-सी दुर्गन्ध वाले मल के साथ इसी अवस्था के निर्देशक उपसर्ग क्यों न रहें।

आर्सेनिकम—उदर सम्बन्धी सन्निपात ज्वर में यह एक शक्तिशाली औषध है, यदि इससे पहले रस निष्फल हो गया हो, दूसरी ओर रस के पहले आर्स से भी कोई लाभ न हुआ हो। प्रादाहिक-अवस्था के साथ कब्जियत रहने पर इससे कोई लाभ नहीं होता। यदि सन्निपात का प्रलाप शुरू हो जाय तो इस औषध से हम रोगी को हानि पहुँचायेंगे। नवचिकित्सकों ने इस प्रकार औषध का प्रयोग करके रोगी को नुकसान पहुँचाया है। इस औषध का यथार्थ क्षेत्र तभी शुरू होता है जब कि सड़ा, गन्दा, सड़े मुर्दे की तरह गन्धवाला मल निकले और जीभ चमड़े की तरह भूरी और सूखी रहे और इसी तरह शरीर की तरल वस्तुएँ विकृत हो जायँ तो रस उनका सुधार करने में समर्थ नहीं होता, जहाँ वैसी अवस्था हो और अन्य उपसर्ग भी कठिन हो जायँ, रोगी अत्यन्त दुर्बल हो पड़े, प्रलाप चलता रहे तो आर्स ही एकमात्र औषध है जो सभी उत्कट उपसर्गों से लड़ सकता है।

फास्फोरस—किसी-किसी विषय में यह औषध ब्रायो और रस से कम शक्तिशाली नहीं है, क्योंकि यह उदरामय की प्राथमिक अवस्था को ही नहीं रोकता बल्कि समूचे रोग के भय को घटा देता है। क्षणिक फलदायक

औषध यह नहीं है, बल्कि रोग के वेग को ही यह तोड़ देती है जैसे कि ब्रायो मस्तिष्क-प्रदाह और फेफड़े के कष्टों के लिए यथेष्ट नहीं है, दूसरी ओर फास और ब्रायो उदर सम्बन्धी सन्निपात ज्वर की वर्धित अवस्था के भयकर परिणाम को रोकने के लिए यथेष्ट प्रमाणित हुए हैं। यदि वैसी अवस्था में रस प्रारम्भिक उद्‌गमय अवस्था को न रोक सके और मल रक्त भरा तथा दुर्गन्धित हो तो भी यह उसे रोकने के लिए यथेष्ट है।

२—अत्यन्त आवश्यक मध्यवर्ती औषधियाँ (The most Important Intercurrent Remedies)—

वेलाडोना—यद्यपि सन्निपात ज्वर की तीव्र गति को रोकने की शक्ति इस औषध में नहीं है और अल्प सिरदर्द को घटाने के लिए इसमें शक्ति है तो भी यदि ब्रायो वे प्रदाहजनक मस्तिष्क की उत्तेजना को काबू में न कर सकने पर भी ब्रायो अन्य औषधियों के बीच में प्रयोग करना आवश्यक हो सकता है। ज्ञानशक्ति ह्रासप्राप्त और मानसिक क्रियाशक्ति रुद्ध हो, गले का स्वर भारी और कठिनता से निकलने वाला हो तथा रोगी अपने सम्बन्धियों को न पहचान सके या प्रलाप बकता रहे और बिछौने से उठ भागना चाहे, उसी तरह गलकोष में ऐंठन होने लगे तो वेल सफल प्रमाणित होगा, चाहे आँतों में घाव क्यों न हो।

हायोसायमस—भयकर प्रलाप में यदि वेल से कोई फल न मिले तो यह औषध प्रत्येक अवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है, यदि रोगी प्रायः अचेत होकर पड़ा रहे, प्रश्न पूछने या बुलाने पर उत्तर न मिले, उसके शरीर को हिलाने पर भी अपनी अचेत अवस्था से न जगे।

कैल्केरिया—यद्यपि डॉ० गुलन ही एकमात्र चिकित्सक थे जिन्होंने इस औषध की सिफारिश की है तो मैंने उनका उपदेश मानकर कैल्केरिया के प्रयोग से अत्यन्त सन्तोषजनक फल पाया है, वह भी सन्निपात ज्वर में, यदि चमड़े पर दाने निकलने में विलम्ब हो, उपसर्ग अनुकूल हो जायँ और

उदरामय बन्द हो जाय तथा ब्रायो की क्रिया से रोग समाप्त होने के रास्ते पर आ जाय और किसी विरुद्ध उपसर्ग का विकास न हो।

लाइकोपोडियम—मैंने कैल्के के विषय में जो कुछ कहा है वह सभी लाइको में प्रयोग योग्य हैं। सिवाय यदि दानों के निकलने में विलम्ब हो और पतले दस्त होने लगें तो लाइको देना उचित होगा, चाहे उदरामय कैल्के के द्वारा रोक लिया गया हो। कैल्के कब्जियत या पतले दस्त मौजूद रहने पर भी दिया जा सकता है। कैल्के के बाद ही लाइको विशेष रूप से उपयोगी है, यदि रोगी बड़बड़ाने वाले प्रलाप से घबड़ाता हो, फाड़ने और डँसने जैसा सिरदर्द रहे या वह अचेत होकर पड़ा रहे, कभी-कभी धमकाने या चिल्लाने से जग पड़े तथा उदर बहुत ही अधिक तना हुआ हो।

नाइट्रिकम एसिडम—इस औषध की भी सिफारिश डॉ० गुलन ने की है। मैं सन्निपात ज्वर के एकाधिक रोगियों को यह औषध देकर लाभान्वित हुआ हूं, जहाँ आँतों में घाव तथा रक्तस्राव के लक्षण थे।

म्यूरियेटिक एसिडम—यदि रोगी के उपसर्गों में शरीर की तरल वस्तुएँ सड़ने लगें और वह अवस्था अत्यन्त तीव्र हो तथा रोगी बहुत कमजोर हो जाय ताकि वह बिछौने पर एक स्तूप की तरह बैठा रहे, साथ में दुर्गन्धित पतला मल निकले, आँतों से रक्तस्राव हो, वह बेहोश सा पड़ा रहे, कार्बो वेज और आर्स या नाइट्रिक एसि का उस अवस्था के ऊपर अल्प प्रभाव रहे तो यह एसिड अवश्यम्भावी है।

कार्बो वेजिटेबिलिस—दुर्गन्धित पतले मल के बहुत ही बुरी अवस्था में यद्यपि इस औषध ने मुझे बहुत ही उत्तम फल दिखाया है, जिसे रस, आर्स या फास के द्वारा रोका न गया हो तो भी मेरे विचार से इस औषध पर अधिक विश्वास नहीं करना चाहिए। डॉ० ग्रोस ने इसी प्रकार के एक रोगी का विवरण दिया है जिसका इलाज उन्होंने इसी औषध से किया था। मैंने भी ठीक उसी ढंग के एक रोगी की चिकित्सा इसी औषध से की थी

जिसका पतला मल सड़े मुर्दे-सा दुर्गन्धित था तथा वह रोगी बेहोश-सा पड़ा था, साथ में खुले मुँह से खर्राटे भरता था। दो घण्टे के अन्दर कार्बो वेज से वह जग उठा, किन्तु इस औषध का सेवन जारी रखने पर भी १२ घण्टों के बाद वह मर गया। कार्बो वेज अन्य औषधियों की अपेक्षा मुर्दे को बचाने की शक्ति नहीं रखता।

३—प्रयोग मे कम आनेवाली अन्य मध्यवर्ती औषधियाँ और जिनकी सिफारिश जबानी होती है (Intercurrent remedies neat are less frequently used and have been recomended theoritically.)—

एकोनाइट—सन्निपात ज्वर में मैं नहीं जानता कि इस औषध की क्या उपयोगिता है। दूसरे चिकित्सकों की जबानी सिफारिश के अनुसार मैं इसका व्यवहार करता हूँ, किन्तु सन्निपात ज्वर में थोड़ा उपकार भी मुझे इससे नहीं मिला और केवल २४ घण्टों तक इसी का सेवन कराना समय नष्ट करना हुआ। डॉ० गुल्लन का वह रोगी जिसका विवरण डॉ० रीकर्ट के 'अनुभूति चिकित्सा' ग्रन्थ के खण्ड ४ पृष्ठ ६८६ में दिया गया है, सन्निपात ज्वर का रोगी नहीं था, बल्कि वह वात ज्वर से पीड़ित था, साथ में स्नायविक प्रदाह था (अगले अध्याय के न० १, २ अनुच्छेद देखिए)। अतः डॉ० रीकर्ट ने सन्निपात ज्वर के भीतर अनुचित रूप से इसे सम्मिलित किया है।

एपिस—डॉ० रीकर्ट की पुस्तक खण्ड ४ पृष्ठ ६६१ में डॉ० वूल्फ ने भूमिका में जो विवरण दिया है उससे प्रमाणित होता है कि उनके अगले हेतुवाद केवल मौखिक अनुमान मात्र हैं, मैं उसे कवि की कल्पना कहता हूँ। उसी पुस्तक के पृष्ठ ८०१ से ८०६ तक में जो 'साधारण विचार' लिखा है और उसमें जो अन्य उपसर्ग बताये गये हैं उनका भी प्रमाणीकरण अपेक्षित है। उसी विवरण में लिखित प्रमाणीकृत प्रचुर औषधियों के मुकाबिले में मौखिक सिफारिशों का मूल्य अल्प ही है।

आर्निका—सम्पूर्ण अचेतना के साथ ज्वर होने पर यदि उसके साथ अपने-आप मल-मूत्र निकले तो कभी-कभी यह औषध अपरिहार्य है।

कैंसर फ्लुवियटिलिस—इस औषध का व्यवहार मैंने कभी नहीं किया। हमारे पास इससे अधिक उत्तम औषधियाँ हैं, इस कारण इसका परित्याग किया जाना चाहिए।

कैमोमिला—जिस समय असली सन्निपात ज्वर का स्वरूप निर्धारित नहीं होता, उस समय के लिए डॉ० हैनिमैन ने कैमोमिला की व्यवस्था दी है; किन्तु आजकल सम्भवतः कोई भी चिकित्सक अन्य अधिक प्रभावशाली औषधियों के सामने इसका व्यवहार मध्यवर्ती औषध के रूप में भी नहीं करता।

चायना—डॉ० रीकर्ट के ग्रन्थ खण्ड २ पृष्ठ ७२६ में कुछ रोगियों का विवरण दिया गया है, किन्तु वह सन्निपात ज्वर की श्रेणी के नहीं हैं। वे पाकाशयिक ज्वरों की श्रेणी में सम्मिलित होने योग्य हैं।

काक्यूलस—इस औषध के सम्बन्ध में डॉ० हैनिमैन का मन्तव्य सर्वोत्तम है, यदि सन्निपात ज्वर के साधातिक होने की शका हो तो काक्यूलस अनिवार्य है।

क्रोकस—यह औषध सन्निपात ज्वर में कभी सफल नहीं होती, क्योंकि हमारे पास इससे उत्कृष्ट अनेक औषधियां हैं। इस कारण होमियोपैथी के नवीन चिकित्सकों को मेरा उपदेश है कि सन्निपात ज्वर में कभी इस औषध का व्यवहार न करें।

कूप्रम—डॉ० रीकर्ट के ग्रन्थ के खण्ड ४ पृष्ठ ७३४ में एक रोगी का विवरण लिखा हुआ है। उसे सन्निपात ज्वर हुआ है इसमें सन्देह है, तिस पर भी सन्निपात ज्वर की मस्तिष्क-प्रदाह की अवस्था के लिए मध्यवर्ती औषध के रूप में कूप्रम का व्यवहार हो सकता है।

इग्नेशिया—डॉ० वुल्फर्थ के अनुसार सन्निपात ज्वर में मध्यवर्ती औषध के रूप से इसका सफल प्रयोग सम्भव है। मैं उनके विवरण से अनुमान

करता हूँ कि इस रोग की उत्तेजना की प्राथमिक अवस्था में इग्नेशिया उपयोगी प्रमाणित हो सकता है, जहाँ उपसर्ग बहुत तीव्र गति से बढ़ जाते हैं।

लैकेसिस—मैंने इस औषध का व्यवहार कई रोगियों पर किया है, जहाँ गहरी नींद के बाद पतले मल निकलते हों, नीचे का जबड़ा लटक जाता हो या बड़बड़ाने वाला प्रलाप रहे और ओपियम का ऐसी अवस्था में कोई फल न प्रतीत होता हो। मैं ऐसा कहने के लिए तैयार हूँ कि लैकेसिस ऐसे रोग की गति को घटा देता है, फलस्वरूप उसकी आशंकाजनक अवस्था कम हो जाती है।

मर्क्यूरियस—आज तक मैंने इस औषध का प्रयोग सन्निपात ज्वर में ही किया है, यदि यकृत में विशृंखला हुई और यकृत के स्थान और पाकाशय के गढ़े में अत्यन्त दर्द हो। बस, मैं सन्निपात ज्वर के साथ मर्क का इतना ही सम्बन्ध जानता हूँ।

मास्कस—सन्निपात ज्वर में इस औषध के गुण के सम्बन्ध में मुझे कुछ कहना नहीं है। डॉ० क्ल० मुलर के साथ मैं विश्वास करता हूँ कि सन्निपात ज्वर के साथ यदि सर्दी के उपसर्ग रहें तो मास्कस सफल प्रमाणित हो सकेगा—जहाँ फास और टार्ट एमेट का सेवन करने पर भी इतना अधिक कफ जमा हो जाता है कि रोगी में फेफड़ों के पक्षाघात तथा श्वासावरोध होने की शंका हो।

नाइट्रि स्प्रिट्स डलसिस—डॉ० हैनिमैन की सिफारिश के अनुसार मैंने इस औषध का प्रयोग दो रोगियों पर किया है जहाँ रोगी का होश प्रायः गायब था, अन्य उपसर्ग भी नहीं थे, वहाँ मैं सफल हुआ था, किन्तु परवर्ती रोगियों में इसने मुझे धोखा दिया है। किन्तु हायोस के द्वारा उस विपत्ति की अवस्था में मुझे बहुत सहायता मिली। इस कारण मैं सदा ही इस अन्तिम औषध हायोस का प्रयोग कर उपकार पाता हूँ; इसलिए मैंने नाइट्रि का परित्याग कर दिया।

स्ट्रैमोनियम—यदि सन्निपात ज्वर की अत्यन्त प्रादाहिक अवस्था में भयकर प्रलाप होने लगे और वेल या हायोस के द्वारा वह न घटे तो तुरन्त आराम पाने के लिए स्ट्रैमो का व्यवहार अनिवार्य है, खासकर यदि रोगी को पार्श्व-भूमि में भयंकर माया मरीचिका के दृश्य दिखाई पड़ें।

वेरेट्रम—उसी तरह माध्यमिक औषध के रूप में यह अति उत्तम है, यदि प्रथम या प्रादाहिक अवस्था में रोगी की जीवनीशक्ति अति क्षीण हो जाय और मूर्च्छा का आवेश होने लगे, चेहरे पर नीलिमा-सी दिखाई पड़े और नाड़ी बहुत ही दुर्बल तथा सविराम हो।

जिंकम—सन्निपात ज्वर में मैंने कभी इस औषध का प्रयोग नहीं किया है, इस कारण मैं यह निर्णय नहीं कर सका कि इस पर अधिक ध्यान दिया जाय, किन्तु डॉ० हर्चल ने सन्निपात ज्वर के रोगी को इसका सेवन करा कर लाभ पाया था।

४—सन्निपात ज्वर मे औषधियो के चुनाव के लिए विशेष निर्देशक लक्षणो का साराश

(Synopsis of special Indications for the Selection of Remedial Agents in Typhus)

मैंने आज तक अपनी परीक्षा से जिन औषधियों की सफलता का प्रमाण पाया है उनका विवरण नीचे देता हूँ—

१—ज्ञानेन्द्रियो की क्रिया मे बाधायें—उदास भाव, इन्द्रिय-ज्ञान स्तब्ध, बाहरी दुनिया का अनुभव रुद्ध, ऐसी अवस्था के लि॰ हायोस, फास एसि, कार्बो वेज, वेल, रस, लगातार गहरी नींद ओपियम, लैके, भयंकर उन्माद का प्रलाप, साथ में भाग जाने की इच्छा—हायोस, वेल, ओपि, स्ट्रैमो। बहुत ही मृदु प्रलाप ब्रायो, बड़बड़ाने वाला प्रलाप लैके, लाइको, लगातार अनिद्रा ब्रायो, वेल, फास, रस, फाड़ने और झकझोर देने वाला सिरदर्द ब्रायो, रस, प्रलाप के समय चेहरे में लाली की झलक वेल, ओपि, हायोस, नीला चेहरा वेरेट्र एल्ब, मुर्झाया हुआ चेहरा आर्स, कार्बो वेज,

फास एसि, वेरेट्र एल्ब, मुख और नथनों के चारों ओर कालिमा हायोस, वेरेट्र एल्ब; मुख और नाक से रक्तस्राव, फास, फास एसि, रस, कार्बो वेज और आर्स।

२—पाकाशय-प्रदेश तथा उसके आसपास के अंगों के उपसर्ग (Symptoms of the digestive range and organs)—यदि जीभ अभी तर रहे तो फास एसि, जीभ पर मोटा लेप ब्रायो, रस, कार्बो-वेज, नाइट एसि, लाल जीभ फास, भुनी हुई भूरी, सूखी और कड़ी जीभ रस, आर्स, म्यूर एसि, प्रायः पक्षाघातग्रस्त रस, आर्स, कार्बो वेज, म्यूर एसि, मुख में घाव, म्यूर एसि, आर्स, कार्बो वेज, पाकाशयिक उपसर्ग (मिचली, डकार, कै) ब्रायो, फास एसि, रस, हायोस, वेरेट्र एल्ब; यकृत में शिकायत ब्रायो, लाइको, मर्क, प्लीहा वर्धित ब्रायो, फास एसि, आर्स, रस, पाकाशय और पाकाशय के गढ़े में दर्द ब्रायो, रस, मर्क, उदर में भारी तनाव फास एसि, रस, आर्स, कार्बो वेज, कब्जियत ब्रायो, कैल्के, लाइको, उदरामय फास एसि, कैल्के, नाइट एसि, रस, फास, आर्स, कार्बो वेज, म्यूर एसि; चिकना पानी सा पतला पाखाना फास एसि, रस, कैल्के; मल में हरा सा कफ मिला हुआ नाइट एसि; सड़ा, काला-सा भूरा, सड़े मुर्दे की तरह बदबू वाला मल रस, आर्स, कार्बोवेज, फास, म्यूर एसि; खून भरा मल फास, आर्स, म्यूर एसि, नाइट एसि, कार्बोवेज, अपने-आप मल का निकलना फास एसि, रस, आर्स, कार्बो वेज, अपने-आप मल-मूत्र का निकलना, साथ में रक्ताधिक्य के कारण अचेतपन आर्निका।

३—श्वासयन्त्र (Respiratory Organs)—गले की श्लैष्मिक झिल्लियों में सर्दी का रोग ब्रायो, रस, फास, हायोस, टार्ट एमेट। सूखी खाँसी, ब्रायो,फास, गले से चिमड़े कफ का निकलना फास, छाती के अन्दर कफ की घड़घड़ाहट, साथ में श्वासकष्ट होने का भय कार्बो वेज, टार्ट एमेट।

४—हाथ-पैर तथा उनकी शक्ति (Extremities and Strength)—हाथ-पैरों में फाड़ने वाला तेज दर्द ब्रायो, रस, लाइको; ऐंठन बेल, हायोस, कैल्के, रोग के आरम्भ में हाथ-पैरों की शक्ति अति क्षीण हो जाती है तो ब्रायो, फास एसि, फास, रस, आर्स; बिछौने में एकदम पड़ा रहना म्यूर ऐसि, लाल दाने फास ऐसि, रस; चमड़े पर के दानों के निकलने में विलम्ब कैल्के, लाइको, शरीर के तरल धातु की सड़न रस, आर्स, कार्बो वेज, म्यूर ऐसि, वेरेट्र ऐल्ब, चमड़े के भीतर काले-काले दाग रस, आर्स, कार्बो वेज।

द्रष्टव्य—नाड़ी, ज्वर और पसीना अन्य उपसर्गों के आने पर गायब हो जाते हैं इस कारण उनके द्वारा औषध निर्वाचन नहीं हो सकता और चमड़े पर के दाने तथा पेशाब का विशेष रङ्ग अन्य रोगों के अधीन हैं इस कारण उनसे भी औषध निर्वाचन नहीं होता। सन्निपात ज्वर में चमड़े पर दानों का निकलना प्रायः सर्वत्र ही दिखायी पड़ता है। विना उसके सन्निपात ज्वर बढ़ ही नहीं सकता।

अध्याय—३५

ज्वर के विभिन्न प्रकार और अस्वाभाविक पसीना

(Various Kinds of Fever and Marbid Sweats)

१—अनेक प्रकार के ज्वर

(Various Kinds of Fever)

१—साधारण मन्तव्य (General Remark)—फ्रांस देश के निदान-शास्त्रज्ञ चिकित्सक अल्प विराम और टायफायड ज्वर के अतिरिक्त अन्य ज्वरों को पृथक् नहीं मानते। उनका कहना है कि जहाँ ज्वर में प्रदाह अधिक हो उसका कारण किसी न किसी अंग का खास प्रदाह है। उनके मत से विभिन्न प्रकार के पैत्तिक ज्वर और वातजनित ज्वर सन्निपात ज्वर के ही भेदमात्र हैं। चिकित्सा-क्षेत्र में ज्वरों का इस प्रकार का भेद करना सम्भव हो भी सकता है। मैंने देखा है कि जहाँ बच्चों में केवल ज्वर मात्र है, कोई अन्य उपसर्ग नहीं है, केवल ज्वर है, वह भी टायफायड और अल्प विराम ज्वर के स्थानीय उपसर्गों के साथ ही। ऐसे स्थलों में ज्वर के बाद उपसर्ग प्रकट हुए और जब तक ज्वर रहा तब तक वे भी बने रहे। यहाँ मेरा अनुमान है कि शारीरिक विकार लाक्षणिक थे, ज्वर के मूल कारण नहीं। आगे चलकर मैं उन ज्वरों का स्पष्ट कारण बताऊँगा, क्योंकि उनकी चिकित्सा मैंने स्वयं की है। मैं उन ज्वरों का भेद जानता हूँ उनसे टायफायड ज्वर का यथेष्ट पार्थक्य है। साधारण ज्वरों में शरीर के ताप की समस्या ही प्रधान है। कुछ लक्षण ऐसे हैं जो ज्वर के न मिटने से नहीं जाते। कहीं ज्वर उतर जाने पर भी प्रदाह रहता है, फिर धीरे-धीरे वह भी चला जाता है। ऊपरलिखित किसी-किसी ज्वर में स्नायविक उपसर्ग दिखाई पड़ते हैं, किन्तु वे हानिकारक नहीं हैं। सन्निपात ज्वर में अन्य

प्रधान उपसर्गों के सामने स्नायविक उपसर्ग दबे रहते हैं जैसे कि अधिक क्लान्ति, हर समय चित्त पड़े रहने की इच्छा, उदासी, चेतना-शक्ति का ह्रास आदि। टायफायड से भिन्न अन्य ज्वरों में ऐसे लक्षण प्रायः नहीं दिखाई पड़ते। उनमें प्रलाप, आँतों में घड़घड़ाहट, प्लीहा वर्धित आदि लक्षण मिलते हैं। इसके आगे ऊपरलिखित ज्वरों के उपसर्गों के बारे में विशेष विस्तार के साथ बताया जायगा जिसमें मस्तिष्क ज्वर, प्रदाह ज्वर, वातज ज्वर, पित्त ज्वर, कफ ज्वर आदि के भी विवरण रहेंगे।

२– मस्तिष्क ज्वर (Brain Fever)—इस प्रकार का ज्वर प्रायः बालकों और युवकों में पाया जाता है, उमरदार आदमियों में बहुत कम। फ्रांसीसी निदान-शास्त्रियों ने इस ज्वर का कारण सन्निपात या मस्तिष्क-प्रदाह कहा हैं। मुझे ऐसे रोगी मिले हैं जहाँ ज्वर सन्निपात या मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह के कारण नहीं था। सिर के भीतर गरमी का अनुभव, फीका चेहरा, कभी कभी लाल हो जाय, सिरदर्द के समय ललाट पर चिन्ता के कारण झुर्रियाँ पड़ जायँ, कभी-कभी कै, असाध्य कोष्ठबद्धता, हाथ-पैरों में ऐंठन आदि। मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह के लक्षण न होकर उसके स्थान में चमड़े में सूखापन और जलन, निरन्तर सिरदर्द, चेहरे पर उपेक्षा का भाव, सर्दी नहीं है, कोष्ठबद्धता और पतले दस्त बारी-बारी से हों तो भी इन लक्षणों को सन्निपात के लक्षण नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसमें बहुत कठिन उपसर्ग हैं—आँतों को दबाने से दर्द, प्लीहा का बढ़ जाना तथा शरीर पर काले नीले दाग। इस कारण मुझे इसे मस्तिष्क ज्वर कहना पड़ा, क्योंकि इसमें मस्तिष्क-झिल्ली प्रदाह नहीं है और न सन्निपात के ही लक्षण हैं। बच्चों में प्रायः कृमि के कारण ऐसा ज्वर होता है और बड़े बच्चों में चमड़े पर के दानों के दब जाने के कारण मस्तिष्क और पाकाशय के प्रदाह के कारण भी होता है। ऐसी स्थिति में मैं अक्सर रोगी को कूप्रम सेवन कराता हूँ जिससे दाने स्पष्ट निकल आते हैं। मस्तिष्क के उपसर्गों में इस औषध का सेवन कराने से कहीं-कहीं शीतला की गोटियाँ निकल आती दिखाई पड़ी हैं। इस प्रकार के ज्वर में मस्तिष्क के भीतर उत्तेजना

होती है। मस्तिष्क की झिल्लियों में जल भर जाने से छोटे बच्चों में ऐसा ज्वर होता है। जब दिखाई पड़े कि बच्चा बेचैन हो रहा है, उसके चेहरे का रङ्ग बार-बार बदल रहा है, सम्भवतः कृमि के कारण वह बार-बार नाक खोदता है, कभी-कभी उसे सर्दी लग जाती है, एकाएक गरमी की जलन मालूम होती है, ऊँघाई आती है, कभी वह बेहोश हो जाता है, कभी हाथ-पैरों में ऐंठन होने लगती है—इन लक्षणों को देखकर मस्तिष्क झिल्लियों में जल का होना अनुमान किया जाता है। युवकों में सिरदर्द के साथ ऐसा ज्वर आता है। उनमें ऐंठन न होने पर भी ऊँघाई और प्रलाप रहते हैं, बाद में सिर में चक्कर और पेशियों में कमजोरी की वृद्धि होती है। उमर-दार आदमियों में ऐसे ज्वर के साथ नाक से सर्दी बहती है और वह इतनी उग्र होती है कि कभी कभी साँस रुँध जाती है और मृत्यु की शंका होती है। यथार्थ में ऐसी अवस्था होने पर रोगी नहीं मरता, किन्तु यदि उसके साथ हाथ-पैरों में बार-बार ऐंठन होने लगे या लगातार पतले दस्त होते रहें तो मृत्यु की आशंका होती है। उस रोगी के दस्त से बदबू नहीं निकलती, उसके साथ खून भी नहीं निकलता, बल्कि वह पानी-सा पतला मल, चिकना प्रतीत होता है। अपने-आप मल निकलते रहने से पेट फूल जाता है और उस पर स्पर्श सहन नहीं होता। सन्निपात ज्वर की अपेक्षा यह ज्वर उपयोगी औषध सेवन कराने से आराम हो जाता है, किन्तु सन्निपात ज्वर जल्दी अच्छा नहीं होता। इस ज्वर में यदि आरम्भ से ही एकोनाइट का सेवन कराया जाय तो २४ घण्टों के अन्दर ज्वर घट जायगा, किन्तु असली सन्निपात में इस औषध से कुछ भी उपकार नहीं होता। शुद्ध मस्तिष्क-ज्वर के लिए कूप्रम, लैंके, ओपि, हायोस और बेल गुणकारी औषधियाँ हैं। (पिछले ३४ वें अध्याय में टायफायड ज्वर के विवरण में इसके व्यवहार की विधि देखिए)। इस ज्वर में यथेष्ट वमन रहे और जीभ साफ हो तो सिना ही उत्तम औषध है। जहाँ श्वासकष्ट अधिक हो, नाक से सर्दी बहे, घबड़ाहट, बेचैनी और चौंक उठना लक्षण दीख पड़े, रोगी समय समय पर आह भरे, चिल्लाये, सोते में बोले या चुपचाप पड़ा रहे, अनजान में बक-बक करे,

गालों में लाली दिखाई पड़े तो वेरेट्र एल्ब सर्वोत्कृष्ट औषध है। यदि इस प्रकार के ज्वर में वात रोग के कारण हाथ-पैरों में तेज दर्द प्रतीत हो तो लाइको, रस, एकोन और ब्रायो से उत्तम फल मिलता है। बार-बार पतले दस्त होते रहने पर कैल्के या रस लाभदायक हैं। यदि अन्य उपयोगी औषधियों में इन दोनों दवाओं का प्रयोग किया जाय तो सम्भवतः मूल रोग को ही वे आराम कर देंगी। यदि नाड़ी की गति अधिक रहे, घबराहट और प्रलाप बारी-बारी से हो, हाथ पैरों में ऐंठन दिखाई पड़े और डर से रोगी चौंक उठे और अन्त में मूर्च्छा आ जाय तो एकोन अत्यन्त उपयोगी औषध है। इन्फ्लुएञ्जा ज्वर महामारी के रूप में फैल जाने पर उमरदार आदमियों की अपेक्षा बच्चों में इस ज्वर का प्रकोप अधिक देखा जाता है।

३—प्रदाह ज्वर (Inflammatory fever)—साधारण ज्वर के साथ शरीर में जलन रहती है, किन्तु बच्चों में दाँत निकल जाने के बाद ऐसा ज्वर होते मैंने देखा है जहाँ रीढ़ में उत्तेजना न रहते हुए भी दबाने से दर्द होता है। कुछ भी हो सन्निपात ज्वर से यह प्रदाह वाला ज्वर पूर्णतया भिन्न है। इसमें ज्वर अच्छी तरह प्रकट न होते हुए भी प्रदाह होने लगता है। मामूली ठण्ढक के बोध के बाद शरीर में गरमी चढ़ने लगती है और प्रदाह निरन्तर चलता रहता है। इसमें नाड़ियों तथा स्नायुओं में उत्तेजना प्रधान लक्षण है, किन्तु सन्निपात में जैसी अधिक दुर्बलता होती है वैसी स्नायविक दुर्बलता इसमें नहीं है। ऐसे ज्वरों के लिए एकोन सबसे अच्छी दवा है। रक्त बहने वाली शिराओं में प्रदाह हो तो इस औषध का घोल बनाकर रोगी को सेवन कराना चाहिए, खासकर जहाँ चमड़ा सूखा और गरम रहे, घबराहट तथा साँस रुँधना लक्षण भी मौजूद हों। इस अवस्था में कॉफिया उपकारी औषध है, खासकर जहाँ रोगी तुनुकमिजाज, निद्राहीन और भयभीत हो और यदि बच्चा बहुत रोये और चिल्लाये किन्तु गोदी में लेकर टहलने से चुप हो जाय, शरीर में पसीना आये और सोते में चौंक उठे। यदि रोगी के हाथ-पैरों में ऐंठन दिखायी पड़े और

काफिया तथा कैमो उसे दूर न कर सकें तो इपि और वेल उपकारी औषधियाँ हैं।

४—वातज्वर (Rheumatic fever)—तरुण वात के प्रदाह से यह ज्वर भिन्न है, क्योंकि इनमें हाथ-पैरों के भीतर दर्द नहीं होता, क्योंकि सारे अंगों में भाला भोंकने की तरह दर्द होता है और वह दर्द बार-बार स्थान बदलता है। यदि ज्वर का ताप अधिक हो जाय, मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो, ऊँघाई, प्रलाप, बेहोशी आदि लक्षण अपने-आप होने लगें तो नवीन चिकित्सक उसे सन्निपात ज्वर समझ बैठते हैं, किन्तु सन्निपात के असली लक्षणों का इसमें अभाव-सा है। ऐसे लक्षण प्रायः चौथे दिन प्रकट होते हैं तथा रोगी हर बात में भूल कर बैठता है, उसके शरीर में जलन होती है, शाम को ज्वर का ताप बढ़ता है, रात भर पसीना होता रहता है, किन्तु उससे ज्वर का ताप नहीं घटता। कहीं-कहीं ऐसा भी देखा गया है कि इस वातजनित ज्वर के आरम्भ में रोगी के हाथ-पैर के भीतर भारीपन तथा थकावट आ जाती है। सिर-दर्द और सिर में चक्कर प्रायः हर समय रहते हैं, फलस्वरूप वह बेहोश-सा पड़ा रहता है। ऐसी अवस्था में फेफड़ों में रक्तसंचय, सूखी खाँसी, आँखों और नाक में सूखापन रहता है जिससे रोगी को बहुत कष्ट होता है। ऐसा बुखार अधिकतया शीतऋतु के समय होता है। इतना होते हुए भी मैंने इन्फ्लुएञ्जा बुखार में भी ऐसे ही लक्षण देखे हैं। मेरे हाथ में इस प्रकार के जितने रोगी आये हैं, सभी को मैंने एकोन से आराम किया है। किसी-किसी क्षेत्र में बचे-खुचे उपसर्गों को ब्रायो, रस, लाइको, मर्क, नक्स और कहीं-कहीं वेरेट्र एल्ब, चायना और बेल ने दूर कर दिया। मुझे ऐसा भी अनुभव है कि इस प्रकार का वातज्वर रीढ़-प्रदाह के कारण भी होता है। रीढ़ पर दबाने से कभी दर्द होता है, कभी नहीं भी होता है, औषध चुनने में उनकी अपेक्षा नहीं है। जहाँ ऐकोन के घोल से ज्वर न घटा वहाँ ब्रायो का प्रयोग करना चाहिए, खासकर यदि चलने-फिरने से दर्द बढ़े, खाँसी बहुत सूखी हो और एकोन से कोई फायदा न हुआ हो। इस ज्वर के साथ कमर में दर्द

हो, विश्राम के समय दर्द बढ़े, रात को गरमी अधिक प्रतीत हो, सभी अगों में खिंचाव रहे और उन्हें फैलाकर लेटने से आराम मिले तो दवा बहुत ही लाभदायक औषध प्रमाणित होगी (चायना में भी ऐसे ही कुछ लक्षण होते हैं)। यदि खाँसी समूचे शरीर को हिला देती है और कमजोर कर देती है, रात्रि के समय दर्द अधिक हो, आक्रांत अगों में चीरने-फाड़ने जैसा दर्द होने लगे, पसीना अधिक हो, उससे आराम न मिले तथा जोड़ों, हाथ-पैरों और सिर में बहुत तेज दर्द हो तो मर्क उपयोगी औषध है। पसीना के साथ रीढ़ के नीचले भाग में, कमर में और जाँघों में दर्द हो तो चायना लाभदायक है। यदि दर्द गर्दन में, कन्धों में और भुजाओं के ऊपरी अशों में हो तो जेल सर्वोत्तम औषध है। ऐसी अवस्था में ब्रायो से भी उपकार होता है। यदि रात को दर्द, बहुत बढ़ जाय और आक्रांत अगों को सुन्न कर दे, दर्द दाँत, हाथ, पैर, सिर तक पहुँच जाय तो कैमोमिला उपयोगी है। बिछौने पर बैठने पर से दर्द घट जाय या बिछौने में करवटें बदलता रहे, वह कमजोरी और थकावट का अनुभव करे, गरम कपड़े ओढा देने से या गरम कमरे में रहने से आराम मिले तो आर्स लाभ-कारी औषध है। यदि दर्द कन्धों के बीच में छाती के अन्दर तथा कमर के पिछले भाग में अधिक हो तो साधारणतया नक्स वाम से अधिक लाभ होगा, जहाँ दर्द क्षण-क्षण पर अपनी जगह बदलता रहे, वहाँ पल्स देना उचित है। सिर के भीतर डक मारने या कतरने की तरह दर्द मालूम हो और ज्वर दोपहर के बाद तथा रात को बहुत बढ़े तो लाइको से लाभ होगा। यदि लगातार पसीना होता रहे तो चायना सबसे अच्छी दवा है। यदि सूखी खाँसी बहुत बढ़ जाय, और पतले दस्त आने लगें और चायना उसे रोक न सके तो वेरेट्र एल्ब। मैं सदा ही औषध की ३० वीं शक्ति का ही प्रयोग करता हूँ और एक कटोरी जल में ३ गोलियों को घोलकर २–३ घण्टे पर एक एक चम्मच पिलाने की व्यवस्था देता हूँ। यदि कई दिनों तक औषध सेवन कराने की आवश्यकता हो तो जीभ पर २ गोलियों को डाल कर खा लेने के लिए कहता हूँ और मैं ४८ घण्टों तक देखकर

तब दूसरी औषध का प्रबन्ध करता हूँ। इसका कारण यह है कि ऐसा वातज्वर १४, २१ और ४२ दिनों तक चल सकता है। जहाँ दर्द का असर दिमाग के पर्दों तथा दिल पर हो तो मैं एकोन, ब्रायो, आर्स, फास आदि औषधियाँ घोल के रूप में पिलाने की व्यवस्था देता हूँ।

५ — साधारण कफ-ज्वर (Simple Mucus Fevers)—जैसे हमारे यहाँ टायफायड वाला मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह, न्यूमोनिया, आँतों के रोग आदि हैं, उसी तरह साधारणतया टायफायड वाला श्लेष्मा-ज्वर भी हैं। मैंने देखा है कि इस प्रकार के ज्वर से साथ पतले दस्त नहीं होते और कूल्हे में दर्द रहता है। ऐसे ज्वर इन्फ्लुएन्जा की महामारी के समय आते रहते हैं या कभी-कभी सीलदार या गरम मौसम में भी होते हैं। ऐसी आबहवा में गण्डमाला वाले बालक या स्त्रियाँ ही अधिक रोगाक्रान्त होते हैं। जब नाक से बहुत अधिक सर्दी गिरने लगे और कभी कफ की कै होने लगे, सिरदर्द भी रहे, जीभ पर मैल हो, पेशाब मूठे के रंग-सा हो और उसके अनन्तर इन्फ्लुएन्जा ज्वर हो। साधारण ज्वर के साथ दिन में सदा ही गरमी लगती है। वह ज्वर प्रायः २ या ३ सप्ताहों तक चलता रहता है। जीभ का रंग बहुत लाल हो जाता है, जीभ का सिरा साफ रहता है, रह-रह कर पतले दस्त होते रहते हैं। मल के साथ पित्त और न पचा हुआ खाद्य रहता है, कभी-कभी खून भी आता है और आँतों में ऐंठन होती है। ऐसे दस्त अधिक दिनों तक होते रहने से रोगी निर्बल हो जाता है और बिछौने से उठ नहीं सकता। यह ज्वर बहुत दिनों तक चलता रहे तो भी सन्निपात का लक्षण नहीं मिलता। इस प्रकार के मेरे सभी रोगी खाँसी से ग्रस्त थे, उनका बलगम गाढ़ा, लसदार, रस्सी की तरह लम्बा, तार वाला होता था। एकाएक आने वाला ऐसा ज्वर उदर की झिल्लियों को प्रभावित कर डालता था और वहाँ से यह रोग मूत्रथैली तथा आँतों की ओर बढ़ जाता था। उसके अनन्तर इसका आक्रमण श्वासनलियों पर भी होता था। अधिक दिनों तक रहने पर भी यदि इसकी उपयोगी चिकित्सा नहीं हुई तो मुँह पर छाले पड़ जाते हैं और मुँह से दुर्गन्ध निकलती है। आमाशय

तथा आँतों मे भी ऐसे छाले होते रहते हैं और दस्त के सड़े मुर्दे की तरह बदबू निकलती थी। ऐसे ज्वर के खास-खास लक्षण इस प्रकार हैं—कानों में भनभनाहट, कम सुनाई पड़ना, बड़बड़ाना, प्रलाप, हवा में कुछ पकड़ने के लिए टटोलना, मन में अनेक प्रकार के विचार एक साथ आना। ऐसे रोगियों के मुँह में अनेक छाले और घाव हो जाते हैं, किन्तु यदि उनमें सड़न शुरू हो जाय तो उन्हें बचाना कठिन है। ऐसा होने पर भी सन्निपात के लक्षण नहीं आते। ऐसे क्षेत्रों में चमड़े पर दाने निकल आना साधारण बात है। इससे साथ कभी कभी थकाने वाला पसीना भी आता है। यदि दाने न निकलें या निकल कर दब जायँ तो रोगी का बचना मुश्किल है। दानों के दब जाने से बेहोशी आ जाती है और मस्तिष्क में पक्षाघात हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में रोगी को बचाना कठिन है। यदि मुख के भीतर घाव सड़ गये हों तो आर्स आराम पहुँचायेगा, बशर्ते कि समय पर औषध का प्रयोग किया जाय। सड़न शुरू न हुई हो तो मर्क मुख के घावों को अच्छा कर देगा। यदि मर्क से सारे घाव न सूखें तो सल्फ, फास और कैल्के बाकी घावों को सुखा देंगे। मुख के भीतर घाव रहते हुए ज्वर के लिए मैं पल्स, मर्क, सल्फ, कैल्के, और आर्स देता हूँ (उदरामय अध्याय १५ में देखिए) किसी-किसी रोगी में मुझे चायना, कैप्स, रिडम, वेरेट्र एल्ब से सहायता लेनी पड़ी थी। मेरा साधारण नियम यह है कि मैं ज्वर की चिकित्सा पल्स या मर्क से शुरू करता हूँ, उसके बाद सल्फ देता हूँ और ज्यों-ज्यों उन्नति का लक्षण दिखाई पड़े त्यों-त्यों इसी को चलाता जाता हूँ। इस प्रकार ज्वरों के लिए ब्रायो, कैमो, इग्ने, ऐम म्यूर, डल्का और सेनेगा की सिफारिश की गयी है, किन्तु मुझे इनसे कोई लाभ न मिला और न बहुप्रशंसित डिजिट, ऐण्टि क्रूड, टार्ट एमेट, सिना, बेल, सल्फ एसि, सीपि, रस, स्पाइजि और मेज से ही उपकार मिला।

६—पाकाशयिक और पैत्तिक ज्वर (Gastric and Bilious Fevers)—गरमी के दिनों में मैंने बहुत से ऐसे ज्वर के रोगियों को देखा है, जहाँ गरमी की शिकायतें और पतले दस्त रहते हुए भी सन्निपात ज्वर

का कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ा। बहुत दिनों तक वमनकारक तथा दस्तकारक औषध का सेवन करने से ज्वर स्थायी हो जाता है और स्नायविक उपसर्ग दिखाई पड़ते हैं, फलस्वरूप उदर फूल जाता है, साथ में लगातार डकारें, जीभ सूखी और भूरी लेप वाली, हाथ-पैर ठंढे, नाड़ी तेज, पेशाव भूरा और उससे धुंआं निकलता है, अपने आप पेशाव होना, आँतों से पतला मल निकलना, गहरी नींद, बड़बड़ाने वाला प्रलाप और अन्त में उदर में प्रदाह तथा मस्तिष्क में पक्षाघात दिखाई पड़ते हैं, किन्तु सन्निपात ज्वर की तरह अन्य कुछ रोगों में भी ऐसे लक्षण मिलते हैं तथा और भी कुछ उपसर्ग दिखाई पड़ते हैं जैसे कि शरीर के जीवनदायक तरल रस प्रदाहजनक रक्तार्श, आँतों में घाव, यकृत, जरायु और फेफड़ों में सड़ा घाव, पीब का सोखना आदि। सन्निपात ज्वर की श्रेणी में पाकाशयिक और पैत्तिक ज्वर आते हैं, क्योंकि उससे स्नायविक उपसर्ग प्रकट होते हैं। सन्निपात ज्वर के तीन प्रधान लक्षण हैं जैसे कि आँतों से पतले दस्त निकलना, प्लीहा की विवृद्धि तथा कूल्हे में दर्द। उस प्रकार के ज्वरों में ये दिखाई पड़ते हैं किन्तु जब रोगी ग्रन्थि प्रदाह से कष्ट पाता हो तभी ऐसे लक्षण दिखाई पड़ते हैं। यह सत्य है कि जब पाकाशयिक विशृंखला प्रधान लक्षण हो तो सिरदर्द के साथ ज्वर आता है किन्तु यह सिरदर्द सन्निपात की तरह नहीं बल्कि इसमें ललाट और सिर के पिछले भाग में दर्दनाक दबाव है, उसी समय पाकाशय का फूलना, वहाँ दबाव, डकारें, मिचली या न पचे हुए खाद्य तथा पित्त का वमन, जीभ पर गन्दा, पीला लेप और दुर्गन्धित मल जिसमें न पचा हुआ खाद्य आदि लक्षण दिखाई पड़ते हैं। तो भी इन उपसर्गों के साथ भारी दुर्बलता का अनुभव और ज्वर के साथ मुर्झाया हुआ चेहरा आदि लक्षणों से पाकाशयिक ज्वर का अनुमान होता है। सन्निपात ज्वर के साथ तथाकथित पित्त ज्वर को मिलाना कठिन है; क्योंकि यदि रोग पित्त प्रधान हो और मल में भी पित्त रहे, कँवल रोग जैसा चेहरा और उसके साथ भयकर प्रादाहिक ज्वर देखने पर हमें यकृत-प्रदाह या तरुण कँवल रोग की चिकित्सा के लिए प्रेरित होना पड़ता है, किन्तु यकृत में थोड़ा दर्द रहे

किन्तु ज्वर का ताप अल्प हो, साथ में पाकाशय के भीतर दबाव और मराशन और सबसे विशेष लक्षण है कि मुख से प्रचुर वमन तथा आँतों से प्रचुर मल का निस्सरण यकृत-प्रदाह और कँवल रोग में नहीं मिलते जिनमें कब्जियत है और कड़ा, भूरा या कीचड़-सा मल निकलता है। किन्तु पित्त ज्वर में मल प्रचुर, पीला या भूरा है, ऐसे लक्षणों को देखकर जाना जाता है कि पाकाशय और उदर में कुछ हाजमे की गड़बड़ियाँ उत्पन्न हो गयी हैं। किसी खास अंग में कोई स्थानीय रोग नहीं है। ऐसे क्षेत्रों में मैं अपने सम-चिकित्सकों को विश्वास दिलाता हूँ कि पित्त के उपसर्ग न रहने पर केवल पाकाशय का ज्वर देखकर एकोन का प्रयोग न करें, किन्तु इस पुस्तक के अध्याय ११ में लिखित 'पाकाशयिक शिकायतें' प्रकरण में इसके विशेष निर्देशक लक्षण मिलेंगे, जैसे कि पल्स, नक्स वाम, इपि और आर्स; यद्यपि एण्टि क्रूड, ब्रायो, टेरेक्स, टार्ट एमेट और सीपिया कभी-कभी उपकारी प्रमाणित हुए हैं और यदि वात का दर्द मौजूद रहे तो ब्रायो, कैमो, नक्स वाम, पल्स। किन्तु पित्त-ज्वर में, ऐसा नहीं होता। यदि रोगी के शरीर में ज्वर का पता अधिक हो तो एकोन बहुत ही उपकारी औषध है, इसी तरह कैमो, ब्रायो, नक्स वाम, वेल, मर्क, चायना और वेरेट्र। यदि किसी खास रोगी के सिर में चक्कर रहे तो नक्स वाम, ब्रायो, कैमो, वेल; भयंकर सिरदर्द के लिए ब्रायो, नक्स वाम, बहुत अधिक वमन, इपि, टार्ट एमेट, नक्स वाम, आर्स; पाकाशय में तेज दर्द, ब्रायो, आर्स, नक्स वाम, वेरेट्र, कब्जियत, कड़ा मल—ब्रायो, आर्स, नक्स वाम, वेरेट्र, बार-बार पतले दस्त पल्स, कैमो, मर्क, आर्स, शूलदर्द कैमो, मर्क, वेरेट्र; खराब नींद या अनिद्रा में वेल, नक्स वाम, कैमो, आर्स, ठढक का बोध, पल्स, नक्स वाम, मर्क, ब्रायो, जलाने वाली सूखी गरमी का बोध एकोन, ब्रायो, कैमो; प्यास का अभाव पल्स, तीव्र पिपासा एकोन, फास, कैमो; हताश भाव कैमो, वेरेट्र, एकोन, वायुरोग वाला भाव नक्स वाम, ब्रायो, वेरेट्र, अन्त में यदि क्रोध के कारण ज्वर हुआ हो तो कैमो, ब्रायो।

७—कृमि-जनित ज्वर (Worm Fever)—आधुनिक फ्रासीसी निदानशास्त्री इस प्रकार के ज्वरों के अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं और मस्तिष्क के प्रदाह के कारण उत्पन्न ज्वर या सन्निपात ज्वर को मस्तिष्क रोग कहते हैं। डॉ० मेल (हिजे, खण्ड १, पृष्ठ ५००) कहते हैं कि कृमि-ज्वर और उसी तरह मस्तिष्क के सन्निपात ज्वर के सम्बन्ध में मेरी पूर्ण सम्मति है; क्योंकि मुझे निश्चित है कि उस ग्रन्थ के सख्या २ में जो मस्तिष्क सम्बन्धी ज्वरों के विषय में लिखा गया है वे आँतों के कृमियों के प्रदाह से उत्पन्न होते हैं, किन्तु मैं यह भी विश्वास नहीं करता कि उसी तरह के प्रदाह से सारे मस्तिष्क ज्वर पैदा होते हैं क्योंकि मैंने पहले ही कहा है कि बच्चों में ऐसे ज्वर कृमि के कारण नहीं होते। मैंने फिर अन्य रोगियों में देखा है कि दाने निकलने में विलम्ब होने से या उनके दब जाने से भी ऐसे ज्वर होते हैं। मैंने ऐसा भी देखा है जहाँ सर्दी के उपसर्गों सहित ऐसे कृमि ज्वर होते हैं। डॉ० मेलि निश्चय ही मेरे साथ सहमत होंगे कि ऐसे मस्तिष्क ज्वर हैं जो कृमि के कारण होते हैं यहाँ तक कि बच्चों के मस्तिष्क-झिल्ली प्रदाह के साथ असली सन्निपात ज्वर प्रायः होते हैं, जो हो वैसे मस्तिष्क-ज्वर बदल भी जायँ तो उससे उसके कारण का आविष्कार करने के लिए हमारा विशेष ध्यान आकृष्ट होता है। डॉ० मेलि एकों और मर्क से इस प्रकार के ज्वरों की चिकित्सा करते हैं जिससे उन्हें अच्छी सफलता मिली है। मैंने भी कृमि के प्रदाह से उत्पन्न रोग मस्तिष्क-ज्वरों की बेल से चिकित्सा करके आराम किया है। ऐसे ज्वरों के लिए मैं औषध का घोल बनाकर देता हूँ, वह भी दिन भर में कई मात्रायें। इसी से मुझे यथेष्ट सुफल मिलता है। जिन ज्वरों के मूल में कृमि हो, वहाँ मैं २४ घण्टों के अन्दर इसी औषध से रोगी को आराम करता हूँ, किन्तु अन्य उपसर्ग कुछ अधिक दिनों तक रह सकते हैं। यदि ज्वर के साथ बहुत उबकाई रहे और बच्चों की आँखों के चारों ओर काली धारियाँ दिखायी पड़ें तो मैं इपिकाक से सफल चिकित्सा करता हूँ। इसके साथ सिना भी उपयोगी है—'वमन के साथ साफ जीभ' इसका खास लक्षण है। कृमि ज्वरों में साइक्यूटा और

साइलिशिया बहुत ही अधिक मूल्यवान औषधियाँ हैं, साइक्यूटा ऐंठन के लिए तथा सिना उसका उत्तम सहायक है। साइलीशिया विशेष रूप से गण्डमाला वाले बच्चों के लिए उपयोगी है। साधारण ज्वरों की अपेक्षा कृमि ज्वर अधिक हानिकारक है, खासकर यदि उसके साथ मस्तिष्क-प्रदाह रहे। औषध-कोश (Dictionnaire de Medicine) प्रथम संस्करण, भाग २१ पृष्ठ २४४ में डॉ० गार्सन्त ने एक बालक का उदाहरण दिया है। उसके पेट में थोड़ा दर्द था। एकाएक उसके शरीर में ऐंठन होने लगी और अन्त में वह मर गया। शव-परीक्षा से दिमाग, छाती या पेट में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं दिखायी पड़ा। आँतों के निचले भाग में दो लम्बे केंचुये की तरह कीड़े मिले और उससे पित्त बहने वाली नली रुक गयी थी। डॉ० मानदीर ने एक दूसरे बच्चे का हवाला दिया। उसे रक्तार्श के साथ उदरामय भी था। चिकित्सा के ६ वें दिन उसकी आँतों से खून जाने लगा और वह २४ घण्टों के अन्दर मर गया। शव परीक्षा से मलान्त्र के भीतर कोई घाव नहीं दिखाई पड़ा। आँतों को चीरने से पता लगा कि खून १२ अगुल आँत से आता था, वहाँ खून के कुछ थक्के मिले जिससे रक्त-प्रवाह रुक गया फलस्वरूप रक्त बहाने वाली नाड़ी फट गयी। वहीं कीड़ों की एक गाँठ दिखाई पड़ी जिससे १२ अंगुल आँत फूल गयी थी। छोटी आँत में भी कीड़ों की ऐसी-ऐसी गाँठें थीं। छोटी आँत की श्लेष्मिक झिल्ली में कोई खराबी नजर न आयी। निश्चय किया गया कि इन कीड़ों ने आँतों की दीवालों को छेद डाला था, कभी-कभी ऐसा भी दिखायी पड़ा कि श्वासनलियों में भी ऐसे छोटे-छोटे कीड़े पहुँच जाते थे। ऐसा भी दिखायी पड़ा कि इन कीडे के कारण गला भी वन्द हो जाता था। सभी जानते हैं कि इन्हीं कीड़े के कारण बच्चों के शरीर में ऐंठन होती है। स्वरयन्त्र की ऐंठन होती है। स्वरयन्त्र की ऐंठन को मैं अक्सर एकोन से आराम करता हूँ और इससे कीड़ों के सिद्धांत का खण्डन हो जाता है। सबसे पहले देखना चाहिये कि बच्चों के गले में श्वासकष्ट है या नहीं अथवा वह कृमि के या अन्य किसी कारण से है इसका निर्णय करना आवश्यक है। यदि

वहाँ जलन का कोई लक्षण न मिले और एकाएक ऐंठन होने लगे तो समझना चाहिए कि इसका कारण कृमि ही है।

८—पीत ज्वर (Yellow Fever)—मैं ऐसी जगह रहता हूँ जहाँ पीत-ज्वर का प्रकोप नहीं है, इस कारण वैसे रोग की चिकित्सा मुझे नहीं करनी पड़ी। होमियोपैथी का अच्छा ज्ञान रखने वाले एक जहाज के कप्तान ने मुझे बताया था कि वैसे ज्वर में क्या-क्या लक्षण होते हैं? उसी का विवरण मैं नीचे देता हूँ। साथ-साथ चिकित्सा भी बताता हूँ—(१) पीत-ज्वर में पहले ठण्ढ लगती है, चेहरा पीला पड़ जाता है और साँस रुँधने लगती है—वेरेट्रम एल्बम। (२) यदि इस ज्वर के शुरू में गरमी चढ़े, सिर और हाथ-पैरों में चीरने या फाड़ने की तरह तेज सर्द हो तो एकोन सर्वोत्तम औषध है और यदि ६ घण्टों के अन्दर उन्नति न दिखाई पड़े तो ब्रायो, किन्तु यदि प्रलाप हो तो बेल। (३) साधारण वमन के लिए इपकाक, काली कै हो तो आर्स और पल्स। (४) यदि शरीर की शक्ति बहुत घट गयी हो, साथ में अनिद्रा और श्वासकष्ट रहे, अन्ननली में सिकुड़न हो तथा पाकाशय में जलन रहे तो आर्सेनिक और कार्बो वेज। (५) प्यास अधिक है, किन्तु तरल वस्तु से घृणा—बेल। (६) जीभ और होठों पर काली-काली पपड़ियाँ, साथ में रक्तस्राव—रस, आर्स। ४ साल बाद वह कप्तान मुझसे आकर मिला। उसने बताया कि वेराक्रुज के स्थान में पीतज्वर की महामारी फैली थी और दूसरी बार बार्बडोज स्थान में भी वैसी ही महामारी फैल गयी। दोनों स्थानों में उसने एकोन, बेल और ब्रायो देकर बहुतों को बचाया। जहाँ कै अधिक दिखाई पड़ी वहाँ शुरू में इपि और आर्स से सुफल मिला। कभी-कभी फास भी काले वमन को अच्छा करता था। इसी तरह उसने सैकड़ों रोगियों को बचा लिया था। कहीं-कहीं ऐसा भी देखा गया कि क्रोटेलस देने से पीतज्वर के सभी उपसर्ग गायब हो गये। यदि शुरू में अधिक गरमी मालूम हो तो एकोन या ब्रायो दिया गया जिससे सभी उपसर्ग जाते रहे। कुछ कफ की शिकायत इपिकाक से दूर हो गयी, इसके बाद फिर रोग का कोई कष्ट नहीं रह गया। कुछ दिनों

के बाद खाने-पीने की बदपरहेजी के कारण उस रोग का फिर से आक्रमण हुआ और वह बहुत ही तेज हुआ। यदि तुरन्त एकोन न दिया होता तो रोगी को बचाना मुश्किल था। आर्स ने भी कुछ रोगियों को बचाया। कप्तान सदा ही ३० वीं शक्ति की ३ गोलियों का घोल बनाकर कर दिया करता था।

२—रोगजनित पसीना

(Morbid Sweats)

१—साधारण पसीना (General Sweats)—यदि किसी रोगी में बिना किसी ज्ञात कारण के पसीना होने लगे तो कोई चिन्ता की बात नहीं है। भीतरी कष्ट से एकाएक अधिक पसीना निकलने लगे तो अन्य उपसर्गों को देखकर औषध चुननी पड़ती है। पसीने से यदि कष्ट न घटे तो मर्क और चायना। रोग-भोग से जिनका शरीर बहुत कृश हो गया है और पसीना आने के कारण जो कमजोर हो पड़ा है उसके लिए चायना, कार्बो वेज, सल्फर या वेरेट्र एल्ब। जो मामूली परिश्रम से थक जाय और कमजोर हो पड़े उसके लिए हीपर, सीपि, सल्फर उपयोगी हैं। मोटे पेट वालों के लिए कैल्के। यदि मानसिक परिश्रम के कारण या मन के आवेग से पसीना निकले तो सल्फर, हिपर। खट्टा गन्ध वाला पसीना, सल्फर, सीपि, साइली, लाइको। पसीना चिकना प्रतीत हो तो ब्रायो, मर्क। पसीने से वस्त्रों पर पीला दाग पड़े तो मर्क, कार्बो एन, ग्रैफा।

२—आंशिक पसीना (Partial sweats)—यदि किसी रोगी के सिर और चेहरे पर पसीना हो तो वेरेट्र एल्ब, कैमो, ब्रायो, कार्बो वेज, साइलि उपयोगी औषधियाँ हैं। जननेन्द्रियों पर अधिक पसीना हो तो सल्फ, सीपि, साइलि, हीपर; बगल में पसीना हो तो हीपर, सीपि, पेट्रो, हाथों पर पसीना होने से सल्फ, कैल्के, सीपि, हीपर, खासकर पैर के पत्तों में बदबू वाला अधिक पसीना हो तो लाइको, कैल्के, सल्फर, साइलि, कार्बो वेज, सीपि, कूप्रम, वेराइ, ग्रैफा, केलिकार्ब, यदि इस पसीने से बहुत

बदबू निकले तो साइलि, वेराइटा, केलि कार्ब, सीपिया, नाइट एसि, ग्रैफा, यदि इससे पैर की उँगलियाँ छिल जायँ तो ग्रेफा, कार्बो वेज, नाइट एसि।

३—पसीने का दब जाना (Suppressed perspiration)—साधारण पसीने के दब जाने के कारण उत्पन्न उपसर्गों के लिए एकोन, कैमो, ब्रायो, रस, सल्फ। पैर के पत्तों का पसीना दब जाने से साइलि; कभी-कभी कूप्रम, वेराइ, आर्स, रस, सीपिया भी सहायक हैं।

———

अध्याय—३६

रोगाक्रांत विशेष अवस्थायें

(A Few Special Morbid Conditions)

१—थकावट और कमजोरी की अवस्थायें

(States of Exhaution and Debility)

१—कठिन रोगो के बाद (After severe diseases)—दुर्बलता एक साधारण अवस्था है जो रोग आराम होने पर अपने-आप गायब हो जाती है, किन्तु कभी-कभी ऐसी परिस्थिति होती है जब दुर्बलता ही रोग बन जाती है जैसे कि बहुत अधिक शारीरिक या मानसिक परिश्रम के बाद। अधिक इन्द्रिय सेवा के अनन्तर, बहुत दिनों तक रात को जागते रहने से, किसी कठिन रोग-भोग के बाद। ऐसी दुर्बलता को दूर करने के लिए औषध सेवन की आवश्यकता होती है। कठिन रोग के बाद वाली कमजोरी के साथ यदि रात्रि का पसीना रहे तो चायना और मर्क उपयोगी औषधियाँ हैं। यदि रोगी अनिद्रा के कारण कष्ट भोगता हो तो सल्फ, कास्टि, या लैके, वेल; यदि रोगी को रोग आराम होने पर भी भूख न लगे तो सल्फ, हिप, लैके, एण्टि क्रूड, यदि मामूली परिश्रम से पैरों में निरन्तर दर्द हो तो आर्स, नेट्र म्यूर; यदि मामूली परिश्रम से अवसाद आवे तो नेट्र म्यूर, कावयूलस।

२—अधिक शारीरिक परिश्रम के बाद (After excessive bodily exertions)—बहुत दूर तक पैदल चलने के कारण थकावट के लिए, पेशियों की शक्ति के अधिक क्षय होने पर भी मुख्य औषध है आर्स, यदि पेशियाँ हड्डी तक कुचल गयी हों तो आर्निका मदद देगा,

वह भी भीतर सेवन से, बाहरी प्रयोग से नहीं, थकावट से हाथ-पैरों के भीतर तेज दर्द, खड़े होने पर दुर्बलता का अनुभव होने से नेट्र म्यूर, यदि बातचीत करने से थकावट मालूम हो तो काक्यूलस, थकावट यदि अधिक होने से बेहोशी आवे वेरेट्र एल्ब, काक्कस या कैल्के, यदि जोड़ों में कुचल जाने जैसा दर्द हो, साथ में मामूली परिश्रम से आराम मिले तो रस, प्लीहा के भीतर सूई चुभने का-सा दर्द तेजी से दौड़ने के बाद हो तो आर्न या ब्रायो, भारी बोझ ढोने के बाद पीठ के निचले भाग में दर्द हो तो रस, ब्रायो, सल्फ या कैल्के, बहुत अधिक परिश्रम करने के बाद यदि साँस छोटी हो जाय तो आर्स, एकोन, साइलि, परिश्रम के बाद या हर काम के अनन्तर अनुभव हृदय के स्पन्दन के लिए एकोन, आर्स, नेट्र म्यूर, अधिक परिश्रम से सिरदर्द हो तो आर्न, ब्रायो, रस, कैल्के, यदि गति से आक्रान्त अशों में दर्द बढ़े तो ब्रायो, यदि हाथ-पैर ऐसे कड़े हो जायँ जिससे उन्हें चलाना कठिन हो तो आर्न, सल्फ, यदि मामूली परिश्रम से थकावट और अवसाद हो तो लैके, आर्स, नेट म्यूर, पेट्रो।

३—मानसिक परिश्रम और रात जागने के बाद (After mental labour and watching at night)—मानसिक परिश्रम से थकावट आने पर नक्स वाम ही मुख्य औषध है, यदि यह यथेष्ठ न हो तो सल्फ, कैल्के, साइलि, नेट्र कार्ब, लैके और पल्स उत्तम औषधियाँ हैं। हर बार के मानसिक परिश्रम के बाद यदि सिरदर्द हो तो नक्स वाम और सल्फ, यदि वे यथेष्ठ प्रमाणित न हों तो कैल्के, नेट्र कार्ब, बेल, पल्स या कभी-कभी साइलि से मदद मिलेगी, नशीले भाव के अनुभव या घुमरी होने से नक्स वाम, लैके, पल्स, रस, साइलि, जो लोग बहुत अधिक समय तक बैठे रहते हैं उनके लिए खासकर नक्स वाम, सल्फ, काक्कस; रात जगने के कारण थकावट के लिए मुख्यतया काक्कस, उसी तरह चायना, आर्न, कार्बो वेज, पल्स, इपि, फास एसि, नक्स वाम, यदि इसी कारण सिरदर्द हो तो काक्कस, नक्स वाम, ब्रायो, पल्स, रात जगने के फलस्वरूप मिचली या पाकाशय की गड़बड़ी, काक्कस, इपि, पल्स, कार्बो वेज, रात

जगने के कारण उत्पन्न अनिद्रा या बेचैनी की नींद हो तो काक्कस, चायना, काफि, लैके, रात को अधिक आमोद-प्रमोद के कारण थकावट हो तो नक्स वाम, कार्बो वेज, ब्रायो, पल्स, लैके।

४—शरीर के तरल धातु की हानि के बाद (शिराच्छेदन, प्रचुर पसीना आदि) (After loss of fluids, venesection, profuse perspiration etc.)—ऐसी अवस्था में मुख्य औषध है चायना, यदि यह यथेष्ठ प्रमाणित न हो तो हमें फास एसि, सल्फ, सल्फ एसि, आर्स, नक्स वाम, कार्बो वेज और कैल्के का आश्रय लेना चाहिए। बहुत अधिक खून बह जाने के बाद मूर्च्छा के लिए चायना से लाभ न हो तो इपि, आर्स और कभी वेरेट्र एल्ब दिया जा सकता है। खून बह जाने के बाद हाथ-पैरों में कुचल जाने जैसा दर्द हो तो चायना, आर्न, आर्स, यदि कमजोरी के साथ भारी प्यास रहे तो चायना, आर्स। बहुत अधिक छाती का दूध पिलाने से कमजोरी हो तो कार्बो वेज, चायना, फास एसि।

५—बहुत अधिक इन्द्रिय-भोग तथा शुक्र-क्षय आदि के बाद वाली कमजोरी (After sexual excesses excessive seminal losses, etc)—रक्तक्षय से उत्पन्न दुर्बलता के लिए चायना जितना उपकार कर सकता है, बहुत अधिक इन्द्रिय भोग के कुपरिणाम के सामने वह थोड़ा है। ऐसे रोगियों के लिए फास एसि, सल्फ, कैल्के, कान, नक्स वाम, काक्कस, कार्बो वेज यथार्थ में ही उपयोगी औषधियाँ हैं। दूसरी ओर स्वाभाविक क्षय से उतना स्वास्थ्यनाश नहीं होता जितना कि अस्वाभाविक से ज्यादती होता है; प्रथम पक्ष स्वाभाविक वीर्यक्षय की एक सीमा है और वह प्राकृतिक नियम के अनुसार ही होता है, किन्तु दूसरे पक्ष में अस्वाभाविक वीर्यनाश की कोई सीमा नहीं है। स्वाभाविक मैथुन की अपेक्षा अस्वाभाविक कुटेव अधिक हानिकारक है। कुछ चिकित्सक तो नवयुवकों को इस कुटेव से छुड़ाने के लिए उन्हें डरा देते हैं यह कहकर कि उस अभ्यास से तुम्हारे मेरुदण्ड की मज्जा का क्षय हो जायगा और अन्त में

मृत्यु हो जायगी, किन्तु असली बात यह है कि इस कु-अभ्यास से ग्रस्त बालकों और युवकों की सख्या सभी देशों में यथेष्ट है, किन्तु यथार्थ में मेरुदण्ड की मज्जा का क्षय बहुत अधिक व्यक्तियों में नहीं दिखाई पड़ता, किन्तु यह भी सत्य है कि इस कुटेव में फँसे लोगों में यह रोग बन जाता है। मैंने जब अपना चिकित्सा-व्यवसाय शुरू किया था, उन दिनों देखा कि ऐसे युवकों के पैर लड़खड़ा जाते हैं। मुझे यह भी पता लगा कि ऐसे लोगों में बुद्धि की प्रतिभा घट जाती है यहाँ तक कि किसी-किसी में मृगी रोग तक होता है। ऐसे लोग एकान्त में छिपे रहना चाहते हैं, लोगों के साथ मिलने में शर्माते हैं, ऐसे लोग प्रायः उदास रहा करते हैं, वे सुस्त और थके ही मालूम पड़ते हैं। इस बुरी आदत को छोड़ देने से रोग अपने आप अच्छा हो जाता है। इस कुटेव का एक परिणाम है फेफड़ों का क्षय। उसका प्रधान कारण है हस्त-मैथुन। पेरिस नगर में मेरे पास २२ वर्षों की उमर वाले जितने लड़के या लड़कियाँ फेफड़ों के क्षय रोग की चिकित्सा के लिए आये, वे सभी इस कुटेव से ग्रसित थे। उनका चेहरा मुर्झाया हुआ, नेत्र ज्योति रहित, मामूली सूखी खाँसी से समूचा शरीर हिलता था। मैं सबसे पहले उनके फेफड़ों की जाँच करता था, उसके अनन्तर रोगी के घर वालों और मित्रों से उसके रहन-सहन और आचार विचार के बारे में पता लगाता था। उस समय की उपयोगी चेतावनी देने से रोगियों का बहुत उपकार होता है। मुझे सन्देह नहीं है कि जो नवयुवक और नवयुवतियाँ २१ से २५ वर्षों की उमर में फेफड़ों के क्षय रोग से मर जाती हैं और उसका प्रधान कारण है हस्त-मैथुन। यदि रोग बहुत अधिक बढ़ न गया हो तो निम्नलिखित अवस्थाओं के लिए औषधियाँ इसी क्रम से देनी चाहिए—इस पुस्तक के खाँसी और फेफड़ों के क्षय सम्बन्धी अध्यायों में देखने से जाना जायगा कि इस रोग के लिए फास्फोरिक एसिड, सल्फर, कैल्केरिया, फास्फोरस, हीपर और साइलीशिया का क्रम है। जहाँ बुद्धि भ्रम, रोग की शंका, पैरों में थकावट और दर्द दिखाई पड़े, वहाँ नक्स वाम, सल्फ, कैल्के—इसी क्रम से औषध देने पर उपकार होगा।

कैल्के के सेवन के बाद भी यदि रोगी अपने स्वास्थ्य के लिए चिन्तित हो तो मैं एसिड फास या स्टैफि देकर उसे स्वस्थ कर देता हूँ। यदि अभी भी हस्तमैथुन की बुरी आदत न छूटने के कारण औषधियों का प्रभाव नहीं होता और पुरुषाग में अत्यन्त अधिक उत्तेजना हो और रोगी को बार-बार वैसा ही कुकर्म करना पड़े तो नक्स वाम, पल्स, साइलि, प्लैटि और सीपि देना चाहिए। यदि कामभाव की प्रबलता रहे तो कार्बो वेज, मर्क और चायना। यदि ये औषधियाँ फल न दें तो कैल्के, फास, मेजोरेना सेवन कराने की व्यवस्था देनी चाहिए। यदि स्वप्नदोष हो और नक्स वाम, सल्फर तथा कैल्के से लाभ न हो तो एसिड फास, कोनियम, सीपिया, पल्स, कार्बो वेज, चायना देना चाहिए (डॉ० हेम्पल के मतानुसार डिजिटैलिन २ विचूर्ण भी उपकारी है)। यदि रोगी रोगी से मुक्त होकर भी उसके बचे हुए कुपरिणामों के द्वारा कष्ट भोग रहा हो और उसके हाथ-पैर सुस्त तथा थके हुए हों तो कैल्के, कावयूलस या साइली। सिर में बोझ का अनुभव हो तो कैल्के। मानसिक क्लान्ति के लिए सीपि, श्वासकष्ट के लिए स्टैफि और साइलि। ऐसे क्षेत्रों में मैं ३० शक्ति की २ या १ गोलियाँ जीभ पर डाल देता हूँ, पहले सप्ताह में २ या ३ मात्रायें और २ या ३ सप्ताहों तक मैं कोई औषध नहीं देता, बल्कि पहली औषध के प्रभाव का निरीक्षण करता हूँ। ऐसे रोगियों में पानी में घोल कर औषध देने से कोई लाभ नहीं होता।

६—थकावट, गरमी के प्रभाव से अवसाद (Exhaution, prostration from exposure to heat)—अत्यधिक गरमी लगने से सिरदर्द हो तो ब्रायो, कार्बो वेज और बेल, उसी तरह की गरमी के कारण उत्पन्न उबकाई तथा पाकाशयिक विशृंखला के लिए ब्रायो, कार्बो वेज, एण्टि क्रूड, साइलि और लाइको। उदरामय के लिए ब्रायो, फास एसि और सल्फर। आँधी-पानी के प्रभाव से थकावट हो तो ब्रायो, साइलि, सीपि, फास, पेट्रोल और नेट्र कार्ब की बहुत जाँच हो चुकी है।

२—ठण्ढक
(Colds)

१—विभिन्न कारणो से बहुत अधिक ठढ लगने के अनुसार (According to the different causes)—निम्नलिखित औषधियाँ इस प्रकार के रोगों में उपकारी प्रमाणित हुई हैं, केवल मेरे अपने चिकित्सा-व्यवसाय में ही नहीं, बल्कि अन्य उत्तम चिकित्सकों के द्वारा भी। पानी में भींगने से ठण्ढ लगने पर रस, पल्स, डल्का, एकोन, कैल्के, नदी में नहाने के बाद रस, कैल्के, कास्टि, एण्टि क्रूड, सल्फ, पानी में काम करने के बाद कैल्के, पल्स, रस, सल्फ; सिर में एकाएक ठण्ढ लगने से बेल, पल्स, एकोन, सीपि, पैर के पत्तों के भींग जाने से पल्स, साइलि, डल्का, वेरेट्र एल्ब, कैल्के, सल्फ, रस; पाकाशय में बर्फ, मलाई बर्फ, कच्चा फल, सिरका आदि खाने से ठण्ढ लग जाने पर आर्स, पल्स, कार्बो वेज, ब्रायो, पसीने के दब जाने के बाद कैमो, रस, ब्रायो, डल्का, चायना।

२—ठण्ढ लग जाने के कुपरिणामो के अनुसार (According to the consequences of taking cold)—ठण्ढ लग जाने से यदि एक भी उद्भेद दब गया तो आर्स, ब्रायो, इपि और डल्का; यदि ठण्ढक से सिरदर्द हो तो एकोन, एण्टिक्रूड, बेल, कैमो, डल्का, आँखों में कष्ट हो तो बेल, हिप, सल्फ, डल्का, कान में दर्द हो तो कैमो, मर्क, पल्स, सल्फ; कानों में भनभनाहट का शब्द एकोन, डल्का, चेहरे का स्नायु-शूल एकोन, कैमो, काफि, दन्तवेदना एकोन, कैमो, डल्का, हिप, मर्क, रस, सल्फ, गलक्षत बेल, डल्का, मर्क, पाकाशयिक शिकायत, मिचली, वमन में एण्टि क्रूड, आर्स, बेल, ब्रायो, कार्बो वेज, फास्फस, डल्का, इपि, हृदय में दर्द आर्स, शूल, कैमो, मर्क, सल्फ; उदरामय ब्रायो, कैमो, डल्का, मर्क, नक्स वाम, पल्स, सल्फ; सर्दी का दब जाना बेल, चायना इपि, पल्स, सल्फ, खाँसी ब्रायो, कार्बो वेज, कैमो, डल्का, इपि, नक्स, वाम, फास एसि, पल्स, सल्फ, श्वासकष्ट में आर्स, कार्बो वेज, इपि, छाती

में दर्द कार्वो वेज, एकोन, ब्रायो; हाथ-पैरों में दर्द एकोन, आर्निका, ब्रायो, कैल्के, कैमो, काफि. डल्का, हीप, मर्क फास एसि, रस टाक्स, साइलि, सल्फ, जाग एकोन, बेल कैमो, डल्का, पल्स; ऋतु का बदलना एकोन, पल्स, कैमो, डल्का, सीपिया, वेल, चायना, साइलि।

३—सर्दी लग जाने की आदत (Liability to take cold)—कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें अनायास ठण्ढ लग जाती है। उनकी सफल चिकित्सा के लिए एक औषध का पूरा प्रभाव शरीर-यन्त्रों पर होने तक कई सप्ताह पर्यन्त प्रतीक्षा करनी पड़ती है; इसी उपाय से मैं कई रोगियों को ठण्ढक से मुक्त कर सका हूँ। अन्य विषयों में उनका स्वास्थ्य अच्छा ही था। इस कारण मेरी औषधियाँ अच्छी तरह उनके भीतर प्रभाव डाल सकी हैं। पुराने रोगियों के लिए, जिनका मेरी चिकित्सा पर पूर्ण विश्वास था, मैं उपयोगी औषध चुनकर उन्हें लम्बी अवधि के बाद सेवन कराकर ठण्ढक से उन्हें मुक्त कर सका हूँ। मेरी प्रधान औषधियाँ ये थीं कैल्के, नेट्रम एसिड, साइलि, कार्वो वेज, डल्का, पल्स, रस टाक्स, वेल, काफि, नक्स वाम, चायना; मामूली हवा लगने से ही ठण्ढ लगने के लिए कार्वो वेज, रस, वेरेट्र एल्व, ब्रायो, कैल्के, कैमो, मर्क; हवा बिलकुल सहन न होना लाइको, सल्फ, कार्वो वेज, सीपिया, कैमो, लैके; खासकर पश्चिमी हवा सीपि; हवा का झोका लगने से वेल, साइलि, सल्फ, कैल्के, कैमो; शाम की ठण्ढी वायु लगने से मर्क, सल्फ, कार्वो वेज, नाइट एसि; आँधी-पानी की आबहवा से ब्रायो, साइलि, तर और ठण्ढी आबहवा से कैल्के, वेरेट्र एल्व, कार्वो वेज, रस, आबहवा के हर बार बदलने से साइलि, कार्वो वेज, मर्क, सल्फ, कैल्के, रस, वेरेट्र एल्व।

४—मौसम के अनुसार (According to the seasons)—वसन्त ऋतु में ठण्ढ लग जाने पर उत्तम औषधियाँ हैं—रस, लैके, वेरेट्र एल्व, कार्वो वेज, ग्रीष्म ऋतु में ब्रायो, फास एसि, कार्वो वेज, डल्का, सीपि, साइलि, पतझड़ के समय रस, वेरेट्र एल्व, डल्का, मर्क, कैल्के,

ब्रायो, चायना, शीत ऋतु की सूखी ठण्ढी आबहवा से ब्रायो, एकोन, बेल, डल्का, कैमो, नक्स वाम, सल्फ।

३—दानों, घावों तथा अन्य स्वाभाविक नि.स्रावों का दब जाना

(Suppression of Eruptions, Ulcers and other Habitual Secretions)

१—साधारण मन्तव्य (General Remark)—नये या पुराने दानों, घावों, स्रावों के दब जाने या रुक जाने के कारण जुकाम, प्रदर, स्पर्श या ऋतु विकार हो तो उस रोग की विशेषता पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। प्रायः देखा गया है कि चमड़े पर के दाने या मासिक स्राव के दब जाने से शरीर में कोई नया उपसर्ग पैदा हो गया है। कभी-कभी साल-दो-साल के बाद भी वैसे उपसर्ग एकाएक प्रकट होते हैं। ऐसे उपसर्ग कब प्रकट होंगे, उसके विषय में बताना कठिन है। कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि चिकित्सा आरम्भ करते ही पुरानी सर्दी नाक से बहने लग गयी या प्रदर का स्राव एकाएक होने लगा जिससे रोगी और रोगिणी को आराम मिल जाता है। फलस्वरूप रोग का प्रकोप भी घट जाता है। मैं कई सालों से रोगियों का इतिहास लिखता चल रहा हूँ और मुझे प्रमाण मिला है कि मेरी औषध ने दबे हुए रोग को उभाड़ कर नये उपद्रवों के सहित उन्हें दूर कर दिया है। यहाँ मैं उन्हीं बातों को बताता हूँ।

२—विभिन्न कारणों से उत्पन्न रोग (Diseases according to the various causes)—यदि पुराने दानों या घावों के दब जाने के कारण रोग पैदा हुआ हो तो निम्नलिखित औषधियाँ अत्यन्त उपकारी होंगी—आर्स, कास्टि, ग्रैफा, सल्फ, कैल्के, लाइको, साइलि, लैके, कूप्रम, तरुण दानों के दब जाने के बाद कूप्रम, ब्रायो, फास, आर्स, एपिस, पल्स, सल्फ, बेल, इपि, खास कर लालबुखार के दानों के लिए ब्रायो, सल्फ,

कैल्के, फास, फास एसि; शीतला की गोटियों के ब्रायो, फास, पल्स, सल्फ, आर्स; विसर्प के कूप्रम, ब्रायो, एपिस, वेल, रस; शीतपित्त के एपिस, आर्स, इपि, कैल्के, लाइको; मामूली दानों के ब्रायो, इपि, कैल्के, लाइको, सर्दी के बहाव के रुक जाने से चायना, वेल, पल्स, सल्फ, ब्रायो, पल्स, नक्स वाम; पैर के पत्तों का पसीना दब जाने के बाद साइलि, कूप्रम, वैराइ, आर्स, रस, सीपि, प्लम, साधारण पसीने के दब जाने से एकोन, कैमो, रस, ब्रायो, सल्फ, अर्श के रक्तस्राव के दब जाने से एकोन, सल्फ, नक्स वाम, चायना, आर्स, कैल्के, कार्बो वेज, पल्स, ऋतुस्राव के दब जाने से ब्रायो, पल्स, सल्फ, लाइको एकोन, सिपि, साइलि; प्रसवोत्तर स्राव के दब जाने से रस टाक्स, कालो, हायोस, नक्स वाम, प्लैट, वेरेट्र एल्व, सूजाक के स्राव के दब जाने से पल्स, मर्क, आरम; उपदंश के घाव को जलाने के बाद (मेरे द्वारा लिखित 'रतिज रोग' ग्रन्थ देखिए) ।

३—दानों के दब जाने के कुपरिणाम (Consequences of such suppression)—यदि मानसिक उन्माद के बाद दब गये हों तो वेल, कूप्रम, आर्स, कास्टि, ग्रैफा, यदि मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह के कारण दबे हों तो कूप्रम, वेल, ब्रायो, सिर में पुराने चक्कर के द्वारा दब गये हों तो सल्फ, कैल्के, कास्टि, फास; सिरदर्द के द्वारा सल्फ, वेल, ब्रायो, कैल्के, आर्स, नक्स वाम, लैके, नेत्ररोगों के द्वारा सल्फ, कैल्के, मर्क, हिप, रस, आर्स, वेल, युफ्रे, पल्स, लैके, नाइट एसि; पाकाशयिक गड़बड़ियों के द्वारा सल्फ, पल्स, नक्स वाम, लैके, आर्स, हिप, साइलि, कार्बो वेज, उदर के पुराने दर्दों के द्वारा सल्फ, आर्स, कैल्के, फास, कालो, वेल, यकृत की शिकायत के द्वारा लाइको, लैके, ब्रायो, वेल; पतले दस्तों के द्वारा सल्फ, कैल्के, रस, आर्स, फास, ब्रायो, फास एसि, नाइट एसि, पेट्रोल, मूत्रयन्त्र के कष्टों के द्वारा पल्स, नक्स वाम, एकोन, लाइको, डल्का, आर्स; श्वासकष्ट के द्वारा आर्स, इपि,

लैके, सल्फ, साइलि, कूप्रम, पल्स, फास; फेफड़ों के रोगों के द्वारा ब्रायो, फास, सल्फ, कैल्के, मर्क, नाइट एसि, हिप, साइलि, आर्स; पक्षाघात की अवस्थाओं के द्वारा कास्टि, डल्का, सल्फ, रस, एलुम, एकोन, कैल्के, बैराइ, मूर्च्छा के द्वारा सल्फ, कैल्के, अस्टि, आर्स, साइलि।

४—मानसिक आवेग
(Emotions)

१—साधारण मन्तव्य (General Remark)—यह सर्वविदित है कि एकाएक भय खाने, अचिन्तित उल्लास, शोक, दुःख, क्रोध आदि कारणों से भयंकर तरुण रोग तथा पुराने रोग उभड़ आते हैं। इसी कारण किसी रोगी के रोग का इतिहास जानने के लिए या उसकी मानसिक अवस्था समझने के लिए मैं सदा ही प्रयत्न करता हूँ। मैं पूछता हूँ कि रोगी को कभी क्रोध, चिन्ता, संताप, दुःख या शोक से कष्ट भोगना पड़ा है? पुराने रोग बहुत दिनों तक चलते रहते हैं इस कारण हम अमोघ औषध प्रयोग कर रोगियों के भीतरी शत्रुओं का सफाया करने की चेष्टा करते हैं जिससे रोगी अपने स्नायुमण्डल को दृढ़ करके बाहरी दुनिया से लड़ सके। मैंने इस पुस्तक के प्रथमांश में मानसिक आवेग से जो उपसर्ग उत्पन्न होते हैं, उनके निवारण के लिए औषधियों का विवरण लिख दिया है किन्तु इस समय मैं मनोभावों के भेदों के अनुसार जो रोग उत्पन्न होते हैं, उनके लिए विशेष औषधियों का विवरण देता हूँ।

२—विभिन्न प्रकार के मनोवेगों के अनुसार (According to the different Emotions)—भय खाने के कारण उत्पन्न मानसिक कष्ट के लिए मैं सदा ही एकोन, इग्ने, बेल, ओपि, वेरेट्र एल्ब, हायोस, लैके; एकाएक बहुत अधिक आनन्द के कारण काफि, एकोन, क्राकस, ओपि, अत्यन्त क्रोध के कारण, कैमो, स्टैफि, इग्ने, ब्रायो, काक्कस, कालो, नक्स वाम, फास, भयंकर क्रोध के आवेग के साथ ब्रायो, एकोन, कैमो,

नक्स वाम, फास, बहुत अधिक घृणा के आवेग से स्टैफि, कालो, भीतर मास के क्षय होने पर इग्ने, पल्स, प्लैट, दुःख या क्रोध के परिणाम से फास एसि, कास्टि, इग्ने, लैके, ग्रैफा, आर्स, लाइको, अपमानित होने पर पल्स, प्लैटि, स्टैफि, कालो, प्रेम में हताश होने पर फास एसि, इग्ने, हायोस, स्टैफि, आरम, पल्स और उसके साथ यदि ईर्ष्या रहे तो हायोस, लैके, पल्स, निरन्तर घर में रहने के कारण केप्स, मर्क, फास एसि, ड्रास।

३—तीव्र आवेग के परिणाम के अनुसार (According to the Consequences of emotions)—मन के विक्षेप के कारण उत्पन्न तीव्र आवेग के लिए बेल, हायोस, लैके, ओपि, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्ब, बहुत जोर से लगातार चिल्लाने के साथ बेल, ओपि, साथ में निरन्तर बड़बड़ाहट और भय के कारण बेल, एकोन, मर्क, कैमो, प्लैट, वेरेट्र एल्ब; साथ में बहुत तेज चिड़चिड़ापन और अधीरता से, स्टैफि, कालो, साथ में दुःख और उदासी आरम, इग्ने, पल्स, फास एसि, प्लैट, कावक्कस, कास्टि, लाइको, लगातार रोने से पल्स, बेल, प्लैटि, हिप, नेट म्यूर, सल्फ, बेहोशी के बाद होने से ओपि, हायोस, बेल, नक्स वाम, गहरी नींद या उंघाई ओपि, पल्स, क्रोक, बेल, सैम, फास एसि, यदि अनिद्रा के कारण हो सल्फ, काफि, एकोन, स्टैफि, मर्क, कालो, कैप्स, स्नायविक उत्तेजना से एकोन, काफि, नक्स वाम, मर्क, खून के प्रवाह के कारण सिरदर्द से बेल, ओपि, मर्क, नक्स वाम, एकोन, काफि, इग्ने, सल्फ, पाकाशयिक गड़बड़ियों से (भूख का अभाव, मिचली, कै आदि), कैमो, पल्स, ब्रायो, इग्ने कालो, नक्स वाम, पित्त की गड़बड़ियां कैमो, ब्रायो, एकोन, कालो, स्टैफि, इग्ने, पाकाशय में दर्द, कैमो, नक्स वाम, पल्स, इग्ने, शूल और उदरामय कैमो, पल्स, वेरेट्र एल्ब, कालो, फास, फास एसि, अपने-आप पाखाना हो जाने से वेरेट्र एल्ब, हायोस, ओपि, श्वासकष्ट से सैम, ओपि, बेल, नक्स वाम, कैमो, आर्स, दिल की धड़कन से एकोन, पल्स, हिप, ओपि, कैमो, आर्स, खून के प्रवाह से एकोन, काफि, मर्क, कवल रोग से मर्क, चायना, कैमो, एकोन, कमजोरी के साथ कम्पन से वेरेट्र

एल्व, काफि, ओपि, इग्ने; ऐंठन से इग्ने, कैमो, वेल, हायोस, ओपि; मृगी से इग्ने, कास्टि, वेल, लैके, ओपि; ज्वर से एकोन, ब्रायो, कैमो, मर्क, पल्स, नक्स वाम, इग्ने, फास एसि, स्टेफि; ठण्ढक के साथ कंपकंपी मे पल्स, मर्क, ब्रायो, शरीर और हाथ-पैरों में ठण्ढक के बोध के साथ वेरेट्र एल्व, पल्स, ओपि, सैम्बु, गरमी के साथ एकोन, ब्रायो, कैमो, नक्स वाम; गालों में लाली की झलक एकोन, कैप्स, इग्ने; प्रचुर रात्रि के पसीने के साथ फास एसि, मर्क, यक्ष्मा ज्वर के साथ फास एसि, इग्ने, काक्कस, स्टैफि, कैप्स ।

४—मन मे अत्यन्त स्पर्शासहिष्णुता, मामूली कारण से उत्तेजित हो जाना (Excessive sensitiveness of the Feelings, emotions are too easily excited)—मामूली कारण से एकाएक चौंक उठना लक्षण के लिए उत्तम औषधियाँ हैं इग्ने, वेल, नक्स वाम, वोरैक्स, कास्टि, लैके, सल्फ, सीपि, चिड़चिड़ा मिजाज और हर एक चीज का बुरा अंश ही रखना एकोन, ब्रायो, कैल्के, कास्टि, कार्वो वेज, स्टेफि, आर्स, लाइको, कैप्स, नाइट म्यूर, नक्स वाम, फास, सल्फ, चिड़चिड़े मिजाज के लिए ब्रायो, आर्स, इपि, कैमो, कास्टि, आरम, कार्वो वेज, नक्स वाम, पेट्रोल, फास, सल्फ, झगड़ालू, तुनुकमिजाज, क्रोधी, हर आदमी की निन्दा करने वाला आर्स, कास्टि, वेल, कैमो, चायना, हायोस, लैके, लाइको, मर्क, वेरेट्र एल्व, नक्स वाम, आर्न, सीपि; वेदना एकदम सहन न होना ऐकोन, कैमो, काफि, नक्स वाम, पल्स, वेरेट्र एल्व, इग्ने, लाइको, फास, फास ऐसि, साइलि, ग्रैफा, आर्स, मर्क, चायना, यदि किसी रोगी में पुराना कष्ट हो और ऊपरलिखित औषधियों में से किसी का लक्षण समान हो तो उसे वही औषध बहुत दिनों तक सेवन कराना आवश्यक है। इसकी अवधि लम्बी हो, पहली मात्रा देकर उसके फल के लिए कई दिनों तक यहाँ तक कि कई सप्ताहों तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। बीच में कोई नयी औषध नहीं देनी चाहिए उससे पूर्वोक्त औषध की शक्ति घट जायगी और रोगी मामूली कारण से चिढ़ जायगा और उसका

शरीर बहुत कमजोर हो जायगा। डॉ० हैनिमैन के अनुसार रोगी के स्वभाव, प्रकृति तथा रहन-सहन आदि पर ध्यान रखकर जो चिकित्सक चिकित्सा करता है वह रोगी को आराम करने में सफल होता है।

५—औषध सेवन से उत्पन्न रोग
(Medicinal Diseases)

१—पारा सेवन से उत्पन्न रोग (Mercurial Cachexia)—आजकल एलोपैथ डाक्टरों ने भी उपदंश रोग की चिकित्सा में पारे का व्यवहार छोड़ दिया है या बहुत कम कर दिया है, फलस्वरूप पारे के विष से विषाक्त रोगी भी घट गये हैं। जिन्हें अभी भी उसी के कारण वैसा रोग होता है उनके लिए मेरे विचार से निम्नलिखित औषधियाँ लाभदायक हैं। एक रोगी उसी तरह पारे के विष से आक्रान्त हो गया था। उसकी अवस्था बहुत ही दयनीय थी। उसको आराम करने के लिए मुझे नीचे लिखी औषधियाँ सफल सिद्ध हो गयी थीं—मुख और मसूड़े में घावों के लिए कार्बो वेज, हीपर, डल्का, स्टैफि, नाइट्रि एसि, थूजा, लगातार लार बहने के लिए डल्का, काली हायड्रा, पारा सेवन के कारण गलक्षत के लिए, आर्स, लैके, लाइको, कार्बो वेज, हीपर, नाइट ऐसि, थूजा, नाक की श्लैष्मिक झिल्लियों में घाव आरम, पारा सेवन जनित घाव, आरम, हीपर, फास ऐसि, कार्बो वेज, साइलि, लैके, सारसा, लाइको, फेर, नाइट ऐसि, वाघी ग्रन्थियों में सूजन में आरम, डल्का, कार्बो वेज, साइलि; अस्थि-रोग, अस्थि-अर्बुद, अस्थि-क्षय आदि आरम, केलि हाइड्रा, फास एसि, कैल्के, स्टैफि, साइलि, ऐसाफीटिडा; हाथ-पैरों में दर्द, कार्बो वेज; चायना हीपर, सारसाये, म्युएकम, थूजा, नाइट एसि, स्नायविक दुर्बलता के लिए, केलि हाइड्रा, आरम, कार्बो वेज, फेरम, हीपर, नाइट ऐसि; पारे का घाव, केलि हायड्रायड, शोक साथ में अवर्णनीय शारीरिक और मानसिक दुःख आरम, हिप, बहुत तेज सर्दी लग जाने की आदत, आवहवा का परिवर्तन सहन न होना कार्बो वेज, डल्का, साइलि, चायना। साल

भर पहले पारा सेवन रोक देने पर मैंने आरम, हिप, केलि हायड्रा से उसे आराम किया था, जिन्हें मैं अन्य सभी औषधियों से अच्छा समझता हूं। इनकी दूसरी शक्ति का विचूर्ण मैं देता हूं, अन्य औषधियों की तीसरी शक्ति की २ गोलियों को जल में घोल कर देता हूं। यदि पारा सेवन १ वर्ष से अधिक समय पूर्व बन्द कर दिया गया हो तो मैं अन्य औषधियों की तरह ऊपर लिखित तीन औषधियों को जल में घोल कर देता हूं। यहां तक कि अत्यन्त खराब रोगी भी मेरे हाथ में केलि हायड्रायड, आरम और हिपर की ३ या ४ मात्राओं से अल्प समय में आराम हो गये हैं। रोगी को पूर्णतया आराम करने तथा पारे की विष से सुरक्षित करने के लिए कई सालों तक औषध सेवन करानी पड़ती है। जिसस अस्थियों का दर्द, हाथ-पैरों तथा जोड़ों के दर्द, चमड़े पर के दाने और छाले पुनः उत्पन्न न हों।

२—क्विनीन सेवन जनित रोग (China-cachexia)—अधिक दिनों तक क्विनीन का सेवन करने से शरीर में विषक्रिया उत्पन्न होती है। एलोपैथिक डाक्टर ज्वर आराम करने के लिए रोगी को अधिक परिमाण में क्विनीन सेवन कराते हैं। ऐसी हालत में हम इपिकाक ३० की २ गोलियाँ पानी में घोल कर रोगी को पिला देते हैं। यदि इससे भी ज्वर का कुछ अंश रह जाय तो मैं इपिकाक के अतिरिक्त अवस्थाओं के अनुसार आर्निका, आर्स, कार्बो वेज, वेरेट्र एल्ब, फेर, लैके, पल्स, नेट्र म्यूर, जहाँ इपिकाक से यथेष्ट फल नहीं मिलता, वहाँ मैं खासतौर पर आर्न देता हूँ—यदि भारी अवसाद, अस्थियों में दर्द, गति, बातचीत या हल्ला-गुल्ला सुनने से रोगी के अंगों में स्पर्शकातरता बढ़ जाय और रोगी उसकी शिकायत करे। सिरदर्द के लिए मैं बेल, कैल्के, नक्स वाम, नेट्र म्यूर देता हूँ; चेहरे के दर्द के लिए बेल, नक्स वाम, मर्क, कर्णशूल के लिए पल्स, मर्क, कैल्के, दन्तवेदना के लिए बेल, पल्स, कैल्के, नक्स वाम, प्लीहा में चिलक, आर्निका, आर्स, कैप्स, फेर, कार्बो वेज, वेरेट्र, बेल, पाक्काशयिक विशृंखला, इपि, पल्स, कार्बो वेज, यकृत की शिकायत, आर्स, फेर, बेल, मर्क, लाइको, नक्स वाम, कवल रोग, मर्क, बेल; पुरानी

कब्जियत, वेरेट्र एल्ब, लैके, नेट्र म्यूर, नक्स वाम, उदरामय इपि, फेर, आर्स, वेरेट्र एल्ब; श्वास कष्ट, इपि, आर्स, कार्बो वेज, लैके; खांसी इपि, आर्स, हाथ-पैरों में दर्द, वात का दर्द आना, पल्स, कैल्के; पैर के पत्तों में सूजन फेर, आर्स; शोथ फेर, आर्स, रस टाक्स, हायोस; शरीर का ठढापन और ठढा पसीना. इपि, वेरेट्र एल्ब, आर्स; निद्रा में विघ्न वेल, लैके, नेट्र म्यूर।

३—अन्य औषधो के द्वारा उत्पन्न शिकायतें (Complaints caused by other drugs)—फ्रांसीसी तथा जर्मन होमियोपैथ चिकित्सक ऐसी परिस्थिति में प्रायः सर्वत्र ही विभिन्न रूपों में आयोडाइन का ही व्यवहार करते हैं। उसके कुपरिणामों को प्रशमित करने के लिए हमारे पास फास, हीपर, आर्स या मर्क तथा उसी तरह सल्फ उपयोगी औषधियाँ हैं। इसकी ३० वीं शक्ति की २ गोलियों को पानी में घोलकर छोटी-छोटी मात्रायें पर्याप्त हैं। अगरेजों के परिवारों के लिए रूवर्व तथा मैग्नेशिया के कुपरिणामों को आराम करने के लिए पल्स, कैमो या मर्क, वाद में पल्स या आर्स। गन्धक सेवन के वाद यदि शरीर में दाने उत्पन्न हों या अगरेजी तरीके से गन्धक के पानी में नहाने से चमड़े पर जहाँ-तहाँ उद्भेद निकल आयें तो मर्क या पल्स और कभी-कभी आर्स या सीपि उपयोगी हैं। युवती लड़कियों ने यदि अधिक परिमाण में लोहे का सेवन किया हो, फलस्वरूप हरित्पाण्डु रोग तथा यक्ष्मा रोग होने की शंका हो तो चायना और पल्स कभी-कभी, प्लम और आर्स से सहायता मिलेगी। हृदय के रोग के लिए यदि डिजिटेलिस बहुत अधिक परिमाण में खा लिया हो और रोग असाध्य हो गया हो और आर्स, फास या ग्लोनायन से उपकार न हो तो मुझे अन्य कोई औषध ज्ञात नहीं है। अफीम के सम्बन्ध में भी यही वात है। यदि अफीम खाने के पुराने उपसर्गों को वेल, मर्क, नक्स वाम दूर न कर सके तो प्लम्बम या आर्स सहायक सिद्ध होगा। सीसे के मलहम के प्रयोग से जो उपसर्ग उत्पन्न होते हैं उनके लिए एल्युमिना अत्यन्त उपकारी औषध है। वेल, नक्स वाम, ओपि और प्लैटि उपशामक समझे जाते हैं।

४—खाद्यों मे जड़ी-बूटी का कुपरिणाम (Abuse of medicinal articles of diet)—तम्बाकू, चाय, काफी आदि खाने-पीने की चीजों में औषध के गुण भी हैं, तिस पर भी उन चीजों के अधिक व्यवहार से शरीर में हानिकारक प्रभाव पड़ता है। काफी पीने से अनिद्रा रोग होता है। उसके लिए औषधियां हैं एकोन या नक्स वाम (डॉ॰ हेम्पल के मतानुसार ओपियम भी), यदि इससे घबड़ाहट बढे एकोन, इग्ने, कैमो, नक्स वाम; यदि सिर में चक्कर हो तो कैमो, नक्स वाम, सिरदर्द इग्ने, नक्स वाम या आर्न, दन्त वेदना इग्ने, काक्कस, नक्स वाम, मर्क, बेल, हृदयशूल इग्ने, नक्स वाम, काक्कस, ऊवकाई नक्स वाम, कैमो, ऊरुसन्धि में आंत उतरने से दर्द, काक्कस, नक्स वाम, शूलदर्द कैमो, इग्ने, मर्क, बेल, कालो, नक्स वाम, हरी चाय पीने से अनिद्रा कॉफी, उसी कारण थकावट का अनुभव चायना, फेर; पाकाशय में दर्द फेर, घूम्रमान से उत्पन्न मिचली या कै इपि, फास, इग्ने, पल्स, नक्स वाम या काक्कस; उसी तरह के कारण से सिर में चक्कर नक्स वाम, काक्कस, साइलि, हृदय की जलन पल्स, स्टेफि, हिचकी पल्स, इग्ने, दिल की धड़कन फास, पल्स, मसूढे में दर्द आयो, चायना, इग्ने।

६—विषाक्तता।
(Poisoning)

साधारण मन्तव्य (General Remark)—सड़ी मछलियां आदि खाने से शरीर में विषक्रिया उत्पन्न होती है। शहरों के शिक्षित लोग प्रायः सर्वत्र ही शुद्ध और ताजा पदार्थ खाते-पीते हैं किन्तु गरीब बस्तियों में गरीब लोग बासी रोटी, बासी मठा आदि खाते-पीते हैं जिनसे उनके शरीर विषाक्त हो जाते हैं। फ्रांस के सबसे उत्तम शहर पेरिस का एक समूचा परिवार इस प्रकार खाद्य से विषाक्त होकर २४ घण्टों में मर गया था। पिता, माता और तीन बच्चों को विषक्रिया के परिणाम से पेट में भयंकर दर्द और लगातार वमन होने लगा था। जाँच से पता लगा कि ताँबे के

बर्तन में खटाई तैयार की गयी थी। जिस दूकानदार से यह खटाई मंगायी गयी थी उसे सजा हो गयी। एक बार मेरा दरबान तथा उसकी लड़की इसी तरह गन्दा खाद्य खाने से बीमार पड़े थे। उनके पेट में भयंकर शूलदर्द और वमन होने लगा था। मांस खरीद कर उस दरबान ने घर में रख लिया और किसी काम से बाहर निकल गया। लड़की छोटी थी वह मांस पकाना नहीं जानती थी। ४८ घण्टों के बाद उसने घर लौट कर उस मांस को पकाया और दोनों ने खाया। वह मांस सड़ गया था यानी उसमें कीड़े पड़ गये थे। उसे खाने से दोनों मरणासन्न हो गये थे। मैंने उन दोनों को काली चाय पिलायी। फलस्वरूप उनकी मूर्च्छा, पेट में दर्द और वमन रुक गए। तब मैंने उसी औषध की २ गोलियों को पानी में घोलकर आधे-आधे घण्टे के बाद १–१ चम्मच पिलाने की व्यवस्था दी जिससे वे दोनों दूसरे दिन सुबह एकदम अच्छे हो गये।

एक बार एक व्यक्ति ने बहुत अधिक शराब पी ली, फलस्वरूप वह बेहोश हो गया। उसके पेट में शराब सड़कर विषैली गैस पैदा हो गयी थी। मैंने उसे इपिकाक का घोल बनाकर आधे घण्टे के अन्तर पर पिलाने की व्यवस्था दी जिससे दूसरे दिन वह अच्छा हो गया।

———

रोग-सूची

——

हमारे अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

डॉ० सुरेशप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित पुस्तकें—

एलोपैथिक पुस्तकें—

१—इंजेक्शन—इसमें सुई लगाने के तरीके और इसके सम्बन्ध में जानने योग्य सभी बातों के अतिरिक्त सभी प्रकार के इन्जेक्शनों जैसे—पेनिसिलिन, स्ट्रेप्टोमायसिन, औरियोमायसिन, डाइक्रिस्टेसिन आदि का वर्णन सरल ढङ्ग से दिया गया है। सजिल्द मूल्य १०·०० मात्र।

२—एलोपैथिक चिकित्सा—पुस्तक नौ अध्यायों में लिखी गयी है। प्रथम चार अध्यायों में 'विषय-प्रवेश', 'शरीर-विज्ञान', 'रोग निदान' सम्बन्धी आवश्यक बातें और नवीनतम आविष्कृत औषधियों का वर्णन क्रमशः दिया गया है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत। मू० २५·०० मात्र।

३—मिक्श्चर—मिक्श्चर बनाने की विधि और १८५ रोगों पर परीक्षित ३५० नुस्खों का वर्णन दिया गया है। साथ ही साथ पेटेण्ट दवाओं और विभिन्न रोगों पर चलने वाले इन्जेक्शनों के नाम भी दिये गये हैं।

मू० ४·०० मात्र।

डॉ० शिवदयाल गुप्त, ए० एम० एस० द्वारा लिखित पुस्तकें—

४—एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका—हिन्दी और देशी भाषाओं में सर्वप्रथम प्रामाणिक पुस्तक। मू० ३०·०० मात्र।

५--सचित्र नेत्र रोग-विज्ञान (एलोपैथिक)—प्रथम नेत्र-रचना, उसकी कार्यक्षमता आदि विषयों पर सुन्दर विवेचन किया गया है, जैसे निकट-दृष्टि ज्ञान, दूर-दृष्टि-ज्ञान आदि। मू० ६'०० मात्र।

६—मॉडर्न ट्रीटमेण्ट दो भाग मू० ४० ०० मात्र।

७--स्त्रियो के रोग तथा उनकी आधुनिक चिकित्सा-मू० २२ ००मात्र।

८—वृद्धावस्था के रोग तथा उनका प्रतिकार— मू० १२.०० मात्र।

९—एलोपैथिक सफल औषधियां –इस पुस्तक में सल्फा ग्रुप की सभी औषधियां सीबाजाल, एम० बी० ६९३, सल्फा ड्रायज आदि, कालाजार-नाशक, मलेरिया-नाशक, कुष्ठनाशक, कृमि-नाशक आदि औषधियों का प्रयोग तथा पी० ए० एस०, वेसीट्रैसिन, आयलोटायसिन और अब तक की निकली हुई जीवाणुरोधक औषधियों का बृहद् वर्णन सरल ढंग से दिया गया है।

मू० ६'०० मात्र।

१०--मल, मूत्र, रक्तादि परीक्षा एलोपैथिक मू० ४'७५ मात्र। ११–धात्री विज्ञान—मू० ४ ०० मात्र। १२–एलोपैथिक पेटेण्ट मेडिसिन्स—ले०--डा० अ० ना० पाण्डेय—मू० १२'०० मात्र। १३—एलोपैथिक पेटेण्ट चिकित्सा—ले०—डॉ० अ० ना० पाण्डेय—मू० ४ ५० मात्र। १४–ज्वर चिकित्सा—ले०—डॉ० अ० ना० पाण्डेय—मू० ३'०० मात्र। १५–माडर्न एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका—ले० डॉ० रामनारायण सक्सेना–मू० १५'०० मात्र। १६–अभिनव शवच्छेद-विज्ञान–प्रोफेसर श्री हरिस्वरूप कुलश्रेष्ठ द्वारा लिखित—दो भाग–मू० २२'०० मात्र। १७—सरल दन्त-विज्ञान—मू० ३'५० मात्र। १८--सर्जरी (सामान्य शल्य चिकित्सा)–मू० १४'०० मात्र।

१९—बाल रोग चिकित्सा–मू० १०·०० मात्र। २०—एलोपैथिक पाकेट गाइड—मू० ६·०० मात्र। २१—माडर्न डायग्नोसिस—मू० १८·०० मात्र। २२—माडर्न सिलेक्टेड मेडिसिन—मू० ६·०० मात्र। २३—ब्लड-प्रेशर—ले० डॉ० नौटियाल–मू० ३·५० मात्र। २४ –स्टेथोस्कोप परीक्षा—ले० डॉ० केशवानन्द नौटियाल,ए.एम.एस. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय–मू० ४·००।

२५—मेडिकल सार्टफिकेट—(हि० अ०) मू० २·०० मात्र।

२६—लेबुल बुक— मू० २·०० मात्र।

२७—चर्म रोग चिकित्सा—मू० ४·५० मात्र। २८—विटामिन–मू० ३·०० मात्र। २९—सल्फोनामायड और एण्टीबायोटिक्स–मू० २·७५। ३०—मासिक विकार—मू० १·५०। ३१—जननेन्द्रिय रोग चिकित्सा—मू० ३·७५। ३२—नासा, गला एवं कर्ण रोग चिकित्सा–मू० ७·०० मात्र। ३३—संकटकालीन प्राथमिक चिकित्सा–मू० ६·०० मात्र। ३४—सफल आधुनिक औषधियाँ——मूल्य ५.५० मात्र।

होमियोपैथिक पुस्तकें—

१– होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका रेपर्टरी सहित—मूल लेखक–डॉक्टर विलियम बोरिक—कैलिफोर्निया के यशस्वी डाक्टर विलियम बोरिक की होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका जगत प्रसिद्ध चिकित्सा-ग्रंथ है जो लगभग एक शताब्दी से दुनियाभर में प्रचालित एवं समादृत है। मेडिकल पुस्तक भवन का इसी पुस्तक का प्रस्तुत हिन्दी रूपान्तर अत्यन्त सावधानीपूर्वक अविकल रूप में छापा गया है और इसे पाठकों का व्यापक समर्थन प्राप्त है।

रिपर्टरी सहित मूल्य ३०·०० मात्र।
केवल रिपर्टरी १०·०० मात्र

२—फेरिंगटन की कम्परेटिव मेटेरिया मेडिका—मू० १०·०० मात्र ।
लेखक—डॉ० सुरेश प्रसाद शर्मा

३—होमियो पारिवारिक चिकित्सा—मू० २५·०० मात्र । ४—होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका–मू० ७·५० मात्र । ५—होमियो गृह-चिकित्सा–मू० ६·०० मात्र । ६—होमियो वाल चिकित्सा—मू० ५·५० मात्र । ७—होमियो पशु चिकित्सा—मू० २·७५ मात्र । ८–होमियो शिशु चिकित्सा–मू० १·०० मात्र । ९—पुरानो वोमारियाँ—मू० ६·०० मात्र । १०—होमियो भेषज सम्बन्ध-तत्व एवं क्रिया स्थितिकाल—मू० ३·५० मात्र ।

११–होमियोपैथिक औषधतत्व के मुख्य निर्देशक लक्षण

ले० डॉ० ई० वी० नैश एम० डी०—होमियोपैथिक-चिकित्सा-क्षेत्र में डॉ० नैश का नाम विशेष प्रशंसा पा चुका है ।

विख्यात लेखक ने प्रत्येक रोग के लिए एक-एक विशेष प्रकृतिगत औषधि निर्दिष्ट कर दी है । इससे प्रत्येक चिकित्सक को परीक्षा के लिए अनेक औषधियाँ देने की आवश्यकता नहीं होगी । मू० ६·०० मात्र ।

१२—रोगी की सेवा और पथ्य–मू० ४·५० केवल । १३—बायोकेमिक चिकित्सा मू० ८·०० मात्र । १४—आर्गेनन–मू० ७·०० मात्र । १५—स्त्री-रोग चिकित्सा सचित्र –मू० ८·५० केवल । १६–होमियो भेषज-सार—मू० ३·०० केवल । १७–होमियो इन्जेक्शन चिकित्सा—मू० ३·५० मात्र । १८—भारतीय औषधावली तथा होमियो पेटेन्ट मेडिसिन्स–मू० ३·०० केवल । १९–होमियो पाकेट गाइड—मू० २·०० । २०–बायोकेमिक पाकेट गाइड—मू०

२'०० मात्र। २१—बायोकेमिक रेपर्टरी—मू० ५'०० । २२--नैश रीजनल लीडर्स—मू० ३'०० । २३--होमियो टायफायड चिकित्सा -मू० १'०० । २४—होमियो न्यूमोनिया चिकित्सा मू० १'०० । २५—होमियो थायसिस चिकित्सा—मू० १'०० । २६—थर्मामीटर-मू० ०'५० । २७-एनीमा और कैथेटर--मू० ०'६० । २८—रोग लक्षण संग्रह--मू० '४० । २९—बायो-केमिक रहस्य—मू० ४'०० । ३०—तुलनात्मक होमियो औषधिचुनाव—मू० १'५०। ३१—एलेन्स की नोट्स—मू० १०'००। ३२—जार फोर्टी ईयर्स प्रैक्टिस मू० २'०० । ३३-सफल होमियो प्रेस्क्रिप्शन—मू० १'०० । ३४—पीयर्स का तुलनामूलक मेटेरिया मेडिका—मू० २५'०० ।

आयुर्वेदिक पुस्तकें—

१—आयुर्वेद विज्ञान—मू० ४'०० मात्र ।

२—नाड़ो रहस्य—मू० १'२५ मात्र ।

३—आधुनिक आहार-विहार द्रव्यगुण-विज्ञान एवं चिकित्सा—मू० ८'०० ।

ग्राम सीरीज प्रकाशन—

१—नीम चिकित्सा विधान—मू० १'०० मात्र । २—तुलसी चिकित्सा विधान-मू० १'०० मात्र। ३-आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा-मू० ३'०० मात्र। ४—बबूल चिकित्सा विधान—मू० ५० मात्र। ५—मधु चिकित्सा विधान—मू० १'२५ मात्र। ६—कब्ज या कोष्ठ-बद्धता मू० १'०० मात्र । ७—सुलभ देहाती नुस्खे--मू० १'५०

मात्र। ८—प्लीहा रोग चिकित्सा—मू० '७५ मात्र। ९—वृक्क विज्ञान चिकित्सा—मू० ३'०० मात्र। १०—मवेशियो की घरेलू चिकित्सा—मू० २'०० मात्र। ११—जन-स्वास्थ्य विज्ञान—मू० ७'०० मात्र। १२—जल-चिकित्सा विधान—मू० २'००। १३—जल चिकित्सा—मू० '७५ पैसे मात्र। १४—नीबू चिकित्सा-विधान—मू० '·०० मात्र। १५—छाछ चिकित्सा-विधान—मू० १'०० मात्र।

विशेष जानकारी के लिए सूचीपत्र मुफ्त मँगावें—

मेडिकल पुस्तक भवन,

गोलादीनानाथ, वाराणसी।